राष्ट्रीय डेरी
विकास बोर्ड

वार्षिक रिपोर्ट 2023-24

विषय-सूची

बोर्ड के सदस्य	1
अध्यक्ष का संदेश	2
एनडीडीबी के बारे में	8
भारतीय डेरी क्षेत्र का लोकल टू ग्लोबल में परिवर्तन	11
डेरी क्षेत्र के रूझान	29
उत्पादकता वृद्धि, नवाचार और सस्टेनेबिलिटी	31
डेरी को अगले स्तर पर ले जाने के लिए सरकार के प्रयासों के साथ सामंजस्य स्थापित करना	47
सहकारी कवरेज का विस्तार - "सहकार-से-समृद्धि" के विज़न को साकार करना	61
भारतीय डेरी क्षेत्र का डिजिटलीकरण	73
देश के डेरी प्रसंस्करण अवसंरचना का विस्तार	75
रणनीतिक सहयोग के माध्यम से विकास को गति देना	81
मानव संसाधन का प्रशिक्षण एवं क्षमता विकास	85
प्रेरणादायक कहानियां	91
डेरी क्षेत्र के लिए विज़न 2047	95
एनडीडीबी फाउंडेशन फॉर न्यूट्रीशन	101
राजभाषा का प्रगामी प्रयोग	103
कार्यक्रम	104
एनडीडीबी के प्रयासों की पूरक - एनडीडीबी की सहायक कंपनियां	114
डेरी सहकारिताओं की प्रगति	126
आगंतुक	136
लेखा-जोखा	140
एनडीडीबी के अधिकारी	169
शब्दावली	177
कृतज्ञता ज्ञापन	182

निम्नलिखित वेबसाइट पर इस रिपोर्ट को देखें

nddb.coop

बोर्ड के सदस्य

डॉ. मीनेश सी शाह
अध्यक्ष[1] एवं प्रबंध निदेशक
राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड

सुश्री वर्षा जोशी
अपर सचिव (मवेशी और डेयरी विकास)
पशुपालन और डेयरी विभाग
मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय
भारत सरकार

डॉ. एन एच केलावाला
कुलपति
कामधेनु विश्वविद्यालय
गुजरात

श्री शामलभाई बालाभाई पटेल[2]
अध्यक्ष
गुजरात सहकारी दूध विपणन महासंघ लिमिटेड
गुजरात

श्री राजेश नामदेवराव परजाने पाटिल[3]
अध्यक्ष
महाराष्ट्र राज्य सहकारी दुग्ध महासंघ मर्यादित
महाराष्ट्र

[1] अध्यक्ष, एनडीडीबी का अतिरिक्त प्रभार
[2] 27 फरवरी 2024 तक
[3] 17 नवंबर 2023 से प्रभावी

अध्यक्ष का संदेश

वित्त वर्ष 2023-24 के लिए एनडीडीबी की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत करना मेरे लिए सौभाग्य की बात है।

डेरी किसानों की आजीविका का सुदृढ़ीकरण करना हमेशा से हमारी प्राथमिकता रही है। 2023-24 के दौरान, एनडीडीबी ने केंद्र/राज्य सरकारों की विभिन्न योजनाओं का लाभ लेते हुए अपनी सहायक कंपनियों और डेरी सहकारिताओं के साथ डेरी और संबद्ध क्षेत्रों के विकास के लिए सघन राष्ट्रव्यापी कार्यक्रमों को बढ़ावा देना, योजना बनाना और उन्हें कार्यान्वित करना निरंतर जारी रखा। इसके अलावा, डेरी क्षेत्र को और मजबूती देने के लिए कई नई पहल और नवोन्मेषी गतिविधियाँ शुरू की गईं।

वृहत स्तर पर, अनुकूल जलवायु परिस्थितियों के कारण वर्ष 2023-24 में डेरी क्षेत्र में दूध उत्पादन, डेरी किसानों के लिए लाभकारी मूल्यों और मजबूत उपभोक्ता मांग में वृद्धि देखी गई।

डेरी सहकारिताओं ने भी नए क्षेत्रों में डेरी किसानों तक पहुंचने में सफलता हासिल की जिसके परिणामस्वरूप 2023-24 के दौरान औसतन 662 लाख किलोग्राम प्रतिदिन (लाकिग्राप्रदि) दूध संकलित हुआ। यह 2022-23 की तुलना में 12 प्रतिशत की उल्लेखनीय वृद्धि को दर्शाता है। वर्तमान में, पूरे देश की डेरी सहकारिताओं में 2.36 लाख डेरी सहकारी समितियों के 1.72 करोड़ सदस्य हैं और वे ग्रामीण समृद्धि लाने में अहम भूमिका निभा रहे हैं।

वर्ष के दौरान, कुशल और प्रभावी डेरी पारिस्थितिकी तंत्र बनाने के लिए बहुआयामी पहल की गई। इन केंद्रित गतिविधियों को उत्पादकता को बढ़ावा देने, नवाचारों को बढ़ावा देने और सस्टेनेबिलिटी को बढ़ावा देने की दिशा में लक्षित किया गया था, जिसके परिणामस्वरूप कई सकारात्मक परिणाम सामने आए हैं।

एनडीडीबी ने विशेष वैज्ञानिक कार्यक्रमों के माध्यम से डेरी पशुओं की आनुवंशिकता में सुधार हेतु निरंतर उपाय कर रही है तथा इसके साथ ही, राष्ट्रीय गोकुल मिशन के कार्यान्वयन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। ये कार्यक्रम, पशु पोषण और स्वास्थ्य में वैज्ञानिक और तकनीकी गतिविधि के साथ, उत्पादकता वृद्धि की दिशा में की गई महत्वपूर्ण पहलों का प्रतिनिधित्व करते हैं, ये गतिविधियां हमारे डेरी उद्योग को लाभदायक और सस्टेनेबल बनाने के लिए महत्वपूर्ण हैं।

सस्टेनेबिलिटी के लिए प्रतिबद्ध एनडीडीबी ने विकेन्द्रीकृत से सामुदायिक व केंद्रीकृत स्तर तक विभिन्न बायोगैस/खाद मूल्य श्रृंखला मॉडलों का विकास और प्रसार जारी रखा है। इनमें से कई आज मॉडल के रूप में कार्यरत हैं और अब, देश भर में इन मॉडलों का अनुकरण किया जा रहा है,एनडीडीबी इनके कार्यान्वयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। एनडीडीबी ने डेरी संयंत्र की तापीय और विद्युत ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए वाराणसी में अत्याधुनिक 100 मीट्रिक टन प्रतिदिन (मीटप्रदि) गोबर आधारित बायोगैस उत्पादन संयंत्र भी स्थापित किया है। यह हमारे लिए गर्व का विषय है कि माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के कर-कमलों द्वारा जुलाई 2023 में संयंत्र का उद्घाटन किया गया, जिसकी आधारशिला माननीय प्रधानमंत्री द्वारा भी रखी गई थी। आज, यह संयंत्र देश के लिए एक मॉडल के रूप में कार्यरत है जो डेरी किसानों को गोबर की बिक्री से आय, डेरी संयंत्र में महंगे आयातित लाइट डीजल ऑयल को प्रतिस्थापित करना, रासायनिक उर्वरकों के बदले ऑर्गेनिक खाद का उत्पादन और मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार जैसे विभिन्न लाभ प्रदान करता है।

इस तरह के उपायो में ईंधन और उर्वरक बनाने के लिए गोबर का उपयोग कर हमारे डेरी क्षेत्र को सस्टेनेबिलिटी की दिशा में बदलने की अपार संभावनाएं हैं। एनडीडीबी ने विभिन्न सरकारी योजनाओं का लाभ उठाते हुए और अपनी नवगठित सहायक कंपनी एनडीडीबी मृदा लिमिटेड की नवीन पहल के द्वारा सुजुकी आर एंड डी इंडिया प्रा.लि., संयुक्त राष्ट्र के खाद्य एवं कृषि संगठन, डेरी सस्टेनेबिलिटी फ्रेमवर्क, सस्टेन प्लस आदि सहित विभिन्न घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों के साथ साझेदारी को बढ़ावा दिया है।

भारत विश्व में दूध का सबसे बड़ा उत्पादक और उपभोक्ता दोनों है, हालांकि विभिन्न आंतरिक और बाहरी कारणों से वैश्विक व्यापार में इसकी हिस्सेदारी कम रही है। अब, डेरी मूल्य श्रृंखला में संरचित कार्यक्रमों के कार्यान्वयन के साथ पशु रोग, ट्रेसिबिलिटी, गुणवत्ता आदि जैसी निर्यात में आने वाली समस्याओं को दूर किया जा रहा है। दूध उत्पादन में वृद्धि और सस्टेनेबल डेरी पद्धतियों के साथ, भारत 'डेरी टू वर्ल्ड' बनने की दिशा में अग्रसर है, जिससे किसानों को अधिक भुगतान करने की क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि होगी। भारत सरकार की योजनाएं जैसे राष्ट्रीय पशु रोग नियंत्रण कार्यक्रम, राष्ट्रीय गोकुल मिशन, राष्ट्रीय पशुधन मिशन, राष्ट्रीय डेरी विकास कार्यक्रम, सहकारिता के माध्यम से डेरी- JICA, डेरी प्रसंस्करण एवं अवसंरचना विकास निधि तथा डेरी कार्यकलापों में लगी सहकारिताओं और किसान उत्पादक संगठनों की सहायता (SDCFPO) योजना आदि इस दिशा में प्रमुख भूमिका निभा रही हैं और हमें गर्व है कि ये अधिकांश योजनाएं और कार्यक्रम एनडीडीबी के माध्यम से कार्यान्वित किए जा रहे हैं।

2023-24 के दौरान, 'सहकार-से-समृद्धि' के विज़न को साकार करने के लिए, 'होल-ऑफ गर्वमेंट' के माध्यम से सहकारिता मंत्रालय के तत्वावधान में की गई कई अन्य पहलों के अलावा, केंद्रीय मंत्रिमंडल ने प्रत्येक अनकवर्ड पंचायत में व्यवहार्य प्राथमिक कृषि ऋण समितियों (PACS), प्रत्येक अनकवर्ड पंचायत/गांव में व्यवहार्य डीसीएस और बड़े जल निकायों वाले प्रत्येक तटीय पंचायत/गांव में व्यवहार्य मत्स्य सहकारी समितियों की स्थापना करने और मौजूदा PACS/DCS और मत्स्य सहकारी समितियों को मजबूत करने पर एक योजना को मंजूरी दी। चूंकि, एनडीडीबी को डेरी सहकारिताओं के लिए कार्य योजना तैयार करने की जिम्मेदारी सौंपी गयी है, इसलिए डेरी बोर्ड ने संबंधित संस्थाओं के साथ विभिन्न कार्यशालाओं/बैठकों आदि का आयोजन किया। एनडीडीबी ने तीन जिलों जींद (हरियाणा), इंदौर (मध्य प्रदेश) और चिकमंगलूर (कर्नाटक) के अनकवर्ड क्षेत्रों में पायलट परियोजनाएं भी शुरू की एवं 79 ग्राम स्तरीय डेरी सहकारी समितियों का गठन किया। इसके अलावा, एनडीडीबी बोर्ड ने व्यवहार्य डेरी गतिविधियों को शुरू करने के लिए 1,000 M-PACS को सहायता देने के लिए एक योजना भी शुरू की है।

जनवरी 2023 में सहकारिता मंत्रालय के तत्वावधान में तीन नई राष्ट्रीय स्तर की बहुराज्यीय सहकारी समितियाँ स्थापित की गईं, जिनके नाम हैं, राष्ट्रीय सहकारी जैविक लिमिटेड (NCOL), भारतीय बीज सहकारी समिति लिमिटेड (BBSSL) और राष्ट्रीय सहकारी निर्यात लिमिटेड (NCEL)। एनडीडीबी एनसीओएल की मुख्य प्रमोटर है और बीबीएसएसएल की प्रमोटर है जिसमें कृभको मुख्य प्रमोटर है। एनसीओएल और बीबीएसएसएल दोनों एनसीईएल के साथ मिलकर कार्य कर रही हैं, जिसकी गुजरात सहकारी दूध विपणन महासंघ मुख्य प्रमोटर है। एनडीडीबी इन सभी राष्ट्रीय स्तर की बहुराज्य सहकारी समितियों को आवश्यक सहायता प्रदान कर रही है।

अध्यक्ष का संदेश

राज्य सरकारों के विशेष अनुरोध पर, एनडीडीबी देश के विभिन्न हिस्सों में प्रबंधन और डेरी विकास गतिविधियाँ संचालित कर रही है। वर्ष 2023-24 में, एनडीडीबी ने वाराणसी दूध संघ, पश्चिम असम दूध संघ लिमिटेड, पूर्वी असम दूध संघ लिमिटेड, झारखंड दूध महासंघ, महाराष्ट्र में विदर्भ और मराठवाड़ा परियोजना और लद्दाख दूध संघ के संचालन का प्रबंधन किया। इसके अतिरिक्त, एनडीडीबी ने विशेष गतिविधियों के लिए डेरी सहकारिताओं को जनशक्ति सहायता प्रदान की।

विश्व को भारतीय डेरी क्षेत्र की विशिष्टता से परिचित कराने के लिए, एनडीडीबी ने कई प्रतिष्ठित संस्थानों जैसे अंतर्राष्ट्रीय डेरी महासंघ, खाद्य एवं कृषि संगठन (FAO), विश्व पशु स्वास्थ्य संगठन (WOAH), ग्लोबल डेरी प्लेटफॉर्म, डेरी एशिया आदि के साथ सहयोग कर रही है। 2023-24 के दौरान, एनडीडीबी ने एफएओ और डीएएचडी के साथ G20 के कृषि कार्य समूह (AWG) के तहत सतत पशुधन परिवर्तन पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, जीसीएमएमएफ और W20 समूह के साथ डेरी सहकारी समितियों के माध्यम से महिलाओं के नेतृत्व वाले सतत विकास पर W20 जनभागीदारी कार्यक्रम की सफलतापूर्वक मेजबानी की। सतत पशुधन परिवर्तन पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में अंतरराष्ट्रीय और घरेलू विशेषज्ञों की बड़े पैमाने पर भागीदारी देखी गई और अधिक कुशल, समावेशी और सतत् पशुधन प्रणाली की दिशा में कार्य करने के लिए साक्ष्य तैयार किए गए। W20 जन-भागीदारी कार्यक्रम में पूरे विश्व से लगभग 700 महिला डेरी किसानों, महिला नेतृत्व और विभिन्न क्षेत्रों में प्रेरित करने वाली सफल महिलाओं ने भागीदारी की।

एनडीडीबी की छ: सहायक कंपनियां भी किसानों के जीवन में समृद्धि लाने के लिए डेरी मूल्य श्रृंखला में कई पहल द्वारा एनडीडीबी के उद्देश्यों को आगे बढ़ा रही हैं।

मदर डेरी फ्रूट एंड वेजिटेबल प्राइवेट लिमिटेड ने अपना स्वर्ण जयंती वर्ष मनाया और लाखों उपभोक्ताओं को सुरक्षित, स्वस्थ और सुविधाजनक उत्पाद उपलब्ध कराना निरंतर जारी रखा, जिससे डेरी किसानों को बाजार की पहुंच उपलब्ध हुई । मदर डेरी ने 2023-24 में 15,036 करोड़ रुपये का कारोबार किया और अपने परिचालन क्षेत्र का निरंतर विस्तार कर रही है। इसके लिए मदर डेरी अपना विस्तार करते हुए, नागपुर में दूध और दूध उत्पादों के लिए 6 लालीप्रदि क्षमता का अत्याधुनिक मेगा प्लांट स्थापित कर रही है ।

2023-24 के दौरान, प्रथम बार इंडियन इम्यूनोलॉजिकल्स लिमिटेड (IIL) और आईडीएमसी लिमिटेड दोनों ने 1,000 करोड़ रुपये से अधिकल का वार्षिक कारोबार किया है। आईआईएल ने अपने स्थापना के 40 वर्ष पूरे होने का उत्सव मनाया और पिछले कुछ वर्षों में "वन हेल्थ कंपनी" के रूप में प्रसिद्धि पाई है और देश में

पशु और मानव स्वास्थ्य टीकों का एक अग्रणी निर्माता है। वर्ष के दौरान, आईआईएल ने भारत का पहला स्वदेशी हेपाटाइटिस-ए का टीका विकसित किया और खसरा- रूबेला वैक्सीन (MR) एवं टेटनस टॉक्सिड + डिप्थीरिया (Td) के लिए भी टीके लॉन्च किए। एफएमडी और एफएमडी+एचएस टीकों की भावी आवश्यकता को पूरा करने के लिए, आईआईएल तेलंगाना के कराकापटला में एक ग्रीनफील्ड वेटनरी वैक्सीन सुविधा भी स्थापित कर रहा है, जिसकी प्रतिवर्ष 150 मिलियन डोज उत्पादन की क्षमता है, जो इसे भारत सरकार के रोग नियंत्रण कार्यक्रम में योगदान देने में सहायक होगा। आईआईएल ने न केवल घरेलू बाजारों में टीकों की आपूर्ति करने की अपनी क्षमता और दक्षता विकसित की है, बल्कि यह 60 से अधिक देशों को अपने टीकों का निर्यात भी कर रहा है, जो 'आत्मनिर्भरता' और "लोकल टू ग्लोबल" की दिशा में एक प्रभावी कदम है।

आईडीएमसी ने भी अपने कार्यक्षेत्रों का विस्तार किया है और अनेक प्रकार के खाद्य एवं फार्मा प्रसंस्करण उपकरण, प्रसंस्करण और पैकेजिंग समाधान उपलब्ध कराकर अच्छा प्रदर्शन किया है। वर्ष के दौरान, इसने न्यूमेटिक सिंगल सीट एवं मिक्सप्रूफ वाल्व तथा सेंट्रीफ्यूगल पंप और अन्य उत्पादों के लिए 3ए प्रमाणन प्राप्त किया। डेरी क्षेत्र में 'आत्मनिर्भरता' के लिए, आईडीएमसी एक रेडी टू यूज कल्चर (RUC) संयंत्र भी स्थापित कर रहा है, जो दही और अन्य फर्मेंटेट उत्पाद के निर्माण के लिए स्वदेशी उत्पाद कल्चर का उत्पादन करेगा। यह दिल्ली एनसीआर में पॉली फिल्म के उत्पादन के लिए 7,500 टन की सुविधा को भी स्थापित कर रहा है।

वर्ष के दौरान, एनडीडीबी डेरी सर्विसेज (NDS), जो कि एनडीडीबी की गैर-लाभकारी (Non Profit) सहायक कंपनी है, कंपनी ने नए नवाचार करने और किसानों को गुणवत्तापूर्ण सेवाएं प्रदान करने की दिशा में ठोस प्रयास किए हैं, इन प्रयासों में वैज्ञानिक उत्पादकता वृद्धि उपायों के साथ-साथ दूध उत्पादक संस्थाओं के गठन की सुविधा भी शामिल है। एनडीएस 22 दुग्ध उत्पादक संस्थाओं (MPO) को सेवाएं और सहायता प्रदान कर रही है जो 24,116 गांवों में 10 लाख से अधिक डेरी किसानों के जीवन को प्रभावित कर रही हैं। संपूर्ण महिला श्रीजा दूध उत्पादक संस्था को डेरी क्षेत्र में महिला सशक्तिकरण में नवाचार के लिए शिकागो, अमेरिका में विश्व डेरी शिखर सम्मेलन के दौरान अंतर्राष्ट्रीय डेरी महासंघ का प्रतिष्ठित डेरी इनोवेशन अवार्ड प्राप्त हुआ, जो हम सभी के लिए खुशी का अवसर था।

भारत सरकार की विभिन्न आरजीएम योजनाओं के कार्यान्वयन के अलावा, एनडीएस ने उत्पादकता वृद्धि के क्षेत्र में कई नई पहल की है। एनडीडीबी ने अपनी प्रभावी और कम लागत वाली सेक्स-सॉर्टेड

अध्यक्ष का संदेश

सीमन तकनीक विकसित करने के लिए कई प्रतिष्ठित संस्थानों के साथ सहयोग किया और एनडीएस ने एक कार्यशील प्रोटोटाइप विकसित किया जो अब पूरी तरह से कार्यरत है। इस तकनीक से भारतीय डेरी क्षेत्र में बड़ा बदलाव आने की संभावना है। एनडीएस उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर में एक गौ अभयारण्य भी स्थापित कर रहा है जिसका लक्ष्य 5,000 गोवंशीय पशुओं का रख-रखाव करना और बायो-सीएनजी संयंत्र स्थापित करना है।

हाल ही में, एनडीडीबी की सहायक कंपनियों मे शामिल एनडीडीबी मृदा लिमिटेड बायोगैस के उपयोग और संबंधित परियोजनाओं जैसे घरेलू बायोगैस, बायो-सीएनजी और डेरी संयंत्रों के लिए बायोगैस आधारित ऊर्जा उत्पादन के निष्पादन के साथ-साथ कई संस्थाओं के सहयोग से नए अनुसंधान और विकास कार्यों की शुरूआत करके बायोगैस, बायो-एनर्जी, कार्बन उत्सर्जन में कमी और ऑर्गेनिक फर्टिलाइज़र के क्षेत्रों में सामंजस्य स्थापित कर रही है। यह सुजुकी आर एंड डी सेंटर इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (SRDI) के साथ भी सहयोग कर रही है, ताकि हमारे सहकारी नेटवर्क की ताकत का लाभ लेकर ऑर्गेनिक फर्टिलाइज़र की मोबिलिटी और उत्पादन हेतु ऊर्जा स्रोत के रूप में कम्प्रैस्ड बायोगैस (CBG) के उत्पादन के लिए पशु के गोबर आधारित बायोगैस संयंत्रों को बढावा दिया जा सके।

हमारी नवगठित सहायक कंपनी एनडीडीबी काफ लिमिटेड अपनी अत्याधुनिक प्रयोगशाला के माध्यम से डेरी उत्पादों, फैट और तेल, शहद, खाद्य उत्पादों, प्रोसेस्ड फूड, ऑर्गेनिक फूड, फल और सब्जियां, पशु आहार, खनिज मिश्रण और विटामिन प्रीमिक्स जैसे अनेक प्रकार के उत्पादों की गुणवत्ता परीक्षण सेवाएं प्रदान कर रही है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि हम हमारी सहायक कंपनियों और डेरी क्षेत्र से जुडी संस्थाओं के साथ मिलकर, गुणवत्ता और नवाचार के साथ अपने उत्पादों और सेवाओं का विस्तार करना निरंतर जारी रखेंगे, ताकि हमारे डेरी किसानों और उपभोक्ताओं की अनेक आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके।

आज, भारत का 2047 तक खुद को 'विकसित भारत' में बदलने का व्यापक विज़न है, जिसमें डेरी क्षेत्र को अधिक उत्पादक, सस्टेनेबल, लाभकारी मूल्य दिलाने और जलवायु अनुकूल बनाने की महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी।

एनडीडीबी डेरी क्षेत्र के लिए विज़न 2047 की दिशा में निरंतर कार्यरत है, जिसमें डेरी क्षेत्र के लिए सस्टेनेबल और समृद्ध भविष्य की परिकल्पना तथा रणनीतिक गतिविधियों को तैयार करना शामिल है। इसमें पांच मुख्य क्षेत्रों - दुधारू पशुओं की उत्पादकता को बढ़ाने, सहकारी कवरेज का विस्तार करने, सहकारी क्षेत्र में मूल्य वर्धित उत्पादों की हिस्सेदारी में सुधार लाने, वैश्विक व्यापार में हिस्सेदारी बढ़ाने तथा 2050 तक 'नेट-जीरो जीएचजी उत्सर्जन' की स्थिति प्राप्त करने पर ध्यान केंद्रित किया गया है। एनडीडीबी पूरे

देश में डेरी के सभी मुख्य हितधारकों के सहयोग से इसे आगे बढ़ाने पर विचार कर रही है।

वर्ष के दौरान, एनडीडीबी को माननीय केंद्रीय मत्स्यपालन, पशुपालन एवं डेयरी मंत्री; माननीय केंद्रीय मत्स्यपालन, पशुपालन एवं डेयरी मंत्रालय के राज्य मंत्री तथा भारत सरकार के पशुपालन एवं डेयरी विभाग के सचिव से मार्गदर्शन एवं सहयोग प्राप्त होता रहा, जिससे एनडीडीबी को देश में पशुधन एवं डेरी क्षेत्र को मजबूत बनाने के लिए अनेक पहल करने में सहायता मिली।

मैं माननीय केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी का आभारी हूं कि उन्होंने एनडीडीबी के बोर्ड के सदस्यों के साथ "सहकार-से-समृद्धि" के अपने विज़न को साझा किया और डेरी किसानों के लाभ के लिए डेरी और संबद्ध क्षेत्रों को आगे बढ़ाने के लिए मार्गदर्शन प्रदान किया। इससे डेरी सहकारिताओं के कवरेज को अनकवर्ड क्षेत्रों तक विस्तार करने के लिए पायलट परियोजनाओं को शुरू करने में मदद मिली है। माननीय केंद्रीय मंत्री के मार्गदर्शन के अनुरूप, आईडीएमसी लिमिटेड न केवल अधिकांश डेरी उपकरणों और मशीनरी को देश में ही निर्मित कर रही है, बल्कि निर्यात बाजारों में भी अपने निर्यात का निरंतर विस्तार भी कर रही है। आईडीएमसी लिमिटेड ने वाराणसी में बनासकांठा दूध संघ के दूध प्रसंस्करण संयंत्र और खेड़ा दूध संघ के लिए 20 मीट्रिक टन प्रतिदिन (मीटप्रदि) मोजरेला चीज़ संयंत्र की सफलतापूर्वक कमीशनिंग की । दोनों ही संयंत्र में उपयोग किए गए सभी मुख्य उपकरणों का निर्माण देश में ही किया गया है और भारत के माननीय प्रधानमंत्री के द्वारा इन संयंत्रों का उद्घाटन किया गया।

वर्ष के दौरान, एनडीडीबी को भारत सरकार के अन्य मंत्रालयों जैसे सहकारिता मंत्रालय, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, ग्रामीण विकास मंत्रालय, वित्त मंत्रालय, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, रसायन एवं उर्वरक मंत्रालय, जल शक्ति मंत्रालय, नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय आदि और राज्य सरकारों से भी निरंतर सहयोग प्राप्त हुआ । मैं उनके सतत् मार्गदर्शन और हमारी क्षमताओं पर विश्वास करने के लिए उनका आभार व्यक्त करता हूं।

मैं एनडीडीबी बोर्ड और अन्य सभी हितधारकों सहित दूध महासंघों/ दूध संघों /दूध उत्पादक संस्थाओं को उनके निरंतर सहयोग और मार्गदर्शन के लिए धन्यवाद देता हूं।

इस दिशा में सतत् आगे बढ़ते हुए, एनडीडीबी पहले से कहीं अधिक दृढ़ता के साथ डेरी किसानों के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए तथा नवाचार, तकनीकी, सहकारिता तथा सहयोग के माध्यम से आने वाली चुनौतियों से निपटने के लिए प्रतिबद्ध और समर्पित है।

डॉ. मीनेश सी शाह
अध्यक्ष, एनडीडीबी

एनडीडीबी के बारें में

राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड (एनडीडीबी) की स्थापना 1965 में सोसायटी के रूप में की गई थी। 1987 में, एनडीडीबी को इंडियन डेरी कॉर्पोरेशन के उपक्रमों का इसमें विलय करके एक निगमित निकाय के रूप में गठित किया गया और संसद के एक अधिनियम द्वारा इसे राष्ट्रीय महत्व की एक संस्था घोषित किया गया। एनडीडीबी पिछले छः दशकों से देश के डेरी क्षेत्र के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है, जिसमें करोड़ों डेरी किसानों की आजीविका में सुधार लाने के उद्देश्य से उत्पादक-स्वामित्व वाली संस्थाओं का पोषण और संवर्धन करना शामिल है, जो अधिकांश भूमिहीन, सीमांत या छोटे किसान हैं।

अपनी स्थापना के समय से ही, एनडीडीबी डेरी उद्योग को विकास का साधन बनाने, करोड़ों डेरी किसानों को आजीविका प्रदान करने और उपभोक्ताओं को पोषण प्रदान करने के लिए विभिन्न परियोजनाओं तथा कार्यक्रमों की योजनाओं को बनाते समय सहकारी व्यवस्थाओं का सतत् पालन कर रही है। देश में श्वेत क्रांति लाने के लिए शुरुआती वर्षों में, एनडीडीबी ने डेरी सहकारिताओं के माध्यम से 1970-96 के दौरान तीन चरणों में ऑपरेशन फ्लड कार्यक्रम की योजना बनाई और उसे क्रियान्वित किया तथा 1998 से भारत को विश्व का सबसे बड़ा दूध उत्पादक देश बनाया।

विश्व बैंक की एक रिपोर्ट के अनुसार, ऑपरेशन फ्लड के परिणामस्वरूप भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था के लिए प्रति वर्ष 200 करोड़ रुपये के शुरुआती निवेश से 24,000 करोड़ रुपये का लाभ मिला।

एनडीडीबी ने इस यात्रा को जारी रखा है और भारत सरकार की राष्ट्रव्यापी विभिन्न योजनाओं जैसे राष्ट्रव्यापी में राष्ट्रीय डेरी योजना चरण-I (NDP-I) और राष्ट्रीय गोकुल मिशन (RGM) का सफलतापूर्वक कार्यान्वयन किया है और हमेशा किसानों को सर्वोपरि और सहकारिता को मार्गदर्शक बल के रूप में रखा है । एनडीपी-I को एनडीडीबी द्वारा सफलतापूर्वक कार्यान्वित किया गया और इसे "अत्यधिक संतोषजनक" परिणाम रेटिंग प्राप्त हुई, जो विश्व बैंक द्वारा वित्तपोषित परियोजनाओं को प्रदान की जाने वाली उच्चतम रेटिंग है।

एनडीडीबी द्वारा विभिन्न वैज्ञानिक और तकनीकी गतिविधियों के माध्यम से इन सफलताओं को और बढ़ाया जा रहा है, जिसका मुख्य उद्देश्य एक ऐसा डेरी पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करना है जिससे किसानों को अधिक लाभ मिले। सहकारिताएं डेरी क्षेत्र के लिए एक उत्कृष्ट मॉडल साबित हुई हैं। एनडीडीबी ने चुनौतियों को सफलतापूर्वक अवसरों में बदला है तथा कार्यान्वयन योग्य योजनाओं को विकसित किया है, उनका पायलेट परीक्षण किया है और उनके सफल कार्यान्वयन के आधार पर योजना निर्माण में सरकार की मदद की है और इन योजनाओं के कुशल कार्यान्वयन में सहयोग प्रदान किया है।

डेरी सहकारिताओं को तकनीकी और वित्तीय सहायता तथा अभियांत्रिकी सेवाएं प्रदान करने के अलावा, एनडीडीबी विभिन्न योजनाओं जैसे प्रोमिसिंग मिल्क यूनियनों का पुनरुत्थान, डेरी सहकारिताओं की सहायता के लिए विपणन पहल, एथनो-वेटनरी मेडिसिन के माध्यम से रोग नियंत्रण कार्यक्रम और वन हेल्थ पहल को क्रियान्वित कर रही है।

आज, भारत न केवल दूध उत्पादन में "आत्मनिर्भर" है, बल्कि दुनिया का सबसे बड़ा दूध उत्पादक देश भी है, जिसकी वैश्विक उत्पादन में लगभग 24 प्रतिशत हिस्सेदारी है। केंद्र/राज्य सरकारों के सहयोग से योजनाबद्ध तरीके से लागू किए जा रहे वैज्ञानिक और तकनीकी हस्तक्षेपों के साथ, यह "दुनिया की डेरी" बनने की कगार पर है। एनडीडीबी केंद्र/राज्य सरकारों, डेरी सहकारी समितियों, दुनिया भर के प्रतिष्ठित संस्थानों और अपनी सहायक कंपनियों के साथ मिलकर एक संपन्न डेरी पारिस्थितिकी तंत्र बनाने में काम कर रही है, जो गुणवत्तापूर्ण दूध और दूध उत्पादों के माध्यम से किसानों को बेहतर आजीविका और उपभोक्ताओं को पोषण प्रदान करती है।

एनडीडीबी, आणंद

श्रीलंका के राष्ट्रपति महामहिम श्री रानिल विक्रमसिंघे और भारत सरकार के माननीय विदेश मंत्री डॉ. एस जयशंकर की उपस्थिति में एनडीडीबी, जीसीएमएमएफ और कारगिल्स (सीलोन) पीएलसी के बीच शेयरधारक समझौते पर हस्ताक्षर

एनडीडीबी के अध्यक्ष डॉ. मीनेश शाह ने पशुधन के प्रमुख सचिव श्री जोनाथन म्वांगंगी मुएके, वरिष्ठ सलाहकार और पीईटीएस के प्रमुख और राष्ट्रपति की आर्थिक सलाहकार परिषद के सदस्य डॉ. ऑगस्टीन चेरूयोट और केन्या डेरी बोर्ड की प्रबंध निदेशक सुश्री मार्गरिट किबोगी के साथ बैठक

भारतीय डेरी क्षेत्र का लोकल टू ग्लोबल में परिवर्तन

पिछले कुछ वर्षों में, भारतीय डेरी क्षेत्र सहकारी गतिविधियों का लाभ लेते हुए अपनी अनूठी लघुधारक-आधारित डेरी प्रणाली के साथ ग्रामीण विकास का साधन साबित हुआ है। आज, सरकार की किसान-केंद्रित योजनाओं द्वारा समर्थित विभिन्न हितधारक प्रयासों से, भारत दूध का सबसे बड़ा उत्पादक और उपभोक्ता बना हुआ है। उत्पादकता वृद्धि, पशु पोषण और पशु स्वास्थ्य के क्षेत्र में वैज्ञानिक रूप से नियोजित अनेक पहल के माध्यम से भारतीय डेरी क्षेत्र आज एक और क्रांति की दिशा में अग्रसर है जो देश में दूध उत्पादन को और बढ़ाएगा। ये तकनीकी प्रगति भारत को डेरी मूल्य श्रृंखला में वैश्विक डेरी क्षेत्र में एक प्रमुख भूमिका निभाने का पर्याप्त अवसर प्रदान करती है।

हालाँकि, भारत 1998 से पूरे विश्व का सबसे बड़ा दूध उत्पादक देश रहा है, लेकिन वैश्विक व्यापार में इसकी हिस्सेदारी बहुत कम और नगण्य रही है। विभिन्न वैश्विक मंचों पर भारत की भागीदारी भी सीमित रही है। वैश्विक डेरी क्षेत्र के प्रति एकीकृत दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए, केंद्र और राज्य सरकारों के सहयोग से, एनडीडीबी और इसकी सहायक कंपनियों द्वारा 2023-24 के दौरान कई निरंतर प्रयास किए गए हैं। इन प्रयासों का उद्देश्य हमारे डेरी क्षेत्र को अधिक कुशल, प्रभावी और सस्टेनेबल बनाना है, जिससे वैश्विक डेरी क्षेत्र में भारत की एक प्रमुख संस्था के रूप में प्रतिष्ठित होने का मार्ग प्रशस्त हो सके।

इसके अलावा, देश में डेरी क्षेत्र को आगे बढ़ाने के लिए विभिन्न देशों और अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं के साथ कई नई सहयोगात्मक पहलों की योजना बनाई गई है और उन्हें क्रियान्वित किया गया है। साथ ही, दक्षिण एशिया और अफ्रीका जैसे समान डेरी पारिस्थितिकी तंत्र वाले देशों को भारतीय डेरी क्षेत्र की विशेषज्ञता का लाभ लेते हुए अपने पशुपालन और डेरी क्षेत्रों में बदलाव लाने में मदद की जा रही है।

श्रीलंका में पशुपालन और डेरी क्षेत्र के विकास के लिए सहयोग

वर्ष 1997-2000 के दौरान श्रीलंका सरकार के साथ संयुक्त उद्यम के रूप में एनडीडीबी के साथ पिछले सहयोग को ध्यान में रखते हुए, श्रीलंका सरकार ने श्रीलंका की पोषण संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने और छोटे डेरी किसानों की आजीविका में सुधार करने में मदद करने के लिए भारत से सहायता मांगी। श्रीलंका के माननीय राष्ट्रपति सहित श्रीलंका सरकार के प्रमुख अधिकारियों के साथ कई दौरे और बैठकों के परिणामस्वरूप एक व्यापक रूपरेखा तैयार की गई, जिसमें श्रीलंका के डेरी क्षेत्र के विकास में एनडीडीबी और भारत के अन्य संगठनों की भूमिका को रेखांकित किया गया।

जुलाई 2023 में, श्रीलंका के माननीय राष्ट्रपति की भारत यात्रा के दौरान, भारत के पशुपालन और डेयरी विभाग की सचिव सुश्री अलका उपाध्याय और श्रीलंका के माननीय उच्चायुक्त श्री मिलिंदा मोरागोडा द्वारा भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी और श्रीलंका के माननीय राष्ट्रपति महामहिम रानिल विक्रमसिंघे की गरिमामयी उपस्थिति में पशुपालन और डेरी के क्षेत्र में भारत और श्रीलंका के बीच एक संयुक्त आशय के घोषणा पर हस्ताक्षर किए गए। इस संयुक्त घोषणा का उद्देश्य पशुपालन और डेरी में मजबूत द्विपक्षीय सहयोग के माध्यम से अधिक सामाजिक-आर्थिक विकास हासिल करना है। इस समझौते से श्रीलंका में पशुपालन और डेरी क्षेत्र से संबंधित संसाधनों के कुशल और सतत् विकास को बढ़ावा मिलने के अलावा खाद्य सुरक्षा और आजीविका को बढ़ाने में भी योगदान मिलेगा ।

इसके अलावा, एनडीडीबी बोर्ड ने संयुक्त घोषणा के उद्देश्यों को आगे बढ़ाने के लिए राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड द्वारा गुजरात सहकारी दुग्ध महासंघ और कारगिल्स (सीलोन) पीएलसी श्रीलंका के साथ श्रीलंका में एक संयुक्त उद्यम कंपनी स्थापित करने को मंजूरी दी, जिसे केंद्र सरकार द्वारा भी अनुमोदित किया गया है।

भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी और श्रीलंका के माननीय राष्ट्रपति महामहिम श्री रानिल विक्रमसिंघे की उपस्थिति में सुश्री अलका उपाध्याय, सचिव, डीएएचडी, भारत सरकार और श्री मिलिंडा मोरागोड़ा, श्रीलंका के माननीय उच्चायुक्त द्वारा पशुपालन और डेरी के क्षेत्र में भारत और श्रीलंका के बीच संयुक्त आशय घोषणा का आदान-प्रदान

भारतीय डेरी क्षेत्र का लोकल टू ग्लोबल में परिवर्तन

एनडीडीबी के अध्यक्ष, श्रीलंका में दूध उत्पादन बढ़ाने के लिए कार्य योजना प्रस्तुत करते हुए

अक्तूबर 2023 में एनडीडीबी, जीसीएमएमएफ और कारगिल्स (सीलोन) पीएलसी के बीच कोलंबो स्थित राष्ट्रपति सचिवालय में श्रीलंका के माननीय राष्ट्रपति महामहिम श्री रानिल विक्रमसिंघे, भारत सरकार के माननीय विदेश मंत्री डॉ. सुब्रह्मण्यम जयशंकर, श्रीलंका सरकार के माननीय विदेश मंत्री श्री एम यू एम अली साबरी, श्रीलंका में भारत के माननीय उच्चायुक्त महामहिम श्री गोपाल बागले और भारत एवं श्रीलंका सरकारों के अन्य मंत्रियों और वरिष्ठ अधिकारियों की गरिमामयी उपस्थिति में शेयरधारक समझौते पर हस्ताक्षर किए गए।

केन्या में पशुपालन और डेरी क्षेत्र के विकास के लिए सहयोग

केन्या में दीर्घकालिक डेरी विकास योजना की योजना बनाने और कार्यान्वयन में एनडीडीबी से सहयोग के संबंध में मार्च 2023 में केन्या के माननीय उच्चायुक्त, केन्या डेरी बोर्ड के प्रबंध निदेशक के साथ एनडीडीबी के अध्यक्ष की बैठक के बाद, एनडीडीबी की एक बहु-विषयक टीम ने जून 2023 में केन्या का दौरा किया।

इसके उपरांत, केन्या गणराज्य के माननीय राष्ट्रपति ने दिसंबर 2023 में भारत का दौरा किया और एनडीडीबी के अध्यक्ष तथा जीसीएमएमएफ (AMUL) के प्रबंध निदेशक, मदर डेरी के प्रबंध निदेशक के साथ बैठक की। माननीय राष्ट्रपति ने देशव्यापी स्तर

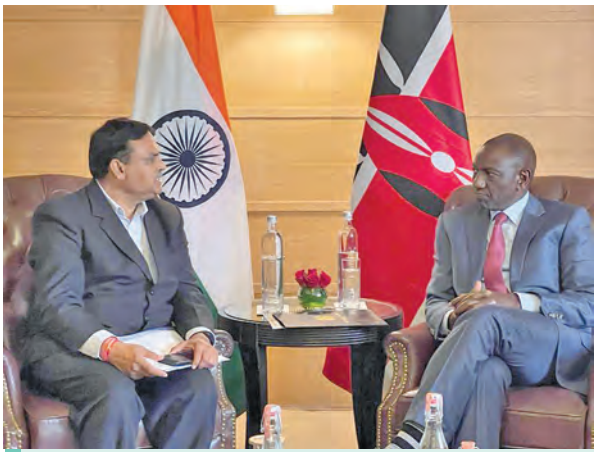

नई दिल्ली में 'भारत-केन्या व्यापार और निवेश मंच' के दौरान केन्या गणराज्य के राष्ट्रपति महामहिम विलियम रुटो और एनडीडीबी के अध्यक्ष डॉ. मीनेश शाह

एनडीडीबी के दौरे के दौरान केन्या प्रतिनिधिमंडल के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ एनडीडीबी के अध्यक्ष डॉ. मीनेश शाह

पर अनेक गतिविधियां संचालित करने की इच्छा व्यक्त की। उन्होंने इस बात का उल्लेख किया कि किसान केंद्रित डेरी प्रणाली के साथ भारत की विशेषज्ञता का केन्याई डेरी क्षेत्र में लाभ लिया जा सकता है और सहयोग के चार प्रमुख क्षेत्रों - वैक्सीन और वैक्सीन निर्माण; आनुवंशिक सुधार; सहकारी नेटवर्क और डेरी उपकरण निर्माण और पैकेजिंग को रेखांकित किया। इन प्रमुख क्षेत्रों को एक कुशल और सतत् डेरी क्षेत्र के विकास की महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में देखा जाता है।

केन्या के माननीय राष्ट्रपति ने दिसंबर 2023 में भारत के माननीय प्रधानमंत्री के साथ अपनी बैठक में केन्या में पशुपालन और डेरी क्षेत्र में भारत के बीच सहयोग की आवश्यकता पर भी बल दिया। इसके बाद, केन्या के नौ सदस्यीय उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमंडल और पशुधन विकास विभाग के प्रमुख सचिव ने दिसंबर 2023 में एनडीडीबी आणंद का दौरा किया। इस यात्रा के दौरान, माननीय राष्ट्रपति द्वारा उल्लिखित प्रमुख कार्य क्षेत्रों के अनुरूप, आपसी हितों के क्षेत्रों पर विचार-विमर्श किया गया। इसके बाद एनडीडीबी के वरिष्ठ अधिकारियों ने अपनी सहायक कंपनियों और जीसीएमएमएफ के साथ मिलकर केन्या में डेरी क्षेत्र को गवन्मेंट टू गवन्मेंट के सहयोगात्मक फ्रेमवर्क बदलने की कार्य योजना को अंतिम रूप देने के लिए दौरा किया।

जापान के सुजुकी आर एंड डी सेंटर इंडिया प्रा. लि. के साथ सहयोग

एनडीडीबी ने नवीनतम मॉडलों और तकनीकों के साथ पूरे देश में बायोगैस/खाद प्रबंधन गतिविधियों को तेजी से बढ़ाने के लिए जापान के सुजुकी आर एंड डी सेंटर इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (SRDI), जो भारत में सुजुकी मोटर कॉर्पोरेशन की पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी है और संबंधित डेरी सहकारिताओं के साथ साझेदारी की है।

एनडीडीबी ने परिवहन ईंधन संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए ऊर्जा के स्रोत के रूप में गोबर का कुशलतापूर्वक उपयोग करने, ऑर्गेनिक फर्टिलाइजर के समृद्ध स्रोत के रूप में और कार्बन न्यूट्रैलिटी प्राप्त करने के लिए अभिनव व्यवसाय मॉडल को डिजाइन और विकसित करने के लिए सुजुकी आर एंड डी सेंटर इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (SRDI) के साथ पहले ही एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं।

इसे आगे बढ़ाने के लिए, सितंबर 2023 में एनडीडीबी के अध्यक्ष डॉ. मीनेश शाह और कार्यपालक निदेशक श्री एस राजीव के जापान दौरे के दौरान, जापान में भारत के माननीय राजदूत महामहिम सिबी जॉर्ज; बनास डेरी के अध्यक्ष एवं गुजरात विधानसभा के अध्यक्ष श्री शंकर चौधरी; सुजुकी मोटर कॉर्पोरेशन के अध्यक्ष श्री टी सुजुकी की गरिमामयी उपस्थिति में जापान में

भारतीय डेरी क्षेत्र का लोकल टू ग्लोबल में परिवर्तन

भारतीय दूतावास में एक त्रिपक्षीय समझौते पर हस्ताक्षर किए गए। इस समझौते का उद्देश्य एक विशेष सहयोगात्मक दृष्टिकोण के रूप में बनासकांठा में पहली चार कम्प्रैस्ड बायोगैस (CBG) परियोजनाएं स्थापित करना था, इसमें एसआरडीआई निवेश करेगी, बनासकांठा दूध संघ भूमि की व्यवस्था करेगा एवं संयंत्र का संचालन करेगा तथा एनडीडीबी प्रौद्योगिकी उपलब्ध कराएगी और टर्न-की आधार पर संयंत्र की स्थापना करेगी। सुजुकी मोटर कॉर्पोरेशन ने भी परस्पर विशेषज्ञता का लाभ लेने और गतिविधियों को तेजी लाने के लिए अपनी सहायक कंपनी एसआरडीआई के माध्यम से एनडीडीबी मृदा लिमिटेड में निवेश करने में अपनी रुचि व्यक्त की। ताकि आपसी विशेषज्ञता का लाभ उठाया जा सके और गतिविधियों को तेजी से बढ़ाया जा सके।

भारत से आए एक दल ने जापान में बायोगैस और ग्रीन हाइड्रोजन के कंप्रेशन और शुद्धिकरण के क्षेत्र में काम करने वाली विभिन्न इंजीनियरिंग कंपनियों का भी दौरा किया। इस दल ने भारत में नवीन तकनीकों के संभावित सहयोग और अपनाने की भी संभावना तलाशी।

एनडीडीबी, बनास डेरी और सुजुकी आर एंड डी सेंटर इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (SRDI), सुजुकी मोटर कॉर्पोरेशन (SMC) की एक भारतीय सहायक कंपनी ने कम्प्रैस्ड बायोगैस (CBG) उत्पन्न करने के लिए चार गोबर आधारित बायोगैस संयंत्र स्थापित करने के लिए एक त्रिपक्षीय समझौते पर हस्ताक्षर

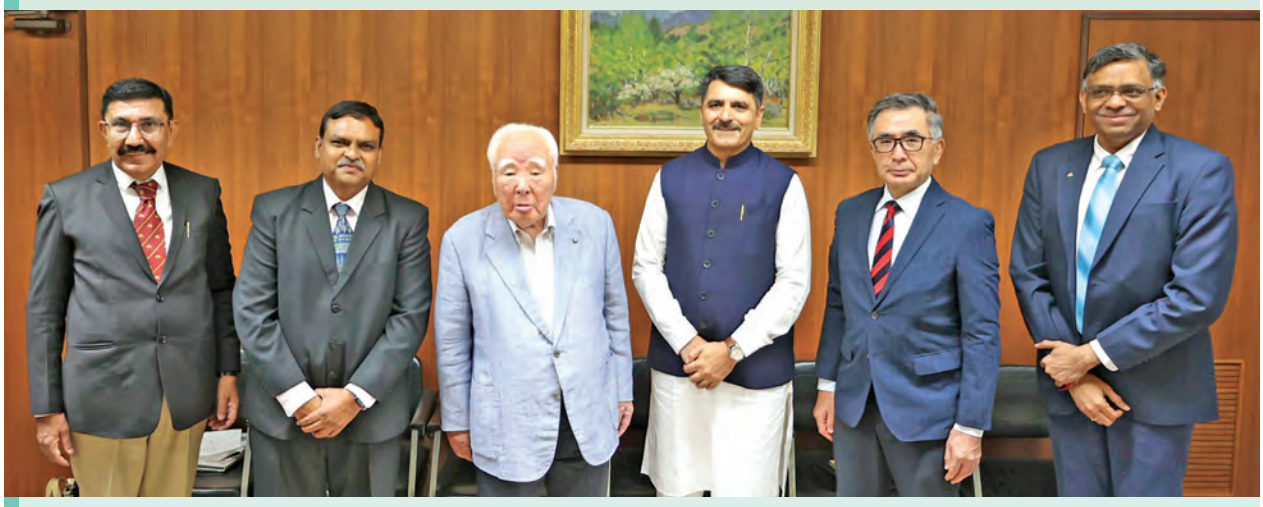

श्री शंकरभाई चौधरी, अध्यक्ष, गुजरात विधानसभा एवं बनास डेरी, डॉ. मीनेश शाह, एनडीडीबी के अध्यक्ष, श्री जयेन मेहता, जीसीएमएमएफ के प्रबंध निदेशक और श्री संग्राम चौधरी, बनास डेरी के प्रबंध निदेशक ने सुजुकी मोटर कॉर्पोरेशन के श्री ओ सुजुकी, पूर्व अध्यक्ष और श्री टी सुजुकी, अध्यक्ष से मुलाकात की

डॉ. मीनेश शाह, अध्यक्ष, एनडीडीबी, रोम में पैनलिस्ट के रूप में तथा एफएओ ग्लोबल कॉन्फ्रेंस में सफलता की कहानी प्रस्तुत करते हुए

अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं और सरकार के साथ सहयोग

वर्ष 2023-24 के दौरान, एनडीडीबी ने अंतर्राष्ट्रीय डेरी महासंघ, संयुक्त राष्ट्र के खाद्य एवं कृषि संगठन, विश्व पशु स्वास्थ्य संगठन, डेरी सस्टेनेबिलिटी फ्रेमवर्क, डेरी एशिया, ग्लोबल डेरी प्लेटफॉर्म आदि विभिन्न अंतरराष्ट्रीय संगठनों के साथ-साथ ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, जापान, फ्रांस, श्रीलंका, केन्या, नेपाल आदि अनेक देशों के साथ कई सक्रिय सहयोग किए। इन सहयोगों का उद्देश्य परस्पर दक्षता और विशेषज्ञता का लाभ उठाना तथा वैश्विक डेरी फ्रेटरनिटी के साथ नेटवर्क स्थापित करना है, ताकि भारतीय डेरी क्षेत्र को सही परिप्रेक्ष्य में स्थापित किया जा सके।

एनडीडीबी के अध्यक्ष डॉ. मीनेश शाह ने रोम के एफएओ में सतत् पशुधन परिवर्तन पर वैश्विक सम्मेलन में भाग लिया, जिसमें विशेषज्ञों, नीति निर्माताओं और प्रोफेशनलोंने "बेहतर उत्पादन, बेहतर पोषण, बेहतर पर्यावरण, बेहतर जीवन" जैसे विषयों पर विचार-विमर्श किया गया। विश्वभर की 12 सफल कहानियों में से "खाद्य प्रबधन से संबंद्ध संपूर्ण महिला केन्द्रित सहकारी समिति" को एक सफल कहानी के रूप में चुना गया और रोम के एफएओ एट्रियम में सतत् पशुधन परिवर्तन पर एफएओ वैश्विक सम्मेलन में प्रदर्शित किया गया। एनडीडीबी के अध्यक्ष ने "बेहतर जीवन" विषय पर सत्र में एक पैनलिस्ट के रूप में भाग लिया।

वर्ष के दौरान, एनडीडीबी के अध्यक्ष ने पेरिस में विश्व पशु स्वास्थ्य संगठन (WOAH) के महानिदेशक डॉ. मोनिक एलोइट से भी मुलाकात की और पशु एवं पादप स्वास्थ्य एजेंसी तथा एनडीडीबी अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशाला के बीच WOAH लैब ट्विनिंग परियोजना पर विचार-विमर्श किया गया, जिसमें अन्य विषयों और विचारो के अलावा संक्रामक गोवंशीय राइनोट्रेकाइटिस (IBR) पर ध्यान केंद्रित किया गया।

एनडीडीबी के अध्यक्ष, पेरिस, फ्रांस में डब्ल्यूओएएच के महानिदेशक डॉ. मोनिक एलोइट के साथ

भारतीय डेरी क्षेत्र का लोकल टू ग्लोबल में परिवर्तन

अमेरिका के शिकागो में डेरी राउंड टेबल के दौरान एनडीडीबी के अध्यक्ष डॉ. मीनेश शाह

एनडीडीबी के अध्यक्ष ने केन्या के नैरोबी में आयोजित "सस्टेनेबल डेरी पारिस्थितिकीः पोषण सुरक्षा, महिला सशक्तिकरण, जलवायु-अनुकूल कृषि, प्रकृति संरक्षण पर कार्रवाई और जैव विविधता में वृद्धि" विषय पर संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण सभा के छठे सत्र में अंतर्राष्ट्रीय डेरी महासंघ के साइड इवेंट में भी भाग लिया और भारत में जलवायु-अनुकूल डेरी के माध्यम से महिला सशक्तिकरण के बारे में परिचर्चा की।

राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड ने शिकागो, अमेरिका में डेरी गतिविधियों में शामिल महिलाओं पर अंतर्राष्ट्रीय डेरी महासंघ (IDF) टास्क फोर्स के राउंड टेबल कॉन्फ्रेंस में 'डेरी क्षेत्र में तकनीकी और नवाचार महिलाओं की मदद कैसे कर सकती है' तथा भारत में डेरी क्षेत्र में महिलाओं एवं सहकारिताओं की भूमिका पर प्रकाश डाला, जिसमें तकनीकी प्रगति के उदाहरण दिए गए जो महिलाओं की भागीदारी को बढाने में मददगार हैं और भारत सरकार द्वारा ए-हेल्प (स्वास्थ्य और पशुधन उत्पादन के विस्तार के लिए मान्यता प्राप्त एजेंट) जैसी योजनाओं के माध्यम से निभाई जा रही भूमिका पर भी प्रकाश डाला, जो महिला उद्यमिता को बढ़ावा देती है तथा पशु चिकित्सा अधिकारियों और डेरी किसानों के बीच अंतर को कम करने के लिए विभिन्न सेवाएं प्रदान करती है।

वर्ष के दौरान विभिन्न देशों के सरकारी अधिकारियों के साथ विभिन्न बैठकें आयोजित हुईं जिसमें न्यूजीलैंड के उप प्रधानमंत्री और विदेश मंत्री श्री विंस्टन पीटर्स शामिल रहे । वैश्विक और सतत् डेरी विकास पर चर्चा की गई तथा दोनों देशों के डेरी क्षेत्रों के बीच सहयोग और जानकारी के आदान-प्रदान करने के अवसरों का पता लगाने पर ध्यान केंद्रित किया गया।

न्यूजीलैंड के उप प्रधानमंत्री और विदेश मंत्री श्री विंस्टन पीटर्स के साथ डॉ. मीनेश शाह, अध्यक्ष, एनडीडीबी

एनडीडीबी द्वारा G20 के कृषि कार्य समूह की अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

एनडीडीबी के अध्यक्ष ने भारत की माननीय राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू से मुलाकात की

G20 के कृषि कार्य समूह (AWG) के तत्वावधान में, एनडीडीबी ने पशुपालन और डेयरी विभाग (DAHD) तथा संयुक्त राष्ट्र के खाद्य एवं कृषि संगठन के सहयोग से एनडीडीबी, आणंद में 18-19 जुलाई 2023 के दौरान सतत् पशुधन परिवर्तन पर दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया।

इस कार्यक्रम का उद्घाटन केंद्रीय मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्री श्री परशोत्तम रुपाला ने किया। इस अवसर पर भारत सरकार के सचिव (DAHD) सुश्री अलका उपाध्याय, एनडीडीबी के अध्यक्ष डॉ. मीनेश शाह, भारत सरकार के (AHC) पशुपालन आयुक्त डॉ. अभिजीत मित्रा, संयुक्त राष्ट्र के खाद्य एवं कृषि संगठन (FAO) के पशु उत्पादन और स्वास्थ्य प्रभाग के निदेशक श्री टिएनसिन थानावत, अंतर्राष्ट्रीय डेरी महासंघ (IDF) की महानिदेशक सुश्री कैरोलीन एमोंड, विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के स्वस्थ जनसंख्या प्रभाग के सहायक महानिदेशक डॉ. ऐलन ली, विश्व पशु स्वास्थ्य संगठन (WOAH) के एशिया और पैसेफिक के क्षेत्रीय प्रतिनिधि डॉ. हिरोफुमी कुगिता, भारत में एफएओ के प्रतिनिधि श्री ताकायुकी हागीवारा, राष्ट्रीय दूध उत्पादक महासंघ के मुख्य विज्ञान अधिकारी डॉ. जेमी जोंनकर और अन्य प्रतिष्ठित गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

इस संगोष्ठी में ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, फ्रांस, ब्राजील, अर्जेंटीना, यूरोपीय संघ, जर्मनी, रूस और संयुक्त राज्य अमेरिका सहित G20 देशों के विशेषज्ञों के साथ-साथ बांग्लादेश, नीदरलैंड, यूएई, मॉरीशस और केन्या जैसे आमंत्रित देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस संगोष्ठी के दौरान, विभिन्न विषयों पर सोलह तकनीकी

भारतीय डेरी क्षेत्र का लोकल टू ग्लोबल में परिवर्तन

श्री परशोत्तम रूपाला, माननीय केंद्रीय मत्स्य, पशुपालन और डेयरी मंत्री G20 के कृषि कार्य समूह (AWG) के अंतर्गत एनडीडीबी, आणंद में सतत् पशुधन परिवर्तन पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए

सत्र आयोजित किए गए। इन सत्रों से एफएओ, विश्व स्वास्थ्य संगठन, विश्व पशु स्वास्थ्य संगठन, अंतर्राष्ट्रीय डेरी महासंघ, USAID और अन्य प्रतिष्ठित संगठनों/विश्वविद्यालयों जैसे राष्ट्रीय दूध उत्पादक महासंघ, यूएसए और यूनिवर्सिटी ऑफ गुएल्फ, कनाडा जैसी संस्थाओं के विशेषज्ञों द्वारा चर्चाओं और विचार-विमर्शों के माध्यम से सतत् पशुधन परिवर्तन संबंधी इस पहल को मजबूत करने में मदद मिली। प्रतिष्ठित विशेषज्ञों, नीति निर्माताओं और हितधारकों ने जानकारी का आदान-प्रदान किया, परस्पर अनुभव साझा किए और पशुपालन क्षेत्र की सस्टेनेबिलटी सुनिश्चित करने के लिए अभिनव उपायों के बारे में चर्चा की।

अमूल और मुजकुवा डेरी सहकारी समिति के दूध और दूध उत्पाद संयंत्र का दौरा करने के लिए एक तकनीकी भ्रमण का आयोजन किया गया। इस भ्रमण के दौरान, G20 देशों के प्रतिनिधियों को प्रसंस्करण प्रणालियों, दूध संकलन, साथ ही बायोगैस और सौर सहकारी समितियों के बारे में अवगत कराया गया।

G20 संगोष्ठी में सुश्री अलका उपाध्याय, सचिव (DAHD), भारत सरकार तथा अन्य प्रतिभागियों के साथ डॉ. मीनेश शाह, अध्यक्ष, एनडीडीबी

एनडीडीबी के अध्यक्ष डॉ. मीनेश शाह ने आणंद में G20 संगोष्ठी के दौरान केंद्रीय मत्स्य, पशुपालन और डेयरी मंत्री श्री परशोत्तम रूपाला का स्वागत किया

भारतीय डेरी प्रणाली को विश्व फलक पर प्रदर्शित करने वाली एक प्रदर्शनी भी आयोजित की गई, जिसमें इसकी विशिष्टता और इस क्षेत्र को अधिक कुशल, प्रभावी और सस्टेनेबल बनाने के प्रयासों पर प्रकाश डाला गया। इसके अलावा, देश के विभिन्न क्षेत्रों के विभिन्न नृत्य और कला विधाओं की मनमोहक प्रस्तुतियों के माध्यम से भारत की जीवंत विरासत और विविधता को प्रदर्शित करने के लिए सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए।

इस संगोष्ठी ने पूरे विश्व के विकासशील और विकसित दोनों देशों को पशुपालन क्षेत्र में समकालीन चुनौतियों का सामना करने के लिए परस्पर सीखने, रणनीतिक विकास करने और योजना बनाने के लिए एक उत्कृष्ट मंच प्रदान किया। इन चुनौतियों में वन हेल्थ, जलवायु परिवर्तन और सस्टेनेबिलिटी शामिल हैं।

एनडीडीबी, आणंद में G20 संगोष्ठी में भाग लेने के लिए पूरे विश्व से आए प्रतिष्ठित गणमान्य व्यक्ति

भारतीय डेरी क्षेत्र का लोकल टू ग्लोबल में परिवर्तन

संगोष्ठी ने बेहतर उत्पादन, पोषण, पर्यावरण और जीवन की गुणवत्ता के लिए अधिक कुशल, समावेशी, लचीला और सतत् कृषि-खाद्य प्रणालियों में बदलाव की दिशा में कार्यों के साक्ष्य भी प्रदान किए, जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि कोई भी क्षेत्र बाकी ना रहे। यह एसडीजी लक्ष्यों को हासिल करने में योगदान देता है। इस संगोष्ठी की प्रमुख सिफ़ारिशों में शामिल हैं:

- पशुधन प्रणालियों के अंतिम छोर तक सार्वभौमिक स्वास्थ्य सुरक्षा (UHC) की न्यायसंगत पहुंच प्रदान करना, बेहतर उत्पादकता, पशु स्वास्थ्य और कल्याण के लिए आवश्यक सेवाओं का प्रावधान सुनिश्चित करना, ताकि कुशल, समावेशी, लचीले और सस्टेनेबल पशुधन प्रणालियों में परिवर्तन को बढ़ावा मिल सके।
- सतत् पशुधन परिवर्तन की दिशा में परिवर्तन के मार्गों में प्राथमिक उत्पादक स्तर पर पशु स्वास्थ्य, पशु पोषण, पशुपालन और प्रजनन सेवाओं के माध्यम से उत्सर्जन, रोगों और एंटीमाइक्रोबियल उपयोग में कमी लाने को प्राथमिकता दी जानी चाहिए ताकि सतत् परिवर्तन को गति प्रदान की जा सके।
- स्वास्थ्यवर्धक आहार और सतत् कृषि-खाद्य प्रणालियों में पशुधन और डेरी की महत्वपूर्ण भूमिका को पहचानना।

एनडीडीबी के अध्यक्ष डॉ. मीनेश शाह ने माननीय केंद्रीय मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्री श्री परशोत्तम रुपाला और अन्य गणमान्य व्यक्तियों को प्रदर्शनी के भ्रमण के दौरान जानकारी देते हुए

- पशुपालन और डेरी क्षेत्र में सस्टेनेबल उत्तम पद्धतियों को बढ़ावा देने के लिए वित्तपोषण में वृद्धि करना।
- संयुक्त राष्ट्र एसडीजी की प्रगति पर विभिन्न देशों की रिपोर्टिंग में पशुधन और डेरी को शामिल करना, उदाहरण के लिए, रॉटरडैम के डेरी घोषणापत्र पर हस्ताक्षर, डेरी नेट ज़ीरो पहल या स्कूल दूध कार्यक्रम।

श्री परशोत्तम रूपाला, माननीय केंद्रीय मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्री, विश्व को भारतीय डेरी प्रणाली प्रदर्शित करने वाली प्रदर्शनी का दौरा करते हुए

एनडीडीबी द्वारा W20 जनभागीदारी कार्यक्रम 'डेरी सहकारिताओं के माध्यम से महिला केन्द्रित सतत् विकास' की मेजबानी

श्री जगदीश विश्वकर्मा, सहकारिता राज्य मंत्री, गुजरात सरकार ने एनडीडीबी, आणंद में W20 के अंतर्गत डेरी सहकारिताओं के माध्यम से जन भागीदारी- महिला केन्द्रित सतत् विकास कार्यक्रम का उद्घाटन किया

एनडीडीबी, गुजरात सहकारी दूध विपणन महासंघ लिमिटेड (GCMMF) और Women 20 (W20) - आधिकारिक G20 सहभागिता समूह ने संयुक्त रूप से 20 जुलाई 2023 को एनडीडीबी, आणंद में जन भागीदारी - डेरी सहकारिताओं के माध्यम से महिला केन्द्रित सतत् विकास विषय पर एक दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया। इस कार्यक्रम में डेरी क्षेत्र के सम्मानित अतिथियों, विशेषज्ञों और महिला नेतृत्व की सक्रिय भागीदारी रही। महिलाएं भारतीय डेरी क्षेत्र की आधारशिला हैं और हमारे डेरी क्षेत्र की परिवर्तनकारी यात्रा में उनकी केन्द्रीय भागीदारी रही है।

श्री परशोत्तम रूपाला, माननीय केंद्रीय मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्री ने प्रतिभागियों को वर्चुअल माध्यम से संबोधित किया और मूल्यवर्धित उत्पाद निर्माण सहित डेरी क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका और महत्व पर प्रकाश डाला।

गुजरात सरकार के माननीय सहकारिता राज्य मंत्री श्री जगदीश विश्वकर्मा ने भारत सरकार के पशुपालन एवं डेयरी विभाग (DAHD) की सचिव सुश्री अलका उपाध्याय; एनडीडीबी के अध्यक्ष डॉ. मीनेश शाह; जीसीएमएमएफ के अध्यक्ष श्री शामलभाई पटेल; W20 की अध्यक्ष डॉ. संध्या पुरेचा; अमूल डेरी के अध्यक्ष श्री विपुल पटेल; जीसीएमएमएफ के प्रबंध निदेशक श्री जयेन मेहता; अंतर्राष्ट्रीय डेरी महासंघ (IDF) की महानिदेशक सुश्री कैरोलीन एमोंड; केन्या डेरी बोर्ड की प्रबंध निदेशक सुश्री मार्गरिट किबोगी; पूर्व आईपीएस सुश्री भारती घोष; और W20 की मुख्य समन्वयक

भारतीय डेरी क्षेत्र का लोकल टू ग्लोबल में परिवर्तन

गुजरात सरकार के माननीय सहकारिता राज्य मंत्री श्री जगदीश विश्वकर्मा जन भागीदारी कार्यक्रम के दौरान उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए

सुश्री धरित्री पटनायक की उपस्थिति में इस कार्यक्रम का उद्घाटन किया।

इस कार्यक्रम में पूरे देश की सहकारिताओं और उत्पादक संस्थाओं का प्रतिनिधित्व करने वाली लगभग 700 महिला डेरी किसानों ने भाग लिया। इसमें अमेरिका, फ्रांस, इटली, ब्रिटेन, केन्या और अर्जेंटीना के प्रतिनिधियों के साथ-साथ केंद्र और राज्य सरकारों के अधिकारी, डेरी क्षेत्र से संबंधित प्रतिष्ठित संस्थाओं और अन्य हितधारकों ने भी भाग लिया।

इस कार्यक्रम ने सहकारी डेरी में महिलाओं के योगदान पर प्रकाश डाला। प्रतिनिधियों ने डेरी क्षेत्र में महिला केन्द्रित विकास से लेकर महिला-नेतृत्व विकास तक महिलाओं की बदलती भूमिका पर ध्यान केंद्रित किया है।

इस कार्यक्रम के दौरान, भारत के विभिन्न राज्यों की महिला डेरी किसानों को सम्मानित किया गया। उपलब्धिधारक महिलाओं ने W20 के पाँच प्रमुख प्राथमिकता वाले क्षेत्रों - महिला उद्यमिता,

माननीय केंद्रीय मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्री, श्री परषोत्तम रुपाला ने जन भागीदारी कार्यक्रम के दौरान वर्चुअल माध्यम से प्रतिभागियों को संबोधित किया।

जन भागीदारी कार्यक्रम में डेरी सहकारिता के माध्यम से सतत् विकास को बढ़ावा देने वाली महिला नेतृत्व

जमीनी स्तर पर महिला नेतृत्व, जेन्डर डिजिटल डिवाइड में कमी लाना, शिक्षा एवं कौशल विकास और जलवायु अनुकूल कार्रवाई पर अपनी उल्लेखनीय सफलता की कहानियाँ साझा कीं।

'विभिन्न क्षेत्रों में महिला नेतृत्व की उत्थान यात्रा' और 'परस्पर सहयोग के माध्यम से सतत विकास में महिलाओं का योगदान' पर पैनल चर्चाएँ आयोजित की गईं। इन चर्चाओं में सुश्री राहीबाई सोमा पोपेरे (भारत की सीड मदर), सुश्री टेसी थॉमस (पूर्व महानिदेशक, वैमानिकी प्रणाली और अग्नि ।V मिसाइल, डीआरडीओ की पूर्व परियोजना निदेशक), सुश्री लज्जा गोस्वामी (निशानेबाज, अंतर्राष्ट्रीय खिलाड़ी, राष्ट्रमंडल खेल पदक विजेता) और डॉ. संध्या पुरेचा जैसी प्रेरक महिला नेतृत्व ने अपनी प्रेरक सफलता की कहानियां साझा कीं।

कार्यक्रम के दौरान सांस्कृतिक प्रस्तुतियों की मुख्य झलकियाँ

एनडीडीबी के अध्यक्ष डॉ. मीनेश शाह, आईडीएफ के अध्यक्ष श्री पियरक्रिस्टियानो ब्रेज़ाले और आईआईएल के प्रबंध निदेशक डॉ. के. आनंद कुमार "संक्रामक गोवंशीय राइनोट्रेकाइटिस के प्रयोगशाला निदान में मानक संचालन प्रक्रिया और आवश्यक पहलू" पर मैनुअल जारी करते हुए

संक्रामक गोवंशीय राइनोट्रेकाइटिस के निदान पर अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला

आईबीआर पर विश्व पशु स्वास्थ्य संगठन (WOAH) के ट्रिनिंग कार्यक्रम और IBR (WRL-IBR) के लिए विश्व संदर्भ प्रयोगशाला के सहयोग से प्रयोगशाला निदान में एनडीडीबी की विशेषज्ञता में वृद्धि हुई है। इसे पूरे क्षेत्र में फैलाने के लिए, एनडीडीबी ने मार्च 2024 में इंडियन इम्यूनोलॉजिकल लिमिटेड (IIL), हैदराबाद में आईबीआर के निदान पर एक अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया । यह कार्यशाला WRL-IBR के सहयोग से आयोजित की गई । इस कार्यशाला में दक्षिण एशिया (भूटान, नेपाल और श्रीलंका) की केंद्रीय रोग निदान प्रयोगशालाओं और विभिन्न भारतीय प्रयोगशालाओं - क्षेत्रीय रोग निदान प्रयोगशालाएं (RDDLs), बायफ विकास अनुसंधान फाउंडेशन (BAIF), चौधरी चरणसिंह राष्ट्रीय पशु स्वास्थ्य संस्थान (CCSNIAH), एनडीडीबी काफ लिमिटेड और IIL) के वैज्ञानिकों ने भाग लिया। कार्यशाला में IBR के विभिन्न पहलुओं, नैदानिक उपकरणों और तकनीकों और सटीक निदान के लिए गुणवत्ता आश्वासन पद्धतियों को शामिल किया गया। कार्यक्रम के दौरान 'संक्रामक गोवंशीय राइनोट्रेकाइटिस के प्रयोगशाला निदान में मानक संचालन प्रक्रियाएँ और आवश्यक पहलू' पर एक मैनुअल भी जारी किया गया।

आईडीएमसी और मैसर्स साइमन फ्रेरेस के बीच समझौते पर हस्ताक्षर

आईडीएमसी ने मैसर्स साइमन फ्रेरेस के साथ समझौते पर हस्ताक्षर किए

एनडीडीबी की पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी आईडीएमसी लिमिटेड ने पहली बार किलोनी, जर्मनी में आयोजित अनुगा फूडटेक 2024 में भाग लिया, जिसमें मेक इन इंडिया को पूरे विश्व में बढ़ावा देने के लिए अपने नवाचारों और उत्पादों का प्रदर्शन किया। इस यात्रा के दौरान, एनडीडीबी के अध्यक्ष डॉ. मीनेश शाह और सिनेक्स्ट ग्रुप के अध्यक्ष श्री जेरोम विलार्ड की उपस्थिति में आईडीएमसी लिमिटेड और मैसर्स साइमन फ्रेरेस के बीच एक समझौते पर हस्ताक्षर किए गए, जिसका उद्देश्य आईडीएमसी लिमिटेड में पहले आयात किए जाने वाले अधिक उपकरणों के निर्माण के लिए साझेदारी को मजबूत करना है- जो आत्मनिर्भर भारत के विज़न को साकार करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। नवीनतम तकनीकी प्रगति पर विचार-विमर्श करने और उसका अवलोकन करने के लिए एसआईजी कॉम्बिब्लॉक (SIG GROUP) की सुविधाओं का दौरा और बैठकें भी की गईं।

प्रथम एशिया पैसेफिक आईडीएफ क्षेत्रीय डेरी सम्मेलन 2024 की घोषणा

मार्च 2024 को आईडीएफ के निदेशक मंडल की बैठक में भाग लेने के लिए पेरिस, फ्रांस की अपनी यात्रा के दौरान, डॉ. मीनेश शाह, सदस्य सचिव, आईएनसी-आईडीएफ और सुश्री कैरोलीन एमोंड, महानिदेशक, आईडीएफ द्वारा श्री पियरक्रिस्टियानो ब्राज़ाले, अध्यक्ष, आईडीएफ और आईडीएफ के बोर्ड के अन्य सदस्यों की उपस्थिति में कोच्चि, केरल में प्रथम एशिया पैसेफिक आईडीएफ क्षेत्रीय डेरी सम्मेलन 2024 की मेजबानी के लिए एक समझौते पर हस्ताक्षर किए गए। डॉ. शाह ने 'डेरी में किसान केंद्रित नवाचार' विषय पर सम्मेलन के बारे में एक प्रस्तुति भी दी।

भारत में प्रथम एशिया पैसेफिक आईडीएफ क्षेत्रीय डेरी सम्मेलन 2024 की मेजबानी के लिए पेरिस में समझौते पर हस्ताक्षर और प्रस्तुति

सुश्री अलका उपाध्याय, सचिव, डीएएचडी, भारत सरकार एवं अध्यक्ष, आईएनसी-आईडीएफ और डॉ. मीनेश शाह, अध्यक्ष, एनडीडीबी तथा सदस्य सचिव, आईएनसी-आईडीएफ, शिकागो, अमेरिका में आईएनसी-आईडीएफ पैवेलियन में आईडीएफ विश्व डेरी शिखर सम्मेलन 2023 के दौरान

शिकागो, यूएसए में आईडीएफ विश्व डेरी शिखर सम्मेलन 2023 में एनडीडीबी की प्रतिभागिता

भारत सरकार के पशुपालन एवं डेयरी विभाग की सचिव एवं आईडीएफ की भारतीय राष्ट्रीय समिति (INC-IDF) की अध्यक्ष सुश्री अलका उपाध्याय और एनडीडीबी के अध्यक्ष एवं आईएनसी-आईडीएफ के सदस्य सचिव डॉ. मीनेश शाह तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारियों के भारतीय प्रतिनिधिमंडल ने शिकागो, अमेरिका में आईडीएफ विश्व डेरी शिखर सम्मेलन 2023 में भाग लिया। उन्होंने भारतीय डेरी प्रणालियों के परिप्रेक्ष्य को सामने रखने तथा भारत की लघु धारक डेरी प्रणाली को विश्व के समक्ष प्रस्तुत करने में अग्रणी भूमिका निभाई।इस शिखर सम्मेलन में डेरी मूल्य श्रृंखला में विभिन्न विषयों पर पोस्टर प्रस्तुतियों के माध्यम से भारतीय डेरी क्षेत्र की अभिनव गतिविधियों को भी प्रस्तुत किया गया।

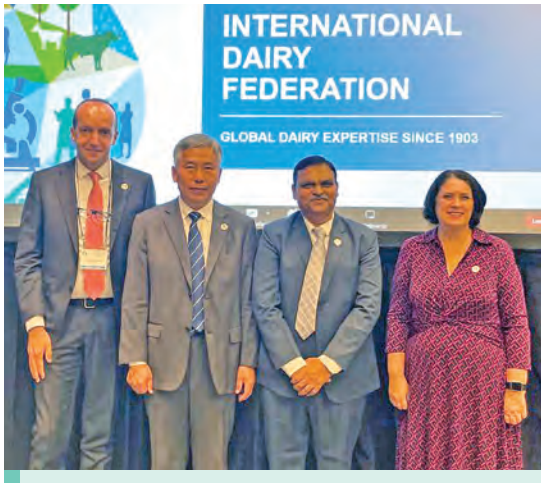

एनडीडीबी के अध्यक्ष डॉ. मीनेश शाह अमेरिका के शिकागो में अंतर्राष्ट्रीय डेरी महासंघ के बोर्ड में शामिल हुए

एनडीडीबी ने अमेरिका के शिकागो में आईडीएफ विश्व डेरी शिखर सम्मेलन 2023 में इंडियन पैवेलियन भी स्थापित किया ताकि विशेष लघुधारक प्रणाली को प्रदर्शित किया जा सके जो लाखों डेरी किसानों की आजीविका में सहयोग प्रदान कर रही है और उपभोक्ताओं को गुणवत्तापूर्ण दूध एवं दूध के उत्पाद उपलब्ध करा रही है।

भारत में सफलतापूर्वक आयोजित विश्व डेरी शिखर सम्मेलन 2022 के संस्मरणों को भी आईडीएफ विश्व डेरी शिखर सम्मेलन 2023, शिकागो, अमेरिका के दौरान भारत सरकार के पशुपालन और डेयरी विभाग की सचिव सुश्री अलका उपाध्याय, एनडीडीबी के अध्यक्ष डॉ. मीनेश शाह, आईडीएफ के अध्यक्ष श्री पियरक्रिस्टियानो ब्राज़ाले और आईडीएफ की महानिदेशक सुश्री कैरोलीन एमोंड द्वारा लॉन्च किया गया।

अध्यक्ष, एनडीडीबी अंतर्राष्ट्रीय डेरी महासंघ के बोर्ड में निर्वाचित हुए

डॉ. मीनेश शाह, अध्यक्ष, एनडीडीबी को 15 अक्तूबर 2023 को आईडीएफ की जनरल असेम्बली के दौरान अंतर्राष्ट्रीय डेरी महासंघ

एनडीडीबी के अध्यक्ष डॉ. मीनेश शाह को शिकागो, अमेरिका में आईडीएफ विश्व डेरी शिखर सम्मेलन में आईडीएफ प्राइज ऑफ एक्सीलेंस अवार्ड 2023 प्रदान करते हुए

(IDF) के बोर्ड में निर्वाचित हुए हैं। बोर्ड में भारत का प्रतिनिधित्व वैश्विक डेरी क्षेत्र एवं भारतीय डेरी क्षेत्र दोनो के लिए फायदेमंद होगा। यह भारतीय डेरी को अधिक कार्यकुशल, प्रभावी और सस्टेनेबल बनाने के लिए अन्य देशों के आधुनिक वैज्ञानिक उपायों और तकनीकी विशेषज्ञता का लाभ भी ले सकेगा ।

आईडीएफ प्राइज ऑफ एक्सीलेंस अवार्ड 2023

डॉ. मीनेश शाह, अध्यक्ष, एनडीडीबी को शिकागो, यूएसए में आयोजित आईडीएफ विश्व डेरी शिखर सम्मेलन के दौरान आईडीएफ प्राइज ऑफ एक्सीलेंस अवार्ड 2023 से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार अंतर्राष्ट्रीय डेरी महासंघ (IDF) के कार्यक्रमों में उनके असाधारण योगदान को दर्शाता है। यह प्रतिष्ठित पुरस्कार पांच प्रमुख संकल्पनाओं पर आधारित है - SWIFT (रफ्तार, विश्वव्यापी प्रसार, प्रभाव, फोकस, पारदर्शिता), जो विकास के प्रेरणास्रोत के रूप में है।

एनडीडीबी के अध्यक्ष डेरी सस्टेनेबिलिटी फ्रेमवर्क में गवर्नर के रूप में नियुक्त किए गए

डॉ. मीनेश शाह, अध्यक्ष, एनडीडीबी को मई 2023 को डेरी सस्टेनेबिलिटी फ्रेमवर्क (DSF) में डेरी एशिया द्वारा गवर्नर के रूप में नियुक्त किया गया। यह नियुक्ति लघु डेरी प्रणाली में सस्टेनेबिलिटी को बढ़ावा देने के प्रयासों में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। डेरी एशिया के सदस्य के रूप में, एनडीडीबी एशिया और पैसेफिक रीजन में सतत् डेरी क्षेत्र की परिकल्पना और स्थापना के लिए समर्पित बहु-हितधारक भागीदारी में सक्रिय रूप से शामिल है।

छोटे दूध उत्पादक को बाजार से जोड़ना

डेरी क्षेत्र के रुझान

घरेलू परिदृश्य

देश में दूध उत्पादन की वृद्धि दर प्रतिवर्ष लगभग छः प्रतिशत है, जबकि, प्रति व्यक्ति उपलब्धता में पिछले दस वर्षों के दौरान पांच प्रतिशत से अधिक की वृद्धि दर्ज की गई है। 2023-24 में, देश में दूध उत्पादन लगभग 242 मिलियन टन तक पहुंचने का अनुमान है तथा प्रति व्यक्ति उपलब्धता लगभग 475 ग्राम प्रतिदिन होने की संभावना है।

अनुकूल जलवायु परिस्थितियों, डेरी किसानों के लिए लाभकारी मूल्य और उपभोक्ताओं की मजबूत मांग के कारण वर्ष 2023-24 डेरी के लिए अनुकूल रहा। इसके अलावा, भारत सरकार ने इनपुट मूल्यों, विशेष रूप से पशु आहार के मूल्यों को नियंत्रित करने के लिए सक्रिय कदम उठाए हैं। कई परामर्शों के बाद, सरकार ने डी-ऑयल्ड राइस ब्रान (DoRB) के निर्यात पर प्रतिबंध लगा दिया है, जो पशु आहार की एक मुख्य सामग्री है तथा इसकी कीमतों में भारी वृद्धि देखी गई थी। इस कदम से इनपुट कीमतों को नियंत्रित करने में बहुत मदद मिली है, जिससे दूध उत्पादन की लागत स्थिर हुई है तथा उपभोक्ता दुग्ध मूल्य मे भी स्थिरता आई है।

डेरी सहकारिताओं ने नए भौगोलिक क्षेत्रों में अधिक डेरी किसानों तक पहुंचकर और 2023-24 के दौरान दूध संकलन को औसतन 662 लाकिग्राप्रदि तक बढ़ाकर, जो 2022-23 की तुलना में 12 प्रतिशत की वृद्धि हासिल की है। डेरी किसानों से अधिक दूध संकलित करने की स्वीकार्यता के अलावा, डेरी सहकारिताओं ने पशु चिकित्सा सेवाओं, कृत्रिम गर्भाधान (AI) सेवाओं, टीकाकरण, संतुलित पशु आहार, चारा बीज, खनिज मिश्रण आदि जैसी तकनीकी इनपुट और विस्तार सेवाएं प्रदान की हैं।

कोविड-19 महामारी के पश्चात् तरल दूध की औसत बिक्री में उल्लेखनीय वृद्धि के बाद स्थिरता आई है। 2023-24 के दौरान, सहकारिताओं की तरल दूध की बिक्री औसतन 438 लालीप्रदि रही, जो 2022-23 की तुलना में लगभग तीन प्रतिशत की वृद्धि दर्शाती है।

वर्ष के दौरान घरेलू बाजार में स्किम्ड मिल्क पाउडर (SMP) और व्हाइट बटर (सफेद मक्खन) जैसी संरक्षित डेरी उत्पादों के मूल्यों में गिरावट देखी गई। एसएमपी, मार्च 2024 में लगभग 225 रुपये प्रति किलोग्राम पर ट्रेड हो रहा था, जिसमें लगभग 24 प्रतिशत की गिरावट दर्ज हुई। इसी तरह सफेद मक्खन की कीमत में लगभग 20 प्रतिशत की गिरावट आई और यह मार्च 2024 में लगभग 320 रुपये प्रति किलो पर ट्रेड हुआ।

हालांकि, घरेलू एसएमपी की कीमतें वित्तीय वर्ष 2023-24 के दौरान अधिक समय तक अंतरराष्ट्रीय बाजार दरों से अधिक रहीं, लेकिन यह अंतर धीरे-धीरे कम होता गया। इसके विपरीत, सफेद मक्खन की घरेलू कीमतें नवंबर 2023 तक अंतरराष्ट्रीय कीमत से कुछ कम रही। हालांकि, अंतरराष्ट्रीय मक्खन की कीमतों में तेज उछाल आया और स्थिर घरेलू मूल्य के कारण बाद में यह अंतर बढ़ गया।

वर्ष 2023-24 के दौरान, भारत ने संरक्षित डेरी उत्पादों में प्रतिकूल व्यापारिक शर्तों (trading terms) के बावजूद लगभग 2.7 हजार करोड़ रुपये के दूध और दूध उत्पादों का निर्यात किया।

अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य

संयुक्त राष्ट्र के खाद्य और कृषि संगठन (FAO) के अनुसार, 2023 में वैश्विक स्तर पर 965 मिलियन टन दूध उत्पादन का अनुमान था, जो वर्ष 2022 की तुलना में 1.4 प्रतिशत अधिक है। यह वृद्धि मुख्य रूप से एशियाई क्षेत्र विशेषकर भारत और चीन में दूध उत्पादन में वृद्धि के कारण हुई है।

वर्ष 2023 में, डेरी उत्पादों का वैश्विक व्यापार 84.7 मिलियन टन (दूध के समतुल्य) रहा, जो 2022 से एक प्रतिशत कम था। चीन सबसे बड़ा आयातक देश है, इसके द्वारा 15.8 मिलियन टन (दूध के समतुल्य) डेरी उत्पादों का आयात किया गया, जो पिछले वर्ष की तुलना में नौ प्रतिशत कम है। चीन के आयात में गिरावट का कारण उसका बढ़ता घरेलू दूध उत्पादन और आयातित डेरी उत्पादों का बढ़ता स्टॉक है। न्यूजीलैंड और यूरोपीय संघ से दूध उत्पादों के निर्यात में क्रमशः लगभग 9 और 6 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, वहीं संयुक्त राज्य अमेरिका का निर्यात पिछले वर्ष की तुलना में लगभग 10 प्रतिशत कम रहा है।

वैश्विक व्यापार मे मंदी का प्रभाव डेरी कमोडिटी, विशेष रूप से एसएमपी की अंतर्राष्ट्रीय कीमतों में दिखाई पड़ा है। ग्लोबल डेरी ट्रेड (GDT) में, एसएमपी की औसत कीमत अप्रैल 2023 में लगभग 2,678 अमेरिकी डॉलर प्रति मीट्रिक टन से घटकर सितंबर 2023 में 2,343 अमेरिकी डॉलर प्रति मीट्रिक टन हो गई। हालांकि, मार्च 2024 में कीमतों में रिकवरी हुई, जो लगभग 2,578 अमेरिकी डॉलर प्रति मीट्रिक टन रही।

अप्रैल से नवंबर 2023 तक मक्खन का मूल्य 4,700 से 5,200 अमेरिकी डॉलर प्रति मीट्रिक टन के मूल्य पर ट्रेड हुआ, जिसमें वित्तीय वर्ष के अंतिम चार महीनों के दौरान तेज वृद्धि देखी गई। मार्च 2024 के अंत तक व्हाइट बटर (सफेद मक्खन) का कारोबार 6,400 अमेरिकी डॉलर प्रति मीट्रिक टन से अधिक रहा।

श्रेष्ठ गाय से भ्रूण निकालना

उत्पादकता वृद्धि, नवाचार और सस्टेनेबिलिटी

पशु उत्पादकता वृद्धि

पशु प्रजनन

दुधारू पशुओं की उत्पादकता को बढ़ाकर डेरी फार्मिंग में लाभ सुनिश्चित करने के लिए पशु प्रजनन एक अत्यधिक प्रभावी गतिविधि है। विशेषकर गायों और भैंसों में पशु प्रजनन गतिविधियों को क्रियान्वित कर इसे हासिल किया जा सकता है। एनडीडीबी ने पशु प्रजनन में अनुसंधान और विकास को लगातार प्राथमिकता दी है, जिससे डेरी उद्योग में अभिनव प्रगति का मार्ग प्रशस्त हुआ है।

आनुवंशिक सुधार कार्यक्रम दो प्रमुख कारकों पर निर्भर हैं: श्रेष्ठ पशुओं की पहचान करना और व्यापक स्तर पर उनकी श्रेष्ठ आनुवंशिकी का प्रसार करना। जीनोमिक चयन, सेक्स्ड-सॉर्टेड सीमन और भ्रूण प्रत्यारोपण तकनीकों को अपनाने में एनडीडीबी की पहल डेरी पशुओं के आनुवंशिक सुधार को बढ़ावा देने की एक सक्रिय दृष्टिकोण का उदाहरण है। भारत सरकार की राष्ट्रीय गोकुल मिशन (RGM) योजना के तहत एनडीडीबी द्वारा संचालित आनुवंशिक मूल्यांकन कार्यक्रम भविष्य में महत्वपूर्ण प्रभाव पैदा करने की क्षमता वाली ऐतिहासिक परियोजनाओं का प्रतिनिधित्व करता है। गायों और भैंसों की अधिकांश महत्वपूर्ण डेरी नस्लों को कवर करने वाले ये सावधानीपूर्वक तैयार किए गए वैज्ञानिक कार्यक्रम श्रेष्ठ आनुवंशिकी के विश्वसनीय स्रोत हैं। शीघ्र नस्ल सुधार कार्यक्रम (ABIP), भ्रूण प्रत्यारोपण, सेक्स्ड-सीमन का लाभ लेने और इन-विट्रो भ्रूण उत्पादन के लिए स्वदेशी कल्चर मीडिया विकसित करने जैसी पहलों ने महत्वपूर्ण गति प्राप्त की है, जिससे इस क्षेत्र में एनडीडीबी का प्रभाव और प्रभावकारिता मजबूत हुई है।

वयस्क सांडों का जीनोमिक चयन

आनुवंशिक प्रगति के प्रति अपनी दृढ़ प्रतिबद्धता को महत्व देते हुए, एनडीडीबी ने देश में जीनोमिक चयन के कार्यान्वयन और विस्तार को प्राथमिकता दी है। आधुनिक जीनोमिक चयन तकनीक, जिसमें क्षेत्र-आधारित आनुवंशिक सुधार कार्यक्रमों के माध्यम से प्रदर्शन रिकॉर्ड और ब्लड टिश्यू एवं सीमन के बायलॉजिकल सैंपल का व्यवस्थित संग्रह शामिल है, को अपना कर कम उम्र के सांडो का चयन करना, इस क्षेत्र में हुई उल्लेखनीय प्रगति है। इन प्रयासों से गायों और भैंसों की प्रमुख दुधारू नस्लों की एक व्यापक संदर्भ आबादी विकसित हुई है, जो एनडीडीबी के समर्पण का प्रतीक है और इससे प्रजनन कार्यक्रमों में सुधार के साथ-साथ पूरे देश में दुधारू पशु झुंडों की आनुवंशिक क्षमता में वृद्धि का एक ठोस आधार स्थापित होता है।

जीनोटाइपिंग के माध्यम से संदर्भ आबादी को मजबूत करने के प्रयास वर्ष 2023-24 में निरंतर जारी रहे हैं। इस वर्ष के दौरान, राष्ट्रीय गोकुल मिशन और गुजरात जैव प्रौद्योगिकी अनुसंधान केंद्र (GBRC) के वित्तीय सहायता से जीनोमिक चयन परियोजनाओं के अंतर्गत 30,315 पशुओं और सांडो को जीनोटाइप किया गया जिसमें उनका प्रदर्शन रिकॉर्ड शामिल है। इसके अलावा, संदर्भ आबादी में वृद्धि के लिए, एनडीडीबी के सहयोग से जीसीएमएमएफ द्वारा गायों के प्रदर्शन रिकॉर्ड वाले सैंपल जीनोटाइपिंग हेतु प्रस्तुत किए गए।

इस वर्ष के दौरान, "इंडसचिप (INDUSCHIP)" और "बफचिप (BUFFCHIP)" - एनडीडीबी द्वारा विकसित कस्टमाइज्ड़ मिडियम डेनसिटी चिप का उपयोग करके पीटी और पीएस परियोजनाओं द्वारा उत्पादित गिर, साहीवाल, मुर्रा, महेसाना, संकर एचएफ और संकर जर्सी के 1,724 वयस्क सांड़ों के बछड़ों का जीनोटाइपिंग किया गया। इन प्रयासों का उद्देश्य हिमीकृत वीर्य उत्पादन के लिए सीमन केंद्रों को वितरित किए जाने वाले सर्वश्रेष्ठ सांडो का चयन करना और कृत्रिम गर्भाधान के माध्यम से आनुवंशिक प्रगति में तेजी लाना है।

जीनोमिक चयन किसानों और अन्य एजेंसियों के बीच लोकप्रिय हो रहा है। इस वर्ष के दौरान, कुल 15,360 गाय और भैंस के सैंपलों का जीनोटाइपिंग किया गया। इसके अलावा, किसानों के बीच नस्ल शुद्धता विश्लेषण की मांग बढ़ती जा रही है। इसके लिए शुद्ध नस्ल वाले पशुओं का चयन कर उनका पशु झुंड विकसित करने हेतु जीनोटाइप डेटा का उपयोग किया जा रहा है।

जीनोमिक चयन, सेक्स्ड-सॉर्टेड सीमन और भ्रूण प्रत्यारोपण तकनीकों को अपनाने में एनडीडीबी की पहल डेरी पशुओं के आनुवंशिक सुधार को बढ़ावा देने में एक सक्रिय दृष्टिकोण का उदाहरण है।

उत्पादकता वृद्धि, नवाचार और सस्टेनेबिलिटी

ओवम पिक-अप एवं इन विट्रो भ्रूण उत्पादन

ओवम पिक-अप और इन विट्रो भ्रूण उत्पादन (OPU-IVEP) तकनीक को विशेष रूप से विकसित देशों में श्रेष्ठ गायों और भैंसों की आनुवंशिकी को बढावा देने के लिए व्यापक मान्यता प्राप्त हुई है। यह तकनीक भारत में दूध उत्पादन के परिदृश्य में बदलाव लाने और दूध उत्पादन प्रक्रियाओं को अपनाने की शुरूआत करने के लिए महत्वपूर्ण है, जिसमें श्रेष्ठ जर्मप्लाज्म में वृद्धि करके गायों और भैंसों की आनुवंशिकता में शीघ्र वृद्धि करने का विशेष लाभ शामिल है।

एनडीडीबी की ओवम पिक-अप, इन विट्रो भ्रूण उत्पादन और भ्रूण प्रत्यारोपण (OPU-IVEP-ET) सुविधा ने गायों और भैंसों दोनों की तकनीकी दक्षता को बढ़ाने के अपने प्रयासों को निरंतर जारी रखा। इससे तकनीकी को सुलभ बनाने के अलावा, यह सुविधा कुशल कार्मिकों के विकास पर भी ध्यान देती है, जो कुशल कार्यबल सुनिश्चित करते हुए दुधारू पशुओं के प्रजनन तकनीकों को आगे बढ़ाने की एनडीडीबी की प्रतिबद्धता को व्यक्त करती है। स्वदेशी OPU-IVEP-ET कल्चर मीडिया विकसित करके तकनीकी लागत को कम करने पर भी बल दिया गया है। वित्त वर्ष 2023-24 में पशु डोनर से कुल 1,584 जीवित भ्रूण उत्पादित कर और 550 भ्रूणों को प्रत्यारोपित किया गया। इसके परिणामस्वरूप 115 पशु गाभिन हुए और 96 बछड़ों का जन्म हुआ।

इसके अलावा, एनडीडीबी ने अमूल डेरी और बनास डेरी को OPU-IVEP-ET सुविधाओं की स्थापना और उनके सुचारू संचालन को सुनिश्चित करने के लिए तकनीकी सहायता प्रदान की। एनडीडीबी की मदद से, अमूल डेरी ने अपने बछड़ी पालन केंद्र, मोगर में एक OPU-IVEP-ET सुविधा स्थापित की है। इस सुविधा में, 2,116 भ्रूण प्रत्यारोपित किए गए हैं और इससे 606 पशु गाभिन हुए और 334 बछड़ों का जन्म हुआ। इसी तरह, एनडीडीबी ने बनास, साबर, महेसाणा और सूरत दूध संघ को सहायता प्रदान की और 1,181 भ्रूण प्रत्यारोपित किए गए , जिसके परिणामस्वरूप 153 पशु गाभिन हुए और 83 बछड़ों का जन्म हुआ।

OPU-IVEP-ET - गायों और भैंसों में आनुवंशिक सुधार के लिए एक उपकरण

बेहतर पोषण के लिए हरा चारा

एनडीडीबी ने क्षेत्र में इस तकनीकी के सफल क्रियान्वयन के लिए इस वर्ष के दौरान विभिन्न संस्थाओं के बारह पशु चिकित्सकों को प्रशिक्षित किया है। मार्च 2024 तक, कुल 74 व्यक्तियों को इस तकनीक पर प्रशिक्षित किया गया है। इसके अलावा, तीन पीजी और दो पीएचडी छात्रों को भी प्रशिक्षित किया गया।

एनडीडीबी को यूनाइटेड स्टेट्स- इंडिया एजुकेशनल फाउंडेशन (USIEF) द्वारा फुलब्राइट-नेहरू स्पेशिलिस्ट प्रोग्राम ग्रांट के लिए चुना गया है ताकि विशेष कृषि क्षेत्र में अमेरिकी विशेषज्ञों की सलाह ली जा सके। इससे भारतीय विश्वविद्यालयों और संस्थानों को अमेरिकी विद्वानों एवं प्रोफशनलों का विशेष परामर्श प्राप्त करने और अमेरिकी संस्थानों के साथ संबंध विकसित करने का सुअवसर मिलेगा। ये विशेष अनुदान संस्थाओं के सुदृढ़ीकरण और उनकी विकासात्मक आवश्यकताओं की पूर्ति में सहायक होते हैं और संस्थाओं को संचालनात्मक सहयोग प्रदान करते हैं।

कैरा दूध संघ के परिचालन क्षेत्र में पशु झुंड प्रतिस्थापन पैटर्न का आकलन

एनडीडीबी और कैरा दूध संघ ने पशु झुंड प्रतिस्थापन पैटर्न का आकलन करने के लिए 20 तालुकाओं की 54 डेरी सहकारी समितियों (DCS) में 1,100 घरों में एक अध्ययन किया। इस अध्ययन में पशु झुंड संख्या, उनका संघटन और घर पर पैदा बछ़ियों को पालने के बजाय पशु को बदलकर गाभिन बछ़ियों को लाना या दूध दे रही वयस्क मादा गायों की प्राथमिकता को प्रभावित करने वाले कारकों पर ध्यान दिया गया।

पशु आहार

वर्तमान में, एनडीडीबी विभिन्न पशु पोषण संबन्धित गतिविधियों/कार्यक्रमों का संचालन कर रही है, जिनका उद्देश्य दुधारू पशुओं की आनुवंशिक क्षमता का उपयोग करके दूध उत्पादन को बढ़ाना, उनकी प्रजनन क्षमता में सुधार करना और दूध उत्पादन की लागत को अनुकूलित करना है।

आहार संतुलन कार्यक्रम (RBP) के माध्यम से पशुओं में संतुलित आहार को बढ़ावा देना

एनडीडीबी के आहार संतुलन सॉफ्टवेयर के माध्यम से पशु को वैज्ञानिक तरीके से आहार खिलाने की सलाह दी जाती है, जो दूध उत्पादन में सुधार और दूध उत्पादन की लागत को अनुकूलित करने में मदद करती है। एनडीडीबी, आरबीपी के कार्यान्वयन के लिए कोल्हापुर दूध संघ और आगा खान फाउंडेशन (AKF) को तकनीकी सहायता प्रदान कर रही है। वर्ष 2023-24 के दौरान, इन दोनों एजेंसियों के 395 स्थानीय जानकार व्यक्तियों ने 480 गांवों को कवर करते हुए 48,007 पशुओं के लिए 28,002 किसानों को आहार परामर्श प्रदान किए।

आरबीपी की पहुंच का विस्तार करने के लिए, एनडीडीबी ए-हेल्प के तहत अधिकारियों के लिए आहार संतुलन सॉफ्टवेयर पर प्रशिक्षण सत्र आयोजित करके राज्य पशुपालन विभागों को भी अपना सहयोग प्रदान किया। प्रशिक्षित अधिकारी अपने-अपने राज्यों में पशु सखियों/जानकार व्यक्तियों को प्रशिक्षण दे रहे हैं।

पारंपरिक सम्पूर्ण मिश्रित आहार (TMR) को बढ़ावा देना

दुधारू पशुओं में आहार को दूध में रूपांतरित करने की दक्षता में सुधार लाने के उद्देश्य से, एनडीडीबी ने पशुओं के लिए रेडी-टू-ईट आहार, सम्पूर्ण मिश्रित आहार (TMR) की उत्पादन प्रक्रिया को विकसित तथा मानकीकृत किया है। राष्ट्रीय पशुधन मिशन के अंतर्गत एनडीडीबी उद्यमिता विकास कार्यक्रम के माध्यम से टीएमआर परियोजना के लिए प्रस्ताव प्रस्तुत करने में डेरी सहकारिताओं और चारा उद्यमियों को सक्रिय रूप से तकनीकी सहयोग प्रदान कर रही है। इस तरह के प्रथम टीएमआर संयंत्र को मंजूरी दी गई है और इसे एनडीडीबी की तकनीकी सहायता से अमूल द्वारा स्थापित किया जा रहा है। अगले वित्तीय वर्ष में, इस संयंत्र का परिचालन शुरू हो जायगा, जिससे प्रतिवर्ष लगभग 9,000 मीट्रिक टन टीएमआर का उत्पादन होने की संभावना है।

पशु आहार एवं पशु आहार संपूरकों के उत्पादन के लिए डेरी सहकारिताओं के पशु आहार संयंत्रों को सहायता प्रदान करना

अधिकांश किसान पशु आहार, विशेषकर मिश्रित पशु आहार की आपूर्ति के लिए डेरी सहकारिताओं पर निर्भर हैं। उचित मूल्य पर गुणवत्तापूर्ण मिश्रित पशु आहार की उपलब्धता सीधे किसान की आय को प्रभावित करती है। पशु आहार का उत्पादन करने के लिए, पशु आहार संयंत्रों (CFP) को ऐसे आहार फ़ॉर्मूले की आवश्यकता होती है जो वांछित आहार तत्वों और पोषक तत्वों की आवश्यकताओं की पूर्ति करे और किफायती हो। एनडीडीबी विभिन्न पशु आहार संयंत्रों को तकनीकी सहायता प्रदान करती है, उन्हें कम से कम लागत वाले फॉर्मूलेशन (LCF) निर्माण में सहायता प्रदान करती है और भिन्न-भिन्न फिजियोलॉजिकल स्टेज के अनुरूप अनेक प्रकार के पशु आहार निर्माण की शुरूआत भी कर रही है। वर्ष 2023-24 के दौरान, मिश्रित पशु आहार के तीन नए आहार, अर्थात् गर्भावस्था आहार, अर्ली लैक्टेशन फीड और काफ स्टार्टर को क्रमशः साबरकांठा, राजारामबापू पाटिल और बारामती दूध संघों में लॉन्च किया।

इसके अलावा, एनडीडीबी पशु आहार संयंत्रों के अधिकारियों की कार्य दक्षता को बढ़ाने के लिए तथा गुणवत्तापूर्ण मिश्रित पशु आहार निर्मित करने संबंधी प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करती है। वर्ष 2023-24 में, 23 सीएफपी के 35 गुणवत्ता नियंत्रण अधिकारियों को प्रशिक्षित किया गया। इसके अलावा, एनडीडीबी ने दूध में फैट और एसएनएफ को बढ़ाने के उद्देश्य से एक पशु आहार संपूरक "संवृद्धि" के उत्पादन के लिए कुल आठ दूध उत्पादक संस्थाओं के साथ अनुबंध का नवीनीकरण किया एवं दो नई एमपीओं के साथ अनुबंध किए। इस वर्ष कुल नौ सीएफपी द्वारा लगभग 442 मीट्रिक टन "संवृद्धि" का उत्पादन कर किसानों को वितरित किया गया। दो सीएफपी ने 1.8 मीट्रिक टन "पशु शीतवर्धक" का भी उत्पादन किया, जो गर्मी के मौसम के दौरान दुधारू पशुओं में हीट स्ट्रेस को कम करने वाला एक पशु आहार संपूरक है।

चारा बीज उत्पादन

डेरी पशुओं की उत्पादन क्षमता को बढ़ाने के लिए फर्टिलिटी फीड

डेरी पशुओं की उत्पादन क्षमता उनके प्रजनन प्रदर्शन पर निर्भर करती है। विभिन्न ट्रेस मिनरल की कमी, विटामिन का अपर्याप्त सेवन और ऊर्जा और प्रोटीन का असंतुलन पशुओं में बांझपन और खराब प्रजनन प्रदर्शन के प्रमुख कारक हैं जैसे यौवनारंभ में देरी या Post-partum oestrus में देरी, anoestrus और रिपीट ब्रीडिंग। सभी प्रजनन विकारों में से, रिपीट ब्रीडिंग और true anoestrus क्षेत्र की परिस्थितियों में सबसे अधिक प्रसार है। पशुओं के खराब प्रजनन प्रदर्शन के कारण डेरी किसानों को भारी आर्थिक हानि भी होता है। इसके अलावा, बार-बार एआई विफलता के कारण दो ब्यांतों के बीच अंतराल भी बढ़ जाता है, जिससे देश में डेरी पशुओं से प्रतिवर्ष एक बछड़ा प्राप्त करने की संभावना कम हो जाती है।

इसी को ध्यान में रखते हुए एनडीडीबी ने उचित प्रजनन के लिए विशेष पोषक तत्वों की जरूरतों को पूरा करने हेतु एक विशेष 'फर्टिलिटी फ़ीड' विकसित किया है। महाराष्ट्र के कोल्हापुर दुग्ध संघ में रेगुलर साइक्लिक मिड-लेट लैक्टेटिग क्रॉस ब्रीड गायों और भैंसों पर एक क्षेत्र अध्ययन किया गया । निष्कर्षों से पता चला है कि गायों और भैंसों में एआई के कारण गर्भधारण की दर क्रमशः 1.5 और 1.7 थी। इसके अलावा, अध्ययन में गायों में 1.5 किलोग्राम/दिन और भैंसों में 1.1 किलोग्राम/दिन की फैट करैक्टेट मिल्क (FCM) उत्पादन में सुधार देखा गया है। फलस्वरूप, फर्टिलिटी फ़ीड में रिपीट ब्रीडिंग वाले पशुओं में प्रजनन दक्षता में सुधार लाने की क्षमता है और यह पशुओं के दूध उत्पादन में सुधार लाने में भी प्रभावी है।

चारा उत्पादन में वृद्धि

डेरी पशुओं के आहार में पर्याप्त मात्रा में हरे चारे को शामिल करने से न केवल उनकी उत्पादकता बढ़ाने में मदद मिलती है, बल्कि दूध उत्पादन की लागत में भी कमी आती है। इसे प्राप्त करने के लिए एनडीडीबी ने एक बहुआयामी दृष्टिकोण अपनाया है। यह किसानों को उचित कीमतों पर उत्तम गुणवत्ता वाले चारा बीजों की उपलब्धता में सुधार लाने और श्रेष्ठ कृषि पद्धतियों का प्रदर्शन के लिए निरंतर प्रयासरत है। एनडीडीबी डेरी सहकारिताओं को हरे और सूखे चारे के संरक्षण के साथ-साथ सब्जी प्रसंस्करण उद्योगों से खाली मटर के छिलके जैसे अपशिष्ट का उपयोग करके चारा संसाधनों को बढ़ाने में भी सहायता मिली।

बीज गुणन श्रृंखला का विकास

वर्ष 2023-24 में, एनडीडीबी ने 15 डेरी सहकारिताओं को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) और राज्य कृषि विश्वविद्यालयों से 13.78 मीट्रिक टन ब्रीडर बीज (खरीफ में 4.90 मीट्रिक टन और रबी सीजन में 8.88 मीट्रिक टन) तक पहुंच उपलब्ध कराने में सहयोग किया है। इस कार्यक्रम के तहत, चारा फसलों की कई नई संशोधित किस्मों को चारा और साइलेज उद्देश्यों के लिए बीज गुणन श्रृंखला में लाया गया। डेरी सहकारिताओं द्वारा इन उन्नत किस्मों के ब्रीडर बीजों का उपयोग फाउंडेशन और प्रमाणित बीज के उत्पादन हेतु बीज गुणन उद्देश्य के लिए किया जाता है, जिससे किसानों को प्रति इकाई क्षेत्र में अपने चारे के उत्पादन में सुधार करने में मदद मिलती है।

एनडीडीबी कम से कम लागत वाले फॉर्मूलेशन (LCF) और भिन्न-भिन्न फिजियोलॉजिकल स्टेज के अनुरूप अनेक प्रकार के पशु आहार निर्माण में सहयोग करने के लिए विभिन्न सीएफपी को तकनीकी सहायता प्रदान करती है।

चारा उत्पादन तकनीकों पर जागरूकता

दूध उत्पादकों के बीच जागरूकता पैदा करने के लिए विभिन्न चारा फसलों (वार्षिक और बारहमासी) जैसे चारा बाजरा (GFB-4) और मक्का (आनंद टॉल) की मौजूदा नई किस्मों के साथ-साथ चारा प्रदर्शन इकाई (FDU), आणंद में प्रदर्शन किया गया। किसानों को साइलेज उत्पादन के लिए मक्का और ज्वार संकर की खेती करने, हरे चारे के उत्पादन के लिए बरसीम और ओट्स की किस्मों और हाइब्रिड-नैपियर घास से साइलेज बनाने की जानकारी प्राप्त हुई। वर्ष भर हरा चारा उत्पादन प्रणाली को लोकप्रिय बनाने के लिए, किसानों को हाइब्रिड नेपियर के लगभग 4.01 लाख स्टेम कटिंग की आपूर्ति की गई। चारा फार्मों को विकसित करने के लिए उत्तर प्रदेश के गौ अभयारण्य परियोजना और गुजरात के कोटयार्क गौशाला और गुजरात के धामरोड के केंद्रीय पशुपालन फार्म (CCBF) को भी तकनीकी सहायता प्रदान की गई।

पशु स्वास्थ्य

ब्रुसेलोसिस नियंत्रण - वन हेल्थ दृष्टिकोण पर केंद्रित

भारत सरकार विभिन्न रोग नियंत्रण कार्यक्रम, राष्ट्रीय पशु रोग नियंत्रण कार्यक्रम (NADCP) बछड़ियों का टीकाकरण करके ब्रुसेलोसिस को नियंत्रित कर रही है। एनडीडीबी का ब्रुसेलोसिस नियंत्रण मॉडल वन हेल्थ विज़न पर केंद्रित है, क्योंकि मनुष्यों में यह रोग व्यापक रूप से लाइलाज रहा है और यह मनुष्य की काम करने की क्षमता को प्रभावित करता है। इस मॉडल का उद्देश्य मेडिकल चिकित्सा संस्थान के सहयोग सें पशुओं और मनुष्यों के बीच रोग के संबंधों को उजागर करना है। वर्ष 2017 में परियोजना के आरंभ से अब तक, 4,726 से अधिक किसानों और पशु स्वास्थ्य कर्मियों की जांच की गई है तथा 137 ब्रुसेलोसिस के लक्षणों वाले मरीजों का उपचार किया गया है ताकि उनके स्वास्थ्य और कार्य क्षमता में सुधार लाया जा सके।

NADCP के अंतर्गत, टीकाकरण के अलावा, प्लेंसेटा (placenta) का उचित निपटान करना, जागरूकता फैलाना, संक्रमित परिसरों की सफाई करना और पशुओं को अलग-अलग रखना जैसे आवश्यक नियंत्रण उपायों पर भी बल दिया जाता है। ये उपाय रोग के प्रसार को रोकने में टीकाकरण की तरह ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

वैकल्पिक पद्धतियों के माध्यम से रोग नियंत्रण

वैकल्पिक पद्धतियों के माध्यम से रोग नियंत्रण (DCAM) की परियोजना 8 राज्यों (केरल, कर्नाटक, महाराष्ट्र, गुजरात, पंजाब, असम, आंध्र प्रदेश, और उत्तर प्रदेश) के 15 दूध संघों/उत्पादक कंपनियों में निरंतर कार्यान्वित है। इस परियोजना में भी वन हेल्थ विज़न पर ध्यान केंद्रित किया गया है, जिसमें एंटीबायोटिक के उपयोग में कमी लाने के साथ-साथ पारंपरिक/एथनोवेटेनरी मेडिसिन (EVM) द्वारा एंटीमाइक्रोबियल उपयोग (AMU) और एंटीमाइक्रोबियल प्रतिरोध (AMR) में कमी लाना शामिल है। परियोजना क्षेत्रों में मार्च 2024 तक, EVM के उपयोग किए जाने से संबंधित 9,80,000 से अधिक मामले दर्ज किए गए हैं, जिसमें स्वस्थ लाभ दर 80 प्रतिशत से अधिक है। अधिकांश किसान सामान्य बीमारियों के उपचार के लिए EVM के उपयोग का विकल्प अपना रहे है। इन परियोजना क्षेत्रों में पशुओं एवं मनुष्यों दोनों में थनैला के ज़ूनोटिक पैथोजन की निगरानी की जा रही है ताकि इनके प्रभावों का अध्ययन भी किया जा सके।

ईवीएम (EVM) निर्माण में सहयोग करने के लिए एनडीडीबी कुल परियोजना लागत का 30प्रतिशत अनुदान देती है। एनडीडीबी ने इस परियोजना के लिए 2021-22 से तीन वर्ष की अवधि के लिए पांच करोड़ रुपये आवंटित किए हैं। इस परियोजना के अंतर्गत साबरकांठा, केरा, बनासकांठा और कोल्हापुर दूध संघों ने अपने

एथनो वेटरनरी मेडिसिन - सामान्य बीमारियों के इलाज के लिए लागत प्रभावी तरीका

EVM निर्माण संयंत्र की स्थापना की है और उसमें आवश्यक सुधार किया है। EVM को अपनाने वाले दूध संघों ने अपनी दवाओं में विशेषकर एंटीबायोटिक्स की खरीदी कम कर दी है।

एनडीडीबी पशु डेटा का उपयोग करके EVM उपचार दरों से संबंधित प्रयोगिक आंकड़ों को सफलता पूर्वक सत्यापित करके, पशु चिकित्सा कॉलेजों और अन्य अनुसंधान संस्थाओं को सहयोग प्रदान कर रही है ताकि वैज्ञानिक रूप से इन फॉर्मूलेशनों को सत्यापित किया जा सके। रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने वाले एक EVM फॉर्मूलेशन का वैज्ञानिक सत्यापन सफलतापूर्वक सपन्न हो चुका है तथा थनैला, किलनी नियंत्रण (Tick control) और अन्य मामलों के लिए EVM के सत्यापन का कार्य सुचारू रूप से जारी है।

गोवंशीय (बोवाइन) रोगों का परीक्षण एवं निगरानी

वित्तीय वर्ष 2023-24 के दौरान, एनडीडीबी प्रयोगशाला ने गोवंशीय रोगों और रोग कारक एजेंटों के लिए गाय और भैंस के सांडो के लगभग 27,000 सैंपलों में अधिकांश सीरा का परीक्षण किया गया, ये सैंपल 13 राज्यों के उन 56 स्रोतों से प्राप्त किए गए, जिनमें वीर्य उत्पादन के लिए उच्च आनुवंशिक गुण वाले सांड़ बछड़ों के चयन करने वाले वीर्य केंद्र एवं एजेंसियां शामिल हैं। भारत सरकार के गोवंशीय वीर्य उत्पादन (MSP) के प्रोटोकॉल मैनुअल में निर्धारित न्यूनतम मानकों के अनुसार रोगों का परीक्षण किया गया।

देशी गोवंशीय नस्लों के संवर्धन के लिए रोग मुक्त उच्च आनुवंशिक गुण वाले बछड़ों को शामिल करने हेतु रोग परीक्षण में आरजीएम (RGM) के अंतर्गत 18 कार्यान्वयन एजेंसियों से प्राप्त 14,614 सैंपलों का परीक्षण किया गया।

नैदानिक सैंपलों का किफायती संकलन और परिवहन

भारत में छोटे किसानों और सीमित संसाधनों वाली डेरी प्रणाली में नैदानिक सैंपलों के संकलन, भंडारण और परिवहन के लिए चुनौतियों का सामना करना पड़ता हैं, जिससें रोगों के प्रसार और एपीडर्मीलॉजी के अध्ययन में समस्याएं आती हैं। प्रयोगशाला ने इन चुनौतियों का सामना करने और किफायती प्रणालियों का चयन करने के लिए वर्षों से अनेक प्रयास किए हैं। बॉडी फ्लूड के संकलन एवं परिवहन के लिए फ्लिडर्स टेक्नोलॉजी एसोसिएट (FTA®) कार्ड तथा सीरा के संकलन एवं परिवहन के लिए Nobuto® (NFP) और Whatman® ग्रेड-III (WFP) फिल्टर-पेपर स्ट्रिप्स का मूल्यांकन क्रमशः डाउनस्ट्रीम PCR/qPCR और ELISA परीक्षण के लिए किया गया और जो उपयोग हेतु उपयुक्त पाया गया। इन पेपर-आधारित प्रणालियों से रोगों और रोगजनक एजेंटों का आसान एवं किफायती सैंपल संकलन, परिवहन (कमरे के तापमान पर) और प्रयोगशाला परीक्षण किया जाता है।

चालू वर्ष में, NFP और WFP का मूल्यांकन गोवंश ब्लड सैंपल के संकलन, भंडारण और शिपमेंट की उपयुक्तता के लिए किया गया। दोनों फिल्टर पेपर पर ड्राईड ब्लड स्पॉट से प्राप्त ELISA परिणाम रेगुलर लिक्विड सीरम सैंपलों से प्राप्त परिणामों से काफी मेल खाते हैं। इन परिणामों से ज्ञात होता है कि WFP में ब्रुसेला के लिए सीरम ELISA के साथ 84.68 प्रतिशत और IBR के लिए 89 प्रतिशत की समानता थी। सीरम ELISA परिणामों की तुलना में ब्रूसेला के लिए 85.5 प्रतिशत और आईबीआर के लिए 93.3 प्रतिशत की समानता के साथ NFP ने बेहतर प्रदर्शन किया।

क्रम सं.	बीमारी	परीक्षण	स्पेसिमेन	सैंपल	% सकारात्मक
1.	ब्रुसेलोसिस	एंटीबॉडी ELISA	सीरम	9,358	1.06
2	IBR*	एंटीबॉडी ELISA	सीरम	9,240	12.04
3	IBR*	DIVA+ (gE ELISA)	सीरम	72	6.94
4	IBR*	रियल-टाइम PCR	हिमीकृत वीर्य	3,073	3.25
5	BVD**	एंटीजन ELISA	सीरम	4,643	0.21
6	BVD**	रियल-टाइम RT-PCR	सीरम	63	0.00
7	EBL***	ELISA	सीरम	226	1.32

*IBR = इंफेक्शियस बोवाइन राइनोट्रैकेटिस;

**BVD = बोवाइन वायरल डायरिया;

***EBL = एंजूटिक बोवाइन ल्यूकोसिस;

+DIVA = संक्रमित और टीकाकृत पशुओं का पृथक्करण।

गोवंश के स्वास्थ्य की निगरानी के लिए पशुचिकित्सक किसान के दरवाजे पर

गोवंशीय थनैला कारक बैक्टीरिया और एंटीबायोटिक ससेप्टिबिल्टी टेस्ट (AST)

एनडीडीबी वैकल्पिक पद्धतियों के माध्यम से रोग नियंत्रण (DCAM) परियोजना द्वारा दूध संघ (MU) और दूध उत्पादक संस्थाओं (MPO) के साथ मिलकर थनैला जैसे महत्वपूर्ण गोवंशीय पशु रोगों के नियंत्रण के लिए वैकल्पिक पद्धतियों पर एक क्षेत्र मूल्यांकन कार्यक्रम चला रही है। डीसीएएम परियोजना के भागीदारों से प्राप्त उप-नैदानिक (sub-clinical) और नैदानिक (clinical) थनैला रोग से संक्रमित गायों के दूध सैंपलों का विश्लेषण, रोग कारक बैक्टीरिया और उनसे संबंधित एंटीबायोटिक ससेप्टिबिल्टी की पहचान करने के लिए किया गया। इन 122 दूध सैंपलों से कुल 202 बैक्टीरिया प्रजातियों को अलग किया गया। जिसमें स्टैफिलोकोकस एसपीपी मुख्य बैक्टीरिया (22 प्रतिशत), इसके बाद स्ट्रेप्टोकोकस (10 प्रतिशत), एंटेरोकोकस (3.5 प्रतिशत), कोर्नेबैक्टीरियम (2.5 प्रतिशत), ई. कोलाई (2 प्रतिशत) और क्लेबसिला (2 प्रतिशत) बैक्टीरिया पाये गए। बैक्टीरिया सैंपलों से संबंधित AST के परिणाम, जो एक ऑटोमैटिक माइक्रोबियल पहचान और एएसटी प्रणाली का उपयोग करके निर्धारित किए गए, संबंधित दूध संघों और दूध उत्पादक संस्थाओं (MPOs) के साथ क्रोनिक एवं रिकैल्सिट्रेंट रोगों के उपचार हेतु एंटीबायोटिक दवाओं के उचित उपयोग की सांकेतिक मार्गदर्शिका के रूप में साझा किए गए।

डेरी क्षेत्र में एंटी माइक्रोबियल रेसिस्टेंस (AMR) पर वन हेल्थ दृष्टिकोण

एनडीडीबी ने डीसीएएम परियोजना के अंतर्गत श्री कृष्ण मेडिकल कॉलेज, करमसद, गुजरात के सहयोग से एएमआर पर वन हेल्थ (OH) दृष्टिकोण को अपनाया है। इस वन हेल्थ दृष्टिकोण का उद्देश्य पशुओं, संक्रमणशील मनुष्यों में स्टैफिलोकोकस ऑरियस (Staphylococcus aureus) के संक्रमण की उपस्थिति, डेरी क्षेत्र में इसकी व्यापकता और डेरी पारिस्थितिकी तंत्र में AMR, विशेष रूप से MRSA के फैलाव को निर्धारित करना है।

चार दूध संघों से ह्युमन नेयर्स और थनैला संक्रमित पशुओं (गाय और भैंस) के दूध, नैजल एवं रेक्टल स्वैब तथा पर्यावरणीय सैंपल (पीने का पानी और सीवेज) के 135 सैंपल संकलित किए गए। बैक्टीरियल पृथक्करण, पहचान और AST निर्धारण किया जा रहा है। डेरी क्षेत्र में AMR बैक्टीरिया के प्रसार और फैलाव को निर्धारित करने के लिए मॉलिक्युलर विश्लेषण (PCR/qPCR, sequence typing) किया जाएगा।

रोग के प्रकोप की जांच

एनडीडीबी आर एंड डी प्रयोगशाला, गोवंशों में रोग के प्रकोपों की विस्तृत जांच करती है और ऐसी स्थितियों में अपनाए जाने वाले जैव

सुरक्षा और रोग नियंत्रण उपायों पर परामर्श प्रदान करती है। देश के विभिन्न स्थानों पर रोगों की व्यापक जांच से पता चला है कि ब्लड प्रोटोजोआ, बी. एबॉर्टस और सी. नोवी टाइप बी सहित कई रोगजनक ऑर्गेनिज्म इसके लिए जिम्मेदार हैं।

गुणवत्ता प्रबंधन प्रणाली और दक्षता परीक्षण

एनडीडीबी की प्रयोगशाला ने 2015 से गोवंशीय रोग परीक्षण के लिए अंतर्राष्ट्रीय गुणवत्ता मानकों के अनुसार ISO/IEC 17025:2017 (NABL) और ISO 9001:2015 जैसे मानक बनाए रखे हैं। रोग परीक्षण विधियों में दक्षता बनाए रखने के लिए, प्रयोगशाला ने 2023-24 में BVD, IBR और ब्रुसेलोसिस के लिए वेटक्वास, पशु एवं पादप स्वास्थ्य एजेसी (APHA), यूनाइटेड किंगडम(UK) द्वारा प्रस्तुत किए जाने वाले 3 दक्षता परीक्षण (PT) कार्यक्रमों के लिए भी नामांकन किया।

पशु झुंडों में रोग की स्थिति के निर्धारण के लिए पूल्ड सीरम सैम्पल परीक्षण (PST)

किफायती और रोगों के प्रसार को रोकने की व्यापक क्षमता के कारण पीएसटी विशेष रूप से निम्न व मध्यम आय वाले देशों में पशु रोगों की जांच की एक किफायती विधि है। एक अध्ययन में 1800 सीरम सैम्पलों के साथ 10 सीरा पूल का उपयोग करते हुए पीएसटी को पशु झुंडों की स्क्रीनिंग के लिए प्रभावी पाया गया, जिसमें एंजूटिक बोवाइन ल्यूकोसिस (0.91 प्रतिशत) और ब्रुसेलोसिस (1. 68 प्रतिशत) का प्रसार कम था। पीएसटी ने उच्च ससेप्टिबिल्टी (> 97 प्रतिशत) और विशिष्टता (> 96 प्रतिशत) का प्रदर्शन किया। लागत का विश्लेषण करने से ज्ञात हुआ कि पीएसटी विकल्प अपनाने से ब्रुसेलोसिस और ईबीएल के परीक्षण में क्रमशः 70 प्रतिशत और 80 प्रतिशत की लागत में बचत हो सकती है।

आईबीआर निदान में प्रयुक्त संदर्भ मानक

एनडीडीबी आर एंड डी प्रयोगशाला ने आईबीआर के सीरोलॉजिकल निदान के लिए ISO और WHO मार्गदर्शन मैनुअल का पालन करते हुए संदर्भ सीरा का एक पैनल विकसित किया। इस पैनल में विभिन्न रोग स्थितियों का सीरा शामिल है: जैसे स्ट्रांग पॉजिटिव, मीडियम पॉजिटिव, लो पॉजिटिव और नेगेटिव, जो पूरे भारत में प्रयोगशाला निदान के लिए गुणवत्ता नियंत्रण मानकों के रूप में प्रयुक्त होता है। इन सीरा के एलिकोट का विश्लेषण WRL-IBR में किया गया, जो प्रयोगशाला निदान में उनकी स्थिति और उपयोग के लिए अनुकूलता की पुष्टि करता है।

गायों का टीकाकरण

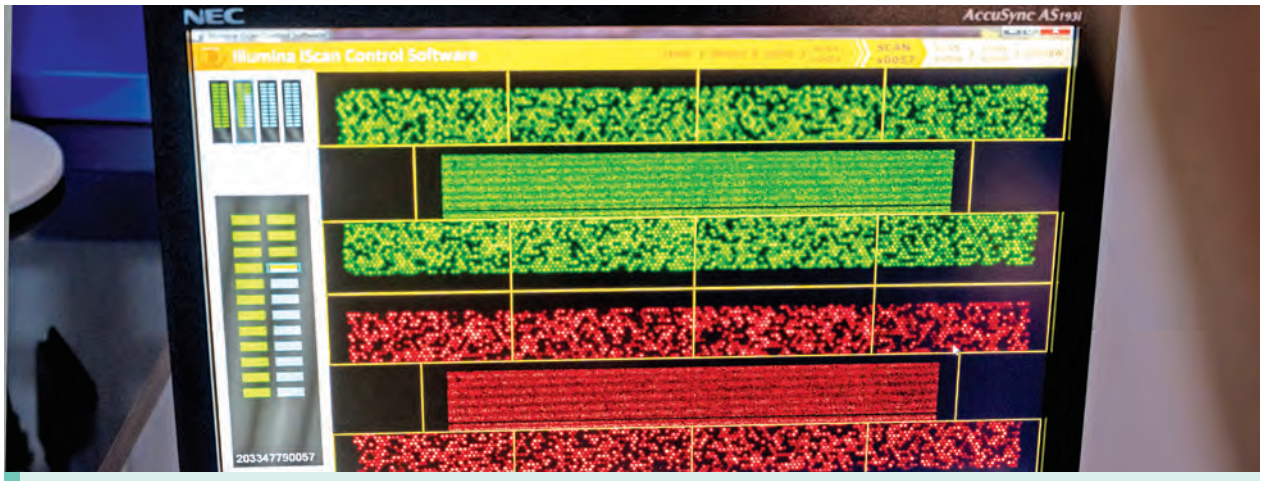

iScan पर जीनोटाइपिंग चिप की स्कैनिंग

नवाचार

GauSort™ - स्वदेशी रूप से विकसित सेक्स-सॉर्टिंग तकनीक

यह एक ऐसी तकनीक है जो कृत्रिम गर्भाधान के माध्यम से मादा बछड़ों के जन्म को सुनिश्चित करती है तथा यह तकनीक न केवल नर बछड़ों की देखभाल की आवश्यकता को समाप्त करके डेरी किसानों पर पड़ने वाले वित्तीय बोझ को कम करती है, बल्कि सर्वोत्तम गायों के एवज में अधिक बछिया पैदा करने की क्षमता भी प्रदान करती है। भारत में, एक किफायती सेक्स-सॉर्टिंग तकनीक की आवश्यकता थी जो डेरी किसानों की आय को बढ़ा सके। हालाँकि, उपलब्ध तकनीकों का स्वामित्व कुछ बहुराष्ट्रीय निगमों के पास है, जिससे हमारे किसान सेक्स-सॉर्टेड वीर्य डोज को खरीद करने में असमर्थ है। माननीय प्रधानमंत्री के 'मेक इन इंडिया' और 'आत्मनिर्भर भारत' के विजन के अनुरूप, एनडीडीबी डेरी सर्विसेज ने एक स्वदेशी, किफायती सेक्स-सॉर्टिंग तकनीक का विकास किया है और इसे राष्ट्रीय गोकुल मिशन के तहत् वित्त पोषित किया जा रहा है। इस पहल का उद्देश्य हमारे किसानों के लिए किफायती मूल्य पर सेक्स-सॉर्टेड सीमन की उपलब्धता बढ़ाना है।

स्वदेशी रूप से विकसित GauSort™ सेक्स-सॉर्टिंग मशीन, अब पूरी तरह क्रियाशील एवं उपयोग के लिए तैयार है। इस मशीन से सेक्स-सॉर्टेड सीमन डोज की लागत में काफी कमी आने की संभावना है, जिससे देश भर में डेरी क्षेत्र से संबंधित आठ करोड़ छोटे और सीमांत किसानों को लाभ होगा।

पायलट गोबर आधारित ग्रीन हाइड्रोजन संयंत्र की स्थापना

एनडीडीबी ने सस्टेन प्लस एनर्जी फाउंडेशन के सहयोग से बनास डेरी के बायोसीएनजी प्लांट में पायलट गोबर आधारित ग्रीन हाइड्रोजन संयंत्र स्थापित किया। यह सुविधा बायोसीएनजी से हाइड्रोजन और कार्बन ब्लैक के उत्पादन को बढावा देती है, जो सतत् ऊर्जा पहलों में एक महत्वपूर्ण प्रगति को चिह्नित करती है।

जीनोमिक चयन में कन्वर्जेन्स के लिए एकीकृत जीनोटाइपिंग चिप्स

देश में विभिन्न एजेंसियां स्वतंत्र रूप से गोवंशीय पशुओं के जीनोमिक चयन करने की दिशा में काम कर रही हैं। हालाँकि, प्रत्येक संस्था स्वतंत्र रूप से विकसित जीनोमिक चिप्स का उपयोग कर रही है, क्योंकि जीनोमिक चयन के लिए संदर्भ जनसंख्या का विस्तार करने हेतु यह आवश्यक है कि विभिन्न नस्लों पर भिन्न-भिन्न एजेंसियों के माध्यम से उत्पन्न डेटा को संकलित किया जाए। इसके लिए उपयोग की जाने वाली जीनोटाइपिंग चिप्स उपयुक्त होनी चाहिए।

एनडीडीबी ने इस कन्वर्जेन्स को प्राप्त करने के लिए विभिन्न संस्थानों द्वारा उत्पन्न डेटा को संकलित करके एक सामान्य जीनोटाइपिंग चिप विकसित करने की पहल की। आईसीएआर नेशनल ब्यूरो ऑफ एनिमल जेनेटिक रिसोर्सेज (NBAGR), बीएआईएफ रिसर्च फाउंडेशन, नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ एनिमल

बायोटेक्नोलॉजी (NIAB) और एनडीडीबी द्वारा स्वतंत्र रूप से तैयार किए गए बड़े जीनोटाइप डेटा का उपयोग एक पैनल का चयन करने के लिए किया गया, जिसमें गायों और भैंसों की देशी नस्लों के लिए वांछित परिवर्तनशीलता की मांग की एवं मूल चिप वर्जन को वापस करने में भी मदद की।

ICAR-NBAGR एवं एनडीडीबी द्वारा एकीकृत जीनोटाइपिंग चिप्स INDUSCHIP4 और BUFFCHIP4 को सफलतापूर्वक विकसित तथा निर्मित किया गया। ये चिप्स अब व्यावसायिक रूप से उपलब्ध हैं, जो जीनोमिक चयन के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। इसके अलावा, किसानों को जीनोमिक चयन सेवाएँ प्रदान की जा रही हैं, जिससे वे बछिया और युवा सांड़ो का शीघ्र चयन कर सकें।

स्वदेशी आईवीएफ मीडिया सूट का विकास

एनडीडीबी की ओवम पिक-अप, इन विट्रो एम्ब्रियो प्रोडक्शन और एम्ब्रियो ट्रांसफर(OPU-IVEP-ET) सुविधाओं ने गायों और भैंसों के लिए तकनीकी दक्षता और किफायतीता बढ़ाने के अपने प्रयासों को जारी रखा। आईवीएफ भ्रूणों हेतु महत्वपूर्ण लागत कारक आयातित माध्यम से इसका उपयोग किया जाना है। एनडीडीबी ने एनडीडीबी की पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी इंडियन इम्यूनोलॉजिकल लिमिटेड (IIL) की सहायता से एक स्वदेशी OPU-IVEP-ET कल्चर मीडिया सूट विकसित करने का काम शुरू किया गया है, जिसमें आईवीईपी की पूरी प्रक्रिया में उपयोग किए जाने वाले पांच अलग-अलग मीडिया शामिल हैं। मीडिया सूट परीक्षणों के प्रारंभिक परिणाम आशाजनक रहे क्योंकि इन परीक्षणों से जीवित और स्वस्थ बछड़ों का जन्म हुआ। स्वदेशी रूप से विकसित तकनीकी का उपयोग करने से लागत में लगभग दो-तिहाई की कमी आई है, जिससे भारतीय डेरी फार्मिंग परिदृश्य में इसकी स्वीकार्यता बढ़ने की संभावना है।

रेडी-टू-यूज कल्चर

रेडी-टू-यूज़ कल्चर (RUC) विकास में अनुसंधान और विकास के प्रयास इस वर्ष भी जारी रहे, जिसमें टेक्सचराइजिंग गुणों वाले कल्चर में आरयूसी प्रक्रिया के हार्वेस्टिंग एवं ड्राइंड के चरणों को परिष्कृत करके उत्पादकता बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित किया गया है। प्रासंगिक तकनीकी लक्षणों को प्रदर्शित करने वाले थर्टी लैक्टिक एसिड बैक्टीरिया स्ट्रेन को अलग कर उनकी पहचान की गई। इन बैक्टीरियाओं का आरयूसी प्रक्रिया में जांच किया जा रहा है तथा इन मल्टी-स्ट्रेन मिश्रणों का निर्माण, उत्पाद परीक्षण, संवेदी मूल्यांकन और शेल्फ-लाइफ अध्ययन के अधीन किया जा रहा है।

रेडी-टू-यूज़ कल्चर के मल्टी-स्ट्रेन फॉर्मूलेशन की तैयारी

मिलेट आधारित डेरी उत्पाद

एनडीडीबी अनुसंधान और विकास गतिविधियों के माध्यम से नए उत्पादों एवं प्रक्रियाओं का विकास और परिशोधन करती है। संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा इस वर्ष को अंतर्राष्ट्रीय मिलेट वर्ष के रूप में घोषित किया गया है। एनडीडीबी ने मुख्य सामग्री के रूप में बाजरा को शामिल करते हुए डेरी उत्पादों को विकसित करने पर ध्यान केंद्रित किया। इन प्रयासों के परिणामस्वरूप दो उत्पाद विकसित किए गए जिनमें शामिल हैः (1) मिलेट-आधारित फर्मन्टेड़ उत्पाद जो दही जैसा दिखता है और (2) मिलेट-आधारित मीडियम फैट वाली आइसक्रीम। इन उत्पादों के व्यंजनों को उपभोक्ता की प्राथमिकताओं के आधार पर अकेले या संयोजन में विभिन्न प्रकार के मिलेट को समायोजित करने के लिए मानकीकृत किया गया है। मिलेट सूक्ष्म पोषक तत्वों, आहार फाइबर से भरपूर होता है और गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल स्वास्थ्य, रक्त लिपिड प्रोफाइल और रक्त शर्करा निकासी में सुधार सहित कई स्वास्थ्य लाभ प्रदान करता है।

हब और स्पोक मॉडल: OPU-IVEP-ET तकनीकी के प्रचार के लिए सस्टेनेबल मॉडल बनाना

एनडीडीबी दूध संघों के सहयोग से किसानों के दरवाजे तक ओवम पिक-अप, इन विट्रो भ्रूण उत्पादन और भ्रूण प्रत्यारोपण (OPU-IVEP-ET) तकनीक लाने के लिए हब एंड स्पोक मॉडल लागू कर रही है। इस मॉडल का लक्ष्य जिम्मेदारियों को साझा करके भारत में भ्रूण प्रत्यारोपण को सस्टेनेबेल बनाना है। इस मॉडल में, एनडीडीबी प्रयोगशाला भ्रूण उत्पादन के लिए 'हब' के रूप में कार्य करती है और क्षेत्र में ओपीयू और ईटी के लिए महत्वपूर्ण प्रारंभिक सहायता प्रदान करती है। एनडीडीबी द्वारा दूध संघ के 'स्पोक' के रूप में काम करना, श्रेष्ठ डोनर की पहचान करना, ग्राही को सिंक्रनाइज़ करना, गर्मी में आने का पता लगाना, क्षेत्र में भ्रूण प्रत्यारोपण करना और किसानों में जागरूकता बढ़ाना आदि कार्य सपन्न किए जाते हैं।

अमूल डेरी और बनास डेरी से शुरू होकर, नेटवर्क का विस्तार साबर डेरी, महेसाणा डेरी और सुमुल डेरी तक हो गया है, जो गुजरात के पांच सबसे बड़े दूध संघों को कवर करता है। इस दृष्टिकोण की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि यह है कि इन दूध संघों में अब कम से कम 20 पशु चिकित्सक उपलब्ध हैं जो आत्मविश्वास से भ्रूण प्रत्यारोपित कर सकते हैं, जो प्रशिक्षित जनशक्ति विकसित करने में मॉडल की सफलता का प्रमाण है।

किसानों की सकारात्मक प्रतिक्रिया न केवल मॉडल की प्रभावशीलता को प्रमाणित करती है बल्कि डेरी उद्योग में उन्नत प्रजनन तकनीकों की आवश्यकता पर भी प्रकाश डालती है। किसानों के बीच बढ़ती मांग के साथ अमूल ने पहले ही बनास, साबर और महेसाणा दूध संघों के साथ अपनी प्रयोगशाला स्थापित कर ली है। एनडीडीबी ने इन पहलों में सहयोग करने,

हब एंड स्पोक मॉडल के के अंतर्गत ओपीयू-आईवीईपी-ईटी के माध्यम से पैदा हुए बछड़े

उद्यमियों के लिए लघु स्तर की दूध प्रसंस्करण इकाई विकसित की गई

प्रयोगशालाओं को प्रभावी ढंग से स्थापित करने एवं संचालित करने के लिए विशेषज्ञता और सहायता प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

ये प्रयास पशुओं की आनुवंशिकी क्षमता को बढ़ाने, उत्पादकता में सुधार करने और अंततः OPU-IVEP-ET का बड़े पैमाने पर उपयोग करके किसानों की आय को बढ़ावा देने के लिए तैयार किए गए हैं।

फल और सब्जी प्रसंस्करण उद्योगों के अपशिष्ट से साइलेज बनाना

देश में चारे की उपलब्धता को बढ़ाने के लिए पारंपरिक चारा फसलों के साथ-साथ गैरपारंपरिक चारा संसाधनों पता लगाना जरूरी है। फलों और सब्जियों के अपशिष्ट जैसे कि मटर के छिलके, दुधारू पशुओं के लिए गुणवत्तापूर्ण चारे के स्रोत के रूप में महत्वपूर्ण हैं। हालाँकि, इन ज्यादा नमी वाली सामग्रियों के संरक्षण में चुनौती का सामना करना पड़ता है। एनडीडीबी, विभिन्न हितधारकों के सहयोग से, साइलेज बनाने के लिए ऐसी सामग्रियों का उपयोग करने की संभावनाओं की तलाश कर रही है।

प्रयोगशाला में किए गए प्रयोगों और क्षेत्रीय परीक्षणों के बाद, एनडीडीबी ने इन उच्च नमी वाले मटर के छिलके का उपयोग करके साइलेज बनाने की प्रक्रिया को सफलतापूर्वक मानकीकृत किया है। वर्ष 2023-24 के दौरान, मदर डेरी फ्रूट एंड वेजिटेबल प्राइवेट लिमिटेड (MDFVPL), मंगोलपुरी और झारखंड दूध महासंघ (JMF), रांची के सहयोग से मटर के खाली छिलकों (EPP) से साइलेज बनाने का सफल प्रदर्शन किया गया। दो अलग-अलग स्थानों पर लगभग 135 मीट्रिक टन (रांची में 54 मीट्रिक टन और मंगोलपुरी में 81 मीट्रिक टन) ईपीपी साइलेज बनाया गया। ईपीपी साइलेज बनाने से सब्जियों के अपशिष्ट पदार्थ के उपयोग का मार्ग प्रशस्त होगा और इस प्रकार दुधारू पशुओं के लिए कम लागत में गुणवत्तापूर्ण चारा उपलब्ध होगा।

छोटे पैमाने की दूध प्रसंस्करण इकाई

छोटे किसानों के बीच दूध प्रसंस्करण और डेरी उत्पाद निर्माण में उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए एनडीडीबी ने आईडीएमसी के साथ मिलकर छोटे पैमाने पर दूध प्रसंस्करण उपकरण संयंत्र स्थापित और संचालित करने के लिए सहयोग दिया, जो 100 लीटर दूध का संचालन करने में सक्षम है। यह सुविधा बाजार के दूध, दही/लस्सी, खोआ, घी, मोजरेला पनीर और श्रीखंड के उत्पादन के लिए सुसज्जित प्रसंस्करण इकाई है।

भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने उत्तर प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री श्री योगी आदियनाथ की उपस्थिति में वाराणसी में गोबर आधारित बायोगैस उत्पादन संयंत्र का उद्घाटन करते हुए

सस्टेनेबिलिटी

एनडीडीबी ने प्रभावी खाद प्रबंधन के क्षेत्र में अपने प्रयासों को जारी रखते हुए परियोजना को बढ़ावा देने हेतु विभिन्न पहल की और खाद मूल्य श्रृंखला के विभिन्न मॉडल विकसित किए, जिसके परिणामस्वरूप स्वच्छ ऊर्जा का उत्पादन और सतत् विकास का विस्तार हुआ।

खाद प्रबंधन पहल

जाकरियापुरा मॉडल

एनडीडीबी ने 2018 से विभिन्न नवीन खाद प्रबंधन की अनेक पहल की हैं, जिसमें प्रमुख रूप से आणंद, गुजरात में जाकारियापुरा मॉडल की स्थापना शामिल है। यह मॉडल एक व्यापक खाद मूल्य श्रृंखला को एकीकृत करता है, जिसकी शुरुआत 2-3 गांवों के डेरी किसानों के आंगन में छोटे पैमाने के बायोगैस संयंत्रों की स्थापना से होती है। इस पहल में एक केंद्रीय स्लरी प्रसंस्करण संयंत्र शामिल है जहां इन संयंत्रों से बायोगैस घोल एकत्र किया जाता है और विभिन्न मूल्य वर्धित उर्वरकों में संसाधित किया जाता है। जाकारियापुरा मॉडल की सफलता के आधार पर एनडीडीबी ने इस मॉडल को भारत के सात राज्यों में नौ स्थानों पर विस्तारित करने के लिए सस्टेन प्लस एनर्जी फाउंडेशन (टाटा ट्रस्ट की पहल) के साथ साझेदारी की। प्रत्येक स्थान पर स्लरी प्रसंस्करण केंद्रों की शुरूआत करने के साथ-साथ 1,000 से अधिक बायोगैस संयंत्रों की स्थापना पूरी की गई। संयंत्रों में इन स्लरी प्रोसेसिंग प्लांट में विभिन्न प्रकार के स्लरी आधारित ऑर्गेनिक उर्वरकों का उत्पादन शुरू किया गया। इस प्रकार का एक मॉडल IOCL के सीएसआर सहयोग से बरौनी डेरी में एनडीडीबी द्वारा स्थापित किया गया, जिसने वर्ष के दौरान अपना सफल संचालन जारी रखा।

गोबरधन योजना के तहत क्लस्टर गोबर गैस मॉडल का कार्यान्वयन

गुजरात सरकार द्वारा 25 जिलों में केन्द्रीय प्रायोजित योजना 'गोबरधन' के लिए एनडीडीबी को 'मुख्य कार्यान्वयन एजेंसी' के रूप में नियुक्त किया गया । इस योजना के तहत, एनडीडीबी ने जाकरियापुरा मॉडल का अनुसरण करते हुए क्लस्टर स्तर पर 5,000 बायोगैस संयंत्रों को सफलतापूर्वक स्थापित किया।

वाराणसी मॉडल

एनडीडीबी ने वाराणसी दूध संघ में वाराणसी मॉडल लागू किया, जिसमें गोबर आधारित बायोगैस उत्पादन संयंत्र शामिल है जो डेरी संयंत्र की तापीय और विद्युत ऊर्जा की आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम है। यह संयंत्र प्रतिदिन 10-15 किमी के दायरे में किसानों और गौशालाओं से प्राप्त 100 मीट्रिक टन गोबर को संसाधित करता है, जिससे प्रतिदिन 4,000 क्यूबिक मीटर बायोगैस

का उत्पादन होता है। उत्पन्न बायोगैस स्लरी को ठोस और तरल घटकों में अलग किया जाता है, जिसका उपयोग ऑर्गेनिक फर्टिलाइजर के उत्पादन हेतु किया जाता है।

वाराणसी मॉडल का उद्घाटन माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा जुलाई 2023 में किया गया, संयंत्र संचालन के पहले वर्ष में, संयंत्र ने 18,932 मीट्रिक टन गोबर संसाधित किया। वर्ष के दौरान 1,940 मीट्रिक टन ऑर्गेनिक खाद और PROM बेची गई। डेरी प्लांट में लाइट डीजल ऑयल (LDO) के उपयोग की जगह बायोगैस के उपयोग से दूध प्रसंस्करण लागत में 40-50 पैसे प्रति लीटर की कमी आई। एनडीडीबी अपनी सफलता के आधार पर गुजरात में साबरकांठा दूध संघ और बिहार में बरौनी डेरी जैसे स्थानों पर वाराणसी मॉडल को दोहराएगी। इस संबंध में, साबरकांठा बायोगैस संयंत्र के आसपास गोबर की उपलब्धता और खरीद क्षमता का आकलन करने के लिए एक अध्ययन किया गया। साबर डेरी, एनडीडीबी और एनडीडीबी मृदा लिमिटेड ने बायोगैस उत्पादन के लिए हिम्मतनगर में 100 मीटप्रदि गोबर आधारित बायोगैस संयंत्र स्थापित करने के लिए सहयोग किया। एक मूल्यांकन के तहत संयंत्र के आस-पास के 15 किलोमीटर के दायरे में संभावित गोबर खरीदी करने के लिए 110 गांवों की पहचान की गई, जिससे दैनिक गोबर उत्पादन 1,337 टन होने का अनुमान लगाया गया, जिसमें किसानों की नियमित रूप से गोबर बेचने की प्रवृति को देखते हुए प्रतिदिन 428 टन शुद्ध गोबर उपलब्ध होगा।

एनडीडीबी बिना किसी शुल्क के बरौनी डेरी में गोबर आधारित बायोगैस संयंत्र स्थापित करेगी और सभी आवश्यक तकनीकी सहायता प्रदान करेगी। यह संयंत्र वाराणसी मॉडल के अनुसार स्थापित किया जाएगा। उत्पादित बायोगैस का उपयोग डेरी संयंत्र की थर्मल ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए भाप उत्पन्न करने के लिए किया जाएगा, जो सतत् ऊर्जा उपयोग के लिए एक अभिनव पहल है। इसके अलावा, ऑर्गेनिक्स फर्टिलाइजर के उत्पादन के लिए उप-उत्पाद के रूप में स्लरी को संसाधित किया जाएगा। इस पहल को एनडीडीबी फाउंडेशन फॉर न्यूट्रीशन के गो-ग्रीन कार्यक्रम के तहत ओएनजीसी के सीएसआर योगदान के माध्यम से वित्त पोषित किया गया है।

बनास मॉडल

बनास डेरी ने 2020 में बड़े पैमाने पर बायोगैस इकाई स्थापित करके एक अभिनव खाद प्रबंधन पहल शुरूआत की, जो 2,000 क्यूबिक मीटर कच्चा बायोगैस का उत्पादन करने में सक्षम है। यह मॉडल, जिसे बनास मॉडल के नाम से जाना जाता है, ऑर्गेनिक उर्वरक उत्पादन के लिए बायोगैस स्लरी का उपयोग करते हुए, वाहनों के लिए बायो-सीएनजी में कच्चे बायोगैस को कम्प्रैस्ड और शुद्ध करता है। यह संयंत्र बारह गांवों के 250 से अधिक किसानों से प्रतिदिन 40 टन गोबर एकत्र करता है। एनडीडीबी ने सुजुकी आर

श्री गिरिराज सिंह, माननीय ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मंत्री ने बरौनी डेरी में 100 मीटप्रदि क्षमता के गोबर आधारित बायोगैस संयंत्र की आधारशिला रखते हुए

एंड डी सेंटर इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (SRDI) और बनास डेरी के सहयोग से बनास मॉडल को दोहराने के लिए बनासकांठा जिले में चार सीबीजी परियोजनाओं की स्थापना करने की शुरूआत की हैं, जो वाहन ईंधन के रूप में गोबर आधारित कम्प्रैस्ड बायोगैस (CBG) को बढ़ावा देती है।

कंसंट्रेडेट सोलर थर्मल (CST)

डेरी संयंत्रों में सफाई और उत्पादन कार्यों के लिए गर्म पानी की आवश्यकता होती है। एनडीडीबी पानी को गर्म करने हेतु सौर विकिरण का उपयोग करने के लिए अपनी इंजीनियरिंग परियोजनाओं में कंसंट्रेडेट सोलर थर्मल (CST) प्रणालियों का उपयोग करती है। इस वर्ष, एनडीडीबी ने असम के वामूल स्थित पूरबी डेरी में दस लाख किलो कैलोरी/दिन की क्षमता वाली सीएसटी परियोजना की शुरूआत की है।

सोलर फोटोवोल्टिक (Solar PV)

सौर विकिरण को कैप्चर करके बिजली पैदा करने के लिए सौर फोटोवोल्टिक सिस्टम महत्वपूर्ण हैं। एनडीडीबी ने इस वर्ष दो परियोजनाएं शुरू की हैं:

- साबरमती आश्रम गौशाला, बीडज, गुजरात में 250 किलोवाट का सिस्टम
- इंडियन डेरी एसोसिएशन (IDA) हाउस, दिल्ली में 25 किलोवाट का सिस्टम

इसके इंस्टालेशन के लिए छतों और छाया-मुक्त क्षेत्रों का उपयोग किया जाता है, जिससे बिजली की खपत में काफी कमी आती है।

एक बछड़े की सस्टेनेबल भविष्य की ओर यात्रा

डेरी को अगले स्तर पर ले जाने के लिए सरकार के प्रयासों के साथ सामंजस्य स्थापित करना

राष्ट्रीय गोकुल मिशन

एनडीडीबी भारत सरकार की केंद्रीय क्षेत्र राष्ट्रीय गोकुल मिशन (RGM) योजना के अंतर्गत स्वीकृत विभिन्न परियोजनाओं का कार्यान्वयन और निगरानी कर रही है। ये परियोजनाएं राज्य पशुधन विकास बोर्डों, सहकारी दुग्ध महासंघों, दूध संघों, गैर सरकारी संस्थाओ और एनडीडीबी की सहायक कंपनियों के सहयोग से क्रियान्वित की जा रही हैं।

संतति परीक्षण (PT) और वंशावली चयन (PS) कार्यक्रम

संतति परीक्षण – गायों और भैंसों की उत्पादकता में सुधार के लिए आनुवंशिक क्षमता को बढ़ाने के लिए वैज्ञानिक रूप से डिजाइन किए गए पीटी कार्यक्रम चल रहे हैं। इन पहलों का उद्देश्य पुत्री के प्रदर्शन के आधार पर श्रेष्ठ नर पशुओं का चयन करना और नामांकित प्रजनन के माध्यम से श्रेष्ठ माताओं से उच्च आनुवंशिक गुण वाले सांड़ पैदा करना है। राष्ट्रीय गोकुल मिशन (RGM) के तहत पूरे नौ राज्यों में लागू किए गए इस कार्यक्रम में निम्नलिखित नस्लों की गायें शामिल हैं: गिर, साहिवाल, जर्सी, एचएफ (CBHF) और जर्सी (CBJY) के क्रॉसब्रीड और भैंस की मुर्रा और मेहसाना नस्लें।

वर्ष के दौरान, इन परियोजनाओं ने लगातार उच्च आनुवंशिक गुण वाले सांड़ प्रदान किए, जिसके लिए जीपीएस निर्देशांक का उपयोग करते हुए दूध रिकॉर्डिंग गतिविधियों की सटीक ट्रैकिंग पर निर्मित विस्तारित डेटाबेस का उपयोग किया गया, साथ ही डेटा की सटीकता सुनिश्चित करने के लिए प्रजनन गतिविधियों की निगरानी हेतु कई पर्यवेक्षण स्तरों का उपयोग किया गया।

वर्ष 2023-24 में, सभी पीटी परियोजनाओं ने सामूहिक रूप से 194 सांड़ों का परीक्षण किया और 55,880 पशुओं के लिए दूध की रिकॉर्डिंग की। इन प्रयासों के परिणामस्वरूप उच्च आनुवंशिक गुण वाले सांड की खरीद की गई, जिन्हें रोग-मुक्त हिमीकृत वीर्य डोज (FSD) के उत्पादन के लिए वीर्य केंद्रों में वितरित किया गया, जिससे राष्ट्रव्यापी कृत्रिम गर्भाधान में सहयोग मिला। इन सांड़ों का चयन उनके प्रजनन मूल्यों के आधार पर दूध उत्पादन के लिए किया गया और डीएनए आधारित पितृत्व परीक्षण के माध्यम से पितृत्व की पुष्टि की गई । आनुवांशिक विकारों की स्क्रीनिंग भी चयन मानदंडों का एक हिस्सा था ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि वीर्य उत्पादन के लिए उत्पादित और वितरित सांड़ आनुवांशिक विकारों से मुक्त हों। विशेष रूप से, इन साड़ों का भारत सरकार द्वारा निर्धारित दिशानिर्देशों के अनुसार संक्रामक रोगों के लिए भी परीक्षण किया गया, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि वे पहचान किए गए सांड़ संक्रामक/यौन रोगों से मुक्त थे। इसके अतिरिक्त,फैट, एसएनएफ, प्रोटीन की पैदावार, ओपन पीरियड, पहली व्यांत के समय उम्र और टाइप लक्षणों के लिए प्रजनन मूल्य भी आनुवंशिक चयन को और बढ़ाने के लिए अनुमानित किए गए । इन परियोजनाओं के अंतर्गत एनिमल टाईप वर्गीकरण भी किया जाता है। यह व्यापक दृष्टिकोण पीटी कार्यक्रमों की प्रतिबद्धता और आनुवंशिक सुधार को आगे बढ़ाने के साथ-साथ डेरी पशुओं की उत्पादकता बढ़ाने में उनकी प्रभावशीलता को रेखांकित करता है।

आरजीएम योजना अंतर्गत कार्यान्वित पीटी परियोजनाओं का विवरण नीचे तालिका में दिया गया है:

क्रमांक	राज्य	ईआईए का नाम	नस्ल
1	आंध्र प्रदेश	एपीएलडीए	जर्सी सीबी
2	गुजरात	एसएजी	मुर्रा
3	गुजरात	एसएजी	एचएफसीबी
4	गुजरात	महेसाणा दूध संघ	महेसाना
5	गुजरात	बनास दूध संघ	महेसाना
6	गुजरात	एसएजी	गिर
7	हरियाणा	एचएलडीबी	मुर्रा
8	हिमाचल प्रदेश	एचपीएलडीबी	जर्सी
9	केरल	केएलडीबी	एचएफसीबी
10	पंजाब	पीएलडीबी	मुर्रा
11	पंजाब	पीएलडीबी	साहीवाल
12	राजस्थान	श्री गंगानगर दूध संघ	साहीवाल
13	तमिलनाडु	टीसीएमपीएफ	जर्सी सीबी
14	उत्तर प्रदेश	एब्रो	मुर्रा

डेरी को अगले स्तर पर ले जाने के लिए सरकार के प्रयासों के साथ सामंजस्य स्थापित करना

वंशावली चयन कार्यक्रम के अंतर्गत दूध की रिकॉर्डिंग

वंशावली चयन

कई देशी गायों और भैंस नस्लों में महत्वपूर्ण डेरी क्षमता के साथ-साथ कम इनपुट प्रणालियों के प्रति अनुकूलता, गर्मी को सहन करने की क्षमता और रोग प्रतिरोधक क्षमता जैसे वांछनीय लक्षण दिखाई देते हैं। हालांकि, एआई के अपनाने में कमी के कारण, ऐसी नस्लों में पीटी कार्यक्रम को लागू करना संभव नहीं है। इन नस्लों के आनुवंशिक सुधार में सहयोग करने के लिए वंशावली चयन (PS) कार्यक्रम लागू किए गए हैं, जिसका लक्ष्य अंततः इन परियोजनाओं को संतति परीक्षण कार्यक्रमों में बदलना है। यह बदलाव, तब होगा जब, ब्रीडिंग ट्रेक्ट या केंद्रित भौगोलिक क्षेत्रों में पर्याप्त संख्या में कृत्रिम गर्भाधान (AI) दर्ज किए जाएँगे, जहाँ ये नस्लें पायी जाती हैं।

इसके अलावा, वंशावली चयन परियोजनाएं इन देशी गाय और भैंस नस्लों के क्षेत्र-आधारित विकास और संरक्षण में सहयोग प्रदान करती हैं। इसे संचालित करने के लिए, पशु आबादी के भीतर श्रेष्ठ पशुओं का चयन किया जाता है और कृत्रिम गर्भाधान पहुँच के लिए एक मजबूत बुनियादी ढांचे की स्थापना करके उनकी आनुवंशिकी को बड़ी आबादी में प्रसारित किया जाता है। इसके अलावा, इस प्रकार की परियोजनाएं किसानों के बीच आनुवंशिक सुधार कार्यक्रमों के महत्व और लाभों के बारे में जागरूकता पैदा करती हैं, इन समुदाय में सतत् प्रजनन पद्धतियों के क्रियान्वयन को बढ़ावा देती हैं।

आरजीएम के तहत, एनडीडीबी नौ पीएस परियोजनाओं के कार्यान्वयन में सक्रिय रूप से शामिल है। इन परियोजनाओं में गायों की नस्लों में गावलाओं हरियाना, कांकरेज, थारपारकर और राठी तथा भैंस की नस्लों में बन्नी, जाफराबादी, नीली-रावी और पंढरपुरी जैसी नस्लों को शामिल किया गया है।पूरे वर्ष दौरान, पीएस परियोजनाओं ने सामूहिक रूप से कुल 72,813 एआई किए और इनमें से 7,195 पशुओं को दूध रिकॉर्डिंग के तहत शामिल किया गया। ये प्रयास देशी नस्लों की आनुवंशिक क्षमता और उत्पादकता को बढ़ाने पर केंद्रित हैं जो संबंधित क्षेत्रों में डेरी क्षेत्र के सतत् विकास के लिए आवश्यक है।

आरजीएम के अंतर्गत कार्यान्वित पीएस परियोजनाओं का विवरण निम्नलिखित तालिका में दिया गया है:

क्र. सं.	राज्य	ईआईए का नाम	नस्ल
1	गुजरात	एसएजी	जाफराबादी
2	गुजरात	बनास दूध संघ	कांकरेज
3	गुजरात	कच्छ दूध संघ	बन्नी
4	हरियाणा	एचएलडीबी	हरियाना
5	महाराष्ट्र	एमएलडीबी	गावलाओ
6	महाराष्ट्र	एमएलडीबी	पंढरपुरी
7	पंजाब	पीएलडीबी	नीली-रावी
8	राजस्थान	आरएलडीबी	थारपारकर
9	राजस्थान	उरमूल ट्रस्ट	राठी

इसके अलावा, एनडीडीबी ने एक "बुल डिस्ट्रीब्यूशन सॉफ्टवेयर (BDS) " विकसित किया है जिसका उपयोग पूरे देश के विभिन्न वीर्य केंद्रों में पीटी और पीएस परियोजनाओं द्वारा उत्पादित एचजीएम साड़ों के स्वचालित, निष्पक्ष और समय पर वितरण को सुनिश्चित करने के लिए किया जाता है।

देशी नस्लों के लिए राष्ट्रीय गोवंशीय जीनोमिक केंद्र (NBGC-IB)

आरजीएम की पीटी/ पीएस परियोजनाओं के तहत फेनोटाइप रिकॉर्डिंग का उपयोग करते हुए, जीनोमिक चयन के लिए संदर्भ आबादी की निरंतरता के लिए दूध रिकार्ड किए गए पशुओं के ब्लड/टिश्यू के सैंपल एकत्र किए गए। प्रदर्शन दर्ज किए गए पशुओं और सांड़ों से कुल 18,363 ब्लड/टिश्यू सैंपल एकत्र किए गए और उनको डीएनए की जांच के लिए प्रोसेस किया गया। 14,433 पशुओं के सैंपल इंडसचिप (INDUSCHIP) और बफचिप (BUFFCHIP) के नए वर्जन का उपयोग करके जीनोटाइप किए गए। गिर, साहीवाल, संकर एचएफ, संकर जर्सी गायों और मुर्रा तथा मेहसाना भैंस नस्लों के सांड़ बछड़ों का चयन उनके जीनोमिक प्रजनन मूल्यों के आधार पर किया गया।

एसएजी, बीडज की ईटीटी/आईवीएफ सुविधा का सुदृढ़ीकरण

भारत सरकार की राष्ट्रीय गोकुल मिशन (RGM) योजना के तहत, एनडीडीबी ने बीडज के एसएजी में भ्रूण प्रत्यारोपण (ET) और इन-विट्रो फर्टिलाइजेशन (IVF) सुविधा को मजबूत करने के उद्देश्य से परियोजना को लागू किया। इस परियोजना का उद्देश्य क्रमशः वीर्य उत्पादन और पशु प्रतिस्थापन के लिए श्रेष्ठ नर और मादा बछड़ों का उत्पादन करना है। वर्ष भर में, कुल 180 भ्रूणों को उपयुक्त ग्राही पशुओं में सफलतापूर्वक प्रत्यारोपित किया गया, जिसके परिणामस्वरूप इस अवधि के दौरान 20 बछड़ों का जन्म हुआ।

गर्भधारण के लिए सेक्स-सॉर्टेड सीमन का उपयोग कर इन विट्रो फर्टिलाइज्ड भ्रूण के माध्यम से शीघ्र नस्ल सुधार कार्यक्रम (ABIP-IVF-ET)

राष्ट्रीय गोकुल मिशन (RGM) योजना के तहत इस परियोजना का उद्देश्य भ्रूण प्रत्यारोपण तकनीक का उपयोग करके अधिक दूध उत्पादन वाले पशुओं के प्रजनन के माध्यम से उत्पादकता में वृद्धि करना है। यह परियोजना विभिन्न हितधारकों के सहयोग से संचालित की गई है, जिसमें दूध महासंघ, दूध संघ/ उत्पादक कंपनियां, राज्य पशुपालन विभाग और राज्य पशुधन विकास बोर्ड शामिल हैं।

एनडीडीबी ने मुख्य कार्यान्वयन एजेंसी होने के नाते, दो सेवा प्रदाताओं के साथ समझौतों पर हस्ताक्षर किए, जिसमें प्रथम, राहुरी वीर्य केंद्र, एनडीडीबी डेरी सर्विसेज (NDS) और दूसरा, ट्रॉपिकल एनिमल जेनेटिक्स (TAG) है । ये सेवा प्रदाता अनुमानित लाभार्थियों को भ्रूण के उत्पादन और प्रत्यारोपण के लिए उत्तरदायी हैं, जिसमें प्रति वर्ष लगभग 66,000 गर्भावस्था की पुष्टि का अनुमानित लक्ष्य शामिल हैं। इस तकनीकी को अपनाने के लिए , भारत सरकार सेक्स सीमन से उत्पादित आईवीएफ भ्रूण का उपयोग करके प्राप्त प्रत्येक गर्भावस्था की पुष्टि के लिए 5,000 रूपए की सब्सिडी प्रदान कर रही है। इस वर्ष के दौरान, 15,790 पशुओं को गाभिन करने के लिए कुल 27 कार्य योजनाओं को मंजूरी दी गई है।

निश्चित गर्भधारण के लिए सेक्स-सॉर्टेड सीमन के उपयोग द्वारा शीघ्र नस्ल सुधार कार्यक्रम

राष्ट्रीय गोकुल मिशन (RGM) योजना के तहत स्वीकृत इस परियोजना का उद्देश्य 90 प्रतिशत की सटीकता दर को लक्षित करते हुए मादा बछड़ों के सुनिश्चित उत्पादन के लिए सेक्स्ड-सॉर्टेड सीमन का उपयोग को बढ़ावा देना है। इस परियोजना का उद्देश्य पांच वर्षों की अवधि में कुल 51.63 लाख गर्भधारण

डेरी को अगले स्तर पर ले जाने के लिए सरकार के प्रयासों के साथ सामंजस्य स्थापित करना

सुनिश्चित करना है। एनडीडीबी, नोडल निगरानी एजेंसी के रूप में कार्य करते हुए, सेक्स्ड सीमन डोज की दर निर्धारित करने, चयनित आपूर्तिकर्ताओं के साथ दर समझौतों पर बातचीत करने और विभिन्न कार्यान्वयन एजेंसियों द्वारा परियोजना के कार्यान्वयन की देखरेख करने की जिम्मेदारी संभाली।

एनडीडीबी ने मार्च, 2024 तक कार्यक्रम के तहत कुल 14.15 लाख सेक्स्ड वीर्य डोज की आपूर्ति करके सेक्स्ड सीमन के लिए स्थिर आपूर्ति श्रृंखला सुनिश्चित करने के लिए अपनी प्रतिबद्धता प्रदर्शित की है। इसके अलावा, भारत पशुधन एप्लिकेशन में उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार कार्यान्वयन एजेंसियों ने क्षेत्र में सेक्स्ड सीमन का उपयोग करके कुल 1.44 लाख पशुओं का कृत्रिम गर्भाधान किया है।

केंद्रीय पशु प्रजनन फार्मों का प्रबंधन (CCBF)

पशुपालन और डेयरी विभाग, भारत सरकार द्वारा एनडीडीबी को तमिलनाडु के अलामाधी, उत्तर प्रदेश के अंदेशनगर और गुजरात के धामरोड में स्थित 3 केंद्रीय पशु प्रजनन फार्मों (CCBF) का प्रबंधन सौंपा गया है, जिसका उद्देश्य उत्कृष्टता केंद्र के रूप में डेरी नवाचार केंद्रों की स्थापना करना है। परिकल्पित प्रमुख कार्यकलापों में फार्म संचालनों को व्यवस्थित करना, चारा उत्पादन के माध्यम से राजस्व सृजन मॉडल की स्थापना करना, वैज्ञानिक पद्धतियों से पशु झुंड प्रबंधन पर उद्यमियों और किसानों के लिए अत्याधुनिक प्रशिक्षण और प्रदर्शन केन्द्रों की स्थापना करना, OVU-IVEP-ET के माध्यम से उच्च आनुवंशिक गुणयुक्त बछियां और नर बछड़ों का उत्पादन शामिल है।

नस्ल गुणन फार्म

आरजीएम के तत्वावधान में एनडीडीबी को नस्ल फार्म (BMF) परियोजना के कार्यान्वयन और निगरानी का कार्य सौंपा गया है। इस परियोजना का उद्देश्य वैज्ञानिक प्रजनन के माध्यम से रोग मुक्त, अधिक उत्पादक श्रेष्ठ बछड़ों/गाभिन बछड़ों/गायों की देशी नस्लों के गायों और भैंसों के प्रजनन के लिए नस्ल फार्म स्थापित करने हेतु उद्यमियों को प्रोत्साहित करना है, जिसमें सेक्स-सॉर्टेड सीमन और आईवीएफ तकनीक शामिल है और उन्हें लागत के आधार पर किसानों के लिए उपलब्ध कराना है। मार्च 2024 तक, डीएएचडी द्वारा कुल 142 बीएमएफ प्रस्तावों को मंजूरी दी गई है और 76 परियोजना लाभार्थियों को 40.79 करोड़ रुपये की सब्सिडी अनुदान सफलतापूर्वक जारी किया गया है। एनडीडीबी की निगरानी में, सभी स्वीकृत बीएमएफ परियोजनाएं कार्यान्वयन के विभिन्न चरणों में लगातार प्रगति कर रही हैं ।

एसएजी, बीडज का एरियल व्यू

वीर्य उत्पादन में सहयोग- वीर्य केन्द्रों का सुदृढ़ीकरण

एआई के लिए गुणवत्तापूर्ण हिमीकृत वीर्य डोजों की उपलब्धता सुनिश्चित करने और अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुसार पशुपालन बुनियादी ढांचे का निर्माण करने के लिए, भारत सरकार ने आरजीएम योजना के तहत देश में गुणवत्तापूर्ण वीर्य के उत्पादन में मौजूदा वीर्य केंद्रो का सहयोग करने के लिए वीर्य केंद्र परियोजना के सुदृढ़ीकरण की मंजूरी दी है। एनडीडीबी ने परियोजना के प्रस्तावों को तैयार करने में विभिन्न वीर्य केंद्रों को अपनी सहायता प्रदान की है। एनडीडीबी द्वारा सफल मूल्यांकन के बाद भारत सरकार के डीएएचडी द्वारा मार्च 2024 तक कुल 35 परियोजना प्रस्तावों को मंजूरी दी गई है।

पूर्वोत्तर क्षेत्रों में कृत्रिम गर्भाधान प्रशिक्षण संस्थान की स्थापना और कृत्रिम गर्भाधान नेटवर्क की निगरानी

भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्रों (NER) में कृत्रिम गर्भाधान तकनीशियनों के प्रशिक्षण के लिए एक ठोस बुनियादी ढांचा बनाने के लिए, एनडीडीबी ने असम पशुधन विकास एजेंसी (ALDA) के अनुरोध पर गुवाहाटी के खानापारा में एक अत्याधुनिक कृत्रिम गर्भाधान प्रशिक्षण संस्थान की स्थापना की है। इसका उद्घाटन जून 2023 में किया गया, यह कृत्रिम गर्भाधान प्रशिक्षण संस्थान डीएएचडी, भारत सरकार द्वारा निर्धारित सख्त मानक के अनुसार कृत्रिम गर्भाधान प्रशिक्षण प्रदान करता है।

इसके अलावा, एनडीडीबी पूर्वोत्तर क्षेत्र में एआई नेटवर्क की निगरानी और पर्यवेक्षण में सक्रिय रूप से शामिल है। MAITRIs (बहुउद्देश्यीय AI तकनीशियन) के माध्यम से पूर्वोत्तर राज्यों में एआई कवरेज बढ़ाने के लिए एनडीडीबी द्वारा भारत पशुधन ऐप प्रशिक्षण दिया जा रहा है। वर्ष 2023-24 में, इस परियोजना के तहत 8.53 लाख AI निष्पादन हेतु 1,580 MAITRI को क्षेत्र में तैनात किया गया।

उत्पादकता वृद्धि परियोजनाएं

बिहार के बापूधाम, महाराष्ट्र के विदर्भ मराठवाड़ा और उत्तर प्रदेश के वाराणसी जैसे प्रमुख दूध क्षेत्रों में दूध उत्पादकता वृद्धि के लिए एनडीडीबी ने अपनी पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी एनडीडीबी डेरी सर्विसेज के माध्यम से विभिन्न परियोजनाओं का संचालन किया। इन पहलों में दुधारू पशुओं की उत्पादकता वृद्धि के उद्देश्य से कई गतिविधियों का आयोजन शामिल है। उल्लेखनीय पहलों में कम दूध उत्पादन क्षेत्रों में अधिक दुधारू पशुओं को उपलब्ध कराना, कृत्रिम गर्भाधान तकनीशियन (MAITRIs) के द्वारा कृत्रिम गर्भाधान के लिए सुविधाजनक कृत्रिम गर्भाधान वितरण नेटवर्क की स्थापना करना और पारंपरिक व सेक्स-सोर्टेड सीमन, आईवीएफ भ्रूण प्रत्यारोपण का उपयोग करके गर्भाधान संबंधी प्रजनन तकनीकों का कार्यान्वयन करना शामिल है। इन पहलों ने संबंधित परियोजना क्षेत्रों में दूध उत्पादन प्रणाली के सतत् विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

कई अतिरिक्त परियोजनाओं को भी मंजूरी दी गई है और जिनमें क्षेत्रीय गतिविधियां अभी शुरू नहीं की गई हैं। इनमें श्योपुर (मध्य प्रदेश), हरित प्रदेश दूध उत्पादक कंपनी लिमिटेड (उत्तर प्रदेश), मयूरभंज (ओडिशा), यवतमाल और वाशिम (महाराष्ट्र), रायलसीमा (आंध्र प्रदेश), गोरखपुर और रोहिलखंड-ब्रज (उत्तर प्रदेश) और झारखंड राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में कृत्रिम गर्भाधान नेटवर्क की स्थापना का कार्य शामिल है। उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर में स्वीकृत पहलों में से एक गौ अभ्यारण्य की स्थापना भी है। इन परियोजनाओं का उद्देश्य कृत्रिम गर्भाधान सेवाओं की पहुंच का विस्तार करना, सतत् डेरी विकास को बढ़ावा देना और अपने क्षेत्रों में स्वदेशी गाय नस्लों के संरक्षण को बढ़ावा देना है।

परियोजनाएं	शामिल किए गए गिर गायों की संख्या	स्थापित किए गए कृत्रिम गर्भाधान केंद्रों की संख्या (MAITRIs)	निष्पादित कृत्रिम गर्भाधान की संख्या
गिर वाराणसी परियोजना	485	114	1,25,589
बापूधाम दूध उत्पादक कंपनी लिमिटेड में उत्पादकता वृद्धि गतिविधियां	300	100	79,331
विदर्भ मराठवाडा में उत्पादकता वृद्धि गतिविधियां	2,000	463	1,82,149

डेरी को अगले स्तर पर ले जाने के लिए सरकार के प्रयासों के साथ सामंजस्य स्थापित करना

राष्ट्रीय पशुधन मिशन

एनडीडीबी, राष्ट्रीय पशुधन मिशन (NLM) के तहत कार्यान्वयन एजेंसी के रूप में, जो केंद्रीय क्षेत्र योजना की है, गुणवत्ता चारा बीज उत्पादन कार्यक्रम में कई डेरी सहकारिताओं को नामांकित करती है। वित्त वर्ष 2023-24 में खरीफ सीजन के दौरान सात राज्यों में दस डेरी सहकारिताओं ने 2,683 लाख रुपये के 29,223 क्विंटल प्रमाणित चारा बीज का उत्पादन किया।

2023-24 के रबी सीजन में, सात राज्यों में ग्यारह डेरी सहकारिताओं ने चारा बीज उत्पादन में भाग लिया, जिससे लगभग 61,552 क्विंटल चारा बीज का उत्पादन हुआ, जिसकी कीमत लगभग 5,393 लाख रुपये थी। चारा उत्पादन के लिए विभिन्न दूध महासंघों/दूध संघों/दूध उत्पादक संस्थाओं के दूध उत्पादकों को उत्पादित गुणवत्ता युक्त चारा बीज की आपूर्ति की गई ।

2023-24 में, सात राज्यों की पंद्रह डेरी सहकारिताओं ने चारा बीज उत्पादन में भाग लिया और लगभग 90,775 क्विंटल चारा बीज का उत्पादन किया, जिसका मूल्य लगभग 8,076 लाख रुपये था।

राष्ट्रीय डेरी विकास कार्यक्रम (NPDD)

घटक ए

एनडीडीबी को केंद्रीय क्षेत्र की योजना एनपीडीडी के घटक 'ए' को लागू करने के लिए दूध उत्पादक कंपनियों (MPC) और किसान उत्पादक संस्थाओं (FPO) के लिए राज्य कार्यान्वयन एजेंसी के रूप में नियुक्त किया गया है। यह योजना गुणवत्तापूर्ण दूध परीक्षण उपकरणों के साथ-साथ प्राथमिक चिलिंग सुविधाओं के लिए बुनियादी ढांचे के निर्माण करने पर केंद्रित है। वर्ष 2023-24 के दौरान, भारत सरकार ने एमपीसी के तीन परियोजना प्रस्तावों को मंजूरी दी। इन परियोजनाओं पर कुल खर्च 49.39 करोड़ रुपये था, जिसमें केंद्रीय शेयर के रूप में 30.98 करोड़ रुपये की अनुदान सहायता भी शामिल है। दूध संघों और महासंघों के अनुरोध पर, एनडीडीबी परियोजना प्रस्तावों की तैयारी के साथ-साथ स्वीकृत परियोजना के कार्यान्वयन में तकनीकी सहायता प्रदान कर रही है।

घटक बी – सहकारिताओं के माध्यम से डेरी (DTC-JICA) - सतत् आजीविका की कुंजी

एनडीडीबी "सहकारिताओं के माध्यम से डेरी (DTC)"- जो एनपीडीडी के घटक बी, भारत सरकार की एक केंद्रीय क्षेत्र योजना है, की कार्यान्वयन एजेंसी है। यह योजना किसानों की संगठित बाजार तक पहुंच बढ़ाकर, डेरी प्रसंस्करण सुविधाओं और विपणन बुनियादी ढांचे को विकसित करके और क्षमता में वृद्धि कर दूध और डेरी उत्पादों की बिक्री बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित करती है, जिससे परियोजना क्षेत्र में दूध उत्पादकों को मिलने वाले आय वृद्धि में मदद मिलती है।

दूध संघो, बहु-राज्यीय दूध सहकारिताओं, राज्य दूध महासंघों और दूध उत्पादक संस्थाओं सहित उत्पादक स्वामित्व वाली संस्थाएं परियोजना में भाग लेने के लिए पात्र हैं। परियोजना क्षेत्र में उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल, मध्य प्रदेश, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, पंजाब, राजस्थान और उत्तराखंड राज्य शामिल हैं।

परियोजना का कुल व्यय 1,568.3 करोड़ रुपये है, जिसमें से 924.6 करोड़ रुपये जापान अंतर्राष्ट्रीय सहयोग एजेंसी (JICA) से आधिकारिक विकास सहायता (ODA) ऋण के रूप में, 475.5 करोड़ रुपये भारत सरकार द्वारा अनुदान के रूप में और शेष राज्य/भागीदार संस्थानों (PI) के योगदान के रूप में शामिल है। इस परियोजना के तहत प्रतिभागी संस्थानों (PI) को 1.5 प्रतिशत वार्षिक ब्याज दर पर ऋण प्रदान किया गया। वर्ष 2023-24 के दौरान इस योजना के तहत 22 उप परियोजनाओं की योजनाओं को मंजूरी दी गई, जिन पर कुल 1,130.6 करोड़ रुपये का वित्तीय व्यय किया गया, जिसमें 705.5 करोड़ रुपये का ऋण, 329.7 करोड़ रुपये का अनुदान और 95.4 करोड़ रुपये का भाग लेने वाले संस्थानों का योगदान शामिल है।

पीआई ने दूध संकलन बुनियादी ढांचे को सुदृढ़ करने, प्रसंस्करण और विनिर्माण सुविधाओं, विपणन अवसंरचना, आईसीटी अवसंरचना, उत्पादकता वृद्धि और प्रशिक्षण और क्षमता विकास जैसी विभिन्न श्रेणियों के तहत गतिविधियां शुरू की हैं। वर्ष के दौरान, पीआई को 207.1 करोड़ रुपये जारी किए गए, जिसमें 102.6 करोड़ रुपये का ऋण और 104.5 करोड़ रुपये का अनुदान शामिल था।

परियोजना के उत्पादकता वृद्धि घटक के तहत, बछड़ी पालन कार्यक्रम (CRP), पशु पोषण परामर्श सेवाएं (ANAS) और चारा विकास कार्यक्रम जैसी विभिन्न पहलों की संकल्पना की गई है।

चाफ कटर के उपयोग द्वारा चारे की कटाई

इस परियोजना से छोटे और सीमांत दूध उत्पादकों को बेहतर आजीविका के अवसर प्रदान करने, मूल्य श्रृंखला में दूध की गुणवत्ता में सुधार करने, भाग लेने वाले संस्थानों के प्रसंस्करण बुनियादी ढांचे को सुदृढ़ करने, बाजार में सहकारी ब्रांडों की विजिबिल्टी बढ़ाने और जनशक्ति क्षमता का निर्माण करने की संभावना है।

डेरी प्रसंस्करण एवं अवसंरचना विकास निधि (DIDF)

एनडीडीबी 2018-19 से 2022-23 तक क्रियान्वित की जाने वाली भारत सरकार की योजना " डेरी प्रसंस्करण एवं अवसंरचना विकास निधि (DIDF)" की एक कार्यान्वयन एजेंसी है। इस योजना का वित्तीय परिव्यय 11,184 करोड़ रुपये है, जिसमें 8,004 करोड़ रुपये ऋण के रूप में, 2,001 करोड़ रुपये अंतिम ऋणियों के योगदान के रूप में, 12 करोड़ रुपये परियोजना प्रबंधन और अध्ययन के लिए कार्यान्वयन एजेंसियों द्वारा योगदान और भारत सरकार से 1,167 करोड़ रुपये की ब्याज छूट शामिल है। सहकारी दूध संघ, राज्य सहकारी डेरी महासंघ, बहु-राज्य दूध सहकारिताएं, दूध उत्पादक संस्थाएं और एनडीडीबी की सहायक कंपनियां DIDF की पात्र अंतिम ऋणी संस्थाएं हैं।

भारत सरकार ने 2025-26 तक अवसंरचना विकास निधि (IDF) के हिस्से के रूप में पशुपालन अवसंरचना विकास निधि (AHIDF) में डेरी प्रसंस्करण एवं अवसंरचना विकास निधि (DIDF) का विलय कर AHIDF फ़ंड के विस्तार की मंजूरी दी है।

31 मार्च 2023 तक, 6,730.2 करोड़ रुपये के परिव्यय वाली 36 परियोजनाओं को मंजूरी दी गई, जिसमें 4,538.4 करोड़ रुपये का ऋण भी शामिल था। 2023-24 के दौरान, पीओआई को कुल 773.3 करोड़ रुपये के ऋण वितरित किए गए। अनुमोदित परियोजनाओं के कार्यान्वयन से पीओआई की दूध प्रसंस्करण क्षमता में प्रतिदिन 15.54 मिलियन लीटर की वृद्धि होने की संभावना है। मार्च, 2024 तक, 14 परियोजनाएं पहले ही पूरी हो चुकी हैं, जिससे प्रतिदिन 7.40 मिलियन लीटर की दूध प्रसंस्करण क्षमता सृजित हुई है।

डेरी को अगले स्तर पर ले जाने के लिए सरकार के प्रयासों के साथ सामंजस्य स्थापित करना

उत्पादकों के स्वामित्व वाले संस्थाओं को कार्यशील पूंजी ऋण पर ब्याज सहायता

कोविड-19 महामारी प्रतिबंधों के दौरान उत्पादकों के स्वामित्व वाले संस्थाओं (POI) के सामने आने वाली चुनौतियों के कारण, भारत सरकार ने वर्ष 2020-21 के दौरान 203 करोड़ रुपये के परिव्यय के साथ "कार्यशील पूंजी ऋण पर ब्याज सहायता" संबंधी एक योजना शुरू की। इस योजना को वित्त वर्ष 2021-22 से वित्त वर्ष 2025-26 की अवधि के लिए 500 करोड़ रुपये के परिव्यय के साथ आगे बढ़ाया गया और इसका एनडीडीबी द्वारा कार्यान्वयन किया जा रहा है।

यह योजना पात्र परियोजना संस्थाओं द्वारा बैंकों और वित्तीय संस्थाओं से लिए गए कार्यशील पूंजी ऋण पर प्रतिवर्ष दो प्रतिशत की ब्याज सहायता प्रदान करती है। शीघ्र और समय पर भुगतान करने वाली संस्थाओं के लिए अतिरिक्त दो प्रतिशत की प्रतिवर्ष ब्याज सहायता ऋण अवधि के अंत में प्रदान की जाती है। ब्याज सहायता के घटक को 'डेरी कार्यकलापों से संबंध सहकारी समितियों और किसान उत्पादक संस्थाओं की सहायता (SDCFPO)' योजना के तहत शामिल किया गया है।

एनडीडीबी ने 31 मार्च 2024 तक पीओआई को 508.9 करोड़ रुपये की ब्याज सहायता जारी की। बैंकों से प्राप्त कार्यशील पूंजी ऋण पर ब्याज सहायता के माध्यम से, इस योजना ने पीओआई को डेरी किसानों को समय पर भुगतान करने में सक्षम बनाया।

किसान उत्पादक संस्थाओं (FPO) का गठन और संवर्धन

एनडीडीबी को "10,000 किसान उत्पादक संस्थाओं (FPO) के गठन और संवर्धन" की केंद्रीय क्षेत्र योजना की कार्यान्वयन एजेंसी के रूप में नामित किया गया है।

कार्यान्वयन के हिस्से के रूप में, एनडीडीबी को पूरे देश में 100 चारा प्लस एफपीओ और 26 मधुमक्खीपालकों के एफपीओ के गठन का काम सौंपा गया है। मार्च 2024 तक, इस योजना के तहत 97 चारा प्लस एफपीओ और 24 मधुमक्खीपालकों के एफपीओ का गठन किया गया है। एनडीडीबी इस योजना के कार्यान्वयन के लिए डेरी सहकारिताओं, उत्पादक स्वामित्व वाले संस्थानों और अन्य एजेंसियों के माध्यम से मिलकर काम कर रही है।

एनडीडीबी शहद की एक मूल्य श्रृंखला स्थापित करने और "मीठी क्रांति" के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए डेरी सहकारी नेटवर्क का लाभ ले रही है। शहद एफपीओ लगभग 4000 किसानों की सदस्यता तक पहुंच गया है। दूध संघ अपने-अपने डेरी ब्रांड के तहत शहद लॉन्च करके एफपीओ सदस्यों द्वारा उत्पादित शहद के लिए फॉरवर्ड लिंकेज प्रदान करने के लिए आगे आ रहे हैं। इन एफपीओ को और अधिक सहयोग देने के लिए डेरी सहकारिताओं के सहयोग से राष्ट्रीय मधुमक्खीपालन और शहद मिशन (NBHM) के तहत मधुमक्खीपालन के लिए प्रमुख बुनियादी ढांचे जैसे शहद परीक्षण प्रयोगशाला, प्रसंस्करण इकाई, मधुमक्खीपालन उपकरण निर्माण इकाई की स्थापना को भी बढ़ावा दिया जा रहा है।

वैज्ञानिक मधुमक्खीपालन पर प्रशिक्षण

चारे की कटाई करता हुआ हार्वेस्टर

फॉडर प्लस एफपीओ में किसानों की कुल सदस्यता बढ़कर लगभग 12,000 हो गई है। एनडीडीबी एफपीओ और क्लस्टर-आधारित व्यापार संगठनों (CBBO) को उनकी क्षमता बढ़ाने के लिए सक्रिय रूप से तकनीकी सहायता प्रदान करती है। 2023-24 में, 45 सीबीबीओ के लगभग 90 अधिकारियों को चारा उत्पादन और संरक्षण में प्रशिक्षित किया गया। चारे से संबंधित गतिविधियों में एफपीओ के लिए व्यावसायिक योजना तैयार करने के लिए 25 सीबीबीओ को तकनीकी सहायता भी दी गई। कुल पंजीकृत चारा एफपीओ में से 45 एफपीओ ने हरा चारा, साइलेज, चारा बीज का उत्पादन एवं बिक्री तथा सूखे चारे की बिक्री व बारहमासी घास के तने की कटाई आदि जैसी क्षेत्रीय गतिविधियां शुरू कर दी हैं।

राष्ट्रीय पशुधन मिशन के तहत चारा बीज उत्पादन के लिए एनडीडीबी के सहयोग से एफपीओ के सदस्यों को उन्नत किस्मों के अच्छी गुणवत्ता वाले चारा बीज की उपलब्धता सुनिश्चित हुई। एनडीडीबी के क्षमता निर्माण और सीबीबीओ तथा एफपीओ को सहायता प्रदान करने के निरंतर प्रयासों के परिणामस्वरूप 2023-24 के दौरान लगभग कुल 1,064 लाख रुपए का कारोबार हुआ।

राष्ट्रीय डेरी योजना, चरण II

राष्ट्रीय डेरी योजना, चरण II (NDP II) को डेरी क्षेत्र में पिछडे छः राज्यों अर्थात हिमाचल प्रदेश, झारखंड, मध्य प्रदेश, ओडिशा, सिक्किम और उत्तराखंड में लागू करने की योजना बनाई गई है। इसका उद्देश्य परियोजना क्षेत्र में लघुधारक डेरी किसानों पर ध्यान केंद्रित करते हुए प्रतिस्पर्धा बढ़ाना, लचीलेपन में सुधार लाना और दूध मूल्य श्रृंखला के कार्बन पदचिह्न में कमी लाना है।

आर्थिक मामलों के विभाग (Department of Economic Affairs) की परियोजना मानदंड से संबंधित सभी गतिविधियाँ पूरी हो चुकी हैं। यह परियोजना वर्तमान में भारत सरकार और विश्व बैंक दोनों द्वारा अनुमोदन के अधीन है।

डिजिटल अवसंरचना: भारत पशुधन

एनडीडीबी ने भारत सरकार के पशुपालन और डेयरी विभाग (DAHD) के सहयोग से नवंबर 2023 के दौरान भारत पशुधन एप्लिकेशन लॉन्च किया जो एक किसान-केंद्रित, तकनीकी-संचालित डिजिटल अवसंरचना है, जिसका उद्देश्य भारत के पशु प्रजनन, पोषण और स्वास्थ्य क्षेत्र में उत्पादकता और स्वास्थ्य प्रबंधन को बढ़ाना है। यह पारिस्थितिकी तंत्र संबंध पशुधन बाजार, क्लोज्ड लूप ब्रीडिंग और रोग निगरानी प्रणाली विकसित करने और पशुओं

डेरी को अगले स्तर पर ले जाने के लिए सरकार के प्रयासों के साथ सामंजस्य स्थापित करना

एवं पशु उत्पादों की ट्रेसबिलिटी में सुधार करने पर केंद्रित है। मार्च 2024 तक एप्लिकेशन में 26 राज्य और आठ केंद्र शासित प्रदेश शामिल किए जा चुके है।

यह एप्लिकेशन क्लाउड-आधारित प्लेटफ़ॉर्म पर काम करता है, जो फ़ील्ड-स्तरीय कार्यकर्ताओं को पशु पंजीकरण, किसान पंजीकरण, स्वामित्व परिवर्तन, टीकाकरण, उपचार, कृत्रिम गर्भाधान, ब्याने की गतिविधियों, आहार संतुलन, ई- प्रिस्क्रिप्शन और दूध रिकॉर्डिंग जैसे महत्वपूर्ण गतिविधियों को रिकॉर्ड करने में सहयोग प्रदान करता है।

भारत पशुधन एप्लिकेशन को प्रभावी रूप से अपनाने को सुलभ बनाने के लिए विभिन्न राज्यों में ऑफ़लाइन और ऑनलाइन माध्यम से लगभग 46 विशेष दक्षता निर्माण कार्यक्रम आयोजित किए गए। इन कार्यक्रमों का उद्देश्य उपयोगकर्ताओं को डिजिटल अवसंरचना के अधिक से अधिक लाभ उपलब्ध कराने के लिए आवश्यक कौशल और जानकारी प्रदान- कर उन्हें सशक्त बनाना है। भारत पशुधन भारत के पशुधन प्रबंधन पद्धतियों में आधुनिक तकनीकी को एकीकृत करने और पूरे क्षेत्र में दक्षता, पारदर्शिता एवं निरंतरता को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। जैसे-जैसे यह तकनीक चरण दर चरण आगे बढ़ेगी, उससे संचालन अधिक सुव्यवस्थित होगा, डेटा-संचालित निर्णय लेने में सुधार होगा और पूरे देश में पशुपालन में समग्र उत्पादकता वृद्धि की जा सकेगी।

भारत पशुधन ऐप का उपयोग करते हुए दिसम्बर 2023 में देहरादून जिले के विकास नगर ब्लॉक में पायलट डिजिटल पशुगणना की गई। इस पशुगणना के परिणामों से पता चला कि कुल 95.5 प्रतिशत पशु आबादी को टैग एवं सत्यापित किया गया। इस गणना में गाय और भैंस दोनों की आबादी में 19वीं पशुगणना की तुलना में काफी वृद्धि हुई है तथा इस पशुगणना में 100 प्रतिशत पशुओं को पंजीकृत किया गया है। यह पहल पशुधन प्रबंधन में पशुधन की पारदर्शिता और जवाबदेही बढ़ाने, बेसहारा पशुओं के

भारत पशुधन के लिए प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण

प्रबंधन के लिए प्रभावी संसाधन उपलब्ध कराने की सुविधा प्रदान करने और पशु कल्याण को बढ़ाने में भारत पशुधन ऐप के महत्व को प्रदर्शित करती है।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 02 मार्च 2024 को भारत पशुधन पारिस्थितिकी तंत्र के एक महत्वपूर्ण घटक 1962 किसान ऐप का शुभारंभ किया। प्ले स्टोर पर उपलब्ध यह एप्लिकेशन पशुपालक किसानों को आवश्यक संसाधनों और सूचनाओं तक सीधी पहुंच प्रदान करके उन्हें सशक्त बनाता है। किसान ऐप का उपयोग करने के लिए पशुपालक किसान अपने पंजीकृत मोबाइल नंबर का उपयोग कर सकते हैं और यह ऐप एक केंद्रीकृत हब की तरह कार्य करती हैः

- **व्यापक पशुधन प्रबंधनः** प्रत्येक किसान और पशु को एक विशिष्ट क्यूआर कोड उपलब्ध कराया जाता है, जो इस प्रणाली के भीतर शीघ्र पहचान और कुशल प्रबंधन संभव हो जाता है। यह ऐप प्रत्येक पशु के जीवन चक्र का कालानुक्रमिक रिकॉर्ड रखता है, जिसमें कृत्रिम गर्भाधान, टीकाकरण और स्वास्थ्य उपचार जैसी गतिविधियां शामिल हैं। इस डेटा को बीमा कंपनियों और बैंकरों जैसे हितधारकों के साथ साझा किया जा सकता है।
- **पशुपीडिया:** विभिन्न पशु प्रजातियों, नस्लों और एथनोवेटरिनरी पद्धतियों के बारे में विस्तृत जानकारी का एक भंडार है, जो कुशल पशुपालन से संबंधित आवश्यक जानकारी उपलब्ध कराकर किसानों को सशक्त बनाता है।
- **डिजिटल व्यापार मंचः** किसानों को बाजार की पहुंच को उपलब्ध कराता है और डिजिटल मंच के माध्यम से पशुधन व्यापार में सहयोग प्रदान करता है।

एकीकरण और विस्तार: पूरे देश में प्रभावी कार्यान्वयन सुनिश्चित करने के लिए एनडीडीबी एवं भारत सरकार ने कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश और असम में राज्य स्तरीय परियोजना निगरानी इकाइयों (PMU) की स्थापना की है। ये इकाइयाँ तकनीकी और फील्ड सहायता प्रदान करती हैं, जिससे एप्लिकेशन का निर्बाध उपयोग सुनिश्चित होता है तथा किसानों और हितधारकों के बीच उपयोगकर्ता सहभागिता बढ़ती है।

क्रम सं.	प्रशिक्षण कार्यक्रम का नाम	प्रशिक्षण संख्या
	भारत पशुधन ऐप ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम (ऑनलाइन)	15
2.	भारत पशुधन ऐप ऑफलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम (ऑफलाइन)	24
3.	परियोजना निगरानी इकाई (PMU) प्रशिक्षण	3

भारत पशुधन डेटाबेस से प्राप्त अब तक के मुख्य आँकड़े निम्नानुसार हैं:

क्रमांक	विवरण	कुल ट्रांजेक्शन संख्या
1	पंजीकृत पशु	31,51,68,008
2	पंजीकृत मालिक	8,92,36,820
3	शामिल गाँव	5,90,213
4	शामिल जिले	764
5	शामिल संस्था	253
6	निर्मित परियोजनाएं	372
7	ट्रीटमेंट ट्रांजेक्शन	22,36,576
8	टीकाकरण ट्रांजेक्शन	68,07,37,423
9	कृत्रिम गर्भाधान ट्रांजेक्शन	13,20,82,143
10	शामिल वीर्य केंद्र	74
11	उपयोगकर्ताओं की कुल संख्या	4,53,619
12	किसान ऐप डाउनलोड	60,000

डेरी को अगले स्तर पर ले जाने के लिए सरकार के प्रयासों के साथ सामंजस्य स्थापित करना

साबर चीज़ प्लांट में चीज़ की पैकेजिंग

गुणवत्ता चिह्न और CAS MMP के माध्यम से गुणवत्ता प्रबंधन

गुणवत्ता और खाद्य सुरक्षा एनडीडीबी के लिए एक महत्वपूर्ण पहलू है। इसके साथ ही, गुणवत्ता चिह्न जैसी पहल डेरी क्षेत्र में उत्कृष्टता को प्रदर्शित कर रही है। गुणवत्ता चिह्न पहल के तहत 117 डेरी आवेदकों में से 56 डेरियों को ही गुणवत्ता चिह्न प्रदान किए गए, जो प्रमाणन के प्रति उनकी सख्त प्रक्रियागत प्रतिबद्धता को दर्शाता है। इसके अलावा, शेष 61 डेरियों द्वारा खाद्य सुरक्षा प्रणालियों को लागू करने की प्रक्रिया जारी है, जो गुणवत्ता चिह्न प्राप्त करने के प्रति उनकी बढ़ती अभिरुचि को दर्शाती है।

गुणवत्ता और खाद्य सुरक्षा पर ध्यान केंद्रित करने के लिए एनडीडीबी ने दूध एवं दूध उत्पादों के लिए अनुरूपता मूल्यांकन योजना (CAS MMP) की शुरूआत करने में भारतीय मानक ब्यूरो (BIS) को सहयोग दिया है। इस पहल का उद्देश्य एकीकृत लोगो (Logo) के साथ Product-FSMS-Process प्रमाणन प्राप्त करना है। वर्ष के दौरान, CAS MMP के माध्यम से प्रमुख राज्य दूध संघों और डेरी सहकारिताओं को आयोजित जागरूकता कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

डेरी सहकारिताओं से CAS MMP के लिए 30 आवेदनों में से पांच डेरी संयंत्रों को CAS MMP प्रमाणन प्राप्त हुआ है। अन्य पंद्रह डेयरी संयंत्रों ने ऑडिट करवा लिया है और प्रमाणन के लिए सुधार लागू करने के चरण में हैं। क्वालिटी मार्क प्रमाणित डेरियों को भी CAS MMP प्रमाणन प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित और सहयोग किया जा रहा है।

खाद्य सुरक्षा हितधारकों को तकनीकी एवं प्रशिक्षण सहायता

एनडीडीबी ने पशुपालन और डेयरी विभाग (DHAD), भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण (FSSAI), कोडेक्स एलिमेंटेरियस कमीशन (CAC) और अंतर्राष्ट्रीय खाद्य संगठन (FAO) जैसे नियामक निकायों को सहयोग देना निरंतर जारी रखा है। एनडीडीबी ने विभिन्न गतिविधियों का समन्वय करते हुए अंतर्राष्ट्रीय डेरी महासंघ (IDF) की भारतीय राष्ट्रीय समिति (INC) के

सचिवालय के रूप में भी कार्य किया है। दूध एवं दूध उत्पादों के लिए भारतीय मानकों (IS) को अद्यतन करने हेतु वैज्ञानिक एवं तकनीकी समितियों में भागीदारी के माध्यम से भारतीय मानक ब्यूरो (BIS) को तकनीकी सहायता प्रदान की गई। इसके अलावा, एनडीडीबी ने निर्यात निरीक्षण परिषद (EIC) के पैनलिस्ट के रूप में डेरी निर्यात व्यवस्था की तैयारी के मूल्यांकन में भी सहायता की।

शिक्षा और प्रशिक्षण डेरी मूल्य शृंखला में खाद्य सुरक्षा पर विशेष बल देने तथा दूध एवं दूध उत्पादों के संचालन को बेहतर बनाने का एक महत्वपूर्ण साधन है। प्रशिक्षण कार्यक्रमों में स्वच्छ दूध उत्पादन, खाद्य विनियमन, गुणवत्ता चिह्न और CAS MMP प्रणाली जैसे विषयों को शामिल किया गया। एनपीडीडी के अंतर्गत जीका (JICA) द्वारा वित्तपोषित "सहकारिता के माध्यम से डेरी" योजना के कार्यान्वयन में सुलभता के लिए वरिष्ठ अधिकारियों हेतु एक विशेष खाद्य सुरक्षा प्रशिक्षण मॉड्यूल विकसित किया गया। इस मॉड्यूल में 5एस, काइज़ेन, क्यूसी सर्कल जैसे उपकरण एवं तकनीक तथा अंतरराष्ट्रीय सिस्टम जैसे- ISO 22000/FSSC 22000, ISO 14001, ISO 50001 और ISO 45001 शामिल हैं। यह पहल डेरी सहकारिताओं के स्थायी संचालन के लिए पर्यावरणीय सुरक्षा, ऊर्जा संरक्षण, व्यावसायिक स्वास्थ्य एवं सुरक्षा प्रबंधन प्रणालियों के साथ-साथ खाद्य सुरक्षा को बढ़ावा देने में सहायता प्रदान करती है।

एनडीडीबी ने प्रक्रियात्मक सुधार, तकनीकी गतिविधियों और प्रणाली परिचय के माध्यम से परिचालन दक्षता बढ़ाने में डेरी सहकारिताओं को सहायता प्रदान की। वर्ष के दौरान किए गए अध्ययनों में पंजाब के मिल्कफेड के पांच डेरी संयंत्रों में मिल्क सॉलिड पदार्थों और पैकेजिंग सामग्री की हानि का पता लगाने और उसमें कमी लाने पर ध्यान केंद्रित किया गया। इन प्रयासों का उद्देश्य लक्षित गतिविधियों के माध्यम से हानि को स्वीकार्य स्तर तक कम करना है।

एनडीडीबी ने उन्नत परीक्षण उपकरणों के माध्यम से प्रयोगशाला के आधुनिकीकरण के भी अपने प्रयास निरंतर जारी रखे। इस पहल का उद्देश्य परीक्षण शुद्धता को बढ़ाना तथा खाद्य सुरक्षा मानकों का निरंतर पालन करना है।

गोपाल रत्न पुरस्कार 2023-24

पशुपालन और डेयरी विभाग प्रतिवर्ष गोपाल रत्न पुरस्कार का आयोजन करता है जो इस क्षेत्र में काम करने वाले किसानों, एआई (AI) तकनीशियनों और डेरी सहकारिताओं/दूध उत्पादक संस्थाओं (MPO) को मान्यता प्रदान कर प्रोत्साहित करता है। एनडीडीबी ने 2023-24 में पुरस्कार के निर्धारण और प्रचार-प्रसार में सहयोग प्रदान किया। इस पुरस्कार हेतु कुल 1,770 आवेदन प्राप्त हुए। यह पुरस्कार तीन श्रेणियों में प्रदान किया जाता है:

- देशी नस्लों की गायों/भैंसों को पालने वाले सर्वश्रेष्ठ डेरी किसान
- सर्वश्रेष्ठ कृत्रिम गर्भाधान तकनीशियन (AIT) एवं
- सर्वश्रेष्ठ डेरी सहकारी/दूध उत्पादक संस्था/दूध उत्पादक किसान संस्था

श्री परशोत्तम रूपाला, माननीय केंद्रीय मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्री, गुवाहाटी, असम में वेटनरी कॉलेज ग्राउंड में राष्ट्रीय दुग्ध दिवस के दौरान गोपाल रत्न पुरस्कार 2023-24 प्रदान करते हुए

एनडीडीबी के अध्यक्ष डॉ. मीनेश शाह, एनडीडीबी के दिल्ली कार्यालय में माननीय केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी का स्वागत करते हुए

श्री अमित शाह जी, माननीय केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री, एनडीडीबी एवं इसकी पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनियों के निदेशक मंडल के साथ

सहकारी कवरेज का विस्तार - "सहकार-से-समृद्धि" के विज़न को साकार करना

देश में तीव्र और समावेशी आर्थिक विकास को बढ़ावा देने में सहकारिताओं के महत्व को पहचानते हुए, माननीय प्रधानमंत्री द्वारा "सहकार-से-समृद्धि" की परिकल्पना की गई है। मंत्रिमंडल ने अनकवर्ड पंचायतों में व्यवहार्य प्राथमिक कृषि ऋण समितियाँ (PACS), प्रत्येक अनकवर्ड पंचायत/गाँव में व्यवहार्य DCS और वृहत् जलीय निकायों वाली प्रत्येक तटीय पंचायत/गाँव में व्यवहार्य मत्स्य सहकारी समितियों की स्थापना करने और मौजूदा PACS/ DCS और मत्स्य सहकारी समितियों को मजबूत करने की योजना को मंजूरी दी। इससे पूरे देश में किसान सदस्यों को अपनी उपज का विपणन करने, अपनी आय बढ़ाने और गाँव स्तर पर ऋण सुविधाएँ और अन्य सेवाएँ प्राप्त करने के लिए अपेक्षित फॉरवर्ड एवं बैकवर्ड लिंकेज उपलब्ध होगा।

योजना के तहत, सहकारी आंदोलन को मजबूत करने और जमीनी स्तर तक इसका विस्तार करने के लिए अगले पांच वर्षों में देश की सभी अनकवर्ड पंचायतों / गांवों में 2.0 लाख PACS / डीसीएस / मत्स्य सहकारी समितियों की स्थापना की परिकल्पना की गई है। नाबार्ड, एनडीडीबी, एनएफडीबी और अन्य एजेंसियां जैसे राष्ट्रीय महासंघ, राज्य/केंद्र शासित प्रदेश सरकारें और इसकी एजेंसियां और जिला सहकारी प्रशासन भारत सरकार के सहकारिता मंत्रालय के मार्गदर्शन और निर्देशों के तहत नए बहुउद्देशीय PACS (M-PACS), डीसीएस और मत्स्य पालन सहकारी समितियों के गठन की कार्य योजना के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए जिम्मेदार होंगे।

एनडीडीबी, सहकारिता मंत्रालय के परामर्श से, इस विज़न को साकार करने में योगदान देने के लिए प्रतिबद्ध है। इस योजना के राष्ट्रव्यापी कार्यान्वयन के अग्रदूत के रूप में, एनडीडीबी ने सहकारिता मंत्रालय के परामर्श से तीन जिलों जींद (हरियाणा), इंदौर (मध्य प्रदेश) और चिकमगलूर (कर्नाटक) में अनकवर्ड क्षेत्रों को कवर करने के लिए पायलट परियोजनाएं शुरू की । इन जिलों में मार्च 2024 तक 79 ग्राम स्तरीय डेरी सहकारी समितियों की स्थापना की गई है, जिससे डेरी किसानों को डेरी सहकारी नेटवर्क में शामिल होने तथा उचित और पारदर्शी तरीके से अपने उत्पादित दूध को लाभकारी कीमतों पर बेचने का अवसर मिला है। ये नई समितियां वर्तमान में लगभग 2,500 डेरी किसानों से लगभग 15 हकिलोप्रदि दूध का संकलन कर रही हैं।

इसके अलावा, PACS द्वारा वर्तमान में संचालित गतिविधियों की अपेक्षा दूध सर्वथा पृथक कमोडिटी है, इसलिए बहुउद्देशीय PACS (M-PACS) के तहत डेरी गतिविधियों को शुरू करने के लिए M-PACS को कुछ प्रारंभिक सहायता और वित्तीय सहायता प्रदान

"सहकार-से-समृद्धि"

करने की आवश्यकता होगी। इस पहल के तहत निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए नाबार्ड, एनडीडीबी और एनएफडीबी द्वारा संयुक्त रूप से एक व्यापक कार्य योजना बनाई गई है। एनडीडीबी देश में दूध संघों/डेरी महासंघों/दूध उत्पादक संस्थाओं (MPO) के परामर्श से काम करेगी तथा उन्हें केंद्र सरकार की विभिन्न योजनाओं के तहत कवरेज बढ़ाने के लिए वित्तीय सहायता प्राप्त करने में मदद करेगी व मौजूदा दूध संघ/महासंघ/एमपीओ के माध्यम से दूध संकलन गतिविधियों को शुरू करने के लिए हैंड होल्डिंग एवं तकनीकी सहायता प्रदान करेगी और फारवर्ड लिंकेज सुनिश्चित करेगी। अतिरिक्त आय सृजन करने की गतिविधि के रूप में मौजूदा बहुउद्देशीय PACS (M-PACS) के अंतर्गत दूध संकलन की शुरूआत करने के लिए एनडीडीबी ने "व्यवहार्य डेरी गतिविधियां को शुरू करने हेतु बहुउद्देशीय PACS (M-PACS) को सहायता प्रदान करना" नामक योजना शुरू की है। यह योजना इच्छुक और व्यवहार्य बहुउद्देशीय PACS (M-PACS) के लिए वित्तपोषण प्रदान करेगी और उन्हें 40,000 रुपये का अनुदान जारी करेगी एवं यह योजना 1,000 बहुउद्देशीय PACS (M-PACS) को बुनियादी दूध संकलन और परीक्षण उपकरण के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करेगी, साथ ही दूध संघ/महासंघ/एमपीओ के माध्यम से प्रारंभिक सहायता भी प्रदान करेगी। एनडीडीबी समयबद्ध तरीके से इस योजना के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए अनकवर्ड क्षेत्रों में दूध संघों, डीसीसीबी और बहुउद्देशीय PACS (M-PACS) से संपर्क कर रही है।

बहुराज्यीय सहकारी समितियाँ

जनवरी 2023 में तीन नए राष्ट्रीय स्तर के बहु-राज्य सहकारी समितियों अर्थात् राष्ट्रीय सहकारी ऑर्गेनिक लिमिटेड (NCOL), भारतीय बीज सहकारी समिति लिमिटेड (BBSSL) और राष्ट्रीय सहकारी निर्यात लिमिटेड (NCEL) की स्थापना की गई। एनडीडीबी एनसीओएल के मुख्य प्रमोटर के साथ इन दो सोसाइटी के प्रमोटरों में से एक है, जो "लोकल टू ग्लोबल" के विजन और मिशन के साथ संरेखित है और "सहकार से समृद्धि" की प्राप्ति में योगदान देती है।

राष्ट्रीय सहकारी ऑर्गेनिक्स लिमिटेड

राष्ट्रीय सहकारी ऑर्गेनिक्स लिमिटेड (NCOL), बहु-राज्य सहकारी समिति अधिनियम, 2002 के तहत पंजीकृत है, जिसका उद्देश्य ऑर्गेनिक्स उत्पादों को बढ़ावा देने के लिए सहकारिताओं के लिए एक छत्र संगठन के रूप में कार्य करना है। एनडीडीबी एनसीओएल का मुख्य प्रमोटर है। इसके अन्य प्रमोटर राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम (NCDC), भारतीय राष्ट्रीय सहकारी उपभोक्ता संघ लिमिटेड (NCCF), गुजरात सहकारी दुग्ध विपणन महासंघ लिमिटेड (GCMMF-AMUL) और भारतीय राष्ट्रीय कृषि सहकारी विपणन महासंघ लिमिटेड (NAFED) हैं। एनसीओएल का लक्ष्य एक मजबूत ब्रांड स्थापित करके राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दोनों बाजारों तक पहुंच की सुविधा प्रदान करके ऑर्गेनिक खेती करने वाले किसानों और उत्पादक संस्थाओं को सीधे बाजार पहुंच प्रदान करके ऑर्गेनिक उत्पादों की लाभप्रदता बढ़ाना है। 31 मार्च 2024 तक, एनसीओएल में विभिन्न स्तरों (प्राथमिक, जिला, राज्य, आदि) में 3,778 से अधिक पंजीकृत सदस्य समितियाँ शामिल हैं, जिसमें लगभग एक मिलियन किसान इस संस्था से जुड़े हुए हैं।

वर्ष के दौरान, एनसीओएल ने "भारत ऑर्गेनिक" ब्रांड के तहत 11 ऑर्गेनिक उत्पाद लॉन्च किए, जिनमें खांडसारी चीनी, ज्वार आटा, चना दाल, तूर/अरहर दाल, मूंग दाल, बेसन, गुड़ पाउडर, काबुली चना, राजमा चित्रा, मसूर मलका और दलिया शामिल हैं। ये उत्पाद वर्तमान में दिल्ली एनसीआर क्षेत्र में SAFAL आउटलेट्स और फ्लिपकार्ट के माध्यम से उपलब्ध हैं और साथ ही, विभिन्न चैनलों के माध्यम से इन उत्पादों के राष्ट्रव्यापी वितरण की योजना बनाई जा रही है ताकि पूरे देश में ग्राहकों के लिए प्रतिस्पर्धी कीमतों पर प्रामाणिक ऑर्गेनिक उत्पादों की सुलभता सुनिश्चित हो सके।

एनसीओएल ने नवंबर 2023 में आईसीएआर कन्वेंशन सेंटर, पूसा, नई दिल्ली में ऑर्गेनिक कृषि को बढ़ावा देने पर राष्ट्रीय संगोष्ठी की मेजबानी की। इस कार्यक्रम को माननीय केंद्रीय गृह और सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी ने संबोधित किया तथा इस दौरान उन्होंने एनसीओएल लोगो, वेबसाइट एवं ब्रोशर को लॉन्च किया और एनसीओएल सदस्यों को सदस्यता प्रमाण पत्र वितरित किए गए।

भारतीय बीज सहकारी समिति लिमिटेड

बीबीएसएल एक राष्ट्रीय स्तर की शीर्ष सहकारी समिति है, जिसका मुख्य प्रमोटर कृषक भारती कोऑपरेटिव लिमिटेड (KRIBHCO) है। इसके अलावा, इसके अन्य प्रमोटर इंडियन फार्मर्स फर्टिलाइजर कोऑपरेटिव लिमिटेड (IFFCO), NAFED, NDDB और NCDC भी हैं। भारतीय बीज सहकारी समिति लिमिटेड को बहु-राज्यीय सहकारी समिति अधिनियम, 2002 के तहत पंजीकृत किया गया है।

भारत सरकार के कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय ने वित्त वर्ष 2023-24 से राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन (NFSM) कार्यक्रम के तहत दलहन और तिलहन उत्पादन के लिए BBSSL को केंद्रीय नोडल बीज एजेंसी के रूप में नामित किया है। वित्त वर्ष 2023-24 के दौरान, 78 किसानों जो विभिन्न सहकारी समितियों (ब्रीडर से फाउंडेशन) के सदस्य भी हैं, के माध्यम से रबी सीजन में लगभग 1,100 एकड़ क्षेत्र में बीज उत्पादन कार्यक्रम की शुरूआत की गई है बीज उत्पादन कार्यक्रम के पहले चरण में, चार राज्यों (उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश,राजस्थान और गुजरात) में गेहूं, चना, सरसों और मटर की 16 किस्मों का उत्पादन किया जा रहा है और इन फसलों

माननीय केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री, श्री अमित शाह जी ने एनसीओएल, बीबीएसएसएल और एनसीईएल के कार्यालयों का उद्घाटन करते हुए

के लगभग 1,500 मीट्रिक टन फ़ाउंडेशन सीड का उत्पादन होने की संभावना है।

बीबीएसएसएल ने 26 अक्तूबर 2023 को विज्ञान भवन, नई दिल्ली में माननीय केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री, भारत सरकार श्री अमित शाह जी की गरिमामयी उपस्थिति में "सहकारी क्षेत्र के माध्यम से उन्नत और पारंपरिक बीजों का उत्पादन" विषय पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया। सिम्पोजियम में माननीय केंद्रीय मंत्री द्वारा बीबीएसएसएल के लोगो, वेबसाइट और ब्रोशर का भी अनावरण किया गया।

डेरी सहकारिताओं को सहयोग देने के लिए एनडीडीबी की योजनाएं

एनडीडीबी ने डेरी सहकारिताओं और उत्पादक संस्थाओं को सहयोग देना निरंतर जारी रखा है, जिससे वे अपने सदस्यों को बेहतर सेवा प्रदान कर सके। इस संबंध में, एनडीडीबी ने डेरी सहकारी संस्थाओं को सहयोग देने के लिए अपनी योजनाओं के माध्यम से कुछ पायलट परियोजनाएं शुरू की हैं।

उत्पादक स्वामित्व वाली प्रोमिसिंग संस्थाओं का पुनः सशक्तिकरण

एनडीडीबी ने उत्पादक स्वामित्व वाली प्रोमिसिंग संस्थाओं को दूध संकलन, संस्था निर्माण, प्रसंस्करण और आईसीटी के बुनियादी ढांचे, जनशक्ति सहायता एवं प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण में सहयोग करने के लिए "उत्पादक स्वामित्व वाली प्रोमिसिंग संस्थाओं का पुनः सशक्तिकरण" योजना को लागू किया।

देश के विभिन्न क्षेत्रों की डेरी सहकारिताओं जैसे वाराणसी दूध संघ, एर्नाकुलम दूध संघ, पश्चिम असम दूध संघ, सुंदरबन दूध संघ, मिदनापुर दूध संघ और फिरोजपुर दूध संघ को इस योजना का लाभ मिला है। वर्ष 2023-24 के दौरान परियोजना के लिए कुल स्वीकृत व्यय 9.32 करोड़ रुपये है, जिसमें एनडीडीबी से अनुदान सहायता के रूप में 5.28 करोड़ रुपये और ब्याज मुक्त ऋण के रूप में 2.46 करोड़ रुपये शामिल हैं।

उत्पादकों के स्वामित्व वाली संस्थाओं के विपणन को मजबूत करने के लिए सहयोग

एनडीडीबी ने "उत्पादकों के स्वामित्व वाले संस्थानों के विपणन संचालन को मजबूत करने के लिए सहयोग" की 5 वर्षीय (वित्त वर्ष 2021-22 से वित्त वर्ष 2025-26) योजना की शुरूआत की है, जिसमें लगभग 30 करोड़ रुपये का परिव्यय शामिल है।

वर्ष 2023-24 के दौरान, एनडीडीबी की विपणन सहयोग योजना को दो और डेरी सहकारिताओं तक बढ़ाया गया। इस प्रकार, इस योजना के अंतर्गत सहायता प्राप्त उत्पादक स्वामित्व वाली संस्थाओं (POI) की कुल संख्या बढ़कर 23 हो गई है। 2023-24 के अंत तक, क्रियान्वित की जा चुकी परियोजनाओं का कुल परिव्यय 24.23 करोड़ रुपए तक पहुंच गया, जिसमें एनडीडीबी द्वारा 11.41 करोड़ रुपए की अनुदान सहायता शामिल है। इस योजना के अंतर्गत, सहकारिताओं को कोल्ड चैन बुनियादी ढांचे के विकास

के लिए सहयोग के अलावा, ब्रांड विकास, बिक्री एवं वितरण और परामर्श सहयोग मार्गदर्शन और हैंडहोल्डिंग सहयोग भी प्राप्त हुआ।

वाराणसी दूध संघ, मगध दूध संघ, विजयपुरा और बागलकोट दूध संघ, बेलागवी दूध संघ, मिदनापुर दूध संघ और मिजोरम दूध संघ को बिक्री और वितरण परामर्श सेवाएं प्रदान की गईं। ब्रांड विकास सहयोग के लिए, छत्तीसगढ़ राज्य सहकारी दूध महासंघ मर्यादित, रायपुर, छत्तीसगढ़, लद्दाख यूटी डेरी सहकारी महासंघ लिमिटेड, लेह, लद्दाख और मुलुकनूर महिला म्यूचूअली एडेड दूध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड के लिए ब्रांड रिफ्रेश और पैकेजिंग सुधार किया गया।

विभिन्न सहकारिताओं के विपणन प्रबंधकों और अधिकारियों की क्षमता निर्माण के लिए कई प्रशिक्षण कार्यक्रमों और कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। इसके अलावा, लाभार्थी पीओआई को उचित मैनपावर स्ट्रक्चर स्थापित करने के लिए अपने बिक्री और विपणन कार्य के व्यावसायिकरण हेतु मार्गदर्शन प्रदान किया गया और उन्हें योग्य और अनुभवी प्रोफेशनलों को ऑन-बोर्ड करने में भी मदद की गई।

दूध संघों और महासंघों को प्रबंधन सहयोग

झारखंड दूध महासंघ

वर्ष के दौरान, झारखंड राज्य सहकारी दूध उत्पादक महासंघ लिमिटेड (JMF) ने विभिन्न पहलुओं में महत्वपूर्ण प्रगति की।

जेएमएफ ने लगभग 3,100 गांवों को कवर करते हुए 35,000 से अधिक किसान उत्पादक सदस्यों से लगभग 190 हकिग्राप्रदि का औसत दैनिक दूध संकलन किया, पिछले वर्ष की तुलना में दूध संकलन मे लगभग 30.72 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई।

महासंघ ने प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (DBT) के माध्यम से दूध उत्पादकों को 260 करोड़ रुपये दूध के मूल्य का भुगतान किया। वर्ष के दौरान, राज्य सरकार ने जेएमएफ से संबद्ध दूध उत्पादकों को 3 रुपये प्रति लीटर का इन्सेंटिव दिया। दूध संकलन प्रक्रिया को पारदर्शी बनाने और उसका कुशल संचालन सुनिश्चित करने के लिए गांव के दूध पुलिंग पॉइंट(MPP) में 858 डेटा प्रोसेसर दूध संकलन इकाइयां (DPMCU) और 125 स्वचालित दूध संकलन इकाइयां (AMCU) भी स्थापित की गईं।

जेएमएफ ने 2023-24 में प्रतिदिन 166 हजार लीटर तरल दूध (हलीप्रदि) की बिक्री की, जो पिछले वर्ष की तुलना में 6.39 प्रतिशत अधिक है। तरल पाउच दूध की बिक्री सात प्रतिशत से बढ़कर 160 हलीप्रदि हो गई। इस वर्ष, झारखंड के माननीय मुख्यमंत्री द्वारा पलामू में 50 हलीप्रदि (100 हलीप्रदि तक विस्तार योग्य) की क्षमता वाले एक नए डेरी संयंत्र का उद्घाटन किया गया। वर्ष के दौरान,डेरी प्रसंस्करण अवसंरचना को बढ़ाने के प्रयास में, गिरिडीह और जमशेदपुर में 50 हलीप्रदि क्षमता वाले दो डेरी प्रसंस्करण संयंत्रों की आधारशिला भी रखी गई। अपने उत्पादों में विविधता लाने के लिए, जेएमएफ ने नई मेधा रबड़ी भी लॉन्च की।

वर्ष के दौरान, जेएमएफ ने संबंधित दूध उत्पादकों को किफायती दरों पर 29.26 मीट्रिक टन चारा फसल के बीज वितरित किए।

झारखंड के माननीय मुख्यमंत्री श्री हेमन्त सोरेन, पलामू, झारखंड में नए डेरी प्लांट का उद्घाटन करते हुए

बारहमासी चारा घासों को बढ़ावा देने के लिए दूध उत्पादकों को मुफ्त हाइब्रिड-नेपियर कटिंग प्रदान किए गए। झारखंड में दूध उत्पादकों के बीच 64,550 से अधिक नेपियर कटिंग वितरित की गईं।

2023-24 में, जेएमएफ द्वारा कई नस्ल सुधार की पहल की गई। इसमें से एक शीघ्र नस्ल सुधार कार्यक्रम (Accelerated Breed Improvement Programme) के अंतर्गत आईवीएफ-एम्ब्रियो ट्रांसफर प्रोजेक्ट का कार्यान्वयन है, जिसके परिणामस्वरूप रेसिपीएंट पशु में से 25 पशु गाभिन हुए। एनडीडीबी डेरी सर्विसेज के सहयोग से झारखंड के 12 जिलों में नस्ल सुधार के लिए एआई कार्यक्रम की भी शुरूआत की गई। इस कार्यक्रम का उद्घाटन झारखंड के माननीय मुख्यमंत्री द्वारा 7 मार्च 2024 को जमशेदपुर में किया गया।

वर्ष के दौरान, झारखंड के 12 जिलों के 123 उम्मीदवारों को मान्यता प्राप्त एआई का प्रशिक्षण दिया गया। इसके अलावा, एआई सुविधा प्रदान करने के लिए क्षेत्र में 75 एआईटी तैनात किए गए, जिसके परिणामस्वरूप कुल 1,561 एआई किए गए। फील्ड प्रशिक्षण में एआई तकनीशियनों को सहायता प्रदान करने और पशुओं में बांझपन की समस्या का समाधान करने के लिए, जेएमएफ के दूध पूलिंग परिचालन क्षेत्रों में 21 बांझपन निवारण शिविर आयोजित किए गए, जिसमें 300 पशुओं का उपचार किया गया।

खाद प्रबंधन कार्यक्रम के अंतर्गत, रांची जिले के बेरो ब्लॉक के चांगानी टिकराटोली गांव में 100 फ्लेक्सी बायोगैस यूनिट और एक बॉयो-स्लरी प्रोसेसिंग यूनिट को जेएमएफ द्वारा सफलतापूर्वक स्थापित किया गया। वर्ष के दौरान, इन यूनिट्स ने 15 मीट्रिक टन खाद आधारित उत्पादों का उत्पादन किया।

वर्ष के दौरान, पूरे राज्य में अस्सी डेरी सहकारी समितियां, दो मधुमक्खीपालक एफपीओ और दो चारा एफपीओ पंजीकृत किए गए।

वाराणसी दूध संघ

वर्ष के दौरान, एनडीडीबी द्वारा वाराणसी दूध संघ का प्रबंधन निरंतर जारी रहा। दूध संघ ने 491 डेरी सहकारी समितियों से प्रतिदिन लगभग 174 हकिग्राप्रदि का औसत दूध संकलन किया, इसमें 21,000 डेरी किसान शामिल है और उन्हें प्रति किलोग्राम 44.68 रुपये के औसत दूध संकलन मूल्य के हिसाब से भुगतान किया गया।

इस वर्ष, 250 डीपीएमसीयू और 20 एएमसीयू की स्थापना से ग्राम-स्तरीय दूध संकलन प्रक्रिया में उच्च स्तर की पारदर्शिता

वाराणसी दूध संघ ने प्रसंस्करण दक्षता लाने और डेरी संयंत्र प्रक्रियाओं को स्वचालित करने के लिए NDERP को अपनाने की पहल की।

हासिल हुई। इसके अलावा, दूध संकलन मार्गों के महत्वपूर्ण स्थलों पर 15 बीएमसी की स्थापना होने से संग्रहीत दूध की गुणवत्ता में काफी सुधार आया।

वाराणसी दूध संघ ने किसान के स्तर पर उत्तम गुणवत्ता वाले दूध का संकलन सुनिश्चित किया और साथ ही, अपनी गुणवत्ता आश्वासन प्रयोगशाला को और मजबूत किया है। दूध संघ अपने डेरी संयंत्र के लिए ISO 22000 प्रमाणन प्राप्त करने की प्रक्रिया में है।

वर्ष के दौरान, दूध संघों ने एनडीईआरपी उत्पादन मॉड्यूल को अपनाने की पहल की है। इस कदम का उद्देश्य प्रसंस्करण दक्षता लाना और डेरी संयंत्र प्रक्रियाओं को स्वचालित करना है, साथ ही उन्हें दूध संघ की अन्य प्रक्रियाओं के साथ एकीकृत करना है। वाराणसी दूध संघ ने एनडीडीबी की "उत्पादक स्वामित्व वाली प्रोमिसिंग संस्थाओं का पुनः सशक्तिकरण" के तहत वित्तीय सहायता प्राप्त की और 394.2 लाख रुपये का ब्याज मुक्त ऋण और 300 लाख रुपये का अनुदान प्राप्त किया। इससे दूध संघ को अपने दूध संकलन कार्यों को मजबूत करने, अपनी प्रसंस्करण क्षमताओं में सुधार लाने और अपने आईसीटी बुनियादी ढांचे के विस्तार में काफी मदद मिली। इसके अलावा, इसे एनडीडीबी की "उत्पादकों के स्वामित्व वाले संस्थानों के विपणन संचालन को मजबूत करने के लिए सहयोग" योजना के तहत 49.77 लाख रुपये का अनुदान मिला, जिससे संघ के ब्रांड का विस्तार हुआ।

वाराणसी दूध संघ अपने किसान सदस्यों को विभिन्न इनपुट सेवाएं प्रदान करता है, जैसे कि पशु आहार, क्षेत्र विशेष खनिज मिश्रण और किफायती मूल्यों पर पशु आहार का वितरण। वर्ष के दौरान, डेरी किसानों, रूट सुपरवाइजर, विपणन कर्मियों और संभावित कार्मिकों के लिए प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण के कार्यक्रम भी आयोजित किए गए।

सहकारी कवरेज का विस्तार - "सहकार-से-समृद्धि" के विज़न को साकार करना

वाराणसी दूध संघ में 50 मीटप्रदि फर्मेन्टेड सेक्शन के शिलान्यास समारोह के दौरान एनडीडीबी के अध्यक्ष डॉ. मीनेश शाह

वाराणसी दूध संघ ने वर्ष 2023-24 के दौरान 'पराग' ब्रांड के तहत पनीर, घी, दही, लस्सी आदि जैसे दूध उत्पादों के अलावा प्रतिदिन लगभग 16.33 हलीप्रदि पैक्ड तरल दूध की बिक्री की। संघ ने वार्षिक व्यापार कारोबार में तीन गुना वृद्धि हासिल की, जो 2022-23 के 54 करोड़ रुपये से बढ़कर 2023-24 के दौरान 172 करोड़ रुपये हो गई, पिछले वर्ष की तुलना में यह वृद्धि लगभग 220 प्रतिशत अधिक है।

एनडीडीबी द्वारा स्थापित गोबर आधारित बायोगैस संयंत्र ने डेरी संयंत्र की ऊर्जा आवश्यकताओं को उल्लेखनीय रूप से पूरा किया है और ईंधन की लागत में बचत की है। यह संयंत्र, गोबर की बिक्री द्वारा डेरी किसानों के लिए अतिरिक्त आय का स्रोत निर्मित करने के साथ-साथ पारंपरिक ईंधन के उपयोग में कमी लाकर, कार्बन फुटप्रिंट कम करने की दिशा में भी मदद कर रहा है। इसके अलावा, यह केंद्र सरकार के स्वच्छ भारत मिशन और हरित ऊर्जा कार्यक्रमों को भी बढ़ावा दे रहा है।

2023-24 के दौरान, अध्यक्ष, एनडीडीबी द्वारा 50 मीटप्रदि फर्मेन्टेंड सेक्शन की स्थापना हेतु आधारशिला रखी गई। इसके अलावा, डेरी संयंत्र परिसर में 20 मीटप्रदि क्षमता का पाउडर संयंत्र तथा एक नए स्वीट मेकिंग सेक्शन की स्थापना का कार्य भी प्रगति पर है।

पश्चिम असम दूध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड

एनडीडीबी ने पश्चिमी असम दूध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड (वामूल) का प्रबंधन निरंतर जारी रखा, जिसे "पूरबी डेरी" के नाम से जाना जाता है। वित्त वर्ष 2023-24 के दौरान, वामूल 885 क्रियाशील डेरी सहकारी समितियों के माध्यम से लगभग 34,000 डेरी किसानों से जुड़ी हुई है और प्रतिदिन औसतन 53,100 किलोग्राम दूध संकलन किया गया। वामूल द्वारा अपने डेरी किसानों को प्रत्यक्ष बैंक अंतरण के माध्यम से भुगतान किया जाने वाला औसत दूध संकलन मूल्य लगभग 42.90 रुपये प्रति किलोग्राम था, जिसमें अतिरिक्त दूध संकलन मूल्य के रूप में 1.50 रुपये प्रति किग्रा शामिल है।

वर्ष के दौरान, वामूल ने फ्रैंचाइजी आधार पर 13 ग्राम स्तरीय बीएमसी केंद्रों को कमीशनिंग करके अपनी बल्क मिल्क कूलिंग क्षमता को 43,000 लीटर तक बढ़ाया। वामूल ने पिछले वर्ष की तुलना में संबद्ध क्रियाशील डेरी किसानों की संख्या में लगभग 20 प्रतिशत की वृद्धि की।

दूध संघ ने विभिन्न इनपुट सेवाएं प्रदान करना निरंतर जारी रखा जैसे- कृत्रिम गर्भाधान (AI) की डोरस्टेप डिलीवरी और किफायती दरों पर पशु आहार और आहार सप्लीमेंट्स का वितरण, साथ ही अपने डेरी किसानों के लिए क्षेत्र प्रदर्शन, प्रशिक्षण सत्र और क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित करना। विश्व बैंक द्वारा वित्त पोषित असम एग्रोबिजनेस एंड रूरल ट्रांसफॉर्मेशन प्रोजेक्ट (APART) के औपचारिक डेरी वैल्यू चेन घटक की अंतिम कार्यान्वयन एजेंसी के

रूप में वामूल ने मार्च 2024 तक APART के तहत आने वाले जिलों में 424 मोबाइल AI तकनीशियनों (MAITs) के नेटवर्क के माध्यम से 3,285 गांवों में 9,87,424 डोरस्टेप कृत्रिम गर्भाधान (AI) सेवाएं प्रदान कीं, जिसके परिणामस्वरूप 3,69,731 बछड़े पैदा हुए। इस वर्ष इनाफ (INAPH) प्रणाली से भारत पशुधन प्रणाली में डेटा रिकॉर्डिंग के बदलावों को भी चिह्नित किया गया।

वर्ष के दौरान, वामूल ने 6,089 टन पशु आहार की बिक्री की, जो पिछले वर्ष की तुलना में 74 प्रतिशत अधिक है। इसके अलावा, वामूल ने 34 टन खनिज मिश्रण बेचा और अपने डेरी किसानों को 31.17 लाख हाइब्रिड नेपियर स्लिप वितरित किए। असम चारा मिशन (पशुपालन और पशु चिकित्सा निदेशालय, असम सरकार द्वारा कार्यान्वित) के तहत प्राप्त चारा स्लिप का बड़ा हिस्सा भी संघ द्वारा वितरित किया गया। वित्त वर्ष 2023-24 में, वामूल ने यूरिया उपचारित धान के भूसे और हरे चारे के साइलेज का प्रदर्शन जारी रखा। पशु आयुर्वेद गतिविधियों के तहत चारा फसलों और औषधीय पौधों की नर्सरी और प्रदर्शन भूखंड भी विकसित किए और युवा तथा वयस्क दुधारू पशुओं के बेहतर चारा प्रबंधन के लिए बछड़ी पोषण लोकप्रियता कार्यक्रम और आहार संतुलन कार्यक्रम (RBP) जैसे कार्यक्रम शुरू किए गए। इसके अलावा, पशुओं को कई बीमारियों से बचाने के लिए वर्ष के दौरान एथनो-पशु चिकित्सा शिविरों सहित टीकाकरण और स्वास्थ्य शिविर आयोजित किए गए।

इस वित्तीय वर्ष में, वामूल ने पर्यावरण की दृष्टि से सस्टेनेबल तरीके से अपने गांव-आधारित दूध संकलन गतिविधियों को मजबूत करने के लिए सौर ऊर्जा संचालित स्वचालित दूध संग्रह प्रणाली की 299 इकाइयाँ और 11 सौर ऊर्जा संचालित तत्काल मिल्क चिलिंग यूनिट स्थापित कीं। इसके अलावा, एनडीडीबी ने मलोईबारी गाँव, सस्टेन प्लस एनर्जी फाउंडेशन और WAMUL द्वारा संयुक्त रूप से वित्त पोषित एक स्लरी प्रसंस्करण केंद्र को कमीशनिंग करने का काम सफलतापूर्वक शुरू हो गया है। इसके अलावा, 100 महिला लाभार्थियों को सदस्य के रूप में शामिल करते हुए एक गोबर सहकारी समिति- "सखी जैविक खार समाबाई समिति लिमिटेड" को पंजीकृत किया गया है, जिसका उद्देश्य ऑर्गेनिक खाद के निर्माण और पैकेजिंग के लिए मलोईबारी में स्लरी प्रसंस्करण केंद्र को स्लरी की आपूर्ति करना है।

वर्ष के दौरान, वामूल ने 'पूरबी' ब्रांड के तहत विभिन्न पैक आकारों में प्रसंस्कृत और शुद्ध शहद की एक शृंखला का शुभारंभ किया। इस उत्पाद का शुभारंभ भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय द्वारा 20 मई 2023 को विश्व मधुमक्खी दिवस के अवसर पर मध्य प्रदेश के बालाघाट जिले के वारासिवनी स्थित कृषि कॉलेज में आयोजित एक कार्यक्रम में किया गया।

दिसंबर 2023 में गुजरात के गांधीनगर में आयोजित एक कार्यक्रम में, वामूल को माननीय केंद्रीय गृह मामले और सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी से वर्ष 2022-23 के लिए एनसीडीएफआई (NCDFI) का "सक्रिय भागीदारी पुरस्कार" भी प्राप्त हुआ।

माननीय केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी ने WAMUL को वर्ष 2022-23 के लिए NCDFI का "सक्रिय भागीदारी पुरस्कार" प्रदान किया।

सहकारी कवरेज का विस्तार - "सहकार-से-समृद्धि" के विज़न को साकार करना

वर्ष के दौरान, असम के माननीय मुख्यमंत्री डॉ. हिमंता बिस्वा सरमा ने 02 मार्च 2024 को गुवाहाटी के पंजाबरी में अपने डेरी परिसर में आयोजित एक उद्घाटन समारोह में वामूल के विस्तारित डेरी संयंत्र का अनावरण किया। नव विस्तारित सुविधा 60,000 लीटर प्रति दिन की पूर्व प्रसंस्करण क्षमता के मुकाबले 1.5 लाख लीटर दूध के प्रसंस्करण में सक्षम होगी। इसके अलावा, यह संयंत्र प्रतिदिन 10 मीट्रिक टन दही, प्रतिदिन 10,000 लीटर लस्सी, प्रतिदिन 2 टन पनीर और प्रतिदिन 2,000 लीटर आइसक्रीम का उत्पादन कर सकता है। अपनी नई आइसक्रीम निर्माण क्षमता के साथ, वामूल ने "पूरबी" ब्रांड के तहत पांच अलग-अलग स्वादों में अर्थात् स्ट्रॉबेरी, वेनिला, बटरस्कॉच, चॉकलेट और फ्रुट एंड नट के तहत अनेक आइसक्रीम भी लॉच की। 17 जुलाई 2023 को, वामूल ने पंजाबरी, गुवाहाटी के अपने परिसर में एक नए प्रकार का मिल्क पार्लर लांच किया।यह नई पीढ़ी का स्टोर पूरबी के अत्याधुनिक और संपूर्ण ब्रांड में बनने की यात्रा को प्रदर्शित करता है।

वित्त वर्ष 2023-24 में, वामूल ने प्रतिदिन 1,03,100 लीटर पैक्ड तरल दूध और दूध के उत्पादों जैसे पनीर, मीठी दही, सादा दही, लस्सी, क्रीम और घी ने दूध समतुल्य बिक्री दर्ज की, जिससे पिछले वर्ष की तुलना में लगभग 25 प्रतिशत की वृद्धि हुई। इसके अलावा, पिछले वर्ष की तुलना में इस वर्ष के दौरान पैक्ड तरल दूध के मुकाबले दूध समतुल्य उत्पादों की हिस्सेदारी में चार प्रतिशत की वृद्धि हुई। इससे वामूल को वित्त वर्ष 2023-24 के दौरान लगभग 270 करोड़ रुपये का बिक्री कारोबार दर्ज करने में मदद मिली, जो पिछले वित्तीय वर्ष की तुलना में लगभग 32 प्रतिशत अधिक है।

कवरेज क्षेत्र को बढ़ाने और अधिक गांवों को सहकारी नेटवर्क के तहत लाने के लिए वामूल के अनुरोध पर एनडीडीबी ने असम के "सोनितपुर जिले में दूध उत्पादन और दूध अधिशेष का आकलन" और "दूध उत्पादन की स्थिति, विपणन योग्य अधिशेष और दीमा हसाओ जिले में डेरी की स्थिति" के लिए अध्ययन किए। अध्ययनों के आधार पर, यह पाया गया कि सोनितपुर जिले में अनुमानित दूध उत्पादन लगभग तीन लालीप्रदि है। इसके अलावा, आठ जिलों में इन सर्वेक्षणों के आधार पर (ऊपरी असम के सात जिलों में सर्वेक्षण 2022-23 में किया गया था), दूध संकलन के लिए संभावित समूहों की पहचान की गई है, कुल मिलाकर लगभग 12 लालीप्रदि दैनिक दूध उत्पादन और लगभग सात लालीप्रदि का उत्पादक अधिशेष है। पांच संभावित समूहों की पहचान की गई है, जो 5,546 गांवों को कवर करते हैं और नौ लालीप्रदि दैनिक दूध उत्पादन और छः लालीप्रदि उत्पादक अधिशेष के लिए उत्तरदायी हैं।

पूर्वी असम दूध संघ लिमिटेड

डेरी सहकारिताओं के माध्यम से पूर्वी असम में डेरी विकास को बढ़ाने के लिए असम सरकार, एनडीडीबी और पूर्वी असम दूध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड (EAMUL) के बीच एक त्रिपक्षीय अनुबंध पर हस्ताक्षर किए गए। अनुबंध के तहत दरांग, सोनितपुर, लखीमपुर, धेमाजी, गोलाघाट, जोरहट, शिवसागर, डिब्रूगढ़ और तिनसुकिया जिलों में आवश्यक अवसंरचना का निर्माण करके और ग्रामीण स्तर पर डेरी सहकारी समितियों (DCS) की स्थापना कर डेरी विकास गतिविधियों की शुरुआत की परिकल्पना की गई है।

असम के माननीय मुख्यमंत्री डॉ. हिमंता बिस्वा सरमा द्वारा गुवाहाटी में विस्तारित पुराबी डेरी प्लांट (150 हलिप्रदि) का उद्घाटन

एक आधुनिक दूध पार्लर – पूरबी

ईअमूल ने 01 अप्रैल 2023 से एनडीडीबी को प्रशासनिक प्रबंधन दायित्व सौंपा है।

ईअमूल द्वारा पूर्वी असम के सात जिलों में 22,000 लीटर के बल्क मिल्क चिलिंग क्षमता स्थापित की है। ईअमूल ने दूध संकलन प्रक्रिया शुरू की, जिसमें 543 गांवों के 3,121 उत्पादक सदस्यों से प्रतिदिन औसतन 3,134 लीटर दूध संकलन किया जा रहा है। ईअमूल ने एक पारदर्शी दूध संकलन प्रणाली स्थापित की है जो यह सुनिश्चित करती है कि सदस्य को भुगतान केवल उनके बैंक खातों में किया जाए।

APART के तहत, ईअमूल डेरी किसानों के लिए कृत्रिम गर्भाधान (AI), आहार संतुलन, ईवीएम के माध्यम से पशु उपचार सेवाएं, पराली के यूरिया उपचार और साइलेज बनाने का प्रदर्शन आदि जैसी कई उत्पादकता वृद्धि संबंधी सेवाएं उपलब्ध करा रही है।

डेरी पशुओं की आनुवंशिक क्षमता में सुधार के लिए डोर-स्टेप एआई डिलीवरी पर विशेष जोर दिया गया। वर्ष के दौरान, 1,055 गांवों में 116 मोबाइल एआई तकनीशियनों के नेटवर्क के माध्यम से कुल 29,470 एआई किए गए।

हरे चारे के उत्पादन को बढ़ावा देने और प्रभाव क्षेत्र में विस्तार के लिए, दूध उत्पादकों को संकर नेपियर की 7.88 लाख स्लिप्स और 2.8 मीट्रिक टन मक्का के बीज वितरित किए गए। वर्ष के दौरान, डेरी किसानों को उचित दर पर 659 मीट्रिक टन मिश्रित पशु आहार और 8.7 मीट्रिक टन खनिज मिश्रण की आपूर्ति भी की गई। हितधारकों की क्षमता निर्माण के लिए, बीएमसी/डीसीएस प्रबंधन, स्वच्छ दूध उत्पादन, डेरी पशु प्रबंधन आदि पर विभिन्न प्रशिक्षण और जागरूकता कार्यक्रम भी नियमित रूप से आयोजित किए जा रहे हैं।

नॉर्थ ईस्ट डेरी एंड फूड्स लिमिटेड (NEDFL)

असम सरकार और एनडीडीबी के बीच एक संयुक्त उद्यम के माध्यम से गठित नई कंपनी ने मार्च 2024 तक 'पूरबी' और 'मदर डेरी' ब्रांड के तहत दूध और दूध उत्पादों की बिक्री और वितरण शुरू किया गया, जिनकी कुल लागत 110 लाख रुपये है।

इसके अतिरिक्त, वर्ष के दौरान, एनईडीएफएल ने वामूल से जुड़े स्थानीय बामुंतरी आंचलिक डीसीएस के साथ एक अनुबंध के माध्यम से बारपेटा जिले के टीटापानी में साइलेज बनाने की

सहकारी कवरेज का विस्तार - "सहकार-से-समृद्धि" के विज़न को साकार करना

श्री नितिन गडकरी, माननीय केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री, श्री राधाकृष्ण विखे पाटिल, माननीय राजस्व, पशुपालन और डेयरी विकास मंत्री, महाराष्ट्र सरकार तथा डॉ. मीनेश शाह, अध्यक्ष, एनडीडीबी ने नागपुर में मदर डेरी की आधारशिला रखी

गतिविधियों की शुरूआत की। इस संयुक्त उद्यम कंपनी ने अपार्ट के तहत् वामूल द्वारा बारपेटा जिले के टीटापानी में स्थापित साइलेज बनाने की इकाई को संचालित करने के लिए स्थानीय डीसीएस को अपनी फ्रेंचाइजी के रूप में नियुक्त किया है। एनईडीएफएल साइलेज बनाने वाली इकाई को निरंतर आपूर्ति के लिए आसपास के क्षेत्रों में छः डीसीएस से हरा चारा प्राप्त करेगा। 31 मार्च, 2024 तक बामुंतरी आंचलिक डीयूएसएस और बांकभंगा आंचलिक डीयूएसएस के डेरी किसानों द्वारा आपूर्ति किए गए हरे चारे से 3.39 लाख रुपये मूल्य का 58.26 टन साइलेज तैयार किया गया।

विदर्भ मराठवाड़ा डेरी विकास परियोजना

महाराष्ट्र के सूखे की संभावना वाले विदर्भ और मराठवाड़ा क्षेत्रों में विदर्भ मराठवाड़ा डेरी विकास परियोजना (VMDDP) डेरी किसानों को बाजार की पहुंच और उचित मूल्य प्रदान करने के अपने उद्देश्य की ओर सतत् कार्यरत है। इस वर्ष, लगभग 5,000 नए डेरी किसानों को इसके संकलन नेटवर्क में जोड़ा गया, जिससे लगभग 3,300 गांवों में इस नेटवर्क की संख्या बढ़कर कुल 35,000 हो गई। वर्ष के दौरान, मदर डेरी ने प्रतिदिन 4.60 लाख किलोग्राम दूध का संकलन किया और पिछले वर्ष के औसत दैनिक संकलन 2.40 लाख किलोग्राम से बढ़कर 3.30 लाख किलोग्राम हो गया है।

आने वाले वर्षों में, विदर्भ मराठवाड़ा परियोजना क्षेत्र में दूध के संकलन में उल्लेखनीय वृद्धि होने की संभावना है। इसे ध्यान में रखते हुए, मदर डेरी ने नागपुर में दूध और दूध उत्पादों के लिए एक अत्याधुनिक मेगा-प्लांट स्थापित करने की योजना बनाई है। इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए महाराष्ट्र औद्योगिक विकास निगम (MIDC) से छब्बीस एकड़ भूमि का अधिग्रहण किया गया।

माननीय केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री (MORTH) श्री नितिन गडकरी ने नागपुर में आयोजित एग्रोविजन, 2023 के दौरान इस अत्याधुनिक मेगा दूध प्रसंस्करण संयंत्र की आधारशिला रखी। इस आयोजन में श्री राधाकृष्ण विखे पाटिल, माननीय राजस्व, पशुपालन और डेयरी विकास मंत्री, महाराष्ट्र सरकार; डॉ. मीनेश शाह, अध्यक्ष, एनडीडीबी; श्री मनीष बंदलिश, प्रबंध निदेशक, मदर डेरी और अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

कमिशनिंग पूरा होने के बाद, यह मेगा-प्लांट प्रतिदिन छह लाख लीटर दूध की प्रोसेसिंग कर सकता है, इसमें प्रतिदिन दस लाख लीटर तक के विस्तार का प्रावधान है। मूल्य वर्धित डेरी उत्पाद

(Value Added Products) जैसे लस्सी, मिष्टी दोई, फ्लेवर्ड दूध, मिठाई और घी भी इस संयंत्र में निर्मित किए जा सकते हैं, जिससे वर्तमान ग्राहकों को बेहतर सेवा प्रदान करने के अलावा, पश्चिमी और दक्षिणी भारत में बाजार का विस्तार किया जा सकता है।

राष्ट्रीय गोकुल मिशन (RGM) के अंतर्गत एनडीडीबी डेरी सर्विसेज (NDS) द्वारा परियोजना क्षेत्र में कार्यान्वित की जा रही डोरस्टेप कृत्रिम गर्भाधान (AI) सेवाओं की प्रगति काफी अच्छी रही है। वर्तमान में परियोजना क्षेत्र के दस जिलों में 450 से अधिक कृत्रिम गर्भाधान केंद्र कार्यरत हैं और लगभग 1.75 लाख कृत्रिम गर्भाधान किए जा चुके हैं। इसके अलावा, बछड़ी के जन्म की संभावना को अधिक बढ़ाने और डेरी किसानो को लाभान्वित करने के लिए सेक्स सॉर्टेड सीमन का उपयोग करके 6,000 पशुओं को गाभिन किया गया है।

भारत सरकार की 100 चारा किसान उत्पादक संस्थाओं (FPO) योजना के तहत परियोजना क्षेत्र के वर्धा जिले में 'सुचारा चारा एफपीओ' की स्थापना कमलनयन जमनालाल बजाज फाउंडेशन की साझेदारी में की गई, जिसमें यह क्लस्टर आधारित व्यापार संगठन (CBBO) के रूप में कार्यरत है। दस महीने की अल्प अवधि में, सुचारा चारा एफपीओ ने 750 से अधिक इक्विटी शेयरधारकों के साथ अपनी सदस्यता में विस्तार किया है। इस एफपीओ के तत्वावधान में, 50 एकड़ से अधिक भूमि पर एकमात्र फसल के रूप में हरे चारे की खेती की जा रही है। एफपीओ द्वारा खरीदी गई उच्च प्रदर्शन वाली चॉपर-बेलर मशीन का उपयोग करके वर्ष के दौरान लगभग 175 मीट्रिक टन (MT) साइलेज का उत्पादन किया गया।

विदर्भ मराठवाड़ा डेरी विकास परियोजना के दूध संकलन क्षेत्र के विस्तार के प्रयास जारी हैं ताकि अधिक से अधिक गांवों को शामिल किया जा सके। इससे इन क्षेत्रों में डेरी उद्योग को बढ़ावा मिलेगा, डेरी किसानों की आय बढ़ेगी और डेरी उद्योग को अधिक स्थायित्व मिलेगा।

लद्दाख यूटी डेरी सहकारी महासंघ लिमिटेड

एनडीडीबी ने 04 अक्तूबर 2023 से लद्दाख दूध महासंघ (LMF) के संचालन और प्रबंधन की शुरूआत की। ब्रिगेडियर (से.नि.) डॉ. बी डी मिश्रा, माननीय उपराज्यपाल, केंद्र शासित प्रदेश लद्दाख द्वारा डॉ. मीनेश शाह, अध्यक्ष, एनडीडीबी, डॉ. पवन कोतवाल, माननीय उपराज्यपाल के सलाहकार और अन्य गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में लद्दाख डेरी सहकारी संघ के नए नवीनीकृत डेरी संयंत्र का उद्घाटन किया गया।

संघ शासित प्रदेश में डेरी मूल्य श्रृंखला विकसित करने तथा उचित पोषण और प्रजनन के माध्यम से पशु उत्पादकता बढ़ाने के लिए, 95.80 करोड़ रुपये के कुल परिव्यय के साथ पांच वर्ष की अवधि के लिए एक विस्तृत डेरी विकास योजना तैयार की गई।

ब्रिगेडियर (से.नि.) डॉ. बी डी मिश्रा, माननीय उपराज्यपाल, केंद्र शासित प्रदेश लद्दाख, डॉ. मीनेश शाह, अध्यक्ष, एनडीडीबी के साथ लद्दाख डेरी सहकारी महासंघ के नए नवीनीकृत डेरी संयंत्र का उद्घाटन करते हुए

स्वचालित डेरी प्रसंस्करण संयंत्र, हैदराबाद, तेलंगाना

भारतीय डेरी क्षेत्र का डिजिटलीकरण

डिजिटल नवाचार डेरी सहकारी व्यवसाय के सुदृढ़ीकरण और किसानों/हितधारकों को रीयल टाइम जानकारी उपलब्ध कराने के लिए आवश्यक है।

राष्ट्रीय डिजिटल पशुधन मिशन के लिए डिजिटल आर्किटेक्चर

एनडीडीबी ने पशुओं के विशिष्ट विवरण दर्ज करके राष्ट्रव्यापी पशु उत्पादकता वृद्धि और स्वास्थ्य प्रबंधन कार्यक्रमों के कार्यान्वयन में सहायता के लिए एक डिजिटल मंच के रूप में पशु उत्पादकता और स्वास्थ्य के लिए सूचना नेटवर्क (INAPH) की स्थापना की थी। इसे आगे बढ़ाने के लिए, इनाफ के साथ डिजिटल आर्किटेक्चर के रूप में, एनडीडीबी ने पशुपालन और डेयरी विभाग (DAHD) के साथ मिलकर पशु प्रजनन, पोषण और स्वास्थ्य क्षेत्रों के क्षेत्र के डेरी किसानों के लिए सेवाओं में विस्तार करने के लिए एनडीएलएम के तहत एक एंड-टू-एंड डिजिटल इकोसिस्टम "भारत पशुधन" स्थापित किया है। एनडीडीबी इसके लिए तकनीकी सहायता के साथ-साथ वित्तीय सहायता भी प्रदान कर रही है।

एनडीडीबी डेरी ईआरपी

एनडीडीबी ने डेरी ईआरपी (NDERP) को डेरी उद्योग की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु ओपन सोर्स ईआरपी को डेरी के लिए कस्टमाईज्ड करके विकसित किया है। यह स्वचालित दूध संकलन सॉफ्टवेयर (AMCS) के साथ एकीकृत है और इसमें लेखा, क्रय, इनवेंटरी, बिक्री, उत्पादन और गुणवत्ता तथा मानव संसाधन और पेरोल जैसे सभी मानक मॉड्यूल सम्मिलित हैं। यह वितरकों द्वारा बिक्री गतिविधियों के लिए Android और iOS ऐप दोनों पर उपलब्ध है। यह proprietary लागत और आवर्ती लाइसेंस शुल्क के बिना संस्थाओं को एक एकीकृत समाधान उपलब्ध कराता है। डेरी संयंत्र में हानि का प्रबंधन डेरी क्षेत्र की एक बड़ी चुनौती है। इसे डेरी क्षेत्र की आवश्यकता के अनुसार उत्पादन मॉड्यूल में Mass balancing technique विकसित करके और एनडीईआरपी के साथ एकीकृत करके इसका प्रबंधन किया जा रहा है। NDERP को नॉर्थ ईस्ट डेरी एंड फूड्स लिमिटेड, झारखंड दूध महासंघ, पश्चिम असम दूध संघ लिमिटेड, वाराणसी दूध संघ, कर्नाटक ऑयल फेडरेशन, एनडीडीबी मृदा लिमिटेड और एनडीडीबी काफ लिमिटेड में लागू किया जा चुका है।

स्वचालित दूध संकलन प्रणाली (AMCS)

एनडीडीबी ने डेरी सहकारी समिति स्तर पर संचालन को मजबूत करने के लिए एक सुदृढ़, एकीकृत, मल्टी प्लेटफार्म, बहुभाषी सॉफ्टवेयर समाधान- स्वचालित दूध संकलन प्रणाली (AMCS) विकसित की है। यह समाधान ओपन सोर्स टेक्नोलॉजी स्टैक पर आधारित है और इसमें पारदर्शिता लाने एवं प्रमुख सूचना प्रणाली को क्रियान्वित करने के लिए संघ/महासंघ/राष्ट्रीय स्तर पर एकीकृत किया गया है। स्वचालन, मैनुअल संचालन से बचाता है और दूध परीक्षण उपकरण के साथ एकीकृत करता है। किसानों को हर ट्रांजेक्शन के तत्काल एसएमएस मिलते हैं, जिससे पूर्ण पारदर्शिता सुनिश्चित होती है और पिछले सभी ट्रांजेक्शन की जानकारी भी उन्हें उपलब्ध होती है। वर्तमान में AMCS का उपयोग 12 राज्यों में किया जा रहा है, जिसमें 23,760 से अधिक DCS/MPP और 45 से अधिक दूध संघों/महासंघों के 11,01,200 से अधिक दूध की आपूर्ति करने वाले किसान शामिल हैं।

वीर्य केन्द्र प्रबंधन प्रणाली (SSMS)

वीर्य केन्द्र प्रबंधन प्रणाली (SSMS) एक एकीकृत सॉफ्टवेयर है जिसमें प्रक्रिया मानकीकरण (process standardisation) से भारत सरकार द्वारा परिभाषित न्यूनतम मानक प्रोटोकॉल (MSP) को लागू करने के लिए हिमीकृत वीर्य डोज़ों (FSD) के उत्पादन की मुख्य गतिविधियां शामिल हैं। इस प्रणाली में वीर्य केन्द्रों पर की जाने वाली गतिविधियों में शामिल हैं जैसे - सांड़ का जीवन चक्र प्रबंधन, वीर्य उत्पादन प्रबंधन, गुणवत्ता नियंत्रण, बिक्री और CRM, जैव-सुरक्षा और पर्यावरण सुरक्षा, फार्म और चारा प्रबंधन। कुशल, प्रभावी और त्रुटि रहित प्रक्रिया सुनिश्चित करने के लिए इसे सभी आवश्यक प्रयोगशाला उपकरणों और RFID बुल टैग के साथ एकीकृत किया जा सकता है। यह प्रणाली वीर्य डोज़ों की फाइन ग्रेन्ड ट्रेसेबिलिटी प्रदान करती है और ट्रांजेक्शन के प्रत्येक स्तर पर barcode integration के अलावा intelligent configurable movement भी प्रदान करती है। पूरे देश में 38 श्रेणी के वीर्य केंद्र इस एप्लिकेशन का उपयोग कर रहे हैं।

डेरी सूचना प्रणाली

डेरी क्षेत्र में परियोजनाओं के साक्ष्य-आधारित प्लानिंग और कार्यान्वयन के लिए प्रभावी डेटा प्रबंधन महत्वपूर्ण है। एनडीडीबी की उन्नत इंटरनेट आधारित डेरी सूचना प्रणाली (iDIS) डेरी सहकारिताओं को व्यवस्थित रूप से आंकड़ों को वर्गीकृत कर विश्लेषित करने का एक एकीकृत मंच प्रदान करती है। आज, पूरे देश में 250 से अधिक दूध संघ, विपणन डेरी, पशु आहार संयंत्र और दूध संघ iDIS का उपयोग कर रहे हैं, जो डेरी क्षेत्र मे उचित निर्णय लेने और नीति निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। एनडीडीबी प्रयोक्ता आधार के विस्तार तथा प्रणाली का उचित उपयोग सुनिश्चित करने के लिए तकनीकी सहायता प्रदान करने पर निरंतर ध्यान दे रही है। एनडीडीबी विभिन्न दूध संघों के प्रबंधन सूचना प्रणाली (MIS) अधिकारियों के लिए नियमित रूप से iDIS के लिए पुनश्चर्या (refresher) कार्यशालाओं का आयोजन कर रही है। कार्यशालाओं द्वारा इन अधिकारियों की दक्षता विकसित कर महत्वपूर्ण डेरी प्रबंधन में इस प्रणाली के उपयोग कर उनका कौशल संवर्धन किया जाता है।

दूध मार्ग अनुकूलन

डेरी व्यवसाय के लिए मार्ग अनुकूलन में भू-स्थानिक तकनीकी(Geospatial technology) का प्रभावी ढंग से उपयोग किया जा रहा है। जीआईएस तकनीक का उपयोग करके, डिजीटल मानचित्रों पर दूध संकलन मार्गों को चित्रित किया जा सकता है, जिससे वर्तमान मैनुअल प्रक्रियाओं की तुलना में वैकल्पिक मार्गों का चयन करना आसान हो जाता है। डेरी व्यवसाय में, दूध आपूर्ति श्रृंखला के लिए, गांवों से दूध का संकलन और उपभोक्ताओं को दूध एवं दूध उत्पादों को वितरित करने के लिए दूध परिवहन की कुशल मार्ग योजना (efficient route planning) निर्माण आवश्यक है। आपूर्ति श्रृंखलाओं (supply chains) की दक्षता बढ़ाने के लिए संकलन, प्रसंस्करण और वितरण की प्रति लीटर लागत को कम करना अत्यंत महत्वपूर्ण है।

एनडीडीबी ने विदर्भ मराठवाड़ा डेरी विकास परियोजना में दूध संकलन के लिए अगस्त 2022 में दूध मार्ग अनुकूलन के प्रयास शुरू किए। इसके तहत, चार मिल्क चिलिंग केंद्रों के लिए दूध संकलन मार्गों को अनुकूलित किया गया, जिसके परिणामस्वरूप परिवहन लागत में काफी बचत हुई। इसी तरह के प्रयास वाराणसी दूध संघ, पश्चिम असम दूध संघ (WAMUL), झारखंड दूध महासंघ और इंदौर दूध संघ में भी शुरू किए गए। दूध मार्ग अनुकूलन प्रयासों के परिणाम आशाजनक रहे हैं और यह डेरी संचालन में परिवहन लागत में कमी लाने की संभावना को प्रदर्शित करता है। एनडीडीबी ने सहकारिताओं को मार्गों के व्यवस्थित अनुकूलन में सहायता प्रदान करने के लिए एक वेब-आधारित डाईनैमिक मार्ग अनुकूलन प्रणाली भी विकसित की है। इससे दूध संकलन मार्गों के लिए उचित योजना निर्माण में सहयोग मिलेगा और परिवहन लागत में कमी आएगी।

अत्याधुनिक मेगा डेरी प्लांट, हैदराबाद, तेलंगाना

दूध प्रसंस्करण संयंत्र, रांची, झारखंड

देश के डेरी प्रसंस्करण अवसंरचना का विस्तार

एनडीडीबी देश भर में इंजीनियरी परामर्श सेवाएं प्रदान कर रही है और डेरी क्षेत्र में अवसंरचना परियोजनाओं के कार्यान्वयन का पर्यवेक्षण करती है। एनडीडीबी की प्रमुख गतिविधियों में नई प्रसंस्करण सुविधाओं की अवधारणा, डिजाइन, योजना, निष्पादन और कमीशनिंग के साथ-साथ मौजूदा डेरी और पशु आहार संयंत्रों का विस्तार और आधुनिकीकरण करना शामिल है। एनडीडीबी द्वारा बॉयो सिक्युरिटी प्रयोगशालाओं (BSL), पशु वैक्सीन निर्माण एवं परीक्षण सुविधाएं, हिमीकृत वीर्य केंद्रों की योजना, निष्पादन और सत्यापन के लिए सेवाएं प्रदान की जा रही हैं। सौर ऊर्जा और बायोगैस जैसी हरित पहलों को बढ़ावा देने वाली परियोजनाओं को सक्रिय रूप से आगे बढ़ाया जा रहा है। एनडीडीबी वर्तमान संयंत्रों के नवीनीकरण और आधुनिकीकरण के लिए अध्ययन करती है, जिसका उद्देश्य दक्षता बढ़ाना, खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करना और उत्पाद हानि को कम करना है।

चालू की गई प्रमुख परियोजनाएं

वर्ष के दौरान, एनडीडीबी द्वारा पूरे भारत में सात इंजीनियरिंग परियोजनाओं को सफलतापूर्वक कमीशन किया गया:

1. गुजरात के हिम्मतनगर में चीज़ एवं व्हे ड्राइंग संयंत्र

- यह एक अत्याधुनिक परियोजना है जिसमें पूर्णतः स्वचालित 30 मीटप्रदि का चेद्दर, 20 मीटप्रदि का मोजरेला, 24 मीटप्रदि का प्रोसेस्ड चीज़ और 45 मीटप्रदि का व्हे ड्राइंग का प्लांट शामिल है, जिसमें बैक्टोफ्यूगेशन सुविधाओं से सुसज्जित 10 लालीप्रदि का प्री-प्रोसेसिंग प्लांट स्थापित किया जा रहा है।
- स्वचालित भंडारण और पुनः प्राप्ति प्रणाली (ASRS) का उपयोग करके सिविल फुटप्रिंट को कम करने के लिए एक नया दृष्टिकोण लागू किया गया है।

2. मेगा डेरी प्लांट, हैदराबाद, तेलंगाना

- इसमें पांच लालीप्रदि से आठ लालीप्रदि तक विस्तारयोग्य तरल दूध प्रसंस्करण संयंत्र, एक लालीप्रदि यूएचटी (अल्ट्रा हाई टेम्परेचर) का प्रसंस्करण संयंत्र और दही, लस्सी, मक्खन, दूध, घी और आइसक्रीम की सुविधाओं वाली पूर्णतः स्वचालित डेरी सुविधाएं उपलब्ध हैं
- यह SCADA आधारित स्वचालन प्रणाली, रिजेनरेटिव और रिकवरी प्रणाली, स्वचालित प्रशीतन और जल उपचार संयंत्र और भाप उत्पादन सुविधाओं से सुसज्जित है
- इसका अक्तूबर 2023 में उद्घाटन किया गया। तेलंगाना में डेरी उत्पाद की गुणवत्ता और बिक्री में वृद्धि हो रही है

3. दूध उत्पाद संयंत्र, गुवाहाटी, असम

- दही, मीठा दही, लस्सी, पनीर, आइसक्रीम और फ्लेवर्ड मिल्क का निर्माण करने हेतु इस संयंत्र का 60 हलीप्रदि से 150 हलीप्रदि तक विस्तार किया गया
- उच्च गुणवत्ता युक्त उत्पादन, स्वच्छता और परिचालन दक्षता के लिए डिज़ाइन किया गया
- मार्च 2024 में असम के माननीय मुख्यमंत्री द्वारा इसका उद्घाटन किया गया

4. डेरी अपशिष्ट प्रबंधन परियोजना - एफ्लूएंट ट्रीटमेंट प्लांट, हरियाणा

- अत्याधुनिक एनोरोबिक ट्रीटमेंट का उपयोग कर 20 लालीप्रदि के एफ्लूएंट ट्रीटमेंट प्लांट की स्थापना की गई है जिसमें निरंतर स्टिरर्ड टैंक रिएक्टर (CSTR) तकनीकी और मल्टी-पाथ इजेक्टर बेस्ड एडवांस्ड एरेशन सिस्टम एवं एरोबिक ट्रीटमेंट प्रणाली शामिल है
- इसे जून 2023 को रोहतक डेरी प्लांट, हरियाणा में साबर दूध संघ के लिए कमीशन किया गया, जिसने सहकारी डेरी उद्योग अपशिष्ट प्रबंधन में एक नया मानक स्थापित किया है

5. कृत्रिम गर्भाधान प्रशिक्षण संस्थान, गुवाहाटी, असम

- इसमें 60 प्रशिक्षुओं के लिए कक्षाएं, छात्रावास भवन, प्रशासन ब्लॉक, आधुनिक कृत्रिम गर्भाधान प्रशिक्षण उपकरण और आईसीटी अवसंरचना से सुसज्जित काउशेड शामिल हैं
- यह एआई तकनीकों में प्रशिक्षण के लिए असम की एक अग्रणी संस्था है
- जून 2023 में असम के माननीय मुख्यमंत्री द्वारा इसका उद्घाटन किया गया

6. आईवीपीएम, रानीपेट में उत्तम निर्माण पद्धतियां (GMP) एवं मानक केंद्रीय वेयरहाउस

- इसे एंथ्रेक्स स्पोर वैक्सीन निर्माण सुविधा और इंस्टीट्यूट ऑफ वेटनरी प्रिवेंटिव मेडिसीन (IVPM), रानीपेट, तमिलनाडु में क्यूए/क्यूसी लैब के हिस्से के रूप में स्थापित किया गया
- जीएमपी वेयरहाउस जिसका निर्माण अप्रैल 2023 में पूरा हुआ वैक्सीन निर्माण के लिए कच्चे माल और तैयार उत्पादों के भंडारण में सहयोग करता है

देश के डेरी प्रसंस्करण अवसंरचना का विस्तार

साबरकांठा चीज़ संयंत्र का उद्घाटन

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने साबरकांठा दूध संघ के 30 मीट्रिक टन चीज़ संयंत्र की आधारशिला रखी, जो 45 मीट्रिक टन व्हे पाउडर और अन्य मूल्य वर्धित उत्पादों का भी उत्पादन करेगा। यह संयंत्र भारत सरकार की डीआईडीएफ योजना के तहत कुल 600 करोड़ रुपये की लागत से स्थापित किया गया है। एनडीडीबी ने इस संयंत्र का निर्माण किया और भारत सरकार की योजना के तहत 480 करोड़ रुपये का ऋण ब्याज सहायता के साथ प्रदान किया गया। माननीय प्रधानमंत्री ने जीसीएमएमएफ के स्वर्ण जयंती समारोह के दौरान क्षेत्र में डेरी सहकारी क्षेत्र को आगे बढ़ाने के लिए इस डेरी संयंत्र का उद्घाटन किया। इस अवसर पर गुजरात के माननीय राज्यपाल श्री आचार्य देवव्रत, गुजरात के माननीय मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

साबर डेरी चीज प्लांट, हिम्मतनगर, गुजरात

प्रमुख चालू परियोजनाएं

पारंपरिक कृषि पद्धतियों पर परंपरागत रूप से निर्भर डेरी क्षेत्र तकनीकी प्रगति, सस्टेनेबिलिटी संबंधी अनिवार्यताओं और उपभोक्ता प्राथमिकताओं में बदलाव के कारण एक महत्वपूर्ण परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। वर्तमान में चल रही प्रमुख इंजीनियरिंग परियोजनाओं का उद्देश्य दक्षता बढ़ाना, पर्यावरणीय प्रभाव को कम करना और डेरी उत्पादों की बढ़ती मांग को अधिक सस्टेनेबल और नैतिकता के साथ पूरा करना है।

GCMMF के लिए राजकोट में अमूलफेड II डेरी

गुजरात के राजकोट में जीसीएमएमएफ के 150 मीटप्रदि पाउडर प्लांट के साथ 20 लालीप्रदि की पूर्णतः स्वचालित डेरी संयंत्र की परिकल्पना की गई है जिसका 990 करोड़ रुपये का परियोजना परिव्यय है। इसके अतिरिक्त, इस परियोजना में लगभग 4 लालीप्रदि की क्षमता का यूएचटी प्रोसेसिंग एसेप्टिक पैकेजिंग संयंत्र, 100 मीटप्रदि का मक्खन संयंत्र, 40 मीटप्रदि का घी निर्माण संयंत्र भी शामिल होंगे। इन संयंत्रों में उन्नत तकनीकों का उपयोग किया जाएगा जिसके परिणामस्वरूप ऊर्जा दक्षता में सुधार होगा और उत्पाद हानि में कमी आएगी। इन संयंत्रों के डिजाइन में खाद्य सुरक्षा और स्वच्छता मानकों की अवधारणा समाहित है।

नागपुर, महाराष्ट्र में मदर डेरी में मूल्यवर्धित उत्पादों और पाउडर संयंत्र तथा डेरी संयंत्र की स्थापना

मदर डेरी के लिए नागपुर, महाराष्ट्र में एक अत्याधुनिक, ग्रीन फील्ड परियोजना शुरू की गई है जिसमें छः लालीप्रदि (10 लालीप्रदि तक विस्तार योग्य) का तरल दूध प्रसंस्करण संयंत्र है जिसमें विविध पोर्टफोलियो वाले मूल्य वर्धित उत्पाद संयंत्र शामिल हैं जैसे 150 मीटप्रदि का फर्मेन्टेड उत्पाद संयंत्र, 40 हलीप्रदि का शेल्फ लाइफ (ESL) दूध संयंत्र, 30 मीटप्रदि का पाउडर प्लांट और 25 हलीप्रदि का आइसक्रीम संयंत्र आदि। इस परियोजना को 545 करोड़ रुपये के परिव्यय के साथ क्रियान्वित किया जा रहा है।

हिम्मतनगर, गुजरात में पशु आहार संयंत्र

पूरी तरह से स्वचालित परिचालन वाला एक आधुनिक 800 मीटप्रदि का पशु आहार संयंत्र, जिसे 1600 मीटप्रदि तक बढ़ाया जा सकता है, गुजरात के हिम्मतनगर में क्रियान्वित किया जा रहा है। उत्पादन के लिए आवश्यक कच्चे माल को व्यवस्थित रूप से भंडारण के लिए संयंत्र फ्लैट स्टोरेज सुविधा से भी सुसज्जित है। परियोजना का कुल परिव्यय 255 करोड़ रुपये है।

आईआईएल, हैदराबाद, तेलंगाना में एफएमडी वैक्सीन और एक संयुक्त वैक्सीन (FMD & HS) के लिए नया पशु वैक्सीन निर्माण संयंत्र

पशु स्वास्थ्य पहल के रूप में, प्रति वर्ष 150 मिलियन डोज का उत्पादन करने के लिए एक नवीनतम वैक्सीन विनिर्माण सुविधा स्थापित की जा रही है, जो केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन (CDSCO) के मानकों का अनुपालन करेगी, जिसकी प्रारंभिक लागत 500 करोड़ रुपये है।

आईवीपीएम, रानीपेट में ब्रूसेला के लिए इन-विट्रो डायग्नोस्टिक रिएजेंट सुविधा और ओइन्टमेंट और लिनिमेंट उत्पादन सुविधा

यह संयंत्र 17.69 करोड़ रुपये की परियोजना परिव्यय के साथ रानीपेट, तमिलनाडु में ब्रुसेला के लिए डायग्नोस्टिक किट और ओइन्टमेंट और लिनिमेंट के उत्पादन के लिए जीएमपी ग्रेड फार्मास्युटिकल सुविधा से सुसज्जित है।

दूध प्रसंस्करण संयंत्र, लद्दाख

देश के डेरी प्रसंस्करण अवसंरचना का विस्तार

पलामू, झारखंड में नया डेरी संयंत्र

चालू परियोजनाएं

परियोजना	क्षमता	स्थान
उत्तरी क्षेत्र		
स्वचालित डेरी और ईटीपी की स्थापना	5 लालीप्रदि एलएमपी और 15 लालीप्रदि ईटीपी	मोहाली, पंजाब
डेरी संयंत्र की स्थापना	50 हलीप्रदि (100 हलीप्रदि तक विस्तार योग्य)	राजसमंद, राजस्थान
टर्सरी ट्रीटमेंट प्लांट की स्थापना	800 किलो लीटर प्रतिदिन	जयपुर, राजस्थान
डेरी संयंत्र का नवीनीकरण और सुदृढ़ीकरण	50 हलीप्रदि	बांसवाड़ा, राजस्थान
पशु आहार संयंत्र	150 मीटप्रदि	भीलवाड़ा, राजस्थान
यूएचटी संयंत्र	25 हलीप्रदि	भीलवाड़ा, राजस्थान
मूल्य वर्धित दूध उत्पाद युक्त स्वचालित डेरी	1.5 लालीप्रदि (3 लालीप्रदि तक विस्तार योग्य)	कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश
हिमीकृत वीर्य केंद्र का सुदृढ़ीकरण	--	खन्ना, पंजाब
फर्मन्टेड उत्पाद संयंत्र और स्वीटेंड फ्लेवर्ड मिल्क प्लांट का विस्तार	2.35 लालीप्रदि	अमृतसर, पंजाब
पश्चिमी क्षेत्र		
अमूलफेड II डेरी	एलएमपी - 20 लालीप्रदि, पाउडर संयंत्र - 150 मीटप्रदि, मक्खन संयंत्र - 100 मीटप्रदि, घी निर्माण संयंत्र - 40 मीटप्रदि और यूएचटी प्रोसेसिंग-एसेप्टिक पैकेजिंग प्लांट - 4 लालीप्रदि	राजकोट, गुजरात
इंस्टीट्यूट ऑफ रूरल मैनेजमेंट, आणंद (इरमा) में बहुमंजिला छात्रावास की अवसरचना परियोजना	126 सिंगल ऑक्यूपेंसी रूम	आणंद, गुजरात
पशु आहार संयंत्र (सिविल कार्य)	800 मीटप्रदि तक विस्तार योग्य 1600 मीटप्रदि	हिम्मतनगर, गुजरात
बनास सुजुकी - गोबर आधारित सीबीजी संयंत्र	गोबर - 100 मीटप्रदि (1.5 मीटप्रदि सीबीजी)	भूखला – वडगाम, गुजरात

परियोजना	क्षमता	स्थान
बनास सुजुकी - गोबर आधारित सीबीजी संयंत्र	गोबर - 100 मीटप्रदि (1.5 मीटप्रदि सीबीजी)	अगथला - लखानी, गुजरात
सांड़ पालन केंद्र की स्थापना	180 पशु	मलारपुरा, खेड़ा, गुजरात
साबरमती आश्रम गौशाला में बुनियादी ढांचा परियोजना	--	बीडज, गुजरात
एनसीडीएफआई के लिए बुनियादी ढांचा परियोजना	--	आणंद, गुजरात
एफ्लूएंट ट्रीटमेंट प्लांट (पीएच II)	20 लालीप्रदि	हिम्मतनगर, गुजरात
वीर्य केंद्र का सुदृढ़ीकरण	--	एसएजी, बीडज
मदर डेरी में मूल्य वर्धित उत्पादों और पाउडर संयंत्र के साथ डेरी संयंत्र की स्थापना	एलएमपी – 6 लालीप्रदि (10 लालीप्रदि तक विस्तार योग्य), पाउडर संयंत्र – 30 मीटप्रदि, फर्मन्टेड उत्पाद संयंत्र – 150 मीटप्रदि, पनीर संयंत्र– 3 मीटप्रदि, फ्लेवर्ड मिल्क – 5 हलीप्रदि, आइसक्रीम संयंत्र– 25 हलीप्रदि, ईएसएल मिल्क - 40 हलीप्रदि	नागपुर, महाराष्ट्र
दक्षिणी क्षेत्र		
वीर्य केंद्र और संबद्ध कार्यों का सुदृढ़ीकरण	--	हेसारघट्टा, कर्नाटक
आईआईएल में एफएमडी के लिए नया पशु वैक्सीन निर्माण संयंत्र		हैदराबाद, तेलंगाना
स्वचालित डेरी संयंत्र	2 लालीप्रदि	नमक्कल, तमिलनाडु
(i) इनविट्रो डायग्नोस्टिक रीएजेंट सुविधा (ब्रुसेला और डायग्नोस्टिक्स) की स्थापना - आईवीपीएम, रानीपेट में जीएमपी ग्रेड, (ii) फार्मास्युटिकल डिवीजन (जीएमपी ग्रेड,ऑइंटमेंट और लिनिमेंट सुविधा)	--	आईवीपीएम, रानीपेट
पूर्वी क्षेत्र		
फर्मन्टेड दूध उत्पाद और देशी स्वीट प्लांट	207 हलीप्रदि	बरौनी, बिहार
संयंत्र उपयोगिता सेवाओं का सुदृढ़ीकरण	--	बरौनी, बिहार
5 लालीप्रदि स्वचालित डेरी संयंत्र में अतिरिक्त कार्य	--	अरिलो-गोविंदपुर, ओडिशा
वैक्सीन निर्माण सुविधा की स्थापना	एंथ्रेक्स- 5 मिलियन डोज/वार्षिक एंटरोपैक्सिमिया – 20 मिलियन डोज / प्रतिवर्ष	ब्रह्मपुर, ओडिशा
तकनीकी परामर्श सेवाएं		
पशु आहार संयंत्र (मैकेनिकल)	800 मीटप्रदि से 1600 मीटप्रदि तक विस्तार योग्य	हिम्मतनगर, गुजरात
मिल्क पाउडर प्लांट	120 मीटप्रदि	महेसाणा, गुजरात
GBRC में BSL4 प्रयोगशाला	--	गांधीनगर, गुजरात
फर्मन्टेड उत्पाद संयंत्र	100 मीटप्रदि से 150 मीटप्रदि तक विस्तार योग्य दही, 5 मीटप्रदि से 10 मीटप्रदि तक विस्तार योग्य योगहर्ट	रोहतक, हरियाणा
गौ अभयारण्य	--	मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश
देशी गायों के आनुवंशिक सुधार का उत्कृष्टता केंद्र	--	एसवी गौसंरक्षण शाला, तिरुपति, आंध्र प्रदेश

हलीप्रदि-हजार लीटर प्रतिदिन; मीटप्रदि- मीट्रिक टन प्रतिदिन; लालीप्रदि- लाख लीटर प्रतिदिन

एनडीडीबी, बनास डेरी और सुजुकी आर एंड डी सेंटर इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (SRDI), सुजुकी मोटर कॉरपोरेशन (SMC) की एक भारतीय सहायक कंपनी ने कम्प्रैस्ड बायोमीथेन गैस (CBG) उत्पन्न करने के लिए चार गोबर आधारित बायोगैस संयंत्र स्थापित करने के लिए एक त्रिपक्षीय समझौता किया

एशिया - पैसेफिक के लिए WOAH क्षेत्रीय आयोग के 33वें सम्मेलन में 'राष्ट्रीय पशु चिकित्सा सेवाओं को मजबूत करने के लिए साझेदारी' विषय पर सत्र के प्रतिनिधि

रणनीतिक सहयोग के माध्यम से विकास को बढ़ावा देना

एनडीडीबी ने सस्टेनेबल डेरी को बढ़ावा देने, डेरी किसानों की आजीविका में सुधार के लिए जानकारी एकत्र करने, नवाचारों को बढ़ावा देने, क्षमताओं को सुदृढ करने और साक्ष्य-आधारित समाधान प्रदान करने के लिए प्रतिष्ठित संस्थाओं के साथ सहयोग किया है।

एनडीडीबी, सुजुकी और बनास डेरी गोबर आधारित पहले चार CBG संयंत्र स्थापित करेंगे

सुजुकी मोटर कॉरपोरेशन (SMC) की भारतीय सहायक कंपनी सुजुकी आर एंड डी सेंटर इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (SRDI), बनास डेरी और एनडीडीबी ने गुजरात के बनासकांठा जिले में कम्प्रैस्ड बायोगैस (CBG)) उत्पन्न करने के लिए चार गोबर आधारित बायोगैस संयंत्र स्थापित करने के लिए एक त्रिपक्षीय समझौते पर हस्ताक्षर किए। यह समझौता डेरी सहकारी नेटवर्क क्षमता का लाभ लेकर बायोगैस परियोजनाओं को शुरू करने के लिए पहले किए गए एमओयू (MoU) की परिणति है।

यह अपनी तरह की एक नवीन पहल है, जिसमें ऑटोमोबाइल और डेरी क्षेत्र गोबर की बिक्री के माध्यम से किसानों की आय बढ़ाने, वाहनों को चलाने के लिए गोबर आधारित बायोगैस का उपयोग करने, ऑर्गेनिक फर्टिलाइजर के उत्पादन करने, डेरी और ऑटोमोबाइल क्षेत्र में कार्बन फुटप्रिंट को कम करने जैसे अनेक लाभ लेने हेतु सहयोग कर रहे हैं।

WOAH लेबोरेटरी ट्विनिंग प्रोग्राम और IBR में अनुसंधान एवं नैदानिक क्षमताओं की स्थापना

IBR एक आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण यौन संचारित गोवंशीय रोग है जो प्रजनन स्वास्थ्य को भी प्रभावित कर सकता है, जिससे आगे चलकर गर्भपात हो सकता है। न्यूनतम मानकों में बोवाइन हर्पीसवाइरस (BoHV-1) मुक्त सीमन की भी सिफारिश की गई है, जो IBR के अनुसंधान और प्रयोगशाला निदान को मजबूती प्रदान करने की आवश्यकता पर प्रकाश डालता है। इसलिए एनडीडीबी की अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशाला ने पशु और पादप स्वास्थ्य एजेंसी (APHA), यूनाइटेड किंगडम के साथ दो वर्षीय विश्व पशु स्वास्थ्य संगठन (WOAH) प्रयोगशाला के साथ ट्विनिग प्रोग्राम शुरू किया है, जो IBR(WRL-IBR) के लिए WOAH की एक रेफरेंस प्रयोगशाला है। जनवरी 2023 में इस सहयोगात्मक परियोजना शुरूआत की गई, जिसका उद्देश्य IBR पर एनडीडीबी अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशाला की नैदानिक और अनुसंधान क्षमताओं को WOAH मानकों के अनुरूप बनाना था। प्रस्तुत आवधिक प्रगति रिपोर्टों को WOAH का सकारात्मक समर्थन प्राप्त हुआ है। WRL-IBR की तकनीकी आदान-प्रदान से IBR अनुसंधान और निदान में उपयोगी रेफरेंस सामग्री के एक पैनल को विकसित और स्थापित किया गया।

पिछले एक वर्ष में WRL-IBR के साथ मासिक सत्रों के दौरान प्रयोगशाला के विभिन्न नैदानिक पहलुओं जैसे-गुणवत्ता आश्वासन, जैव-जोखिम प्रबंधन, परीक्षण विधियों, प्रलेखन और WOAH मानकों के विधि सत्यापन प्रोटोकॉल पर कार्मिकों को प्रशिक्षित किया गया।। WOAH को प्रस्तुत आवधिक प्रगति रिपोर्टों को सकारात्मक समर्थन मिला है। ज्ञात आईबीआर स्थिति के 64 सीरा और छः वायरस आइसोलेट्स का एक पैनल क्रमशः सीरोलॉजिकल और आणविक विश्लेषण के लिए WRL-IBR को भेजा गया और परिणामों की तुलना प्रयोगशालाओं के बीच की गई । इस तकनीकी आदान-प्रदान से आईबीआर अनुसंधान और निदान में उपयोग की संदर्भ सामग्री के एक पैनल के विकास और स्थापना के साथ-साथ विश्लेषणात्मक तकनीकों का शोधन भी संभव हुआ है।

डेरी सस्टेनेबिलिटी फ्रेमवर्क

डेरी सस्टेनेबिलिटी फ्रेमवर्क (DSF) सहयोगात्मक और पूर्व-प्रतिस्पर्धी तरीके से क्षेत्र की सतत् प्रगति की निगरानी और रिपोर्ट करने के लिए वैश्विक डेरी क्षेत्र की पहल है। सस्टेनेबिलिटी फ्रेमवर्क में उभरती डेरी अर्थव्यवस्थाओं की भागीदारी को प्रोत्साहित करने के लिए, डीएसएफ ने 'स्टेज 1 सदस्यता स्तर' पर अपनी सस्टेनेबिलिटी रिपोर्टिंग पद्धति को अद्यतन किया। अद्यतन डीएसएफ पद्धति को एनडीडीबी से इनपुट सहित एक बहु-हितधारक परामर्श प्रक्रिया के माध्यम से विकसित किया गया।

तदनुसार, एनडीडीबी के समन्वय से, चरण 1 को झारखंड राज्य सहकारी दूध उत्पादक संघ लिमिटेड (झारखंड) और श्रीजा महिला दूध उत्पादक कंपनी लिमिटेड (आंध्र प्रदेश) में लागू किया जाएगा ताकि चयनित स्थिरता मानदंडों पर प्रगति की निगरानी की जा सके। डीएसएफ चरण 1 में शामिल होने से एनडीडीबी और इन दूध उत्पादक संस्थाओं (MPOs) को इस क्षेत्र में सतत् प्रगति को प्रदर्शित करने में मदद मिलेगी।

रणनीतिक सहयोग के माध्यम से विकास को बढ़ावा देना

एनडीडीबी और एनसीडीसी के बीच एमओयू पर हस्ताक्षर

राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम (NCDC) के साथ सहयोग

भारत में सहकारिताओं को बेहतर बनाने तथा अपने साझा उद्देश्यों को आगे बढ़ाने के लिए राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम (NCDC) और राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड (NDDB) के बीच एक एमओयू (MoU) पर हस्ताक्षर किए गए।

यह एमओयू (MoU) संस्थाओं को मुख्य रूप से पशुधन, डेरी, खाद्य तेल, अन्य कृषि-आधारित संबद्ध उद्योगों और जैविक उत्पादों के क्षेत्रों में अपनी क्षमता और दक्षताओं को संयोजित कर बेहतर परिणाम उत्पन्न करेगा।

हरे धान की पराली को साइलेज में संरक्षित करने के लिए मिल्कफेड, पंजाब और गडवासू, लुधियाना के साथ साझेदारी

देश के कई हिस्सों में सूखे चारे की कमी के बावजूद, हर साल भारी मात्रा में फसल अवशेषों की एक बड़ी मात्रा को जला दिया जाता है, जिसमें अकेले पंजाब में 25 मिलियन टन पराली को जलाया जाता है। फसल अवशेषों को जलाने से न केवल कृषि मिट्टी की गुणवत्ता प्रभावित होती हैं, बल्कि पर्यावरण में ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन के अलावा महत्वपूर्ण पोषक तत्वों का नुकसान भी होता है। यदि हरे धान की पराली को फसल कटाई के तुरंत बाद साइलेज के रूप में संरक्षित किया जाए, तो पर्यावरण, मिट्टी और मानव स्वास्थ्य पर बायोमास के पड़ने वाले नकारात्मक प्रभावों से बचा जा सकता है। हरे धान की फसल के अवशेषों के लिए साइलेज बनाने की तकनीक विकसित करने के लिए एनडीडीबी ने प्रयोगशाला और फिल्ड की स्थितियों में अनेक प्रायोगिक परीक्षण किए गए। परीक्षण के परिणाम के अनुसार, एंजाइम और साइलेज कल्चर का उपयोग करके हरे धान की पराली से अच्छी गुणवत्ता वाला साइलेज निर्माण किया जा सकता है।

एनडीडीबी ने हरे धान की पराली से साइलेज के निर्माण और डेरी पशुओं को खिलाने हेतु मिल्कफेड, पंजाब और गडवासू, लुधियाना के सहयोग से वृहत स्तर पर पायलट प्रोजक्ट शुरू किया है। इस प्रोजेक्ट से पंजाब के तीन जिलों- मोहाली, लुधियाना और संगरूर में हरे धान की पराली को संरक्षित करके लगभग 286 मीट्रिक टन साइलेज का निर्माण किया गया।

इसके अलावा, स्तनपान कराने वाली भैंसों के पोषक तत्वों के उपयोग और उत्पादक प्रदर्शन पर धान की पराली का साइलेज खिलाने के प्रभावों का मूल्यांकन करने के लिए गडवासू के सहयोग से एक आहार परीक्षण चल रहा है। इस पायलेट प्रोजेक्ट से न केवल पराली जलाने से संबंधित पर्यावरणीय चिंताओं का समाधान होने की संभावना है, बल्कि देश में आहार के संसाधनों में वृद्धि से हजारों डेरी किसानों को लाभ भी होगा।

एनडीडीबी रेफरेंश लेबोरेटरी एण्ड सेंटर ऑफ एक्सीलेन्स

गुजरात विधानसभा एवं बनास डेरी के अध्यक्ष श्री शंकर चौधरी, एनडीडीबी के अध्यक्ष डॉ. मीनेश शाह और जीसीएमएमएफ (GCMMF) के प्रबंध निदेशक श्री जयेन मेहता ने बनासकांठा में एनडीडीबी की नेशनल रेफरेंश लेबोरेटरी और बनास डेरी के गोवंशीय प्रजनन के लिए सेंटर ऑफ एक्सीलेन्स (CoE) की स्थापना पर चर्चा की। एनडीडीबी द्वारा प्रबंधित रेफरेंश लेबोरेटरी में अत्याधुनिक रोग निदान, रोग निगरानी, अनुसंधान एवं विकास की सुविधाएं होंगी। इस केंद्र में उन्नत प्रजनन तकनीकों का उपयोग करके शीघ्र प्रजनन के लिए देशी गायों और भैंसों की प्रमुख नस्लों के श्रेष्ठ कुलीन डोनर को आश्रय दिया जाएगा। यह केंद्र पूरे देश के डेरी किसानों के लिए देशी नस्लों की श्रेष्ठ बछियों के स्रोत के रूप में कार्य करेगा।

एफ्लाटॉक्सिन बी1 रैपिड टेस्ट किट

एनडीडीबी ने जैव प्रौद्योगिकी उद्योग अनुसंधान सहायता परिषद (BIRAC -भारत सरकार का उपक्रम) के वित्तपोषण व इंटरनेशनल क्रॉप रिसर्च इंस्टीट्यूट फॉर सेमी-एरिड ट्रॉपिक्स (ICRISAT) के सहयोग से खाद्य कच्चे माल और तैयार उत्पादों में एफ्लाटॉक्सिन बी1 की गुणात्मक/अर्ध-मात्रात्मक पहचान के लिए एक रैपिड टेस्ट किट विकसित की है और एफ्लाटॉक्सिन बी 1 के लिए 5 से 20 ppb सेंस्टिविटी युक्त उत्पाद तैयार किया।

पशु उत्पादकता में सुधार के लिए वैज्ञानिक सहयोग

एनडीडीबी ने राष्ट्रीय पशु जैव प्रौद्योगिकी संस्थान (NIAB, हैदराबाद), गुजरात बायोटेक्नोलॉजी रिसर्च सेंटर (GBRC, गांधीनगर), बॉयफ डेवलपमेंट रिसर्च फाउंडेशन (BAIF, उरुलीकंचन, पुणे), आणंद कृषि विश्वविद्यालय (AAU, आणंद), कामधेनु विश्वविद्यालय, गांधीनगर और आईआईएल, हैदराबाद जैसे विभिन्न संस्थानों के साथ अपना अनुसंधान सहयोग जारी रखा है।

एनडीडीबी और गुजरात बायोटेक्नोलॉजी रिसर्च सेंटर ने संयुक्त रूप से 11 दिवसीय जीनोम-वाइड एसोसिएशन स्टडीज (GWAS) प्रशिक्षण का आयोजन किया। एनडीडीबी के अधिकारी विभिन्न कार्य समितियों, जैसे अंतर्राष्ट्रीय पशु रिकॉर्डिंग समिति (ICAR) और वीर्य केंद्रो की केंद्रीय निगरानी वाली इकाईयों में भी अपनी सेवाओं को देते हैं।

गुजरात विधानसभा एवं बनास डेरी के अध्यक्ष श्री शंकर चौधरी, एनडीडीबी के अध्यक्ष डॉ. मीनेश शाह और जीसीएमएमएफ के प्रबंध निदेशक श्री जयेन मेहता, एनडीडीबी की रेफरेंश लेबोरेटरी एण्ड सेंटर ऑफ एक्सीलेन्स की स्थापना पर चर्चा करते हुए

एनडीडीबी, आणंद में एनडीडीबी एचआरडी कॉन्क्लेव का उद्घाटन

एनडीडीबी, आणंद में ओपीयू-आईवीईपी-ईटी प्रशिक्षण सत्र

मानव संसाधन का प्रशिक्षण एवं क्षमता विकास

एनडीडीबी व्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से डेरी उद्योग के हितधारकों की क्षमताओं को बढ़ाने, जानकारी के आदान-प्रदान को बढ़ावा देने और सर्वोत्तम पद्धतियों को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध है। वर्ष भर में, एनडीडीबी ने विभिन्न क्षेत्रों जैसे डेरी, वैज्ञानिक पशु प्रबंधन, दूध प्रसंस्करण, आहार और चारा प्रबंधन, किफायती नस्ल उन्नयन, गायों में निवारक स्वास्थ्य प्रबंधन, गुणवत्ता नियंत्रण, सहकारी प्रबंधन और विपणन गतिविधियों को पूर्ण करते हुए विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया।

पहाड़ी क्षेत्रों और पूर्वोत्तर राज्यों पर ध्यान केंद्रित करना: एनडीडीबी ने केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर और पूर्वोत्तर राज्यों जैसे चुनौतीपूर्ण इलाकों में क्षमता विकास को प्राथमिकता दी, जिसमें लगभग 500 उत्पादकों को आधुनिक पशुपालन और डेरी प्रक्रियाओं पर प्रशिक्षण दिया।

भारत पशुधन एप्लिकेशन का शुभारंभ: भारत पशुधन एप्लिकेशन के राष्ट्रव्यापी शुभारंभ के हिस्से के रूप में, एनडीडीबी ने प्रभावी रूप से अपनाने और उपयोग को सुनिश्चित करने के लिए कार्यान्वयन पहलुओं पर लगभग 3,000 कर्मियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए।

डेरी सहकारिताओं के माध्यम से – JICA क्षमता विकास: डेरी सहकारिताओं (DTC) के माध्यम से – जीका (JICA) सहयोग के तहत, एनडीडीबी ने विभिन्न संस्थाओं के कार्यपालकों, अधिकारियों और निदेशक मंडल (BOD) के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम आरंभ किए। जिसमें लगभग 180 अधिकारियों को पशु पोषण और व्यापार मूल्यांकन में प्रशिक्षित किया गया, जबकि 70 निदेशक मंडल (BOD)/वरिष्ठ अधिकारियों ने बीओडी (BOD) अभिविन्यास, व्यापार/विपणन प्रबंधन सत्रों में भाग लिया।

ए-हेल्प कार्यक्रम का विस्तार: ए-हेल्प (स्वास्थ्य और पशुधन उत्पादन के विस्तार के लिए मान्यता प्राप्त एजेंट) पायलट प्रोग्राम की सफलता के आधार पर, एनडीडीबी ने 11 राज्यों में ए-हेल्प के रूप में 4,000 से अधिक पशुसखियों को प्रशिक्षित करने की पहल को बढ़ाया, जिससे ग्रामीण स्तर की महिला एसएचजी सदस्यों को विस्तार सेवा एजेंटों के रूप में सशक्त बनाया गया।

अन्य महत्वपूर्ण प्रशिक्षण

डेरी उद्यमिता कार्यक्रम: इस कार्यक्रम के तहत 200 से अधिक ग्रामीण युवाओं को एक आय स्रोत के रूप में डेरी को प्रोत्साहित करने के लिए प्रशिक्षित किया गया।

गुणवत्ता आश्वासन और डेरी संयंत्र तकनीकी कार्यक्रम: एमआईटी (MIT), महेसाणा में गुणवत्ता आश्वासन और डेरी संयंत्र संचालन पर केंद्रित करने वाले तकनीकी कार्यक्रमों से 1,000 से अधिक कार्यपालकों और तकनीशियनों को जानकारी प्राप्त हुई।

कृत्रिम गर्भाधान (AI) प्रशिक्षण: कृत्रिम गर्भाधान (AI) में लगभग 1,000 युवाओं को बुनियादी प्रशिक्षण दिया गया, जिससे गांव स्तर पर AI कार्यबल में वृद्धि हुई।

डीसीएस सचिवों का प्रशिक्षण: डेरी सहकारी समितियों (DCS) के लगभग 560 सचिवों ने अपने प्रशासनिक कौशल को बढ़ाने के लिए प्रशिक्षण सत्रों में भाग लिया।

आईसीटी-आधारित अनुप्रयोग: डेरी प्रबंधन के लिए महत्वपूर्ण डिजिटल उपकरणों में दक्षता सुनिश्चित करने के लिए विभिन्न ईआईए (EIAs) के 350 प्रतिभागियों के लिए एनडीडीबी ईआरपी (ERP), एएमसीएस (AMCS) और एसएसएमएस (SSMS) पर प्रशिक्षण सत्र आयोजित किए गए।

बिक्री और वितरण गतिविधियां: विभिन्न दूध संघों के 200 से अधिक लाभार्थियों ने दूध और दूध उत्पादों की बिक्री और वितरण गतिविधियों पर ध्यान केंद्रित करने वाले विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लिया।

भारतीय कृषि कौशल परिषद के साथ एमओयू

एनडीडीबी ने डेरी क्षेत्र में कौशल विकास की रणनीतिक साझेदारी के लिए भारतीय कृषि कौशल परिषद के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। एमओयू पर एएससीआई के सीईओ श्री सत्येंद्र आर्य और एनडीडीबी के वरिष्ठ महाप्रबंधक श्री ललित प्रसाद करन ने एनडीडीबी के अध्यक्ष डॉ. मीनेश शाह की उपस्थिति में हस्ताक्षर किए। इस समझौता ज्ञापन का उद्देश्य ज्ञानाधार को बढ़ाना, कौशल विकास की कमी को चिह्नित करना, क्षमता निर्माण कार्यक्रम विकसित करना और भारतीय डेरी क्षेत्र में हितधारकों के विकास के लिए व्यापक प्रशिक्षण प्रदान करना है।

मानव संसाधन का प्रशिक्षण एवं क्षमता विकास

संबद्ध क्षेत्र प्रशिक्षण: एनडीडीबी ने राष्ट्रीय मधुमक्खीपालन और शहद मिशन (NBHM) के तहत वैज्ञानिक मधुमक्खीपालन पर 300 किसानों के लिए प्रशिक्षण का आयोजन किया, जिससे किसानों की आय के स्रोतों में विविधता आई।

सटीक और गुणवत्तापरक प्रयोगशाला परीक्षण को बढ़ावा देना: एनडीडीबी काफ लिमिटेड के प्रयोगशाला कार्मिको को न्यूनतम मानक प्रोटोकॉल (MSP) में सूचीबद्ध रोगों का स्क्रीनिंग परीक्षण करने पर प्रशिक्षण प्रदान किया गया है। उन्हें मान्य विधियां, कार्यप्रवाह, रेफरेंस सैम्पल, परीक्षण और गुणवत्ता नियंत्रण प्रणाली और प्रक्रियाओं पर प्रशिक्षण प्रदान किया जाता हैं।

आरजीएम की ABIP-SS परियोजना के तहत सेक्स्ड सीमन में एक्स गुणसूत्र वाले सीमन के प्रतिशत को सत्यापित करने के लिए एक नोवेल डिजिटल-पीसीआर (dPCR) परीक्षण को अनुकूलित किया गया । एनडीडीबी काफ के कार्मिकों को सीमन प्रसंस्करण और सेक्स्ड/सेक्स-सॉर्टेड सीमन के लिए डीपीसीआर एशे के लिए प्रशिक्षित किया गया, और मानक प्रचालन प्रक्रियाओं को एनडीडीबी काफ में स्थानांतरित किया गया ।

एनडीडीबी संवाद डिजिटल पहल

एनडीडीबी संवाद के तहत डिजिटल सत्रों में विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला को शामिल किया गया, जिससे 18,000 से अधिक प्रतिभागियों को डेरी नवाचारों और एनडीडीबी AMCS एप्लिकेशन के माध्यम से आजीविका सुधार के बारे में जानकारी प्राप्त की। डेरी फार्म प्रबंधन, ईटी तकनीकी के माध्यम से पशु प्रजनन में प्रगति, एनडीडीबी ईआरपी, भारत पशुधन एप्लिकेशन, एसएसएमएस और एएमसीएस पर इंटरैक्टिव सत्रों में 5,000 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया। एनडीडीबी यूट्यूब चैनल पर इन सत्रों को रिकॉर्ड करके उपलब्ध कराया गया है, ताकि प्रतिभागियों को उनकी सुविधा के अनुसार सामग्री देखने और जानकारी प्राप्त करने के लिए पहुंच प्राप्त हो सके।

डिजिटल प्लेटफॉर्म/एनडीडीबी संवाद पर आयोजित कार्यक्रम

क्रम सं.	विषय	कार्यक्रमों की संख्या	प्रतिभागियों की संख्या
1	इनाफ टीओटी	4	93
2	भारत पशुधन ऐप प्रशिक्षण	14	1,297
3	एनडीडीबी ईआरपी पर प्रशिक्षण	16	109
4	एसएसएमएस/एएमसीएस आरएमआरडी पर प्रशिक्षण	3	15
5	रूट ऑप्टिमाईजेशन, डेटा कलेक्शन/ डेरी सर्वेयर	4	60
6	डेरी पशुओं का हीट स्ट्रेस प्रबंधन	1	707
7	बारिस के मौसम में डेरी पशु प्रबंधन	1	849
8	कृषि यंत्रीकरण का दायरा	1	1,200
9	स्वच्छ दूध उत्पादन	1	1,023
10	7 एस: कार्यस्थल दक्षता और उत्पादकता में सुधार के लिए उपकरण	1	744
11	नस्ल गुणन फार्म योजना	1	340
12	क्षेत्र पर्यवेक्षक की भूमिकाएं और जिम्मेदारियां	1	988
13	प्रबंधन समिति के सदस्य और दूध उत्पादकों की भूमिकाएं एवं जिम्मेदारियां	1	549
14	अध्यक्षों और डीसीएस सचिव की भूमिकाएं और जिम्मेदारियां	1	842
15	डेरी सहकारिता समिति की उप-विधियां	1	576
16	डेरी फार्म प्रबंधन के मूल सिद्धांत	1	3,170
17	नई पीढ़ी के डेरी संयंत्र और परिचालन दक्षता	1	626
18	पशु प्रजनन, एम्ब्रियो ट्रांसफर तकनीकी में प्रगति	1	2,100
19	जीनोमिक चयन के माध्यम से आनुवंशिक सुधार की मूल बातें	1	1,180
20	8 अपशिष्ट: कार्यस्थल उत्पादकता में सुधार की तकनीक	1	30
21	डेरी विकास में महिला नेतृत्व	1	20
22	डेरी में डिजिटल क्रांति	1	782
23	दुग्ध व्यवसाय: नई पीढ़ी द्वारा किए गए कुछ नवीन प्रयोग	2	881
24	डेरी व्यवसाय में पर्यावरणीय पहलू	1	243
	कुल	**61**	**18,424**

पारंपरिक/स्थानीय प्रशिक्षण कार्यक्रम

क्रम सं.	विषय	कार्यक्रमों की संख्या	प्रतिभागियों की संख्या
क	**सहकारी सेवाएँ**		
	किसान अभिमुखन कार्यक्रम	141	5,405
	डेरी सहकारी समिति के सचिव के लिए प्रशिक्षण/रिफ्रेशर	20	555
	नए भर्ती/वरिष्ठ अधिकारियों के लिए डेरी सहकारी प्रबंधन	18	299
	प्रबंध समिति के सदस्यों का अभिमुखन कार्यक्रम	3	198
	बोर्ड अभिमुखन कार्यक्रम	10	140
	बिजेनस मैनेजमेंट/स्ट्रैटजिक प्लानिंग/मार्केटिग	3	27
ख	**पशुपालन पर डेरी उद्यमिता कार्यक्रम**	**10**	**201**
ग	**दूध का विपणन**	**10**	**185**
घ	**राष्ट्रीय डिजिटल पशुधन मिशन**	**32**	**1,672**
ङ	**उत्पादकता में वृद्धि**		
	कृत्रिम गर्भाधान-बुनियादी/रिफ्रेशर	34	982
	डेरी पशु प्रबंधन	129	4,034
	ओवम- पिक अप एवं इन विट्रो भ्रूण उत्पादन और भ्रूण प्रत्यारोपण तकनीकी	3	12
	पशु आहार संयंत्र अधिकारियों के लिए प्रशिक्षण	2	41
	पोषण के माध्यम से उत्पादकता में वृद्धि	10	207
	रिसोर्स पर्सन के लिए प्रशिक्षण	10	209
च	**गुणवत्ता आश्वासन और डेरी संयंत्र प्रबंधन**		
	डेरी संयंत्रों में गुणवत्ता आश्वासन और प्रबंधन प्रणालियाँ	30	617
	एएमसीयू/बीएमसीयू पर प्रशिक्षण	9	225
छ	**एनडीडीबी ईआरपी/ एएमसीएस / एसएसएमएस / डेरी सर्वेक्षक / आईडीआईएस पर प्रशिक्षण**	**29**	**416**
ज	**दूध संघ के कार्मिकों हेतु अन्य प्रशिक्षण कार्यक्रम**		
	सॉफ्ट स्किल्स/ सक्सेसन एंड ऑर्गेनाइजेशन इफैक्टनेंस	7	100
	वैज्ञानिक मधुमक्खीपालन पर अभिमुखन एवं प्रशिक्षण	12	300
	रिफ्रेशर ट्रेनिंग ऑन बिजनेस अप्रीशीएशन प्रोग्राम	8	113
	डेरी में डिजिटल विस्तार	1	11
	प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण- ए- हेल्प और अन्य	20	456
	सीबीबीओ- फॉडर और एफपीओ के लिए प्रशिक्षण	7	159
	लेखांकन/जीईएम पर प्रशिक्षण	5	83
	रूट ऑप्टिमाईजेशन डेटा कलेक्शन	3	24
	गोबर मूल्यांकन और बाजार सर्वेक्षण डाटा प्रविष्टि	1	20
	खुर प्रबंधन पर प्रशिक्षण	1	30
	दूध रिकार्डिंग पर प्रशिक्षण	1	11
	सहकारी व्यवसाय मॉडल के माध्यम से डेरी विकास पर अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रम	1	39
	IBR के निदान पर अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला	1	12
	डीटीसी- जीका परियोजना कार्यान्वयन पर अभिमुखन	1	32
	बीबीएसएसएल के साथ चर्चा	1	52
	कुल	**573**	**16,867**

मानव संसाधन विकास

किसी संस्था की सफलता अन्य संसाधनों की तरह ही उसकी संस्कृति और उसके मानव संसाधनों की गुणवत्ता पर भी निर्भर करती है। प्रभावी मानव संसाधन लगातार समय-सीमा के भीतर और स्थापित गुणवत्ता मानकों के अनुसार संस्था की योजनाओं और कार्यक्रमों का कार्यान्वयन सुनिश्चित करता हैं। एनडीडीबी ने एक नैतिक कार्य संस्कृति विकसित की है और अपने मानव संसाधन विकास के लिए संस्थागत प्रणालियाँ और प्रक्रियाएँ स्थापित की हैं। कार्मिकोन्मुख नीतियाँ, प्रशिक्षण और अनुभव के माध्यम से निरंतर सीखने और विकास पर ध्यान केंद्रित करना और कार्मिक भागीदारी गतिविधियाँ संस्था में मानव संसाधनों की क्षमता और योग्यता का विस्तार करने में उत्प्रेरक की भूमिका निभा रही हैं ताकि लगातार उत्कृष्ट प्रदर्शन सुनिश्चित किया जा सके।

एनडीडीबी ने संस्थागत जरूरतों को पूरा करने और कार्मिकों की क्षमताओं को बढ़ाने के लिए विशेष प्रशिक्षण को प्राथमिकता दी। इनमें निम्न कार्यक्रम में शामिल है:

- नॉन-डेरी कार्मिकों के लिए डेरी प्रशिक्षण - गैर-विशेषज्ञों के लिए डेरी संचालन में सहयता प्रदान करना।
- प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण - कार्मिकों को प्रभावी ढंग से जानकारी प्रदान करने के लिए तैयार करना।
- महिला नेतृत्व विकास - महिला नेतृत्व को अधिक प्रभावी और सामर्थ्यवान बनाने के लिए उनका सशक्तिकरण करना।
- आउटबाउंड ट्रेनिंग - कार्य करने में उत्साह, रचनात्मकता और नवाचार पर केंद्रित।
- रचनात्मकता और नवाचार संबंधी कार्यशालाएं - कार्मिकों के बीच नवीन सोच को बढ़ावा देना।
- समग्र स्ट्रेस मैनेजमेंट एवं आत्म-विकास - तंदुरुस्ती और व्यक्तिगत विकास को बढ़ावा देना।
- एथनो-वेटनरी प्रैक्टिसेस - पारंपरिक पशुचिकित्सा पद्धतियों पर प्रशिक्षण।

कार्मिक सहभागिता एवं विकास

लीड पहल: यह विशेष रूप से महिला कार्मिकों के लिए शुरू की गई पहल है, जो सीखने के अवसर प्रदान करती है और इसमें पद्मश्री फूलबासन बाई यादव के लोकप्रिय भाषण जैसे सत्र शामिल हैं।

टेक्टोनिक्सः इस कार्यक्रम का उद्देश्य कार्मिकों को तकनीकी प्रगति से अवगत कराना है।

एचआरडी वीक समारोह: एक सप्ताह तक चलने वाली यह पहल जो 'लर्न, अन-लर्न और रि-लर्न' पर केंद्रित है, जिसमें उद्योग विशेषज्ञों के व्याख्यान, संस्थागत दौरे, अनुभव साझा करना, धन्यवाद ज्ञापन गतिविधियां और सांस्कृतिक प्रदर्शन शामिल हैं।

इंटर्नशिप सुविधा: एनडीडीबी ने विभिन्न संस्थाओं के तीस छात्रों को उनकी रोजगार क्षमता बढ़ाने के लिए इंटर्नशिप की सुविधा प्रदान की।

पीएसयू और पीएसबी के अधिकारियों का प्रशिक्षण

केंद्रीय सतर्कता आयोग (CVC) ने सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों और सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में इंडक्शन स्टेज और मिड-कैरियर अधिकारियों के लिए "व्यवहारिक परिवर्तन" पर प्रशिक्षण उपलब्ध कराने के लिए एनडीडीबी को "उत्कृष्टता संस्थान" के रूप में चिह्नित किया। सीवीसी की उपरोक्त पहल के एक भाग के रूप में, एनडीडीबी इंडक्शन स्टेज के अधिकारियों के लिए "भावी प्रबंधक और नेतृत्व विकास" तथा पीएसयू एवं पीएसबी के मिड-कैरियर अधिकारियों के लिए "अग्रणी संस्थागत परिवर्तन" पर पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में संस्थागत प्रभावशीलता के लिए पारदर्शिता, नैतिकता और सुशासन की भूमिका प्रदर्शित करने के लिए क्लास रूम सेशन और ग्राम स्तर के संस्थानों का दौरा दोनों शामिल हैं।

एनडीडीबी ने पीएसयू और पीएसबी के अधिकारियों के लिए नौ प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए, जिसमें नेतृत्व, नैतिकता, संगठनात्मक संस्कृति और इंटरैक्टिव फील्ड विजिट जैसे विषय शामिल रहे, जिससे कुल 203 अधिकारियों को लाभ हुआ।

विषय	कार्यक्रम संख्या	प्रतिभागियों की संख्या
एनडीडीबी कार्मिकों के लिए प्रशिक्षण	51	474
पीएसयू/पीएसबी/डीएएचडी के अधिकारियों का प्रशिक्षण	12	231
कुल	**63**	**705**

एनडीडीबी, आणंद में बिल्डिंग ग्रेट इंस्टीट्यूट पर एचआरडी कॉन्क्लेव

एचआरडी कॉन्क्लेव

एनडीडीबी ने दिसंबर 2023 में 'बिल्डिंग ग्रेट इंस्टीट्यूशंस' विषय पर एचआरडी कॉन्क्लेव का आयोजन किया। इस कॉन्क्लेव में लगभग 550 प्रतिभागियों ने भाग लिया, जिनमें डेरी संघों, महासंघों, उत्पादक कंपनियों और एनडीडीबी की सहायक संस्थाओं के मुख्य कार्यपालक अधिकारी और मानव संसाधन अधिकारी शामिल रहे । इस कॉन्क्लेव में बैंक ऑफ बड़ौदा के पूर्व अध्यक्ष डॉ. अनिल खंडेलवाल, टीवी राव लर्निंग सिस्टम्स प्राइवेट लिमिटेड के अध्यक्ष डॉ. टीवी राव, निरमा विश्वविद्यालय के महानिदेशक डॉ. अनुप सिंह, उद्यमिता विकास संस्थान के महानिदेशक डॉ. सुनील शुक्ला और अन्य गणमान्य अधिकारी उपस्थित रहे । इस दो दिवसीय कॉन्क्लेव में कई उपयोगी सत्र आयोजित किए गए जिसमें विभिन्न विषयों पर विचार-विमर्श किया गया । इस कॉन्क्लेव में कार्मिकों ने उत्साह के साथ भाग लिया।

अधिकारियों का प्रायोजन

एनडीडीबी ने इरमा, आणंद में एक्जीक्यूटिव पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन रूरल मैनेंजमेंट के लिए विभिन्न संस्थाओं के 30 अधिकारियों को प्रायोजित किया, जिससे उनके प्रोफेशनल विकास और नेतृत्व क्षमताओं में वृद्धि हुई।

एनडीडीबी की सहायक कंपनियों के अधिकारियों का अभिमुखन

एनडीडीबी की सहायक कंपनियों के नवनियुक्त कार्मिकों को एनडीडीबी की गतिविधियों, मूल्यों और कार्य-संस्कृति के बारे में उन्हें अवगत कराने के लिए पांच दिवसीय अभिमुखन कार्यक्रम अर्थात् एनडीडीबी कनेक्ट प्रोग्राम की शुरूआत की गई। इस एनडीडीबी कनेक्ट प्रोग्राम के सभी सात बैचो में एनडीडीबी की छः सहायक कंपनियों के 184 अधिकारियों ने भागीदारी की।

एससी/एसटी कार्मिकों के लिए कल्याणकारी पहल

एनडीडीबी ने एससी / एसटी कार्मिकों के लिए कल्याणकारी उपायों के लिए अपनी प्रतिबद्धता निरंतर जारी रखी, जिसमें उनके बच्चों की अकादमिक उपलब्धियों के लिए मान्यता, शैक्षिक व्यय की प्रतिपूर्ति और विशेष प्रशिक्षण अवसर शामिल है। ये पहल कुशल, सहभागिता और समावेशी वर्कफोर्स को बढ़ावा देने के लिए एनडीडीबी के समर्पण को रेखांकित करती हैं।

डेरी फार्मिंग के माध्यम से समुदायों का सशक्तिकरण

प्रेरणादायक कहानियां

वलसाड में मीठी क्रांति को बढ़ावा देना

गुजरात में वलसाड जिला उन 26 जिलों में से एक है, जिन्हें 10,000 एफपीओ योजना के तहत मधुमक्खीपालन के एफपीओ/हनी क्लस्टर विकास के गठन और संवर्धन के लिए एनडीडीबी को आवंटित किया गया है। एनडीडीबी ने वलसाड दूध संघ को वलसाड जिले में मधुमक्खियों के एफपीओ/हनी क्लस्टर के गठन और संवर्धन के लिए क्लस्टर आधारित व्यापार संगठन (CBBO) के रूप में नामित किया है।

इस क्षेत्र के दूध उत्पादकों/किसानों को संगठित करके वलसाड विभाग मधमाखी उत्पादक/वेचन कर्णारी सहकारी मंडली लिमिटेड नामक एक मधुमक्खीपालन एफपीओ का गठन किया गया है। एफपीओ के इन किसान सदस्यों को राष्ट्रीय मधुमक्खीपालन और शहद मिशन (NBHM) योजना के तहत एनबीबी और एनडीडीबी के सहयोग से वैज्ञानिक मधुमक्खीपालन प्रशिक्षण दिया गया। निरंतर एकजुटता और विस्तार सहयोग के परिणामस्वरूप अब एफपीओ की सदस्यता संख्या बढ़कर 316 सदस्यों तक हो गई है, जिनमें से 265 महिलाएं हैं और 304 अनुसूचित जनजाति सदस्य हैं। वर्तमान में, एफपीओ 2,100 एपिस मेलिफेरा और 270 ट्राईगोना एपी सहित 2,370 मधुमक्खी-बॉक्स का प्रबंधन करता है। वलसाड गुजरात में बागवानी के केंद्र के रूप में प्रसिद्ध है। इसलिए, मधुमक्खीपालन परागण को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है और इससे किसान सदस्यों को फसलों की पैदावार और गुणवत्ता में सुधार करने में मदद मिल सकती है, जिससे उनके बागवानी और संबद्ध गतिविधियों में उत्पादकता में वृद्धि हो सकती है।

इस मधुमक्खीपालन पहल से दूध उत्पादकों को अपनी आय बढ़ाने के लिए अतिरिक्त गतिविधि के रूप में मधुमक्खीपालन करने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। वलसाड दूध संघ अपने विभिन्न संयंत्रों में डेरी उत्पादों के मूल्यवर्धन के लिए कच्चे शहद की खरीद करके एफपीओ सदस्यों द्वारा उत्पादित शहद के लिए फॉरवर्ड लिंकेज प्रदान कर रहा है। एफपीओ को और अधिक सहयोग देने के लिए, दूध संघ अपने विभिन्न आउटलेट्स पर 'वासुधरा' ब्रांड नाम के तहत शहद की खुदरा बिक्री की भी व्यवस्था कर रहा है। वासुधरा ब्रांड गुणवत्तापूर्ण डेरी उत्पादों के लिए जाना जाता है और यह 54 वर्षों से कार्यरत है। वासुधरा पहले से ही वलसाड जिले की वंचित आदिवासी महिला किसानों के बेहतर जीवन और आजीविका के लिए सशक्तिकरण का प्रतीक है। यह उपभोक्ताओं को एक विशेष ब्रांड का अनुभव देता है जो इसे शहद व्यवसाय की प्रतिस्पर्धा से अलग करता है। पिछले वर्ष एफपीओ ने 54 लाख रुपये का कारोबार किया।

वलसाड़ हनी एफपीओ डेरी किसानों के आर्थिक सशक्तिकरण का मार्ग प्रशस्त करेगा। साथ ही, मधुमक्खीपालन जैव विविधता और पर्यावरणीय स्थिरता को बनाए रखकर आने वाली पीढ़ियों के लिए एक बेहतर भविष्य सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। यह पहल मधुमक्खीपालन और डेरी गतिविधियों के सफल एकीकरण को दर्शाती है, जिससे मधुमक्खीपालकों के लिए लाभकारी मूल्य सुनिश्चित होता है। स्थानीय बाजार में सहकारी नेटवर्क की उपस्थिति से, उपभोक्ता उचित दरों पर गुणवत्तापूर्ण उत्पाद प्राप्त कर सकते हैं।यह प्रयास न केवल इस क्षेत्र के लिए आर्थिक विकास सुनिश्चित करता है, बल्कि सतत् कृषि और सामुदायिक विकास के लिए प्रतिबद्धता को भी दर्शाता है।

वलसाड मधुमक्खीपालक के एफपीओ के 'वसुधारा' शहद के लॉन्च के दौरान एनडीडीबी के अध्यक्ष डॉ. मीनेश शाह

हिमीकृत वीर्य डोज के भंडारण और परिवहन के लिए तरल नाइट्रोजन का उपयोग करते हुए

तरल नाइट्रोजन (LN_2) में हिमीकृत वीर्य डोज (FSD) सैम्पलों की शिपिंग के विकल्प के रूप में कोल्ड-चेन शिपमेंट का उपयोग

भारत में, गोवंशीय वीर्य में हर्पीसवायरस-1 (BoHV-1) का पता लगाने के लिए हिमीकृत वीर्य डोज (FSD) के सैम्पल पारंपरिक रूप से तरल नाइट्रोजन (LN_2) के कंटेनरों में भेजे जाते थे। BoHV-1, IBR का कारण बनता है, जो एक महत्वपूर्ण यौन संचारित गोवंशीय रोग है जो गर्भपात और प्रजनन संबंधी विकारों का कारण बन सकता है। LN_2 शिपमेंट ने वीर्य केंद्रो के लिए लॉजिस्टिक, सुरक्षा और लागत संबंधी बाधाएँ उत्पन्न करता है, जिससे FSD परीक्षण की अर्थव्यवस्था, व्यवहार्यता और अनुपालन प्रभावित होता है।

वर्ष 2022 में, एनडीडीबी आर एंड डी प्रयोगशाला ने LN_2 के विकल्प के रूप में कोल्ड-चेन शिपमेंट (हिमीकृत जेल-पैक में पैक किए गए एफएसडी स्ट्रॉ) का मूल्यांकन करने के लिए एक पायलट अध्ययन किया। प्रयोगशाला सिमुलेशन और वास्तविक क्षेत्र परिदृश्य दोनों में पायलट अध्ययन ने परीक्षण के लिए एक सप्ताह के भीतर एफएसडी नमूनों को प्रयोगशाला में ले जाने के लिए जमे हुए जेल-पैक सिस्टम की उपयुक्तता की पुष्टि की।

कोल्ड-चेन के माध्यम से भेजे गए एफएसडी का परीक्षण फ्रोजन जेल-पैक के साथ एक्स्टेन्ड पोलीस्टाइरींन (थर्मोकोल) बक्से का उपयोग करके पैकेजिंग और शिपिंग प्रक्रियाओं के संप्रेषण के साथ शुरू हुआ। वीर्य केंद्र अप्रैल 2023 से कोल्ड चेन शिपमेंट का उपयोग कर रहे हैं। पिछले नौ महीनों (दिसंबर 2023 तक) के आंकड़ों ने पिछले वर्ष (2022) की समान अवधि की तुलना में, एफएसडी सैंपलो के लिए सकारात्मक परिणामों की समान दर को दर्शाया है। विश्लेषण पुष्टि करता है कि शिपमेंट प्रक्रिया में बदलाव से परीक्षण की सटीकता में कोई कमी नहीं आई है।

वीर्य केंद्रो जहां यह परीक्षण किए गए, से लिए फीडबैक सर्वेक्षणों से LN_2 शिपमेंट की तुलना में लगभग 75 प्रतिशत प्रति शिपमेंट की लागत बचत का पता चला है। सर्वेक्षण से यह भी पता चला है कि वीर्य केंद्रों के बीच कोल्ड चेन शिपमेंट की सराहना और स्वीकृति का स्तर उच्च है। एफएसडी परीक्षणों का उपयोग अब एनडीडीबी-काफ में नियमित रूप से उनका उपयोग करने वाले वीर्य केंद्रो द्वारा किया जा रहा है, जो लागत में कमी और परिवहन सुविधा में सुधार के कारण BoHV-1 के लिए एफएसडी स्क्रीनिंग के साथ अधिक स्वीकृति और अनुपालन का प्रदर्शन कर रहा है।

एथनोवेटरनरी मेडिसिन के माध्यम से एंटीमाइक्रोबियल उपयोग (AMU) में कमी

एंटीमाइक्रोबियल दवाएं पशु स्वास्थ्य प्रबंधन एवं कल्याण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। खाद्य सुरक्षा और सार्वजनिक स्वास्थ्य सुनिश्चित करने के लिए इन एंटीमाइक्रोबियल दवाओं का सावधानीपूर्वक उपयोग करना महत्वपूर्ण है। पशु रोग प्रबंधन में एंटीबायोटिक दवाओं के अनुचित प्रयोग से एंटीमाइक्रोबियल प्रतिरोध (AMR) उत्पन्न हो सकते है, जो एक वैश्विक समस्या है। भारत में राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड विभिन्न दूध उत्पादक संस्थाओं और विश्वविद्यालयों के सहयोग से गोवंशीय पशुओं में लगभग 30 सामान्य बीमारियों के प्रबंधन के लिए एथनोवेटरनरी मेडिसिन (EVM) के उपयोग के माध्यम से किफायती और प्रभावकारी वैकल्पिक दृष्टिकोण को बढ़ावा दे रहा है।

गुजरात की डेरी सहकारिता साबर दूध संघ 2017-18 से अपने मिल्क शेड क्षेत्र में ईवीएम का प्रसार कर रहा है। ईवीएम फॉर्मूलेशन की किफायती आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए, साबर दूध संघ ने एनडीडीबी से वित्तीय और तकनीकी सहायता के साथ एक ईवीएम उत्पादन संयंत्र स्थापित किया है। वर्तमान में, साबर दूध संघ सात अलग-अलग रेडी-टू-यूज़ ईवीएम फॉर्मूलेशन का उत्पादन करता है और उन्हें डीसीएस और पशु चिकित्सा कर्मचारियों के माध्यम से सदस्य उत्पादकों को आपूर्ति करता है। ईवीएम फॉर्मूलेशन के व्यापक प्रचार और जागरूकता प्रयासों के बाद, एंटीबायोटिक दवाओं की खरीद में लगभग 44 प्रतिशत की कमी आई अर्थात व्यय राशि 1.89 करोड़ रुपये से घटकर 0.89 करोड़ रुपये हो गई। ईवीएम के प्रचार-प्रसार का समग्र परिणाम डेरी किसानों और दुग्ध संघ के लिए बचत के मामले में बहुत फायदेमंद रहा है। एंटीबायोटिक उपयोग में कमी निश्चित रूप से मिल्क शेड में एएमआर के विकास को कम करने में योगदान देगी।

बायोगैस स्लरी द्वारा वित्तीय स्वावलंबन में सहयोग

मुजकुवा गांव की निवासी मंगुबेन दयाभाई परमार के पास तीन भैंस हैं और वह मुजकुवा डेरी सहकारी समिति की सदस्य हैं। उन्होंने चार साल पहले, राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड की मदद से दो क्यूबिक मीटर का बायोगैस संयंत्र स्थापित किया था। इस संयंत्र ने एलपीजी सिलेंडर को रिफिल करने की आवश्यकता को समाप्त किया और एलपीजी की लागत पर लगभग 1,000 रुपये प्रति माह की बचत करने में मदद की। चूंकि बायोगैस संयंत्र लगातार स्लरी पैदा करता है, इसलिए वह मुजकुवा सखी खाद सहकारी मंडली लिमिटेड में शामिल हो गईं। इसके बाद, उन्होंने घोल की बिक्री से लगभग 2,000 रुपये प्रति माह की आय अर्जित करना शुरू कर दिया। उन्होंने और उनके पति ने अतिरिक्त स्लरी को अपने 0.6 हेक्टेयर के खेत पर डालने का फैसला किया, जो कि बायोगैस संयंत्र के पास स्थित है। पहले वर्ष में, उन्होंने कुंदरू, बैंगन और धनिया की खेती करके उपज की गुणवत्ता में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की। कुंदरू की फसल को ट्रेलिस प्रणाली का उपयोग करके उगाया गया, जिससे सब्जियों की गुणवत्ता में और सुधार हुआ।

बायोगैस संयंत्र की स्थापना से पहले, वे रासायनिक उर्वरक (100 किलोग्राम डीएपी, 100 किलोग्राम यूरिया और 50 किलोग्राम अमोनियम सल्फेट) डालते थे। दूसरे वर्ष में, उन्होंने किसी भी रासायनिक उर्वरक को नहीं डालने का निर्णय लिया, जिससें सब्जी उत्पादन में बेहतर परिणाम दिखे। इससे प्रोत्साहित होकर उन्होंने रासायनिक उर्वरकों के बिना ही खेती जारी रखी। वर्ष 2023-24 के दौरान उन्होंने 0.3 हेक्टेयर में उगाई गई कुंदरू से 70,000 रुपये, 0.12 हेक्टेयर में भिंडी की खेती से 40,000 रुपये, 0.18 हेक्टेयर में धनिया की खेती से 25,000 रूपये अर्जित किए। इससे उनकी आय पिछले चार वर्षों की तुलना में लगभग दोगुनी हो गई।

उन्होंने इस आय का उपयोग कृषि के लिए वार्षिक बिजली बिल का भुगतान करने के लिए किया और पिछले तीन वर्षों की आय के एक हिस्से का उपयोग करके एक गाड़ी (Car) भी खरीदी। इस गाड़ी को अब उनका बेटा चलाता है, जिसका उपयोग स्कूली बच्चों को लाने-ले जाने के लिए किया जाता है, जिससे उनकों प्रति माह 10,000 रुपये अर्जित होते है, जो परिवार के लिए आय का एक स्थिर स्रोत प्रदान करता है।

ऑर्गेनिक कृषि के बारे में जानने के बाद, मंगुबेन के पति ने गाँव में एक ऑर्गेनिक सहकारी समिति बनाने का बीड़ा उठाया और इसके लिए, उन्होंने 2024 में ऑर्गेनिक प्रमाणीकरण के लिए आवेदन किया। उन्होंने पाया कि ऑर्गेनिक सब्जियों की बाजार में अधिक कीमत मिलती है और उनकी भविष्य की योजना नियमित ऑर्गेनिक सब्जी उत्पादक बनने की है।

इस छोटे से बायोगैस संयंत्र ने उनके जीवन को बदल दिया है और उन्हें विश्वास है कि ऑर्गेनिक कृषि प्रमाणन के साथ, वे आगे भी बढ़ेंगे और समृद्ध होंगे।

किसानों के खेत में स्लरी एप्लिकेटर का उपयोग करते हुए

मोबाइल दूध संग्रहण ईकाई, लद्दाख

डेरी क्षेत्र के लिए विज़न 2047

भारत का डेरी उद्योग, जो मुख्य रूप से छोटे किसानों की खेती से संचालित है जिससे यह उद्योग ग्रामीण विकास की आधारशिला बन गया है। यह क्षेत्र सरकारी समर्थन के कारण दूध की कमी के परिदृश्य से बढ़कर दुनिया का सबसे बड़ा दूध उत्पादक बन गया है। इस वृद्धि को बनाए रखने के लिए, समग्र विकास पर ध्यान केंद्रित करना और डेरी उद्योग को वैश्विक मानकों के साथ संरेखित करना जिससे इसकी प्रतिस्पर्धा और स्थिरता सुनिश्चित की जा सके।

छोटे धारकों की विशेषता वाले भारतीय डेरी उद्योग ने ग्रामीण विकास के लिए एक सिद्ध विकास इंजन के रूप में अपना लचीलापन और प्रभाव दिखाया है। डेरी उद्योग में उचित समय पर सरकारी गतिविधियों के सहयोग से सभी क्षेत्रों में प्रगति देखी गई है। इन क्षेत्रों की उपलब्धियों में आत्मनिर्भरता से लेकर दुनिया में सबसे बड़े दूध उत्पादक बनने, डेरी सहकारिकताओं की पहुंच में वृद्धि, निजी निवेशकों द्वारा वृहत् निवेश, वृहत् दूध संकलन और प्रसंस्करण बुनियादी ढांचे का निर्माण शामिल हैं।

देश में डेरी विकास की गति को बनाए रखने के लिए, यह आवश्यक है कि उप-क्षेत्रों में किए गए प्रयासों को इस क्षेत्र के समग्र विकास की दिशा में केंद्रित किया जाए।

इसके अलावा, भारतीय अर्थव्यवस्था में पशुधन का बढ़ता महत्व, दूध और दूध उत्पादों की बढ़ती मांग, मूल्यवर्धित उत्पादों की मांग में तेजी से वृद्धि, गोवंशीय उत्पादकता में सुधार की अपार संभावनाएं हैं और इस प्रकार देश के दूध उत्पादन में वृद्धि इस क्षेत्र में सकारात्मक परिवर्तन के संकेतक हैं। दूध उत्पादन में आत्मनिर्भरता हासिल करने के बाद, भारत के लिए विदेशी बाजारों में अपनी स्थिति मजबूत करने और वैश्विक डेरी व्यापार में एक अग्रणी देश बनने का यह सही समय है।

डेरी क्षेत्र के विकास को बनाए रखने के लिए रोडमैप तैयार करना समय की मांग है तथा डेरी क्षेत्र को आगे बढ़ाने के लिए पहचाने गए क्षेत्रों में ठोस प्रयास किए जाने की आवश्यकता है।

महत्वपूर्ण क्षेत्र

भारत के डेरी क्षेत्र में लगभग 107 मिलियन दूध देने वाले गोवंशों में पिछले एक दशक में सालाना 2.7 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। इस वृद्धि को जारी रखने के लिए पशुओं की संख्या बढ़ाने की बजाय इस क्षेत्र में सतत् वृद्धि महत्वपूर्ण है। उत्पादकता वृद्धि से दूध उत्पादन की लागतों को अनुकूलित करने और डेरी किसानों के लिए रिटर्न में सुधार करने में मदद मिलेगी।

वर्तमान में, डेरी सहकारिताएं लगभग एक तिहाई भारतीय गांवों तक पहुंच प्रदान करती हैं। इस पहुंच का विस्तार करने से अधिक किसानों को सहकारी नेटवर्क में एकीकृत किया जा सकता हैं, जिससे उन्हें बेहतर बाजार पहुंच और उचित मूल्य मिल सके। इससे उच्च गुणवत्ता वाले सुरक्षित दूध और दूध उत्पादों की उपलब्धता बढ़ेगी।

दूध और डेरी उत्पादों की मांग, आय में वृद्धि और खपत के पैटर्न में बदलाव के कारण काफी बढ़ने का अनुमान है। जिससे मूल्यवर्धित उत्पादों और न्यूट्रास्यूटिकल्स की मांग में वृद्धि तरल दूध की तुलना में अधिक होने की उम्मीद है। जिससे आगामी वर्षों में दूध और दूध उत्पादों की मांग में दो अंकों की वृद्धि होने का अनुमान है।

वर्तमान में, डेरी क्षेत्र में तरल दूध की खपत ज्यादा है। राष्ट्रीय स्तर पर दूध और दूध से बने उत्पादों की कुल खपत 47 प्रतिशत है। आगामी वर्षों में तरल दूध की अपेक्षा दूध से बने उत्पादों की खपत में वृद्धि की संभावना है। विभिन्न रिपोर्टों एवं उपलब्ध आंकडों के अनुसार भविष्य में मुख्यतः मूल्यवर्धित उत्पादों और फंक्शनल प्रोडक्ट एवं न्यूट्रास्यूटिक्ल की खपत के कारण दूध एवं दूध उत्पादों की मांग में वृद्धि होगी।

दूध के उत्पादन में वृद्धि के साथ, भारत के पास अपनी निर्यात क्षमता को साकार करने और डेरी उद्योग में प्रमुखता हासिल करने की बहुत संभावना है, जिसमें विश्व स्तरीय डेरी उत्पादों के प्रसंस्करण और उत्पादन के लिए उच्च गुणवत्ता वाले दूध की उपलब्धता बढ़ी है।

देश में सालाना 300 मिलियन गोवंश से 165 मिलियन टन खाद का उत्पादन होता हैं जिससे किसानों के लिए अतिरिक्त आय उत्पन्न करने और उनके कार्बन फुटप्रिंट को कम करने के लिए नवीन खाद प्रबंधन का लाभ लिया जा सकता हैं।

डेरी-स्थायी आजीविका का एक स्रोत

डेरी क्षेत्र के लिए विज़न 2047

डेरी पशु उत्पादकता

आगामी दशकों में, दूध की बढ़ती मांग, संसाधनों के लिए प्रतिस्पर्धा और जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के कारण पशुधन क्षेत्र को बढ़ती चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। इन कारकों से दूध उत्पादन लागत बढ़ सकती हैं तथा डेरी क्षेत्र की व्यवहार्यता पर दबाव डाल सकते हैं। डेरी के लिए एक स्थायी भविष्य सुनिश्चित करने के लिए, बेहतर प्रजनन, पोषण, प्रबंधन और स्वास्थ्य देखभाल के माध्यम से पशु उत्पादकता की वृद्धि करना महत्वपूर्ण है। पशु उत्पादकता पर महत्वपूर्ण फोकस से क्षेत्र की स्थिरता के बारे में हितधारकों को आश्वस्त किया जाएगा।

मुख्य गतिविधियों वाले क्षेत्र

पशु प्रजनन

- रिकॉर्डिंग का विस्तार और सटीक चयन
- सेक्स-सॉर्टेड सीमन का उपयोग
- रैपिड़ मल्टीपिकेशन
- नीति और नियामक उपाय

पशु स्वास्थ्य

- टीकाकरण पहुंच का विस्तार
- सुविधाजनक और बेहतर निदान
- वन-हेल्थ पर ध्यान देना
- ईवीएम का प्रचार-प्रसार
- पशु कल्याण

पशु आहार

- फीड रूपांतरण दक्षता में सुधार
- चारे की कमी को कम करना
- एंटेरिक मेथेन इमिशन को कम करना

यह परिकल्पना की गई है कि दूध की उत्पादकता 2047 तक प्रतिवर्ष प्रति पशु 2,080 किलोग्राम के वर्तमान स्तर से बढ़कर 5,200 किलोग्राम हो जाएगी।

संगठित क्षेत्र की हिस्सेदारी

भारत का कुल दूध उत्पादन लगभग 231 मिलियन टन है, जो प्रतिदिन लगभग 6,300 लाख किलोग्राम दूध के समतुल्य है। इस दूध का लगभग 40 प्रतिशत गांवों में उत्पादकों द्वारा उपभोग किया जाता है, जबकि शेष 60 प्रतिशत संगठित और असंगठित क्षेत्रों के बीच वितरित किया जाता है। असंगठित क्षेत्र बाजार का लगभग दो-तिहाई हिस्सा नियंत्रित करता है, जबकि डेरी सहकारिताओं और प्रमुख संस्थाओं सहित संगठित क्षेत्र बाजार योग्य अधिशेष का एक-तिहाई हिस्सा प्रबंधित करता है।

वर्तमान में, डेरी सहकारिताएं 30-35 प्रतिशत गाँवों को कवर करती हैं। उचित मूल्य निर्धारण, गुणवत्ता रखरखाव और उपभोक्ता सुरक्षा जैसी चुनौतियों का समाधान करने के लिए सहकारी कवरेज का विस्तार करना आवश्यक है, जिससे बाजार तक पहुंच बढ़ेगी और संगठित क्षेत्र मजबूत होगा। यह विस्तार दूध की गुणवत्ता में सुधार और निर्यात बाजारों के लिए तैयारी में सहायता करेगा।

मुख्य गतिविधियों वाले क्षेत्र

- उत्पादक स्वामित्व वाली संस्थाओं पर जोर देकर दूध संकलन क्षेत्रों का विस्तार करना
- कमजोर सहकारिताओं को सहायता और समर्थन के माध्यम से डेरी सहकारिताओं की पहुंच को बढ़ावा देना
- महिलाओं की भागीदारी बढ़ाना
- कम डेरी-विकसित क्षेत्रों में गतिविधियों का अभिसरण
- नीतियों और कार्यक्रमों को सक्षम बनाना

इसका लक्ष्य अगले दो दशकों के दौरान सहकारी कवरेज को 1.7 लाख से बढ़ाकर 3.5 लाख गांवों तक पहुंचाना है।

मूल्यवर्धित उत्पादों की हिस्सेदारी

डेरी उत्पादों की बढ़ती मांग शहरीकरण, जनसंख्या वृद्धि और प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि से प्रेरित है और स्वास्थ्य प्रवृत्तियों के कारण मूल्यवर्धित उत्पादों के उत्पादन में वृद्धि की आवश्यकता होती है। प्रमुख डेरी उत्पादों के लिए वार्षिक वृद्धि दर मात्रा के हिसाब से 15-20 प्रतिशत के बीच है, विशेष रूप से ताजे उत्पादों जैसे दही, लस्सी, फ्लेवर्ड मिल्कऔर मक्खन के साथ-साथ प्रोबायोटिक्स और ऑर्गेनिक जैसे नवीन उत्पादों में उच्च वृद्धि हुई है। पनीर, आइसक्रीम और फ्लेवर्ड दूध जैसे उत्पादों की वृद्धि दर मजबूत है और यह प्रवृत्ति निरंतर जारी रहने की संभावना है।

विशेष उपभोक्ता समूहों जैसे कि शिशुओं, बच्चों, बुजुर्गों, गर्भवती महिलाओं और एथलीटों के लिए अनुकूलित डेरी आधारित उत्पादों को विकसित करने की काफी संभावना है। व्हे प्रोटीन आइसोलेट्स, कार्यात्मक दूध प्रोटीन केंद्रित और जटिल डेरी-व्युत्पन्न सामग्री जैसे उच्च मूल्य वाले उत्पाद पर्याप्त विकास के अवसर प्रदान करते हैं। वर्तमान में, सहकारिताओं द्वारा खरीदे गए दूध का केवल 25 प्रतिशत ही डेरी उत्पादों में परिवर्तित किया जाता है। तरल दूध की तुलना में मूल्यवर्धित उत्पादों की हिस्सेदारी बढ़ाने से लाभ मार्जिन में वृद्धि हो सकती है, जिससे डेरी किसानों के लिए बेहतर कीमतों का समर्थन मिल सकता है और उनके सामाजिक-आर्थिक उत्थान में योगदान दिया जा सकता है। सहकारी और संगठित निजी क्षेत्रों को उपभोक्ताओं और किसानों को समान रूप से लाभ पहुंचाने के लिए इस उत्पाद श्रृंखला के विस्तार पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है।

मुख्य गतिविधियों वाले क्षेत्र

- संगठित क्षेत्र से अधिक दूध का प्रवाह
- दूध उत्पादों के निर्माण के लिए क्षमता उपयोगिता में वृद्धि
- दूध प्रसंस्करण क्षमता में वृद्धि और मौजूदा अवसंरचना का आधुनिकीकरण
- उपभोक्ताओं की जरूरतों और वरीयताओं के अनुसार उत्पादों का निर्माण
- लैक्टोज और व्हे प्रोटीन/ दूध एल्बमिन जैसे उत्पादों के आयात पर निर्भरता को कम करने के लिए प्रसंस्करण अवसंरचना को प्रोत्साहित करना।
- उच्च मूल्यवर्धित उत्पादों के लिए अनुसंधान एवं विकास में निवेश
- विभिन्न देशों में रहने वाले भारतीय प्रवासी समुदाय के लिए निर्यात उन्मुख मूल्यवर्धित उत्पाद।

सहकारी क्षेत्र में 2047 तक वीएपी की हिस्सेदारी 25 प्रतिशत से बढ़ाकर 50 प्रतिशत करने की परिकल्पना की गई है।

उन्नत दूध प्रसंस्करण इकाई

डेरी क्षेत्र के लिए विज़न 2047

विश्व व्यापार में भारत की हिस्सेदारी

दूध का प्रमुख उत्पादक होने के बावजूद भारत के पास वैश्विक डेरी व्यापार का एक प्रतिशत से भी कम हिस्सा है। नीति आयोग के अनुसार, भारत में 2033 तक दूध का उत्पादन 330 मिलियन टन होने की संभावना है, जबकि इसी अवधि के दौरान मांग 292 मिलियन टन होने की संभावना है, इसलिए इस क्षेत्र के विकास के लिए डेरी निर्यात को बढ़ावा देना आवश्यक है। भारत को वैश्विक व्यापार में अपनी हिस्सेदारी बढ़ाने के लिए नॉन टैरिफ बैरियर, गैर-प्रतिस्पर्धात्मक कीमतों और विपणन अक्षमताओं जैसी चुनौतियों का समाधान करना होगा। पूर्ववर्ती डेरी प्रसंस्करण अवसंरचना विकास निधि (DIDF), पशुपालन और अवसंरचना विकास कोष (AHIDF) और राष्ट्रीय डेरी विकास कार्यक्रम (NPDD) के माध्यम से संगठित क्षेत्र की दूध प्रसंस्करण/गुणवत्ता परीक्षण क्षमताओं को बढ़ाने और आधुनिक बनाने के लिए भारत सरकार और एनडीडीबी द्वारा ठोस प्रयास किए जा रहे हैं। भारत सरकार ने इन बैरियर को दूर करने और भारतीय डेरी उत्पादों के लिए बाजार पहुंच का विस्तार करने के उद्देश्य से जनवरी 2023 के दौरान बहु-राज्य सहकारी समितियां (MSCS) अधिनियम, 2002 के तहत एक राष्ट्रीय सहकारी निर्यात लिमिटेड(NCEL) की स्थापना की है। दूध और दूध उत्पादों के निर्यात में वृद्धि को बाधित करने वाले प्रमुख कारक हैं- गैर-प्रतिस्पर्धात्मक कीमतें, एफएमडी और अन्य बीमारियों का प्रसार, गायों के स्तर पर पता लगाने की कमी, विभिन्न सैनिटरी और फाइटोसैनिटरी उपाय (SPS), विदेशी बाजार में व्यापार के लिए तकनीकी बाधाएं (TBT), घरेलू उत्पादों की कम दृश्यता और अप्रभावी विपणन पद्धतियां आदि शामिल हैं।

मुख्य गतिविधियों वाले क्षेत्र

- संगठित क्षेत्र की हिस्सेदारी बढ़ाना
- गुणवत्ता सुनिश्चित करना
- रोगमुक्त पशु
- एनडीएलएम का कार्यान्वयन
- डेरी निर्यात क्षेत्र विकसित करना
- प्रवासी भारतीयों के बीच स्वदेशी उत्पादों को बढ़ावा देना
- संभावित बाजारों की पहचान करना - उच्च क्षमता और कम व्यापार बाधा
- एसपीएस और अन्य व्यापार-संबंधित सूचनाओं का प्रभावी संचालन

लक्ष्य 2047 तक वैश्विक डेरी व्यापार में भारत की हिस्सेदारी को <1 प्रतिशत से बढ़ाकर लगभग 10 प्रतिशत करना है।

दूध - एक पौष्टिक आहार

सस्टेनेबल डेरी

जलवायु परिवर्तन पर अंतरसरकारी पैनल (IPCC) के अनुसार, 21वीं सदी के अंत तक वैश्विक तापमान 3.7 से 4.8 डिग्री सेल्सियस तक बढ़ सकता है, जिससे ग्रह के लिए गंभीर और अपरिवर्तनीय जोखिम पैदा हो सकता है। इसके जवाब में, कई देशों ने पेरिस समझौते को अपनाया जिसका उद्देश्य औद्योगिक स्तर से पहले के स्तर से 1.5 डिग्री सेल्सियस तक ग्लोबल वार्मिंग को सीमित करना था। विश्व के नेताओं ने महत्वपूर्ण जलवायु कार्रवाई के लिए प्रतिबद्धता व्यक्त की है, जिसका लक्ष्य नेट-जीरो ग्रीनहाउस गैस (GHG) उत्सर्जन है।

डेरी क्षेत्र में, एंटेरिक फर्मेंटेशन ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन का एक महत्वपूर्ण स्रोत है, जो कुल क्रैडल-टू-फार्म-गेट उत्सर्जन का लगभग 70 प्रतिशत है। खाद प्रबंधन, चारा उत्पादन और फार्म में ऊर्जा का उपयोग क्रमशः 15 प्रतिशत, 10 प्रतिशत और 5 प्रतिशत का अतिरिक्त योगदान देते है। डेरी उद्योग में नेट-जीरो ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन हासिल करने के लिए, वैज्ञानिक चारा उत्पादन, आहार, खाद और ऊर्जा प्रबंधन एवं कार्बन पृथक्करण के माध्यम से ग्रीन हाउस गैस हटाने जैसी सस्टेनेबल पद्धतियों को अपनाना आवश्यक है। इस दृष्टिकोण में पशुधन का आनुवंशिक सुधार, पशु स्वास्थ्य वृद्धि, सौर ऊर्जा को बढ़ावा देना और व्यापक कार्बन प्रबंधन शामिल है।

डेरी क्षेत्र में नेट जीरो में परिवर्तन का समर्थन करने के लिए किसानों और दूध संघों को इन सस्टेनेबल पद्धतियों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु सरकारी प्रोत्साहन और नीतियों की आवश्यकता है।

मुख्य गतिविधियों वाले क्षेत्र

- वैज्ञानिक प्रजनन एवं आहार
- घरेलू स्तर पर फ्लेक्सी बायोगैस संयंत्रों की स्थापना
- ऑर्गेनिक फर्टिलाइजर के उत्पादन के लिए स्लरी प्रसंस्करण केंद्र के साथ बायो-गैस संयंत्रों का क्लस्टर
- बड़े फार्मों/गौशालाओं के लिए खाद प्रबंधन मॉडल का विकास
- बड़े बायो-गैस/बायो-सीएनजी संयंत्रों की स्थापना
- सौर और अन्य नवीकरणीय ऊर्जा को बढ़ावा देना
- कार्बन पृथक्करण

इसका उद्देश्य व्यापक सस्टेनेबल पद्धतियों के माध्यम से 2050 तक नेट जीरो ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को प्राप्त करना है।

सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए खाद की क्षमता का उपयोग

पोषण और स्वाद का सही मिश्रण

एनडीडीबी फाउंडेशन फॉर न्यूट्रीशन

एनडीडीबी फाउंडेशन फॉर न्यूट्रीशन (NFN) सोसायटी पंजीकरण अधिनियम, 1860 के तहत एक सोसायटी के रूप में और बॉम्बे पब्लिक ट्रस्ट अधिनियम, 1950 के तहत एक ट्रस्ट के रूप में पंजीकृत है। यह अक्तूबर 2015 में आणंद, गुजरात में पंजीकृत हुआ।

इस संस्था का उद्देश्य कुपोषण का समाप्त करना और दूध एवं फोर्टिफाईड दूध उत्पादों की खपत को बढ़ावा देने में मदद करने के लिए पौष्टिक उत्पादों को उपलब्ध कराकर बच्चों को पोषण सहायता प्रदान करना है। ये प्रयास कुपोषण को दूर करने के बारे में जागरूकता बढ़ाने और कंपनी अधिनियम, 2013 में उल्लिखित दान, अनुदान और कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (CSR) योगदान के माध्यम से धन एकत्रित कर स्वस्थ आहार को प्रोत्साहित करने पर केंद्रित हैं। एनएफएन एनडीडीबी की सहायक कंपनियों और अन्य निगमों के सीएसआर के तहत विभिन्न कार्यक्रमों को भी लागू करता है।

गिफ्टमिल्क कार्यक्रम

गिफ्टमिल्क कार्यक्रम के अंतर्गत एनडीडीबी फाउंडेशन फॉर न्यूट्रीशन (NFN) ने 11 राज्यों के 257 स्कूलों में लगभग 41,700 बच्चों को कवर करते हुए 7.10 लाख लीटर दूध वितरित किया, जो 35.4 लाख चाइल्ड मिल्क दिनों के बराबर है।

गिफ्टमिल्क कार्यक्रम को एनडीडीबी की सहायक कंपनियों- आईडीएमसी, मदर डेरी फ्रूट एवं वेजिटेबल प्राइवेट लिमिटेड, इंडियन इम्यूनोलॉजिकल्स लिमिटेड (IIL) और अन्य सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में जिसमें सेल की विभिन्न इकाईयां जैसे- भिलाई स्टील संयंत्र, दुर्गापुर स्टील संयंत्र, आईआईएससीओ स्टील संयंत्र, राउरकेला स्टील प्लांट, बोकारो पावर सप्लाई कंपनी (प्रा.) लिमिटेड, एनबीसीसी (इंडिया) लिमिटेड, नेशनल फर्टिलाइजर्स लिमिटेड, एनटीपीसी-सेल पावर कंपनी लिमिटेड और एनटीपीसी-सेल पावर कंपनी लिमिटेड के कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (CSR) के अतंर्गत लागू किया गया। इसके अतिरिक्त गिफ्टमिल्क कार्यक्रम को झारखंड एवं बिहार के क्रमशः पलामू और मुजफ्फरपुर में लागू करने के लिए यामाहा मोटर सॉल्यूशंन इंडिया प्राइवेट लिमिटेड और शिपिंग कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड के साथ समझौता किया गया।

एनडीडीबी फाउंडेशन फॉर न्यूट्रीशन (NFN) ने सितंबर 2023 में न्यूट्रीशन माह और वर्ल्ड स्कूल मिल्क दिवस पर विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया। इस आयोजन में व्याख्यान, स्प्रिंट, पहेली प्रतियोगिताएं, स्कूली बच्चों में स्वस्थ खाने की आदतों और दूध के नियमित सेवन के बारे में जागरूकता को बढ़ावा देने संबंधित गतिविधियां शामिल रही।

शिशु संजीवनी

पुणे में मई 2023 में, माननीय श्री परशोत्तम रूपाला, मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्री, भारत सरकार और एनएफएन, अध्यक्ष, डॉ. मीनेश शाह की उपस्थिति में एनडीडीबी फाउंडेशन फॉर न्यूट्रीशन (SNF) ने अपना शिशु संजीवनी कार्यक्रम शुरू किया। इस कार्यक्रम की शुरूआत मदर डेरी फ्रूट एंड वेजीटेबल प्राइवेट लिमिटेड के कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (CSR) के तहत की गई, जो 3 से 6 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए डिजाइन किया गया एनर्जी-डेन्स फोर्टिफाइड न्यूट्रीशनल सप्लिमेंट है। यह 18 प्रतिशत प्रोटीन से भरपूर रेडी-टू-ईट, सैमी सॉलिड सप्लिमेंट, प्रति 40 ग्राम पर लगभग 200 किलो कैलोरी ऊर्जा प्रदान करता है, जो विभिन्न सूक्ष्म पोषक तत्वों के दैनिक संस्तुत आहार भत्ता का लगभग एक तिहाई पूरा करता है। महाराष्ट्र के गडचिरोली की एकीकृत बाल विकास सेवा (ICDS) के साथ मिलकर महाराष्ट्र के गडचिरोली जिले के अहेरी ब्लॉक के लगभग 5,000 बच्चे इस कार्यक्रम से आरंभिक स्तर पर लाभान्वित हुए। वित्तीय वर्ष 2023-24 के दौरान, एनएफएन ने महाराष्ट्र के गडचिरोली जिले में शिशु संजीवनी की कुल 5.38 लाख यूनिट वितरित की, जिससे छोटे बच्चों के पोषण की मात्रा में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।

गो-ग्रीन पहल

एनएफएन ने अपने गो-ग्रीन कार्यक्रम के तहत, घरेलू स्तर पर स्वच्छ ऊर्जा तक पहुंच को बढ़ावा देने पर ध्यान केंद्रित किया। एनएफएन ने इंडियन इम्यूनोलॉजिकल्स लिमिटेड (IIL) की कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (CSR) पहल के तहत उत्तर प्रदेश के वाराणसी और तेलंगाना के नालगोंडा जिले में 150 घरेलू स्तर की बायो-गैस इकाइयों की स्थापना पूरी की। इसके अलावा, गुजरात के भरूच जिले में 215 बायो-गैस संयंत्र स्थापित किए गए, जिन्हें टेक्नीप एनर्जी़ज़, इंडिया लिमिटेड के CSR द्वारा सहायता प्रदान की गई। इसके अतिरिक्त, आर्करोमा इंडिया लिमिटेड के कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (CSR) के तहत गुजरात के वडोदरा जिले के पादरा में 50 बायो-गैस संयंत्रों की स्थापना के लिए एक अनुबंध पर हस्ताक्षर किए गए। विशेष रूप से, एनएफएन ने आईआईएल के CSR के अंतर्गत समर्थित गुजरात के खेड़ा में गौशाला स्तर पर 50 क्यूबिक मीटर का बायो-गैस संयंत्र भी स्थापित किया।

श्री परशोत्तम रूपाला, माननीय केंद्रीय मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्री, पुणे, महाराष्ट्र में शिशु संजीवनी कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए

एनडीडीबी के अध्यक्ष डॉ. मीनेश शाह, श्री हरिवंश नारायण सिंह, माननीय उपसभापति, राज्य सभा से राजभाषा कीर्ति पुरस्कार – 2022-23 (द्वितीय पुरस्कार) प्राप्त करते हुए, इस अवसर पर केंद्रीय गृह राज्य मंत्री श्री अजय कुमार मिश्रा और केंद्रीय सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम राज्य मंत्री श्री भानु प्रताप सिंह वर्मा की उपस्थित में

अध्यक्ष, एनडीडीबी राजभाषा कार्यान्वयन के लिए वार्षिक राजभाषा पुरस्कार प्राप्त करते हुए

राजभाषा का प्रगामी प्रयोग

एनडीडीबी ने वित्तीय वर्ष 2023-24 के दौरान राजभाषा नीति के अनुरूप विभिन्न गतिविधियों और पहलों के माध्यम से अपने दैनिक कार्यालयीन पत्राचार और संचालन में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए प्रयास किए गए।

आयोजित गतिविधियाँ

"साहित्य-संवाद" व्याख्यान: एनडीडीबी ने कार्मिकों को हिंदी में प्रवीण बनाने के लिए साहित्यिक चर्चाओं पर ध्यान केंद्रित करते हुए साहित्य-संवाद के दो व्याख्यान कार्यक्रम आयोजन किए।

हिंदी समीक्षा बैठक और आईटीसी टूल पर प्रशिक्षण: सभी ग्रुपों में नियमित रूप से हिंदी समीक्षा बैठकें आयोजित की गईं, जिसमें कार्यालयीन संप्रेषण में हिंदी के प्रभावी उपयोग की सुविधा हेतु अनुवाद के लिए नवीनतम आई. सी. टी. उपकरणों पर टेम्पलेट निर्माण और प्रशिक्षण सत्रों पर बल दिया गया।

राजभाषा (OL) में तिमाही कार्यशालाएं: भाषा कौशल को सुदृढ़ करने के लिए, एनडीडीबी ने राजभाषा के प्रयोग पर समर्पित तिमाही कार्यशालाओं का आयोजन किया।

हिंदी पखवाड़ा का आयोजन: एनडीडीबी के सभी कार्यालयों में 14 से 29 सितंबर, 2023 के दौरान हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया। इस पखवाड़े में हिंदी भाषा में प्रवीणता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से कार्यशालाएं एवं प्रतियोगिताओं जैसी गतिविधियों का आयोजन किया गया। एनडीडीबी द्वारा आयोजित राजभाषा कार्यशालाओं में नराकास से जुड़े बाहरी संस्थानों ने भी भाग लिया।

हिंदी प्रतियोगिताएं: एनडीडीबी कार्मिकों की सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित करने के लिए आशु निबंध लेखन, कविता पाठ और अनुवाद जैसी विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई।

हिंदी दिवस प्रतिज्ञा: एनडीडीबी कार्मिकों ने हिंदी दिवस पर अपने आधिकारिक कार्यों में हिंदी को बढ़ावा देने की प्रतिबद्धता को और मजबूत करते हुए, गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग के दिशानिर्देशों का पालन करने के लिए हिंदी में प्रतिज्ञा ली।

वर्ष के दौरान, एनडीडीबी ने हिंदी में प्रचार सामग्री विकसित की तथा अनेक अन्य गतिविधियां संचालित कीं, जिनका उद्देश्य अपने कार्मिकों के बीच हिंदी के प्रयोग और प्रवीणता के लिए अनुकूल वातावरण तैयार करना है।

राजभाषा सम्मान एवं पुरस्कार

सितंबर 2023 में, हिंदी दिवस समारोह और पुणे में आयोजित तीसरे अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के दौरान, एनडीडीबी को प्रतिष्ठित राजभाषा कीर्ति पुरस्कार - 2022-23 (द्वितीय पुरस्कार) से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार एनडीडीबी के अध्यक्ष डॉ. मीनेश शाह को माननीय उपसभापति, राज्यसभा श्री हरिवंश नारायण सिंह द्वारा माननीय केंद्रीय गृह राज्य मंत्री, श्री अजय कुमार मिश्र एवं

एनडीडीबी के सभी कार्यालयों में 14 से 29 सितंबर, 2023 के दौरान हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया। इस पखवाड़े में हिंदी भाषा में प्रवीणता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से कार्यशालाएं एवं प्रतियोगिताओं जैसी गतिविधियों का आयोजन किया गया।

माननीय केंद्रीय सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम राज्य मंत्री श्री भानुप्रताप सिंह की उपस्थिति में प्रदान किया गया।

इसके अतिरिक्त, नराकास, आणंद द्वारा एनडीडीबी, आणंद को वर्ष 2021-22 के लिए राजभाषा कार्यान्वयन के लिए वार्षिक राजभाषा पुरस्कार (द्वितीय पुरस्कार) से सम्मानित किया गया, जो हिंदी भाषा के प्रगामी प्रयोग और उसके अनुपालन को बढ़ावा देने के लिए अपनी प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है।

एनडीडीबी का नराकास, आणंद के साथ सहयोग

वित्तीय वर्ष 2023-24 के दौरान, एनडीडीबी, आणंद ने नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), आणंद के साथ अपना सक्रिय सहयोग बनाए रखा एवं नराकास की अर्ध-वार्षिक बैठकों में भाग लिया। नराकास, आणंद के तत्वावधान में, एनडीडीबी ने एक हिंदी कविता पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया, जिसमें नराकास से जुड़े विभिन्न संस्थान के कार्मिकों की उत्साहपूर्ण भागीदारी देखी गई। इसके अलावा, एनडीडीबी के कार्मिकों ने नराकास, आणंद द्वारा प्रकाशित पत्रिका "उज्ज्वल आणंद" के लिए मौलिक लेखन (निबंध और कविता) द्वारा योगदान दिया।

हिंदी को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहन योजना

एनडीडीबी ने कार्यालयीन पत्राचार में हिंदी भाषा को बढावा देने संबंधी विभिन्न प्रोत्साहन योजनाएं लागू की हैं। ऐसी ही एक योजना हिंदी टिप्पण और आलेखन प्रोत्साहन योजना है। वर्ष 2023-24 के दौरान, इस योजना में 32 से अधिक कार्मिकों ने भाग लिया और उन्होंने नकद प्रोत्साहन राशि प्राप्त की। इसके अलावा, जिन कार्मिकों के बच्चों ने कक्षा 10वीं और 12वीं की परीक्षाओं में हिंदी में 75 प्रतिशत या उससे अधिक अंक प्राप्त किए, उन्हें नकद पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम

आईआईएल के नए वैक्सीन सयंत्र हेतु भूमि पूजन समारोह

एनडीडीबी और आईआईएल के अध्यक्ष डॉ. मीनेश शाह ने हैदराबाद के कर्कापटला में इंडियन इम्यूनोलॉजिकल्स लिमिटेड (IIL) के एक नए वैक्सीन सयंत्र के स्थापना की आधारशिला रखी और भूमि पूजन किया। इस अवसर पर इंडियन इम्यूनोलॉजिकल्स लिमिटेड के प्रबंध निदेशक डॉ. के आनंद कुमार, एनडीडीबी के कार्यपालक निदेशक श्री एस राजीव, एनडीडीबी डेरी सर्विसेज के प्रबंध निदेशक डॉ. सीपी देवानंद, डॉ. प्रियब्रत पटनायक, उप प्रबंध निदेशक, आईआईएल, श्री संजय मेहेंदले, डॉ. किन्नरा मूर्ति, निदेशक और अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे। इस अवसर पर अपने संबोधन में एनडीडीबी के अध्यक्ष ने कहा कि यह आधुनिक सुविधा एनडीडीबी और आईआईएल की ''वन हेल्थ संकल्पना'' मनुष्यों और पशुओं दोनों के स्वास्थ्य के प्रति समर्पित है। उन्होंने यह भी कहा कि नई सुविधा निश्चित रूप से हमारे देश में खुरपका और मुंहपका रोग के उन्मूलन में सहायक होगी।

आईडीएमसी के आरयूसी संयंत्र के लिए भूमि पूजन समारोह

एनडीडीबी और आईडीएमसी लिमिटेड के अध्यक्ष डॉ. मीनेश शाह ने 30 अगस्त 2023 को आईडीएमसी लिमिटेड द्वारा बनाए जाने वाले आरयूसी संयंत्र के लिए भूमि पूजन समारोह आयोजित किया। यह संयंत्र स्वदेशी बैक्टीरियल स्ट्रेन का उपयोग करके दही के लिए रेडी-टू-यूज़ कल्चर का निर्माण करेगा। विदेशी कंपनियों पर निर्भरता कम करने और विदेशी मुद्रा को बाहर जाने से रोकने के एनडीडीबी के विज़न का समर्थन करते हुए, उत्पाद के प्रबंधन और विपणन के लिए एनडीडीबी द्वारा प्रौद्योगिकी हस्तांतरित की गई।

आईडीएमसी लिमिटेड में फैब्रिकेशन शेड के लिए भूमि पूजन समारोह

एनडीडीबी और आईडीएमसी लिमिटेड के अध्यक्ष डॉ. मीनेश शाह ने श्री प्रकाश माहेश्वरी, प्रबंध निदेशक, आईडीएमसी और श्री आर के मलिक, कार्यपालक निदेशक, आईडीएमसी की उपस्थिति में एनडीडीबी की पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी आईडीएमसी की यूनिट-V में एक फैब्रिकेशन शेड के निर्माण के लिए भूमि पूजन समारोह आयोजित किया। शेड का उपयोग डेरी, फार्मास्युटिकल और बायोटेक क्षेत्रों में आवश्यक उच्च क्षमता वाले टैंकों के निर्माण के लिए किया जाएगा।

वाइब्रेंट गुजरात ग्लोबल ट्रेड शो

भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने वाइब्रेंट गुजरात ग्लोबल ट्रेड शो के दौरान बनासकांठा जिले में गोबर आधारित बायोगैस संयंत्रों के 3डी मॉडल का प्रदर्शन करने वाले मारुति सुजुकी पैवेलियन का दौरा किया। उनके भ्रमण के दौरान गुजरात विधानसभा के अध्यक्ष और बनास डेरी के अध्यक्ष श्री शंकर चौधरी, एनडीडीबी के अध्यक्ष डॉ. मीनेश शाह और सुजुकी मोटर कॉर्पोरेशन के अध्यक्ष श्री टी सुजुकी उपस्थित रहे। एनडीडीबी, मारुति सुजुकी और बनास डेरी के सहयोग से, अत्याधुनिक बायोगैस संयंत्र स्थापित कर रही है, जिसका उद्देश्य देश भर में सतत् ग्रामीण गतिशीलता समाधान और गोबर प्रबंधन में नवाचार को बढ़ावा देना है।

एनसीडीएफआई ई-मार्केट पुरस्कार

माननीय केंद्रीय गृह और सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी ने गांधीनगर में 2022-23 के दौरान एनसीडीएफआई ई-मार्केट पुरस्कार प्रदान किए। माननीय मंत्री ने कार्यक्रम के दौरान एनसीडीएफआई के नए हरित संचालित कार्यालय परिसर की आधारशिला भी रखी। कार्यक्रम में एनडीडीबी को संरक्षक पुरस्कार (Patron Award) प्राप्त हुआ। श्री भूपेन्द्र पटेल, माननीय मुख्यमंत्री, गुजरात, श्री शंकर चौधरी, माननीय अध्यक्ष, गुजरात विधानसभा, डॉ. मीनेश शाह, अध्यक्ष, एनडीडीबी, श्री दिलीप संघानी, अध्यक्ष, एनसीयूआई और इफको, श्री मंगल जीत राय, अध्यक्ष, एनसीडीएफआई, श्री श्रीनिवास सज्जा, एमडी, एनसीडीएफआई ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

एनडीडीबी के अध्यक्ष डॉक्टरेट ऑफ साइंस की उपाधि से सम्मानित

गुजरात के माननीय राज्यपाल और कामधेनु विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री आचार्य देवव्रत ने डेरी क्षेत्र में उनके योगदान के लिए एनडीडीबी के अध्यक्ष डॉ. मीनेश शाह को "डॉक्टरेट ऑफ साइंस" की मानद उपाधि प्रदान की।

डॉ. मीनेश शाह को "डॉ. डी सुंदरेसन मेमोरियल ओरेशन अवार्ड" प्रदान किया गया

एनडीडीबी के अध्यक्ष डॉ. मीनेश शाह ने "वर्ष 2024 के लिए डॉ. डी सुंदरेसन मेमोरियल ओरेशन अवार्ड" प्राप्त किया और राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान (NDRI) में 'इंडियन डेरी सेक्टर-रेट्रोस्पैक्ट एंड प्रोस्पैक्ट' विषय पर "डॉ. डी. सुंदरेसन मेमोरियल ओरेशन" अवार्ड प्रदान किया। अन्य गणमान्य व्यक्तियों में आईसीएआर-एनडीआरआई के निदेशक और कुलपति डॉ. धीर सिंह, संकाय सदस्य और छात्र उपस्थित थे। डॉ. शाह ने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान के क्षेत्र प्रसिद्ध स्व. डॉ. डी सुंदरेसन के श्रद्धांजलि स्मारक भाषण देने के विशेषाधिकार के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की।

डॉ. मीनेश शाह IRMA के अध्यक्ष नियुक्त किए गए

एनडीडीबी के अध्यक्ष डॉ. मीनेश शाह को इंस्टीट्यूट ऑफ रूरल मैनेजमेंट , आणंद का अध्यक्ष नियुक्त किया गया है। वे इरमा के अध्यक्ष का पद पर आसीन होने वाले पहले पूर्व छात्र हैं।

डॉ. मीनेश शाह NCDFI के अध्यक्ष के रूप में निर्वाचित हुए

डॉ. मीनेश शाह सर्वसम्मति से डेरी सहकारिताओं के शीर्ष निकाय, नेशनल कोऑपरेटिव डेरी फेडरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (NCDFI) के अध्यक्ष के रूप में निर्वाचित हुए।

बाजार की पहुंच बढ़ाने के लिए दूध और डेरी उत्पादों के प्रमाणीकरण के माध्यम से पशुपालकों की आय बढ़ाने पर राउंड टेबल कॉन्फ्रेंस का आयोजन

एनडीडीबी के अध्यक्ष डॉ. मीनेश शाह ने एफएओ और मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आयोजित 'दूध और डेरी उत्पादों के लिए प्रमाणन के माध्यम से पशुपालक की आय बढ़ाने के लिए बाजार तक पहुंच बढ़ाने' विषय पर राउंड टेबल कॉन्फ्रेंस में भाग लिया। इस बैठक में भारत सरकार के पशुपालन और डेयरी विभाग की अपर सचिव सुश्री वर्षा जोशी, भारत में एफएओ के प्रतिनिधि श्री ताकायुकी हगीवारा, एफएओ से श्री कोंडाव चावा और अन्य हितधारकों ने भाग लिया। डॉ. शाह ने विज़न साझा किया, जिसमें यह बताया गया कि कैसे डेरी बोर्ड प्रबंधन प्रक्रियाओं और किसान जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से दूध की गुणवत्ता में सुधार करने के लिए एक केंद्रित दृष्टिकोण अपनाता है। इसके साथ उन्होंने स्वच्छ दूध उत्पादन सुनिश्चित करने में डेरी मूल्य शृंखला दृष्टिकोण का पालन करने के महत्व पर प्रकाश डाला।

वर्ल्ड सस्टेनेबल डेवलपमेंट समिट

द एनर्जी एंड रिसोर्स इंस्टीट्यूट ('TERI), नई दिल्ली द्वारा आयोजित विश्व वर्ल्ड सस्टेनेबल डेवलपमेंट समिट 2024 के दौरान, एनडीडीबी के अध्यक्ष डॉ. मीनेश शाह, महानिदेशक डॉ. विभा धवन के साथ "भारत में बायोसीएनजी के सस्टेनेबल आयामों को समझना" विषयक ट्रैक में एक पैनलिस्टल के रूप में उपस्थित रहे। टेरी और मारुति सुजुकी इंडिया लिमिटेड के निदेशक श्री केनिचिरो टोयोफुकु सहित अन्य लोग शामिल रहे। पैनलिस्टों ने "भारत में वाहन ईंधन के रूप में बायोसीएनजी का व्यापक पर्यावरणीय और सोशल सस्टेनेबिलिटी संबंधी आकलन" पर टेरी की एक शोध रिपोर्ट जारी की।

वन हेल्थ पर FAO पैनल परिचर्चा

एनडीडीबी के अध्यक्ष डॉ. मीनेश शाह ने नई दिल्ली में खाद्य एवं कृषि संगठन (FAO) द्वारा आयोजित 'वन हेल्थ के साथ पशु स्वास्थ्य' विषय पर बहु-क्षेत्रीय विशेषज्ञ कार्यशाला के हिस्से के रूप में 'वन हेल्थ दृष्टिकोण के साथ पशु स्वास्थ्य में समुदाय और निजी क्षेत्र को शामिल करना' विषय पर एक तकनीकी सत्र की अध्यक्षता की। इस सत्र में डॉ. अनूप कालरा, संयुक्त सचिव, इन्फॉर्मेटिका हेल्थकेयर (INFAHC) और डॉ. दीपांकर घोष, वरिष्ठ निदेशक, जैव विविधता संरक्षण, WWF-इंडिया कार्यालय ने पैनलिस्ट के रूप में भाग लिया।

हैदराबाद में आयोजित 50वें आईडीए सम्मेलन में अध्यक्ष, एनडीडीबी द्वारा बीज वक्तव्य

एनडीडीबी के अध्यक्ष डॉ. मीनेश शाह ने हैदराबाद में इंडियन डेरी एसोसिएशन (IDA) द्वारा आयोजित 50वें डेरी उद्योग सम्मेलन में बीज वक्तव्य दिया, जिसका विषय 'भारतीय डेरी नवाचार और उद्यमिता' था। इस सम्मेलन में तेलंगाना के माननीय उपमुख्यमंत्री श्री मल्लू भट्टी विक्रमार्का, तेलंगाना के माननीय कृषि मंत्री श्री तुम्माला नागेश्वर राव, तेलंगाना सरकार के पशुपालन और मत्स्यपालन के विशेष मुख्य सचिव श्री अधार सिन्हा, तेलंगाना राज्य डेरी फेडरेशन लिमिटेड के प्रबंध निदेशक सुश्री चेत्तम लक्ष्मी, आईडीएफ के अध्यक्ष श्री पियर क्रिस्टियानो ब्राज़ाले, आईडीए के अध्यक्ष डॉ. आरएस सोढ़ी और अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

मदर डेरी का उसके स्वर्ण जयंती वर्ष में प्रवेश

एनडीडीबी की पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी मदर डेरी फ्रूट एंड वेजिटेबल प्राइवेट लिमिटेड (MDFVPL) ने देश को पोषण उपलब्ध कराने और किसानों को बेहतर आजीविका प्रदान करने के अपने स्वर्ण जयंती वर्ष में प्रवेश किया है। एनडीडीबी के अध्यक्ष डॉ. मीनेश शाह ने एमडीएफवीपीएल का 50 वर्ष मनाते हुए इसके लोगो का अनावरण किया, जो इसकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। उन्होंने एमडीएफवीपीएल से जुड़े किसानों और रियायतग्राहियों को भी सम्मानित किया और आइसक्रीम, ऑर्गेनिक्स उत्पाद, खाद्य तेल और बेकरी उत्पादों सहित नए उत्पाद लॉन्च किए।

एनडीडीबी के अध्यक्ष की गुजरात के माननीय मुख्यमंत्री से मुलाकात

एनडीडीबी के अध्यक्ष डॉ. मीनेश शाह ने सुजुकी मोटर कॉरपोरेशन के कार्यकारी उपाध्यक्ष श्री केनिची आयुकावा और मारुति सुजुकी इंडिया लिमिटेड के निदेशक श्री केनिचिरो टोयोफुकु के साथ गुजरात के माननीय मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्र पटेल से मुलाकात की। इस दौरान आयोजित चर्चा में गोबर को ईंधन और उर्वरक दोनों के स्रोत के रूप में उपयोग करने के साथ-साथ किसानों की आय और आजीविका में सुधार लाने पर ध्यान केंद्रित किया गया। अध्यक्ष, एनडीडीबी ने माननीय मुख्यमंत्री को गुजरात में शुरू की गई एनडीडीबी की खाद प्रबंधन पहल के बारे में जानकारी दी, जो बाद में एक मॉडल बन गया और अब यह मॉडल पूरे देश में दोहराया जा रहा है।

हिमाचल प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री से मुलाकात

एनडीडीबी के अध्यक्ष डॉ. मीनेश शाह ने हिमाचल प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री श्री सुखविंदर सिंह सुक्खू को हिमाचल प्रदेश में डेरी क्षेत्र की स्थिति और डगवार, कांगड़ा में पूर्ण स्वचालित दूध प्रसंस्करण संयंत्र स्थापित करने के प्रस्ताव पर एक प्रस्तुति दी। 1.5 लालीप्रदि की क्षमता को 3 लालीप्रदि तक बढ़ाया जा रहा है और इसकी आपूर्ति के लिए दूध संकलन नेटवर्क भी स्थापित किया जा रहा है। यह बैठक हिमाचल प्रदेश सरकार के माननीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री डॉ. (कर्नल) धनी राम शांडिल, श्री चंद्र कुमार, माननीय पशुपालन मंत्री, हिमाचल प्रदेश सरकार; श्री हर्षवर्द्धन चौहान, माननीय उद्योग मंत्री, हिमाचल प्रदेश सरकार व अन्य गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में शिमला में संपन्न हुई। प्रस्तावित डेरी प्रसंस्करण संयंत्र एनडीडीबी के तकनीकी मार्गदर्शन में स्थापित किया जाएगा। यह अनेक डेरी उत्पादों को भी संसाधित करेगा।

महानंद के पुनरुत्थान के लिए बैठक

एनडीडीबी के अध्यक्ष डॉ. मीनेश शाह ने विधायक श्री हरिभाऊ बागड़े, विधायक श्री माणिकराव कोकाटे और महानंद के प्रबंध निदेशक श्री कान्हुराज बागटे की उपस्थिति में महाराष्ट्र राज्य सहकारी दुग्ध महासंघ मर्यादित (महानंद) के अध्यक्ष श्री राजेश नामदेवराव परजाने पाटिल से मुलाकात की। बैठक के दौरान, एनडीडीबी द्वारा वरवंद, पुणे और महानंद में पाउडर प्लांट के संचालन को हाथ में लेने के संबंध में चर्चा हुई। महानंद के बोर्ड के सदस्यों ने एनडीडीबी से महानंद का प्रबंधन अपने हाथ में लेने का अनुरोध करने के लिए राज्य सरकार से संपर्क करने का निर्णय लिया। एनडीडीबी राज्य सरकार के परामर्श से महानंद के पुनरुत्थान की दिशा में काम करेगी।

अंबेडकर जयंती

एनडीडीबी ने डॉ. बी आर अंबेडकर को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए अधिकारियों के साथ अंबेडकर जयंती मनाई। कार्यक्रम के बाद आनंदालय स्कूल के छात्रों द्वारा डॉ. अंबेडकर के जीवन व दर्शन पर एक संगीतमय प्रस्तुत दी। इस समारोह के दौरान शिक्षा, समानता और हाशिए पर रहने वाले समुदायों के उत्थान के प्रति उनके समर्पण पर प्रकाश डाला गया।

विश्व पशु चिकित्सा दिवस

एनडीडीबी ने डेरी क्षेत्र में पशु चिकित्सकों के योगदान का सम्मान करते हुए विश्व पशु चिकित्सा दिवस मनाया। एनडीडीबी के अध्यक्ष डॉ. मीनेश शाह ने वन हेल्थ सुनिश्चित करने के लिए काम कर रहे सभी पशु चिकित्सकों के प्रति आभार व्यक्त किया। आगे, विशेषज्ञों ने नवाचारों और जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने पर विचार-विमर्श किया।

विश्व पर्यावरण दिवस

विश्व पर्यावरण दिवस पर एनडीडीबी कार्मिकों ने हमारी पृथ्वी की रक्षा की जिम्मेदारी लेते हुए पौधे लगाए। एनडीडीबी ने डेरी क्षेत्र को सतत् रूप से विकसित करने के अपने प्रयासों को जारी रखने का संकल्प लिया है।

स्वतंत्रता दिवस

77वें स्वतंत्रता दिवस समारोह के दौरान, एनडीडीबी के अध्यक्ष डॉ. मीनेश शाह ने एनडीडीबी, आणंद में राष्ट्रीय ध्वज फहराया। इस अवसर पर एनडीडीबी के कार्मिकों एवं उनके परिवार के सदस्यों की उपस्थिति में डॉ. शाह ने अपने भाषण में पिछले 76 वर्षों में भारत द्वारा की गई उल्लेखनीय प्रगति का उल्लेख किया और इस यात्रा में एनडीडीबी की महत्वपूर्ण भूमिका पर बल दिया।

गांधी एवं शास्त्री जयंती

एनडीडीबी कार्मिकों ने एनडीडीबी, आणंद में भारत के दो सबसे महान नेताओं (गांधी एवं शास्त्री) की जयंती मनाई। समारोह की शुरुआत एनडीडीबी के वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा महात्मा गांधी और लाल बहादुर शास्त्री की प्रतिमा पर माल्यार्पण के साथ हुई, इसके बाद आनंदालय स्कूल के बच्चों ने गांधी जी और शास्त्री जी के जीवन और शिक्षाओं पर समर्पित संगीतमय प्रस्तुति दी।

त्रिभुवनदास पटेल जयंती

एनडीडीबी में दूरदर्शी नेता और भारत में सहकारी आंदोलन के प्रणेता त्रिभुवनदास पटेल की जयंती मनाई गई। इस अवसर पर, एनडीडीबी के वरिष्ठ अधिकारियों ने त्रिभुवनदास पटेल को श्रद्धांजलि दी। एनडीडीबी द्वारा दी गई श्रद्धांजलि उनकी महान विरासत के प्रति सम्मान और कृतज्ञता को दर्शाता है।

सरदार वल्लभभाई पटेल जयंती

एनडीडीबी के अध्यक्ष डॉ. मीनेश शाह के नेतृत्व में एनडीडीबी कार्मिकों ने भारत के लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती के अवसर पर राष्ट्रीय एकता दिवस की शपथ ली। इस अवसर पर उन्होंने राष्ट्र की एकता, अखंडता और सुरक्षा को बनाए रखने के लिए स्वयं को समर्पित किया।

राष्ट्रीय दुग्ध दिवस

राष्ट्रीय दुग्ध दिवस पर, एनडीडीबी कार्मिकों ने डेरी के माध्यम से ग्रामीण परिवारों के सामाजिक-आर्थिक विकास में डॉ. वर्गीज़ कुरियन के महत्वपूर्ण योगदान को नमन किया। एनडीडीबी के अध्यक्ष डॉ. मीनेश शाह ने बायोसीएनजी संचालित स्वच्छ कार ईंधन रैली और साइकिल रैली के प्रतिभागियों का गर्मजोशी से स्वागत किया। रैलियों ने आणंद में डॉ. वर्गीज़ कुरियन द्वारा बनाए गए विभिन्न संस्थानों का दौरा किया और उन्हें श्रद्धांजलि दी। जीसीएमएमएफ के प्रबंध निदेशक श्री जयेन मेहता; श्री केनिचिरो टोयोफुकु, निदेशक, मारुति सुजुकी इंडिया लिमिटेड; अमूल डेरी के प्रबंध निदेशक श्री अमित व्यास और अन्य गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित रहे। पुणे से आणंद तक बायोसीएनजी कार रैली ने परिवहन क्षेत्र में ईंधन के रूप में खाद का उपयोग करने, कार्बन उत्सर्जन को कम करने के साथ-साथ किसानों को अतिरिक्त आय प्रदान करने की क्षमता का प्रदर्शन किया।

गणतंत्र दिवस

भारत के 75वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर, एनडीडीबी के अध्यक्ष डॉ. मीनेश शाह ने एनडीडीबी कार्मिकों और उनके परिवार के सदस्यों की उपस्थिति में राष्ट्रीय ध्वज फहराया। डॉ. शाह ने देश भर में डेरी किसानों के सामाजिक-आर्थिक विकास को बढ़ावा देने में एनडीडीबी की महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर दिया और विशेष रूप से महिलाओं को सशक्त बनाने और स्थायी आजीविका प्रदान करने में इसके प्रभाव के लिए सहकारी आंदोलन की सराहना की। उन्होंने संबंधित क्षेत्रों में विविधता लाने, नवाचार को बढ़ावा देने, सतत् विकास को प्रोत्साहित करने और डेरी किसानों के लिए आय के अतिरिक्त स्रोत उत्पन्न करने के लिए एनडीडीबी की पहल पर भी प्रकाश डाला।

एनडीडीबी के प्रयासों की पूरक – एनडीडीबी की सहायक कंपनियां

मदर डेरी फ्रूट एंड वेजिटेबल प्राइवेट लिमिटेड

एनडीडीबी और मदर डेरी के अध्यक्ष डॉ. मीनेश शाह, मदर डेरी के प्रबंध निदेशक श्री मनीष बंदलिश और बोर्ड के सदस्य दिल्ली में आयोजित कंपनी के स्वर्ण जयंती समारोह के दौरान महिला किसानों को सम्मानित करते हुए

मदर डेरी फ्रूट एंड वेजिटेबल प्राइवेट लिमिटेड, जिसकी स्थापना 1974 में 'ऑपरेशन फ्लड' पहल के तहत की गई थी, भारत के डेरी और खाद्य प्रसंस्करण उद्योग की आधारशिला बन गई है। यह कंपनी अपनी स्वर्ण जयंती मना रही है। यह उत्पादकों को उचित आय सुनिश्चित करते हुए किफायती कीमतों पर गुणवत्तापूर्ण खाद्य और पेय पदार्थ उपलब्ध कराने के अपने विज़न के प्रति प्रतिबद्ध है। 2023-24 के दौरान, मदर डेरी ने 15,036 करोड़ रुपये का कारोबार किया। इसने मांग को प्रभावित करने वाले खराब मौसम और असमान वर्षा जैसी चुनौतियों के बावजूद तीन प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की।

दूध और डेरी उत्पादों को एकीकृत करने वाले डेरी व्यवसाय में नौ प्रतिशत की वृद्धि हुई। विशेष रूप से, गाय के दूध में 15 प्रतिशत की मजबूत वृद्धि देखी गई, जबकि सजाव दही में 22 प्रतिशत की वृद्धि हुई। 500 करोड़ रुपये से अधिक आइसक्रीम सेगमेंट की बिक्री हुई, जो डेरी उत्पादों के पोर्टफोलियो में एक महत्वपूर्ण सेगमेंट बना । डेरी के अलावा, खाद्य तेल धारा ब्रांड में वित्त वर्ष 2023-24 में 12 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई। सफल, बागवानी प्रभाग में इसके नए एफएंडवी पोर्टफोलियो के तहत पिछले वर्ष की तुलना में मात्रा में चार प्रतिशत और मूल्य में 8 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई।

विस्तार और उत्पाद नवाचार

मदर डेरी ने उपभोक्ताओं की विभिन्न प्राथमिकताओं को पूरा करने के लिए भैंस के दूध जैसे प्रजाति-विशिष्ट वेरिएंट पेश करते हुए अपने उत्पाद की पेशकश में उल्लेखनीय रूप से विस्तार किया है। कंपनी ने बीस से अधिक नए उत्पाद लॉन्च किए, जिनमें रेडी-टू-ईट

कस्टर्ड, कोल्ड कॉफी वेरिएंट और कुकीज़ शामिल हैं। विशेष रूप से, नोलेन गुड़ मिष्टी दोई और नोलेन गुड़ कुल्फी जैसे उत्पादों में बंगाल के नोलेन गुड़ स्वाद की शुरुआत के साथ क्षेत्रीय प्राथमिकताओं को पूरा किया गया।

मदर डेरी ने उपभोक्ता अनुभव को बढ़ाने और अपने उत्पादों का विस्तार करने के लिए आधुनिक खुदरा दुकानों की शुरुआत की और इसका दिल्ली मेट्रो स्टेशनों जैसे हाई-फुटफॉल वाले क्षेत्रों में विस्तार किया है। मदर डेरी ने नागपुर में एक अत्याधुनिक मेगा दूध प्रसंस्करण संयंत्र, जिसका निवेश 500 करोड़ रुपये से अधिक है, से उत्पादन क्षमता को 600,000 लीटर प्रतिदिन तक बढ़ाने का लक्ष्य रखा गया है, जिसे 10,00,000 लीटर प्रतिदिन तक बढ़ाया जा सकता है। यह सुविधा पैकेज्ड दूध, आइसक्रीम, छाछ, लस्सी और पनीर सहित कई प्रकार के डेरी उत्पादों का उत्पादन करेगी।

परिचालन संबंधी चुनौतियाँ

मौसम संबंधी अनियमितताओं के कारण डेरी व्यवसाय को महत्वपूर्ण चुनौतियों का सामना करना पड़ा, जिसके कारण गर्मियों के महीनों में मांग में कमी आई। डेरी के अलावा, अनाज की कीमतों में वृद्धि के कारण सफल के फ्रोजन व्यवसाय में हरी मटर के उत्पादन में गिरावट आई, जबकि प्रतिकूल मौसम के कारण आम की फसल प्रभावित होने से पल्प व्यवसाय भी प्रभावित हुआ।

सस्टेनेबिलिटी पहल

मदर डेरी अपने विस्तारित उत्पादक उत्तरदायित्व (EPR) कार्यक्रम के माध्यम से प्लास्टिक कचरे की रि-साइकिलिंग और प्रसंस्करण जैसी पहल के साथ सस्टेनेबिलिटी के लिए प्रतिबद्ध है। कंपनी ने 36,000 टन से अधिक प्लास्टिक कचरे का सतत् प्रबंधन करके 'प्लास्टिक वेस्ट न्यूट्रल कंपनी' का दर्जा हासिल किया। कंपनी के पर्यावरण संबंधी उपायों में पिछले तीन वर्षों में कार्बन उत्सर्जन में लगभग 4,000 टन की कमी करना भी शामिल है।

अनुसंधान एवं विकास

मदर डेरी के अनुसंधान एवं विकास प्रयास नवीन उत्पादों को पेश करने में अहम रहे हैं जो उपभोक्ताओं की सुरक्षित, स्वस्थ और सुविधाजनक खाद्य विकल्पों की मांगों को पूरा करते हैं। रबड़ी लस्सी, नोलेन गुड़ मिष्टी दोई और आइसक्रीम के विभिन्न वेरिएंट उत्पाद, नवाचार और उपभोक्ता संतुष्टि के प्रति कंपनी की प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करते हैं।

मदर डेरी बाजार में अपनी उपस्थिति मजबूत करने के साथ अपने उत्पादों का विस्तार कर रही है जिससे गुणवत्ता, नवाचार और सस्टेनेबिलिटी के प्रति इसका समर्पण अटूट बना हुआ है। कंपनी बुनियादी ढांचे में निवेश और उपभोक्ता की जरूरतों पर ध्यान देने तथा भारत के डेरी और खाद्य प्रसंस्करण उद्योग के विकास और नेतृत्व के लिए तैयार है।

पुरस्कार और सम्मान

- भारत सरकार के माननीय रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह के द्वारा सशस्त्र बल ध्वज दिवस – सीएसआर (CSR) सम्मेलन 2023 में एक्स-सर्विसमेंन को रोजगार देने में दिए गए योगदान के लिए लगातार दूसरे वर्ष 'सिल्वर अवार्ड' से सम्मानित किया गया।
- इंडिया डेरी समिट एंड अवार्ड्स 2023 में 'डेरी चैंपियन ऑफ द ईयर' और 'प्रोडक्ट इनोवेटर ऑफ द ईयर (CUSTARD)' पुरस्कार जीता।
- तीसरे वार्षिक भारत एफ एंड बी पैक सम्मेलन और पुरस्कार 2023 में 'डेरी पैकेजिंग कंपनी ऑफ द ईयर' और 'एक्सीलेन्स इन सस्टेनेबल पैकेजिग' प्रतिष्ठित पुरस्कार जीते।

एनडीडीबी एवं मदर डेरी के अध्यक्ष डॉ. मीनेश शाह ने नोएडा के सेक्टर-79 में मदर डेरी की नई जनरेशन के बूथ का उद्घाटन किया, जिसमें पूर्व सैनिक कल्याण विभाग (रक्षा मंत्रालय) के पुनर्वास महानिदेशक मेजर जनरल शरद कपूर, वाईएसएम, एसएम तथा मदर डेरी के प्रबंध निदेशक श्री मनीष बंदलिश उपस्थित रहे ।

आईडीएमसी लिमिटेड

बल्क मिल्क कूलर (BMC) निर्माण संयंत्र

1978 में स्थापित इंडियन डेरी मशीनरी कंपनी लिमिटेड (IDMC) डेरी प्रसंस्करण और पैकेजिंग समाधान की एक अग्रणी संस्था है। आईडीएमसी ने वित्त वर्ष 2023-24 अपने मेटल और प्लास्टिक सेगमेंट में मजबूत वृद्धि के साथ 1,031.85 करोड़ रूपये का राजस्व दर्ज किया। आईडीएमसी के मेटल क्षेत्र में उल्लेखनीय रूप से 61.9 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जबकि प्लास्टिक सेगमेंट क्षेत्र ने 15,067 मीट्रिक टन पॉली फिल्म की आपूर्ति की।

मेटल सेगमेंट में उपलब्धियां

आईडीएमसी लि. ने मक्खन, चीज़, पनीर, आइसक्रीम, खोआ और फर्मन्टेड उत्पादों जैसे विभिन्न डेरी उत्पादों की आपूर्ति करने के लिए 25,000 से 5,00,000 लीटर प्रतिदिन (LLPD) की क्षमता वाले स्वचालित डेरी संयंत्रों को स्थापित करके मेटल सेगमेंट में उत्कृष्टता हासिल की है। कंपनी ने पनीर, दही, छाछ, मक्खन, घी, मट्ठा और मोजरेला चीज़ जैसे उत्पादों के लिए 100 लीटर बैच के लघु डेरी प्रोजेक्ट भी विकसित किए हैं। इसके अलावा, आईडीएमसी लि. ने स्ट्राइल कंडीशन में इंटरमीडिएट स्टोरेज के लिए 20 किलो लीटर(KL) क्षमता के एसेप्टिक टैंक को विकसित कर उसकी आपूर्ति की, जो यूएचटी स्टरलाइज़ेशन और एसेप्टिक फिलिंग की प्रक्रियाओं के लिए महत्वपूर्ण है। विशेष रूप से, एसेप्टिक बल्क कल्चर प्रीपरेशन प्रणाली के तहत एक 25 किलो लीटर (KL) एसेप्टिक टैंक एवं एक बड़ी क्षमता वाले डिएरेटर प्रक्रिया मॉड्यूल के लिए ऑर्डर सुरक्षित किए गए।

थर्मल मैनेजमेंट और फार्मास्युटिकल सेगमेंट

आईडीएमसी लि. ने 40 से 2,628 टन प्रशीतन क्षमता वाले स्वचालित अमोनिया प्रशीतन प्रणालियों को सफलतापूर्वक कमीशन किया। ऊर्जा दक्षता के लिए कंपनी की प्रतिबद्धता को स्टेनलेस स्टील के आइस साइलो की स्थापना द्वारा रेखांकित किया गया, जिससे ऊर्जा का अनुकूलित उपयोग होता है। फार्मास्युटिकल क्षेत्र में, आईडीएमसी लि. ने पेनिसिलिन उत्पादन के लिए विशाल फर्मेन्टर का निर्माण किया, जो फर्मेन्टेशन समाधानों में इसकी क्षमताओं को प्रदर्शित करता है।

नवीकरणीय ऊर्जा पहल

आईडीएमसी लि. ने अपनी नवीकरणीय ऊर्जा पहलों के तहत एक बायोगैस संयंत्र स्थापित किया है जो प्रतिदिन 100 मीट्रिक टन गाय के गोबर का प्रसंस्करण करता है, जिससे प्रतिदिन 4,000 क्यूबिक मीटर गैस उत्पन्न होता है। कंपनी ने अपने पर्यावरणीय सतत् प्रयासों को आगे बढ़ाते हुए 100 मीटप्रदि गोबर-आधारित कम्प्रैस्ड बायोगैस (CBG) संयंत्र स्थापित करने के लिए अनुबंध भी किया है।

प्रोडक्ट पोर्टफोलियो एवं नवाचार

आईडीएमसी लि. डेरी और इससे संबद्ध उद्योगों के लिए खाद्य प्रसंस्करण उपकरणों की एक विस्तृत श्रृंखला प्रदान करता है, जिसमें दूध साइलो, सीआईपी सिस्टम, पाश्चूराइज़र, यूएचटी स्टेरलाइज़र, मक्खन बनाने की मशीनें, खोआ बनाने की मशीनें, आइसक्रीम फ्रीजर शामिल हैं। कंपनी के अनुसंधान एवं विकास विभाग ने उच्च क्षमता वाले सेन्ट्रीफ्यूगल पंप, यूएचटी स्टरलाइजर और विशेष मिल्किंग उपकरण जैसे नवीन उत्पाद विकसित किए हैं।

प्रमाणन और पेटेंट

आईडीएमसी लि. ने स्वच्छता और गुणवत्ता में उच्च मानक स्थापित करते हुए, न्यूमैटिक सिंगल-सीट वाल्व, मिक्स प्रूफ वाल्व और सीएलए सीरीज सेन्ट्रीफ्यूगल पंपों के लिए 3A प्रमाणन प्राप्त किया। कंपनी ने नवीन उत्पादों जैसे पाइप सतहों पर बर्फ की मोटाई मापने वाले एक उपकरण के लिए पेटेंट भी प्राप्त किया है।

प्लास्टिक सेगमेंट और CSR पहल

आईडीएमसी लि. प्लास्टिक सेगमेंट में तरल दूध, घी, दही के लिए फिल्मों, दूध पाउडर और खाद्य उत्पादों के लिए उच्च-अवरोधक लेमिनेट्स के साथ पैकेजिंग आवश्यकताओं को पूरा करता है। कंपनी, एनडीडीबी फाउंडेशन फॉर न्यूट्रीशन की 'गिफ्टमिल्क' पहल को सहयोग प्रदान करता है, जो गुजरात के आणंद जिले के सरकारी स्कूलों में फोर्टिफाइड फ्लेवर्ड पाश्चुरीकृत दूध की आपूर्ति करता है।

सस्टेनेबिलिटी एवं भावी योजनाएं

आईडीएमसी लि. सस्टेनेबिलिटी के प्रति प्रतिबद्ध है जो अपनी सुविधाओं पर 340 किलोवाट रूफ टॉप सौर पीवी सिस्टम स्थापित कर रहा है और उसके आगे विस्तार की योजना बना रहा है। गुणवत्ता, नवाचार और बाजार के विस्तार पर ध्यान देने के साथ आईडीएमसी लि. को निर्यात के अवसरों और एक मजबूत उत्पाद पोर्टफोलियो समर्थित डेरी और संबद्ध क्षेत्रों में निरंतर वृद्धि की संभावना है।

नई पहल: रेडी-टू-यूज़ कल्चर का निर्माण

रेडी-टू-यूज़ कल्चर (RUC) प्लांट का भूमिपूजन समारोह 30 अगस्त 2023 को आईडीएमसी लि. यूनिट 4 में आयोजित किया गया, जो इस क्षेत्र में आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित हुआ। राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड ने भारतीय डेरी उद्योग को मजबूत करने के लिए कल्चर विकसित किए हैं। इस स्वदेशी कल्चर से विदेशी आपूर्तिकर्ताओं पर निर्भरता में कमी आएगी, इसकी कीमतों को नियंत्रित करने में मदद मिलेगी और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा मिलेगा। 13,500 किलोग्राम की वार्षिक क्षमता के साथ, RUC द्वारा मिल्क फर्मेन्टेशन प्रक्रियाओं को बढ़ाने, उच्च दक्षता, उपयोग में आसानी और निरंतर गुणवत्ता प्रदान करने की संभावना है।

'बनास काशी संकुल' का उद्घाटन

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने वाराणसी में नवनिर्मित दूध प्रसंस्करण संयंत्र - 'बनास काशी संकुल' का उद्घाटन किया। इस अवसर पर उत्तर प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ, बनास डेरी के अध्यक्ष श्री शंकर चौधरी, गुजरात विधान सभा के अध्यक्ष और अन्य गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित रहे। यह संयंत्र आईडीएमसी लिमिटेड द्वारा कमीशन किया गया, जो माननीय प्रधानमंत्री के 'आत्मनिर्भर भारत' और 'वोकल फॉर लोकल' के विज़न की दिशा में एक प्रभावी कदम है।

इंडियन इम्यूनोलॉजिकल्स लिमिटेड

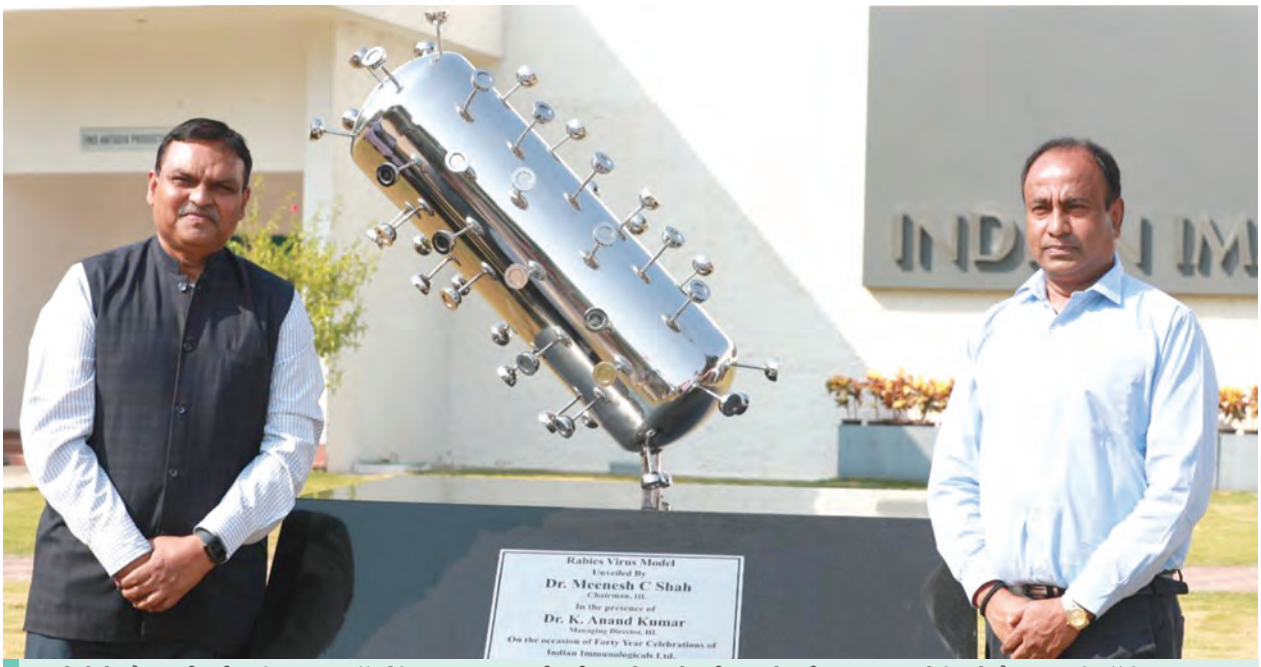

एनडीडीबी और आईआईएल के अध्यक्ष डॉ. मीनेश शाह द्वारा आईआईएल की 40वीं वर्षगांठ की पूर्व संध्या पर गाचीबोवली, हैदराबाद में डॉ. के आनंद कुमार, प्रबंध निदेशक, आईआईएल की उपस्थिति में 'रेबीज वायरस मॉडल' का लोकार्पण

इंडियन इम्यूनोलॉजिकल्स लिमिटेड (IIL) की स्थापना 1982 में एनडीडीबी द्वारा की गई थी तथा 8 अक्तूबर 1999 को खुरपका एवं मुंहपका रोग वैक्सीन का उत्पादन करने के उद्देश्य से इसका निगमीकरण किया गया था। अगले दो दशकों में, इंडियन इम्यूनोलॉजिकल्स लिमिटेड (IIL) ने कई पशु स्वास्थ्य टीके विकसित किए, जिन्होंने देश की दूध उत्पादकता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। राष्ट्र के आह्वान पर, आईआईएल ने तमिलनाडु के ऊटी में निर्मित एंटी-रेबीज वैक्सीन लॉन्च करके मानव स्वास्थ्य क्षेत्र में कदम रखा। इंडियन इम्यूनोलॉजिकल्स लिमिटेड का वित्तीय वर्ष 2023-24 में कुल अर्जित राजस्व 1,357 करोड़ रूपये है।

गाचीबोवली, हैदराबाद (तेलंगाना), शमीरपेट (तेलंगाना) और ऊटी (तमिलनाडु) में स्थित अपनी अत्याधुनिक वैक्सीन निर्माण सुविधाओं के साथ, आईआईएल विश्व में एफएमडी और एंटी-रेबीज वैक्सीन का सबसे बड़ा उत्पादक है। आईआईएल के वैक्सीन उत्पादों को भारत सरकार द्वारा विभिन्न रोग नियंत्रण कार्यक्रमों जैसे खुरपका एवं मुंहपका रोग नियंत्रण कार्यक्रम, सार्वभौमिक टीकाकरण कार्यक्रम आदि के तहत उपयोग किया जाता है। आईआईएल विश्व के 60 से अधिक देशों में टीके निर्यात भी करता है।

उपर्युक्त के अलावा, आईआईएल के प्रमुख उत्पादों में खुरपका एवं मुंहपका रोग (FMD), एंटी-रेबीज वैक्सीन, पशु स्वास्थ्य टीकों में ब्लू टंग, थीलेरियोसिस, क्लासिकल स्वाइन फीवर, ब्रुसेला, पेस्ट-डेस-पेटिट्स रूमिनेंट्स (PPR), सिस्टीसरकोसिस आदि शामिल हैं। आईआईएल मानव स्वास्थ्य के लिए एंटी-रेबीज वैक्सीन के अलावा पेंटावेलेंट, हेपाटाइटिस-बी, टेटनस टॉक्साइड, डिप्थीरिया के टीके आदि का निर्माण करती है। वित्तीय वर्ष 2023-24 के दौरान, आईआईएल ने तीन नए टीके लॉन्च किए हैं जिसमें हेपाटाइटिस - ए वैक्सीन, खसरा-रूबेला वैक्सीन (MR) और टेटनस टॉक्सॉइड + डिप्थीरिया (Td) शामिल हैं।

अनुसंधान एवं विकास

आईआईएल की अनुसंधान और विकास टीम वर्तमान में संक्रामक बोवाइन राइनोट्रैकाइटिस (IBR) के विरूद्ध मार्कर वैक्सीन, टेट्रावेलेंट मस्टाइटिस वैक्सीन, कैनाइन के लिए टेन-इन-वन कॉम्बिनेशन वैक्सीन, लंपी स्कीन डिजीज, भेड़ और बकरी के लिए फूट रोट वैक्सीन, टेट्रावेलेंट डेंगू वैक्सीन, हेक्सावेलेंट वैक्सीन, लाइव एटेन्यूएटेड जीका वैक्सीन, क्यासनूर फॉरेस्ट डिजीज (KFD) आदि के विकास पर काम कर रही है।

आईआईएल की विदेशी सहायक कंपनी प्रिस्टिन बायोलॉजिकल एनजेड लिमिटेड (PBNL), जो डार्गाविले, ऑकलैंड के पास न्यूजीलैंड में स्थित है, की स्थापना 2015 में एडल्ट बोवाइन सीरम (ABS) की आपूर्ति के लिए की गई थी, जो एफएमडी वैक्सीन और कुछ अन्य टीकों के उत्पादन के लिए एक महत्वपूर्ण सामग्री है। भारत के लिए एफएमडी वैक्सीन के निरंतर उत्पादन में इस सहायक कंपनी का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है।

नवीनतम प्रौद्योगिकी को त्वरित रूप से अपनाने से आईआईएल का व्यवसाय संचालन बाजार के रुझान के अनुरूप रहता है। पिछले कुछ वर्षों में आईआईएल द्वारा निर्माण कार्यों का स्वचालन, व्यावसायिक प्रक्रियाओं का सरलीकरण, डिजिटल मार्केटिंग, आभासी चिकित्सा प्रतिनिधि (eMOz), ड्रोन का उपयोग करके टीकों की डिलीवरी, तत्काल क्षेत्र रिपोर्टिंग एप्लिकेशन, वितरकों के लिए ई-कॉमर्स पोर्टल, व्यावसायिक उत्कृष्टता के लिए डैश बोर्ड आदि की गई पहल शामिल हैं।

कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व

आईआईएल किसानों की शिक्षा और जागरूकता कार्यक्रमों में सबसे अग्रणी है। कंपनी ने किसानों के बीच जागरूकता पैदा करने के लिए देश के कई हिस्सों में विभिन्न कृषि मेलों में सक्रिय रूप से भाग लिया है। आईआईएल अपनी कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (CSR) पहल के एक हिस्से के रूप में देश भर की गौशालाओं में एक लाख से अधिक गायों को स्वास्थ्य कवरेज प्रदान करना जारी रखा है। आईआईएल ने तीन सरकारी स्कूलों (लक्ष्मापुर गांव में दो स्कूल और कराकापटला गांव, तेलंगाना राज्य में एक स्कूल) को गोद लिया है और छात्रों के हित में बुनियादी ढांचे का निर्माण किया है तथा उन्हें यूनिफॉर्म, स्कूल बैग और नोटबुक प्रदान की है।

एनडीडीबी फाउंडेशन फॉर न्यूट्रीशन (NFN) की प्रमुख गतिविधियों, जिनमें स्कूली बच्चों के लिए गिफ्टमिल्क और घरेलू स्तर पर बायोगैस संयंत्र पहल शामिल है, में आईआईएल सहयोग प्रदान करता है। इस सीएसआर गतिविधि से पिछले तीन वर्षों में तेलंगाना और तमिलनाडु के क्षेत्रों में 3,000 से अधिक स्कूली बच्चे और लगभग 300 परिवार लाभान्वित हुए हैं।

आईआईएल को केरल राज्य से रेबीज़ के उन्मूलन करने के लिए राज्य के साथ काम करने पर गर्व है। आईआईएल कम्पैशन फॉर एनिमल्स वेलफेयर एसोसिएशन (CAWA) नामक एक गैर सरकारी संगठन की मदद से, "रेबीज़ फ्री केरल" परियोजना को प्रायोजित कर रहा है। इस कार्यक्रम के भाग के रूप में, केरल के त्रिवेन्द्रम, कोल्लम और त्रिशूर जिलों में बेसहारा कुत्तों का टीकाकरण, स्कूली बच्चों और सरकारी अस्पतालों में मरीजों को परामर्श, जनता के लिए जागरूकता कार्यक्रम आदि चलाए जाते हैं।

अत्याधुनिक अनुसंधान और परिवर्तनकारी तकनीक का उपयोग कर विकसित टीकों से जान बचाना

एनडीडीबी डेरी सर्विसेज

किसी भी उत्पादक स्वामित्व वाले उद्यम की सफलता के लिए मजबूत संस्थागत नींव महत्वपूर्ण है

एनडीडीबी डेरी सर्विसेज (NDS), राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड (NDDB) की एक सहायक कंपनी है, जिसे 2009 में कंपनी अधिनियम की धारा 8 के तहत एक गैर-लाभकारी कंपनी के रूप में स्थापित किया गया। इसका प्राथमिक उद्देश्य दूध उत्पादक संस्थाओं (MPO) को बढ़ावा देना और डेरी क्षेत्र में उत्पादकता बढ़ाना है।

दूध उत्पादक संस्थाएं (MPO)

एनडीएस ने दो एमपीओ की स्थापना में मदद की, जिनमें उत्तर प्रदेश के गोरखपुर में श्री बाबा गोरखनाथ कृपा एमपीओ और हुगली, पश्चिम बंगाल में दूधश्री एमपीओ शामिल हैं। विभिन्न राज्य और राष्ट्रीय मिशनों द्वारा समर्थित इन 22 एमपीओ का 24,166 गांवों के 10 लाख डेरी किसानों पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है।

गौरतलब है कि इनमें से 74 प्रतिशत उत्पादक महिलाएं हैं, जिनमें 65 प्रतिशत लघुधारक दूध उत्पादक हैं। इन एमपीओ ने परस्पर मिलकर शेयर पूंजी में 233 करोड़ रूपये जमा किए और 46.7 लाकिग्राप्रदि दूध का संकलन किया एवं 8,909 करोड़ रूपये का कारोबार किया।

आय और उत्पादकता में वृद्धि

एमपीओ कृत्रिम गर्भाधान (AI) और डेरी विस्तार सेवाओं के साथ-साथ पशु आहार, खनिज मिश्रण और चारा बीज जैसे आवश्यक इनपुट प्रदान करते हैं। एंटीबायोटिक-मुक्त दूध उत्पादन सुनिश्चित करने के लिए एथनो-वेटनरी प्रक्रियाओं को बढ़ावा देते हैं।

एनडीएस चार वीर्य केंद्रो का संचालन करता है। इन केंद्रो ने वर्ष के दौरान 4.73 करोड़ हिमीकृत वीर्य डोजों की बिक्री की। उन्होंने देशी गाय नस्लों के लगभग 90.95 लाख वीर्य डोजों एवं भैंस नस्लों के 1.4 करोड़ वीर्य डोजों की भी बिक्री की, जिससे नस्ल सुधार पहल में महत्वपूर्ण योगदान मिला है।

शीघ्र नस्ल सुधार कार्यक्रम (ABIP IVF-ET)

राष्ट्रीय गोकुल मिशन के तहत, एनडीएस ने कई राज्यों में लगभग 3,000 भ्रूण प्रत्यारोपित किए, जिसके परिणामस्वरूप उच्च आनुवंशिक गुण वाले बछड़े पैदा हुए। इस पहल का उद्देश्य दूध उत्पादन और दुधारु पशुओं की उत्पादकता को बढ़ाना है।

अवसंरचना विकास और नवाचार

एनडीएस ने एसएजी ब्रांड के तहत पशु आहार के विपणन में कदम रखा। जिससे 10 लाख से अधिक डेरी किसानों को लाभ हुआ।

उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर में फरवरी 2024 में गौ अभयारण्य स्थापित किया गया, जिसका उद्देश्य 5,000 गायों का रख-रखाव

करना है। इसका बायो सीएनजी संयंत्र और प्रशिक्षण केंद्र वर्तमान में निर्माणाधीन है।

सेक्स-सॉर्टिंग सीमन एक अभीनव तकनीक है जिससे मादा बछड़ों के जन्म की संभावना बढ़ती है और किसानों पर पड़ने वाले आर्थिक बोझ में कमी आती है।

भारत में उपलब्ध सेक्स-सॉर्टिंग सीमन तकनीकी पर बहुराष्ट्रीय कंपनियों का एकाधिकार है। माननीय प्रधानमंत्री के 'मेक इन इंडिया' और 'आत्मनिर्भर भारत अभियान' के विज़न के अनुरूप, राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड ने स्वदेशी, किफायती सेक्स सॉर्टिंग सीमन तकनीक विकसित करने के लिए निर्णायक कदम उठाए हैं। इस पहल का उद्देश्य विदेशी कंपनियों के एकाधिकार को तोड़ना है और डेरी किसानों को अधिक किफायती तकनीकी समाधान प्रदान करना है।

एनडीडीबी के आग्रह पर एनडीएस ने आईआईटी चेन्नई, आईआईएससी-बेंगलुरु और एनसीबीएस-बेंगलुरु के सहयोग से एक स्वदेशी, किफायती सेक्स-सॉर्टिंग सीमन तकनीक GauSort™ विकसित की है।

इसकी अपार क्षमता को देखते हुए, भारत सरकार का पशुपालन और डेयरी विभाग (DAHD), राष्ट्रीय गोकुल मिशन के तहत इस पहल को वित्त पोषित कर रहा है।

स्वदेशी रूप से विकसित सेक्स-सॉर्टिंग सीमन तकनीक अब पूरी तरह से क्रियाशील है और इससे भारत के डेरी क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव आने की संभावना है।

यह तकनीक प्रजनन दक्षता में सुधार करके, यह पशु उत्पादकता और डेरी किसानों के लिए दूध उत्पादन में काफी वृद्धि करेगी। यह सेक्स-सॉर्टिंग सीमन तकनीक आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देगी और किसानों की आय को दोगुना करने के लक्ष्य में मदद करेगी, जिससे 'आत्मनिर्भर भारत अभियान' के व्यापक विज़न में मदद मिलेगी।

मापदण्ड	कुल 22 एमपीओ
जिलों की संख्या	155
शामिल गांवों की संख्या	24,116
सदस्यों की संख्या	10,05,773
महिला सदस्यता (%)	74
लघुधारक (सदस्यों का%)	65
प्रदत्त शेयर पूंजी (करोड़ रुपये में)	233
औसत दूध संकलन एफवाईटीडी (हकिग्राप्रदि)	4,675
कुल कारोबार एफवाईटीडी (करोड़ रुपये में)	8,909 (अनऑडिटेड)

श्रीजा महिला दुग्ध उत्पादक संस्था को IDF इनोवेशन अवार्ड 2023

श्रीजा महिला दुग्ध उत्पादक संस्था को 'डेरी क्षेत्र में महिला सशक्तिकरण में नवाचार' की श्रेणी में प्रतिष्ठित IDF इनोवेशन अवार्ड 2023 का विजेता घोषित किया गया। यह पुरस्कार एनडीडीबी और एनडीएस के अध्यक्ष डॉ. मीनेश शाह और श्रीजा के मुख्य कार्यपालक श्री जयतीर्थ चारी को शिकागो, अमेरिका में IDF वर्ल्ड डेरी समिट 2023 के दौरान भारत सरकार के पशुपालन और डेयरी विभाग की सचिव सुश्री अलका उपाध्याय की उपस्थिति में प्रदान किया गया।

एनडीडीबी मृदा लिमिटेड

महाराष्ट्र के कोल्हापुर में "गोबर से समृद्धि" बायोगैस कार्यक्रम के तहत स्थापित बायोगैस संयंत्र

एनडीडीबी मृदा लिमिटेड की स्थापना 1 जुलाई 2022 को एक गैर-सूचीबद्ध सार्वजनिक कंपनी के रूप में की गई, जिसका मुख्य उद्देश्य गोबर, बायोगैस और ऑर्गेनिक फर्टिलाइजर का वृहद स्तरीय समाधान विकसित करना है। एनडीडीबी मृदा लिमिटेड के फोकस क्षेत्रों में बायोगैस और गोबर से संबंधित परियोजनाओं जैसे घरेलू बायोगैस, बायो-सीएनजी, डेरी संयंत्रों के लिए बायोगैस-आधारित ऊर्जा उत्पादन और बायोगैस के अन्य औद्योगिक/वाणिज्यिक एप्लिकेशनों का निष्पादन शामिल है। एनडीडीबी मृदा लिमिटेड का प्रमुख कार्यक्षेत्र गोबर आधारित ऑर्गेनिक फर्टिलाइजर की वृहत स्तरीय संगठित बिक्री को बढ़ावा देना है। एनडीडीबी मृदा लिमिटेड ने वर्ष के दौरान 853 लाख रुपये का कारोबार किया।

एनडीडीबी मृदा लिमिटेड अनुसंधान और विकास केंद्रित कार्यों के लिए ठोस कदम उठा रही है और कुशल गोबर प्रबंधन के लिए किफायती तकनीकी को विकसित करने, गोबर आधारित नवाचारों को प्रोत्साहित करने और वैश्विक जलवायु परिवर्तन से लड़ने के लिए समान विचारधारा वाली एजेंसियों के साथ सहयोग को बढ़ावा दे रही है। एनडीडीबी मृदा लिमिटेड की गतिविधियां बायोगैस, जैव-ऊर्जा, कार्बन उत्सर्जन में कमी और ऑर्गेनिक फर्टिलाइजर के क्षेत्रों में सामंजस्य स्थापित कर रही हैं और किसानों के जीवन के साथ-साथ पर्यावरण पर भी सीधा और दीर्घकालिक प्रभाव डाल रही हैं।

बायोगैस संयंत्र का संचालन एवं बायोगैस की बिक्री

वर्ष 2023-24 के दौरान, एनडीडीबी मृदा लिमिटेड ने वाराणसी दूध संघ में 100 मीटप्रदि बायोगैस संयंत्र का संचालन करते हुए लाइट डीजल ऑयल के विकल्प के तौर पर 8 लाख क्यूबिक मीटर से अधिक बायोगैस की बिक्री की है। इसके साथ ही, एनडीडीबी मृदा लिमिटेड ने बायोगैस संयंत्र के संचालन हेतु गोबर की खरीद के लिए स्थानीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था में 150 लाख रुपये से अधिक का निवेश किया है।

ऑर्गेनिक फर्टिलाइजर का उत्पादन एवं बिक्री

इसी वर्ष के दौरान, एनडीडीबी मृदा लिमिटेड ने सुधन ब्रांड के तहत उर्वरकों की थोक बिक्री के माध्यम से लगभग कुल 84 लाख रुपये का कारोबार किया है।

घरेलू बायोगैस कार्यक्रम

वर्ष 2023-24 के दौरान, एनडीडीबी मृदा लिमिटेड ने किसानों के लिए अग्रिम निवेश लागत को कम करके आधुनिक बायोगैस संयंत्रों का बड़े पैमाने पर प्रचार-प्रसार करने के लिए शुरू किए गए विशेष "गोबर से समृद्धि" बायोगैस कार्यक्रम के अंतर्गत बायोगैस संयंत्रों के निर्माताओं और कई डेरी सहकारिताओं एवं किसान केंद्रित संस्थानों के साथ महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान और बिहार में घरेलू बायोगैस संयंत्र स्थापित किए हैं।

एनडीडीबी मृदा लिमिटेड ने राष्ट्रीय स्तर पर एमएनआरई बायोगैस कार्यक्रम की कार्यक्रम कार्यान्वयन एजेंसी के रूप में 10 राज्यों में बायोगैस संयंत्र स्थापित किए हैं। एनडीडीबी मृदा लिमिटेड ने उत्तर प्रदेश, तेलंगाना, गुजरात और हरियाणा में विभिन्न सीएसआर अनुदान सहयोग से बायोगैस संयंत्र भी स्थापित किए हैं।

एनडीडीबी मृदा लिमिटेड के सामूहिक प्रयासों से 12 राज्यों अर्थात् पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, असम, पश्चिम बंगाल, तेलंगाना, मध्य प्रदेश, गुजरात, राजस्थान और महाराष्ट्र में लगभग 22,000 महिला डेरी किसानों के जीवन पर प्रभाव पड़ा है। इससे किसानों की न केवल पारंपरिक रसोई ईंधन की व्यवस्था करने के लिए आवश्यक समय और ऊर्जा की बचत हुई है, बल्कि वैकल्पिक स्वच्छ खाना पकाने के ईंधन पर होने वाले खर्च में भी कमी आयी है।

वर्ष के दौरान, एनडीडीबी मृदा लिमिटेड ने नौ खाद प्रबंधन परियोजनाओं को सहयोग करना निरंतर जारी रखा, जिन्हें महाराष्ट्र, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, झारखंड, पश्चिम बंगाल, सिक्किम और असम में एनडीडीबी और सस्टेन प्लस द्वारा संयुक्त रूप से वित्त पोषित किया गया।

एनडीडीबी मृदा लिमिटेड गोबर प्रबंधन को बढ़ाने में मदद करने, स्वच्छ रसोई ईंधन के रूप में गोबर-गैस के व्यापक उपयोग को प्रोत्साहित करने और बायोगैस स्लरी के अधिक उपयोग जैसी रणनीतियों के माध्यम से डेरी किसानों, विशेष रूप से महिलाओं के जीवन को आसान बनाने के लिए किसान केंद्रित उपाय निरंतर जारी रखने के लिए प्रतिबद्ध है। पूरे देश में गोबर-गैस और स्लरी-आधारित उर्वरकों के बढ़ते उपयोग से भारत को ऊर्जा और उर्वरक क्षेत्र में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने में मदद मिल सकती है।

स्लरी एप्लिकेटर का उपयोग करके स्लरी उठाना

एनडीडीबी काफ लिमिटेड

सैंपलों का विश्लेषण

एनडीडीबी काफ लिमिटेड को राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड की पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी के रूप में फरवरी 2023 में स्थापित किया गया। इस कंपनी ने कंपनी अधिनियम 2013 के अंतर्गत निगमन के बाद अपने संचालन का प्रथम वर्ष पूर्ण किया है। एनडीडीबी काफ लिमिटेड ने वित्त वर्ष 2023-24 में 25.41 करोड़ रुपये का कारोबार किया।

कंपनी ने वर्ष के दौरान, डेरी उत्पादों, फैट और तेल, शहद, रेडी-टू-ईट खाद्य उत्पादों, प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थ, जैविक खाद्य पदार्थ, फल और सब्जियां, पशु चारा, खनिज मिश्रण और विटामिन प्रीमिक्स जैसे विभिन्न उत्पादों के लिए परीक्षण सेवाएं प्रदान की है। एनडीडीबी काफ लिमिटेड अपनी अत्याधुनिक सुविधा वाली प्रयोगशाला में अपने ग्राहकों को पशुओं के पितृत्व सत्यापन और गोवंश के रोग निदान, क्रोमोजोमल असमानताओं और आनुवंशिक विकारों का पता लगाने, गायों और भैंसों में जेंडर, नस्ल शुद्धता और जीनोमिक प्रजनन मूल्य आकलन की सेवाएं प्रदान करता है। कंपनी की प्रयोगशाला ने स्टार्ट-अप सहित विभिन्न उपकरण निर्माण कंपनियों को विश्लेषणात्मक किट/परीक्षण उपकरणों के प्रदर्शन सत्यापन अध्ययन में सहयोग प्रदान किया है।

एनडीडीबी काफ लिमिटेड की प्रयोगशाला को राष्ट्रीय परीक्षण और अंशशोधन प्रयोगशाला प्रत्यायन बोर्ड (NABL) द्वारा आईएसओ/आईईसी 17025 से मान्यता प्राप्त है। इसे भारतीय मानक ब्यूरो (BIS), एपीडा और भारतीय निर्यात संवर्धन परिषद (EIC) द्वारा खाद्य, कृषि उत्पादों और पानी के विश्लेषण के लिए मान्यता प्राप्त है। इसी के साथ प्रयोगशाला को एफएसएसएआई द्वारा दूध और दूध उत्पादों के लिए नेशनल रेफरेनस लेबोरेटरी की भी मान्यता प्राप्त है।

कंपनी ने वर्ष के दौरान, रासायनिक, माइक्रोबाइलॉजी और आनुवंशिकी विश्लेषण के लिए 90,000 से अधिक सैंपलों का परीक्षण और रिपोर्टिंग की है। इन सैंपलों का 3.9 लाख से अधिक मापदंडों पर परीक्षण किया गया है। इसके अलावा, कंपनी ने अपनी दक्षता परीक्षण सेवाएं प्रदान की, जिसमें एक सौ से अधिक प्रयोगशालाओं ने भाग लिया।

एनडीडीबी काफ लिमिटेड और मिल्मा के बीच एमओयू

एनडीडीबी काफ लिमिटेड और केरल सहकारी दूध विपणन महासंघ (मिल्मा) के बीच एमओयू पर हस्ताक्षर किए गए जिसके अनुसार एर्णाकुलम में स्थित मिल्मा की राज्य केंद्रीय गुणवत्ता नियंत्रण प्रयोगशाला का प्रबंधन एनडीडीबी काफ लिमिटेड को हस्तांतरित किया जाएगा। एमओयू पर मिल्मा के प्रबंध निदेशक श्री के. यूसुफ और एनडीडीबी काफ लिमिटेड के प्रबंध निदेशक श्री राजेश सुब्रमण्यम ने एनडीडीबी और एनडीडीबी काफ लिमिटेड के अध्यक्ष डॉ. मीनेश शाह और मिल्मा के अध्यक्ष श्री के एस मणि की उपस्थिति में हस्ताक्षर किए।

वेट कैमिकल एनालिसिस का अवलोकन

डेरी सहकारिताओं की प्रगति

डेरी सहकारी समितियाँ (संख्या में)^

उत्तर

क्षेत्र /राज्य	80-81	90-91	00-01	10-11	20-21	22-23	23-24*
हरियाणा	505	3,229	3,318	7,019	7,837	7,412	7,686
हिमाचल प्रदेश		210	288	740	1,084	1,107	1,130
जम्मू एवं कश्मीर		105	**	**	896	999	1,294
लद्दाख							3
पंजाब	490	5,726	6,823	7,069	8,539	8,923	8,799
राजस्थान	1,433	4,976	5,900	16,290	21,300	25,515	26,493
उत्तर प्रदेश	248	7,880	15,648	21,793	40,353	37,904	38,753
उत्तराखंड					4,205	4,388	4,442
क्षेत्रीय कुल	**2,676**	**22,126**	**31,977**	**52,911**	**84,214**	**86,248**	**88,600**

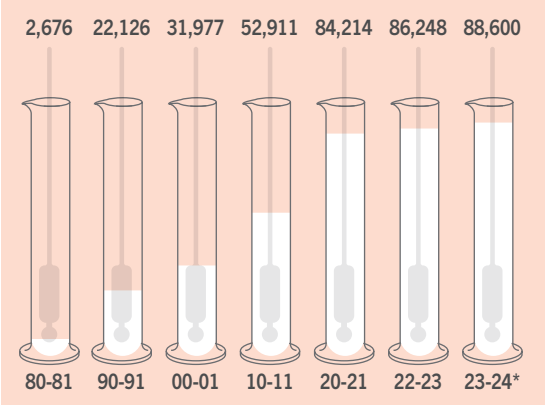

क्षेत्रवार डेरी सहकारी समितियाँ (उत्तर)

पूर्व

क्षेत्र /राज्य	80-81	90-91	00-01	10-11	20-21	22-23	23-24*
असम		117	125	155	522	633	1,124
बिहार	118	2,060	3,525	9,425	26,275	29,570	29,479
झारखंड				53	769	1,076	1,228
मणिपुर						233	196
मेघालय					30	30	21
मिजोरम					42	36	36
नागालैंड		21	74	49	52	52	52
ओडिशा		736	1,412	3,256	6,151	6,316	6,523
सिक्किम		134	174	287	587	675	687
त्रिपुरा		73	84	84	119	143	168
पश्चिम बंगाल	584	1,223	1,719	3,019	3,804	3,776	3,939
क्षेत्रीय कुल	**702**	**4,364**	**7,113**	**16,328**	**38,351**	**42,540**	**43,453**

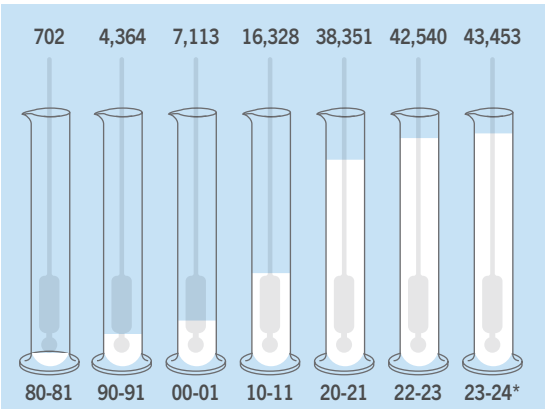

क्षेत्रवार डेरी सहकारी समितियाँ (पूर्व)

^ डेरी सहकारिताओं के लिए, यह संगठित (संचयी) है, इसमें पारंपरिक समितियां और पूर्व गठित तालुका संघ शामिल है। 2020-21 के बाद के आंकडों में एमपीसी के क्रियाशील एमपीपी और एमडीएफवीपील के एमपीआई शामिल हैं।

* अनंतिम

** रिपोर्ट नहीं मिली

पश्चिम

क्षेत्र /राज्य	80-81	90-91	00-01	10-11	20-21	22-23	23-24*
छत्तीसगढ				757	1,110	961	986
गोवा		124	166	178	183	183	181
गुजरात	4,798	10,056	10,679	14,347	22,341	22,662	22,752
मध्य प्रदेश	441	3,865	4,877	6,216	10,757	11,572	11,641
महाराष्ट्र	718	4,535	16,724	21,199	22,895	20,313	19,196
क्षेत्रीय कुल	**5,957**	**18,580**	**32,446**	**42,697**	**57,286**	**55,691**	**54,756**

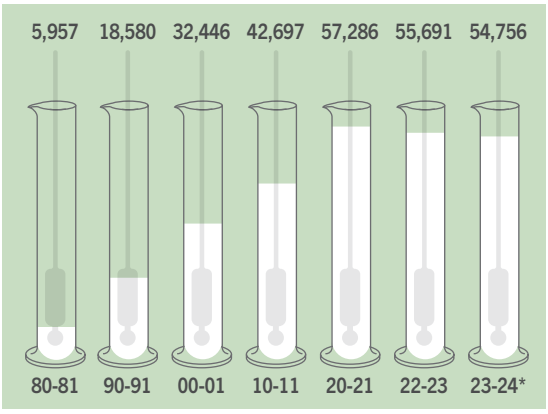

क्षेत्रवार डेरी सहकारी समितियाँ (पश्चिम)

दक्षिण

क्षेत्र /राज्य	80-81	90-91	00-01	10-11	20-21	22-23	23-24*
आंध्र प्रदेश	298	4,766	4,912	4,971	6,458	9,993	9,415
कर्नाटक	1,267	5,621	8,516	12,372	16,721	17,590	17,837
केरल		1,016	2,781	3,666	3,337	3,399	3,417
तमिलनाडु	2,384	6,871	8,369	10,079	10,555	10,572	11,428
तेलंगाना					6,581	6,945	6,862
पुदुचेरी		71	92	102	107	108	109
क्षेत्रीय कुल	**3,949**	**18,345**	**24,670**	**31,190**	**43,759**	**48,607**	**49,068**

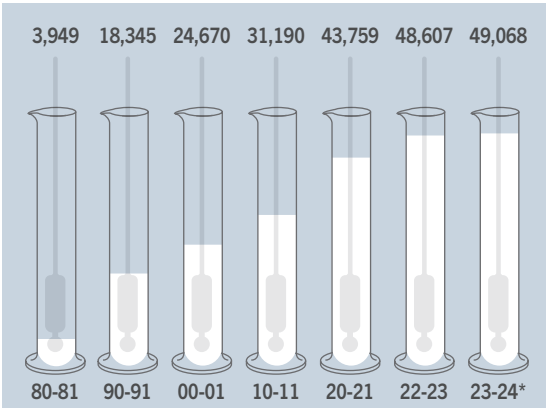

क्षेत्रवार डेरी सहकारी समितियाँ (दक्षिण)

कुल योग

80-81	90-91	00-01	10-11	20-21	22-23	23-24*
13,284	63,415	96,206	1,43,126	2,23,610	2,33,086	2,35,877

स्रोत: दूध संघ एवं महासंघ, एनडीडीबी डीएस एवं एमडीएफवीपीएल

डेरी सहकारिताओं की प्रगति

उत्पादक सदस्य (हजार में)

उत्तर

क्षेत्र /राज्य	80-81	90-91	00-01	10-11	20-21	22-23	23-24*
हरियाणा	39	184	185	313	326	324	328
हिमाचल प्रदेश		17	20	32	46	47	48
जम्मू एवं कश्मीर		2	**	**	30	50	63
लद्दाख							0.3
पंजाब	26	304	370	385	419	423	402
राजस्थान	80	340	436	669	1,044	1,097	1,129
उत्तर प्रदेश	18	392	649	977	1,568	712	718
उत्तराखंड					159	165	169
क्षेत्रीय कुल	**163**	**1,239**	**1,660**	**2,376**	**3,593**	**2,818**	**2,857**

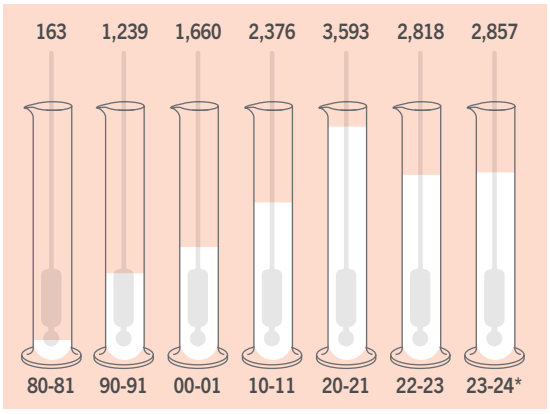

क्षेत्रवार उत्पादक सदस्य (उत्तर)

पूर्व

क्षेत्र /राज्य	80-81	90-91	00-01	10-11	20-21	22-23	23-24*
असम		2	1	4	34	47	58
बिहार	3	100	184	523	1,308	1,408	1,426
झारखंड				1	23	31	40
मणिपुर						6	4
मेघालय					1	1	1
मिजोरम					1	1	1
नागालैंड		1	3	2	2	2	2
ओडिशा		46	111	187	325	319	336
सिक्किम		4	5	10	15	17	18
त्रिपुरा		4	4	6	8	6	6
पश्चिम बंगाल	20	66	114	213	247	197	204
क्षेत्रीय कुल	**23**	**223**	**422**	**946**	**1,964**	**2,035**	**2,094**

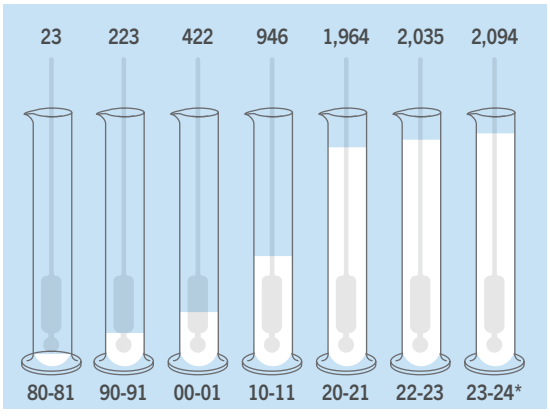

क्षेत्रवार उत्पादक सदस्य (पूर्व)

* अनंतिम

** रिपोर्ट नहीं मिली

2020-21 के बाद के आंकड़ों में एमपीओ के क्रियाशील एमपीपी एवं एमडीएफवीपीएल के एमपीआई शामिल हैं।

पश्चिम

क्षेत्र /राज्य	80-81	90-91	00-01	10-11	20-21	22-23	23-24*
छत्तीसगढ				31	43	38	38
गोवा		12	18	19	19	19	19
गुजरात	741	1,612	2,147	2,970	3,740	3,754	3,754
मध्य प्रदेश	24	150	242	271	372	401	407
महाराष्ट्र	87	840	1,398	1,818	1,853	1,682	1,560
क्षेत्रीय कुल	**852**	**2,614**	**3,805**	**5,109**	**6,027**	**5,894**	**5,777**

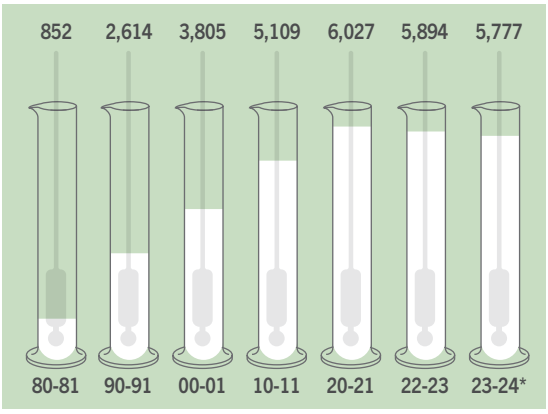

क्षेत्रवार उत्पादक सदस्य (पश्चिम)

दक्षिण

क्षेत्र /राज्य	80-81	90-91	00-01	10-11	20-21	22-23	23-24*
आंध्र प्रदेश	33	561	702	846	661	686	689
कर्नाटक	195	1,013	1,528	2,124	2,633	2,652	2,702
केरल		225	637	851	1,025	1,063	1,064
तमिलनाडु	481	1,590	1,957	2,176	1,983	1,804	1,704
तेलंगाना					258	221	271
पुदुचेरी		17	27	36	42	42	42
क्षेत्रीय कुल	**709**	**3,406**	**4,851**	**6,033**	**6,602**	**6,468**	**6,472**

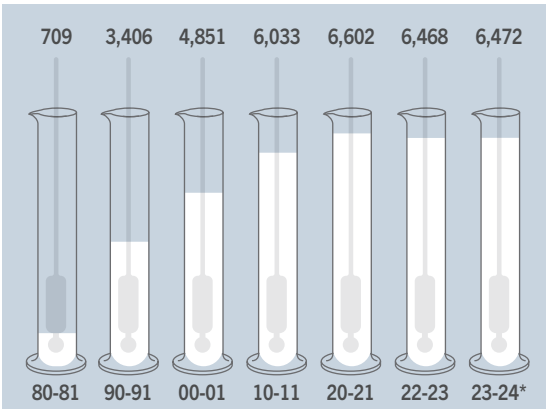

क्षेत्रवार उत्पादक सदस्य (दक्षिण)

कुल योग

80-81	90-91	00-01	10-11	20-21	22-23	23-24*
1,747	7,482	10,738	14,464	18,185	17,215	17,200

स्रोत: दूध संघ एवं महासंघ, एनडीडीबी डीएस एवं एमडीएफवीपीएल

डेरी सहकारिताओं की प्रगति

दूध संकलन (प्रतिदिन हजार किलोग्राम में)#

उत्तर

क्षेत्र /राज्य	80-81	90-91	00-01	10-11	20-21	22-23	23-24*
हरियाणा	33	94	276	511	590	458	593
हिमाचल प्रदेश		14	24	60	92	109	98
जम्मू और कश्मीर		11	**	**	92	116	158
लद्दाख							1
पंजाब	75	394	912	1,037	2,155	2,173	2,343
राजस्थान	138	364	887	1,629	3,613	4,287	4,708
उत्तर प्रदेश	64	382	791	504	1,330	1,437	1,955
उत्तराखंड					189	187	189
क्षेत्रीय कुल	**310**	**1,259**	**2,890**	**3,741**	**8,061**	**8,767**	**10,046**

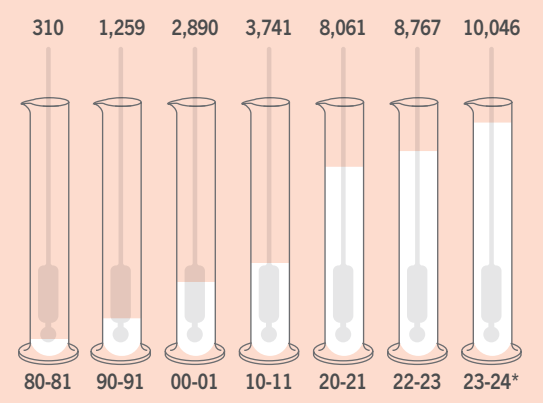

क्षेत्रवार दूध संकलन (उत्तर)

पूर्व

क्षेत्र /राज्य	80-81	90-91	00-01	10-11	20-21	22-23	23-24*
असम		4	3	5	29	49	51
बिहार	3	95	330	1,091	1,505	1,766	2,395
झारखंड				5	134	181	264
मणिपुर						4	2
मेघालय					14	13	11
मिजोरम					5	3	2
नागालैंड		1	3	2	3	3	3
ओडिशा		41	94	276	366	410	492
सिक्किम		4	7	12	40	52	50
त्रिपुरा		3	1	2	7	5	5
पश्चिम बंगाल	31	52	204	273	203	224	266
क्षेत्रीय कुल	**34**	**200**	**642**	**1,666**	**2,305**	**2,710**	**3,542**

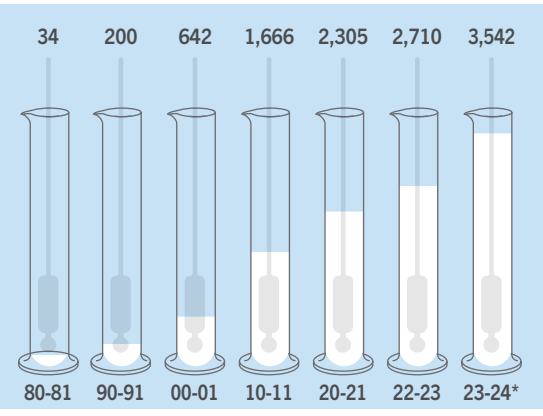

क्षेत्रवार दूध संकलन (पूर्व)

राज्य के बाहर के परिचालन शामिल है

* अनंतिम

** रिपोर्ट नहीं मिली

2023-24 में गुजरात के कुल दूध संकलन में राज्य के बाहर से 9,027 हकिग्राप्रदि शामिल है और 2022-23 में यह आंकड़ा 4,871 हकिग्राप्रदि था।

2020-21 के बाद के आंकडों में एमडीएफवीपीएल के एमपीजी और एमपीओ का संकलन शामिल है।

पश्चिम

क्षेत्र /राज्य	80-81	90-91	00-01	10-11	20-21	22-23	23-24*
छत्तीसगढ़				25	68	57	68
गोवा		16	32	38	55	49	41
गुजरात	1,344	3,102	4,567	9,158	25,237	27,315	31,359
मध्य प्रदेश	68	256	319	588	954	921	1,190
महाराष्ट्र	165	1,872	2,979	3,053	3,751	3,638	4,088
क्षेत्रीय कुल	**1,577**	**5,246**	**7,897**	**12,862**	**30,065**	**31,979**	**36,746**

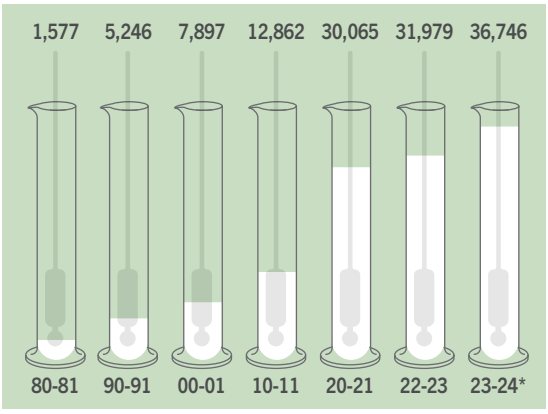

क्षेत्रवार दूध संकलन (पश्चिम)

दक्षिण

क्षेत्र /राज्य	80-81	90-91	00-01	10-11	20-21	22-23	23-24*
आंध्र प्रदेश	79	763	879	1,371	1,742	2,320	2,502
कर्नाटक	261	917	1,887	3,742	7,879	8,026	8,298
केरल		185	646	688	1,388	1,437	1,292
तमिलनाडु	301	1,106	1,618	2,097	3,709	3,469	3,043
तेलंगाना					461	491	676
पुडुचेरी		26	45	35	60	68	56
क्षेत्रीय कुल	**641**	**2,997**	**5,075**	**7,932**	**15,240**	**15,811**	**15,867**

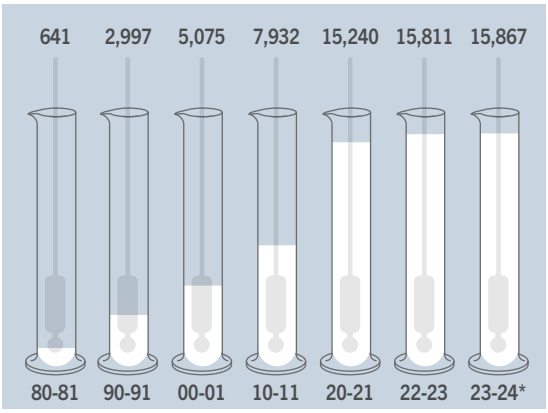

क्षेत्रवार दूध संकलन (दक्षिण)

कुल योग

80-81	90-91	00-01	10-11	20-21	22-23	23-24*
2,562	9,702	16,504	26,202	55,672	59,267	66,200

स्रोत: दूध संघ एवं महासंघ, एनडीडीबी डीएस एवं एमडीएफवीपीएल

डेरी सहकारिताओं की प्रगति

तरल दूध विपणन (हजार लीटर प्रतिदीन में)#

उत्तर

क्षेत्र /राज्य	80-81	90-91	00-01	10-11	20-21	22-23	23-24*
हरियाणा	2	80	108	362	289	331	278
हिमाचल प्रदेश		15	20	23	25	28	24
जम्मू एवं कश्मीर		9	**	**	99	120	133
लद्दाख							1
पंजाब	7	139	420	802	1,013	1,213	1,288
राजस्थान	12	136	540	1,505	2,129	2,886	2,988
उत्तर प्रदेश	1	326	436	380	1,444	1,903	2,106
उत्तराखंड					161	163	154
दिल्ली	697	1,051	1,524	3,050	6,647	7,526	7,806
क्षेत्रीय कुल	**719**	**1,756**	**3,048**	**6,122**	**11,806**	**14,171**	**14,779**

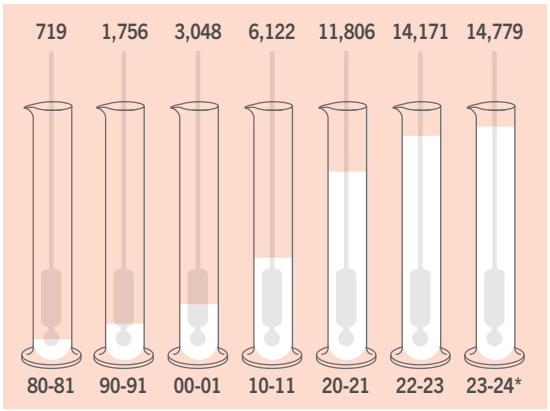

क्षेत्रवार तरल दूध विपणन (उत्तर)

पूर्व

क्षेत्र /राज्य	80-81	90-91	00-01	10-11	20-21	22-23	23-24*
असम		10	7	22	59	74	88
बिहार	8	111	324	454	1,269	1,557	1,478
झारखंड				253	374	444	433
मणिपुर						3	2
मेघालय					13	13	11
मिजोरम					4	3	3
नगालैंड		1	4	3	6	5	6
ओडिशा		65	98	290	324	350	333
सिक्किम		5	7	17	44	44	50
त्रिपुरा		6	7	15	9	7	7
पश्चिम बंगाल	17	26	27	41	83	108	108
कोलकाता	283	526	840	644	1,207	1,315	1,324
क्षेत्रीय कुल	**308**	**750**	**1,314**	**1,739**	**3,392**	**3,922**	**3,844**

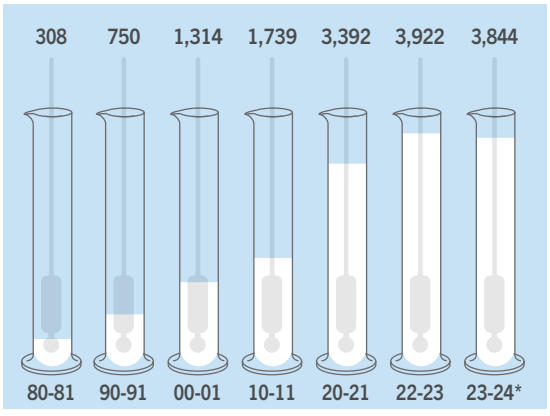

क्षेत्रवार तरल दूध विपणन (पूर्व)

मेट्रो डेरियों तथा राज्य के बाहर के परिचालन शामिल हैं

* अनंतिम

** रिपोर्ट नहीं मिली

2023-24 में, गुजरात की कुल दूध बिक्री 16,696 हलीप्रदि है जिसमें राज्य के बाहर के आंकडे शामिल है और 2022-23 में, यही आंकडा 15,827 हलीप्रदि था।

2020-21 में, यही महाराष्ट्र के दूध संघो द्वारा मुंबई के महाराष्ट्र दूध संघ द्वारा बेची गई मात्रा का विवरण उपलब्ध नहीं है।

2020-21 के बाद के आंकडों में एमपीसी और एमडीएफवीपीएल का संकलन शामिल है।

पश्चिम

क्षेत्र /राज्य	80-81	90-91	00-01	10-11	20-21	22-23	23-24*
छत्तीसगढ				34	176	242	261
गोवा		36	83	69	57	50	52
गुजरात	210	1,052	1,905	3,237	5,663	6,419	6,584
मध्य प्रदेश	39	279	244	495	800	952	950
महाराष्ट्र	18	363	1,178	2,023	1,641	1,952	1,935
मुंबई	950	1,057	1,390	841	2,650	3,030	3,030
क्षेत्रीय कुल	**1,217**	**2,787**	**4,800**	**6,699**	**10,986**	**12,646**	**12,810**

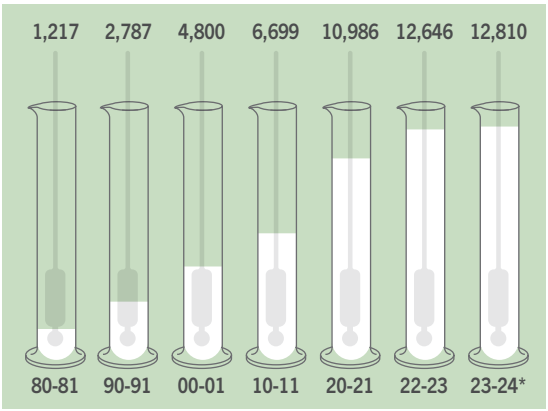

क्षेत्रवार तरल दूध विपणन (पश्चिम)

दक्षिण

क्षेत्र /राज्य	80-81	90-91	00-01	10-11	20-21	22-23	23-24*
आंध्र प्रदेश	19	552	733	1,565	1,346	1,397	1,427
कर्नाटक	166	889	1,501	2,661	4,261	5,041	5,269
केरल		223	640	1,092	1,315	1,589	1,627
तमिलनाडु	109	405	559	989	1,175	1,500	1,571
तेलंगाना					878	966	969
पुदुचेरी		22	43	93	92	91	92
चेन्नई	245	662	725	1,025	1,220	1,381	1,438
क्षेत्रीय कुल	**539**	**2,753**	**4,201**	**7,425**	**10,286**	**11,965**	**12,393**

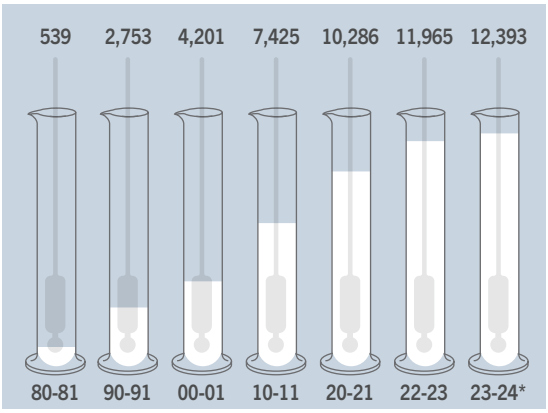

क्षेत्रवार तरल दूध विपणन (दक्षिण)

कुल योग

80-81	90-91	00-01	10-11	20-21	22-23	23-24*
2,783	8,046	13,363	21,985	36,470	42,704	43,826

स्रोत: दूध संघ एवं महासंघ, एनडीडीबी डीएस एवं एमडीएफवीपीएल

डेरी सहकारिताओं की कोल्ड चेन अवसंरचना (क्षमता)*

(मार्च 2024)^

उत्तर

क्षेत्र /राज्य	बीएमसी (हली)	चिलिंग केंद्र (हलीप्रदि)	डेरी संयंत्र (हलीप्रदि)
दिल्ली			1,500
हरियाणा	489	350	7,525
हिमाचल प्रदेश	174	79	130
जम्मू एवं कश्मीर	344		150
लद्दाख			5
पंजाब	2,736	777	3,810
राजस्थान	4,848	2,001	5,120
उत्तर प्रदेश	2,218	4,522	5,440
उत्तराखंड	77	60	256
क्षेत्रीय कुल	**10,886**	**7,789**	**23,936**

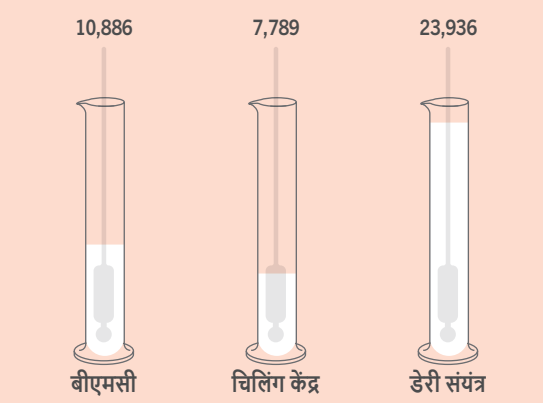

क्षेत्रवार कोल्ड चेन क्षमता (उत्तर)

पूर्व

क्षेत्र /राज्य	बीएमसी (हली)	चिलिंग केंद्र (हलीप्रदि)	डेरी संयंत्र (हलीप्रदि)
असम	134		150
बिहार	1,908	409	4,320
झारखंड	325		840
मणिपुर	15		20
मेघालय	6		80
मिजोरम	12		35
नगालैंड	1		10
ओडिशा	909	110	1,210
सिक्किम	84		105
त्रिपुरा	19		24
पश्चिम बंगाल	290	170	1,374
क्षेत्रीय कुल	**3,700**	**689**	**8,168**

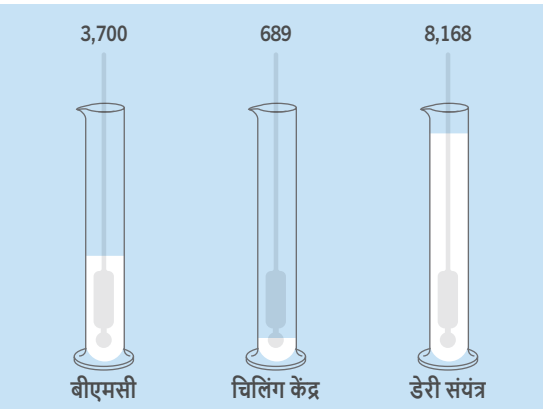

क्षेत्रवार कोल्ड चेन क्षमता (पूर्व)

* अनंतिम

हली: हजार लीटर

हलीप्रदि: हजार लीटर प्रतिदिन

^ एमपीओ और एमडीएफवीपीएल के स्वामित्व वाला बुनियादी ढांचा शामिल है

पश्चिम

क्षेत्र /राज्य	बीएमसी (हली)	चिलिंग केंद्र (हलीप्रदि)	डेरी संयंत्र (हलीप्रदि)
छत्तीसगढ	112	75	160
गोवा	31		110
गुजरात	29,512	5,100	34,740
मध्य प्रदेश	1,773	699	1,896
महाराष्ट्र	2,908	4,836	14,165
क्षेत्रीय कुल	**34,335**	**10,710**	**51,071**

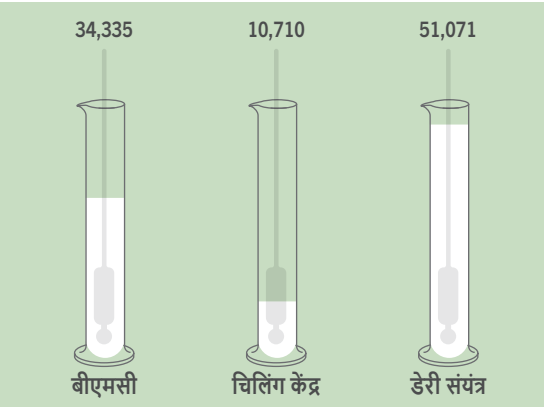

क्षेत्रवार कोल्ड चेन क्षमता (पश्चिम)

दक्षिण

क्षेत्र /राज्य	बीएमसी (हली)	चिलिंग केंद्र (हलीप्रदि)	डेरी संयंत्र (हलीप्रदि)
आंध्र प्रदेश	2,323	982	3,805
कर्नाटक	6,852	3,145	11,200
केरल	1,723	60	2,950
तमिलनाडु	2,439	1,467	4,613
तेलंगाना	915	406	1,550
पुदुचेरी	65		120
क्षेत्रीय कुल	**14,316**	**6,060**	**24,238**

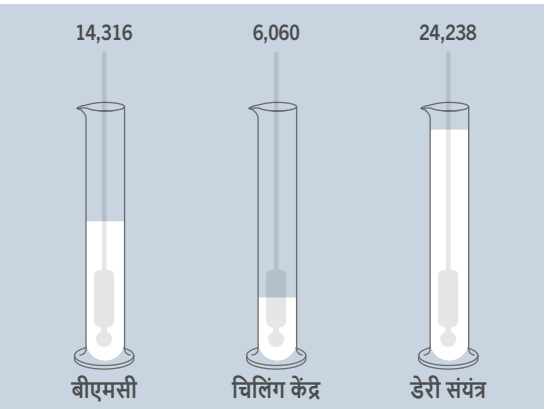

क्षेत्रवार कोल्ड चेन क्षमता (दक्षिण)

कुल योग

63,237
बीएमसी (हली)

25,248
चिलिंग केंद्र (हलीप्रदि)

1,07,413
डेरी संयंत्र (हलीप्रदि)

स्रोत: दूध संघ एवं महासंघ, एनडीडीबी डीएस एवं एमडीएफवीपीएल

आगंतुक

वित्त वर्ष 2023-2024 के दौरान, एनडीडीबी में भारत और विदेश से लगभग 2,497 अतिथि पधारे

श्री गिरिराज सिंह, माननीय केंद्रीय ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मंत्री, भारत सरकार

डॉ. भागवत किशनराव कराड़, माननीय राज्य मंत्री, वित्त मंत्रालय, भारत सरकार

श्रीमती जे. चिंचुरानी, माननीय पशुपालन और डेयरी विकास मंत्री, केरल सरकार

श्री हामिश मार्र, विशेष कृषि दूत, श्री हाल सेलर्स, प्राथमिक उद्योग मंत्रालय एवं सुश्री मेलानी, फिलिप्स काउंसलर (प्राथमिक उद्योग), न्यूज़ीलैंड उच्चायुक्त

पद्मश्री फूलबासन बाई यादव, भारतीय सामाजिक कार्यकर्ता

सुश्री अलका उपाध्याय, सचिव, पशुपालन एवं डेयरी विभाग, मत्स्यपालन, पशुपालन एवं डेयरी मंत्रालय, भारत सरकार

श्री रंजीत पाजे, उपाध्यक्ष एवं सीईओ एवं श्री चंदना केलेगामा, वरिष्ठ प्रबंधक, कारगिल्स (सीलोन) पीएलसी, श्रीलंका

श्री कोर्बिनियन मैर्ज़, परियोजना समन्वयक, डीजीआरवी (जर्मन कोऑपरेटिव राइफिसेन कन्फेडरेशन) और श्री सीएस रेड्डी, संस्थापक एवं सीईओ, एपीएमएएस

श्री अनुरा कुमारा दिसानायके, नेता, जनता विमुक्ति पेरामुना, श्रीलंका

श्री एमिल पटेल, प्रपौत्र श्री त्रिभुवनदास पटेल, कार्यपालक निदेशक (आईटी इन्फ्रास्ट्रक्चर) – प्रबंध निदेशक, एंडरसन कैंसर सेंटर, यूएसए

आगंतुक

श्री आरोन कौफर एवं श्री एलेक रेनकेवेज, राज्य प्रतिनिधि, पेनसिल्वेनिया और श्री अल्पेश पटेल, अध्यक्ष, इंडो अमेरिकन कम्युनिटी ऑफ स्क्रैंटन, पेनसिल्वेनिया

श्री अर्ल रैट्रे, निदेशक, डेरी लिंक लिमिटेड, न्यूजीलैंड

श्री डैनियल स्मित, प्रबंध निदेशक, साइमन फ्रेरेस एसएएस, फ्रांस

श्री तुकाराम मुंडे, आईएएस, सचिव, पशुपालन एवं डेयरी विकास, महाराष्ट्र सरकार

श्री कैसियो सिमोएस, प्रबंध निदेशक, टेट्रा पैक (दक्षिण एशियाई बाजार)

श्री आधार सिन्हा, विशेष मुख्य सचिव, एएचडी एवं मत्स्यपालन, तेलंगाना सरकार एवं श्री सोमा भारत कुमार, अध्यक्ष, तेलंगाना राज्य डेरी विकास सहकारी महासंघ लिमिटेड, तेलंगाना

डॉ. सतीश कुमार एस, आईएएस, प्रबंध निदेशक, मध्य प्रदेश राज्य सहकारी महासंघ

डॉ. एस. विनीथ, प्रबंध निदेशक, तमिलनाडु सहकारी दूध उत्पादक महासंघ लिमिटेड (TCMPF)

श्री दीपक गुप्ता, आईएएस (से.नि.), महानिदेशक (डीजी), नेशनल सोलर एनर्जी फेडरेशन ऑफ इंडिया (NSEFI)

श्री त्सेरिंग अंगचुक, माननीय उप मुख्य कार्यकारी काउंसलर,
श्री ताशी नामग्याल, माननीय कार्यकारी काउंसलर (एएच);
श्री स्टैनज़िन चोस्फेल, माननीय कार्यकारी काउंसलर (सहकारिता);
श्री स्टैनज़िन चोस्फेल, माननीय काउंसलर; लद्दाख स्वायत्त पहाड़ी विकास परिषद्, लेह

एमकेपीएस एंड एसोसिएट्स
सनदी लेखाकार

स्वतंत्र लेखा परीक्षक की रिपोर्ट

प्रति
निदेशक मंडल
वित्तीय विवरणों की लेखा परीक्षा पर रिपोर्ट

वित्तीय विवरणों की लेखा परीक्षा पर रिपोर्ट

मत

1. हमने राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड (''एनडीडीबी'') के संलग्न वित्तीय विवरणों लेखा परीक्षा की है, जिसमें 31 मार्च, 2023 की स्थिति में तुलन पत्र, उसी तारीख को समाप्त वर्ष के आय एवं व्यय लेखों और नकदी-प्रवाह विवरण और महत्वपूर्ण लेखा नीतियों के सार तथा अन्य स्पष्टीकरण विवरणों (''वित्तीय विवरण'') सहित वित्तीय विवरणों की टिप्पणियां शामिल हैं।

2. हमारे मत में और हमें प्राप्त सर्वोत्तम जानकारी तथा हमें दिए गए स्पष्टीकरण के अनुसार, उपर्युक्त ये वित्तीय विवरण राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड अधिनियम, 1987 (''अधिनियम''), जो राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड (निधि, लेखा और बजट का संचालन) विनियम, 1988 ("विनियमन") के साथ पठित हैं, अपेक्षित जानकारी प्रदान करते हैं तथा इंस्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड अकाउंटेंट ऑफ इंडिया ("ICAI") द्वारा अधिसूचित लेखा मानकों और भारत में आम तौर पर स्वीकृत लेखा सिद्धांतों के अनुरूप, 31 मार्च, 2024 तक एनडीडीबी के कामकाज की स्थिति और तब समाप्त वर्ष के लिए इसके अधिशेष तथा इसके नकदी-प्रवाह का वास्तविक एवं स्पष्ट विवरण प्रस्तुत करते हैं।

मत का आधार

3. हमने अपनी लेखा परीक्षा आईसीएआई द्वारा जारी लेखा परीक्षा मानकों ("SAs") के अनुसार की है । इन मानकों के अंतर्गत हमारी जिम्मेदारियों का विवरण हमारी रिपोर्ट के वित्तीय विवरणों की लेखा परीक्षा वाले खंड में लेखा परीक्षकों की जिम्मेदारियों में दिया गया है। हम इंस्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड अकाउंटेंट्स ऑफ इंडिया ("ICAI") द्वारा जारी आचार संहिता के अनुसार एनडीडीबी से स्वतंत्र हैं, साथ ही नैतिक आवश्यकताओं के साथ जो विनियमन के प्रावधानों के तहत वित्तीय विवरणों के हमारे ऑडिट के लिए प्रासंगिक हैं, और हमने इन अपेक्षाओं और आचार संहिता के अनुसार अपनी नैतिक जिम्मेदारियां पूरी की हैं। हमारा विश्वास है कि जो लेखा परीक्षा साक्ष्य हमने प्राप्त किए हैं वे हमारे मत - वित्तीय विवरणों को आधार देने के लिए पर्याप्त और उपयुक्त हैं।

अन्य सूचनाएं

4. अन्य सूचनाओं को तैयार करने का दायित्व एनडीडीबी के प्रबंधन और निदेशक मंडल का है जिसमें सूचनाएं जैसे निदेशक मंडल की रिपोर्ट और एनडीडीबी की वार्षिक रिपोर्ट में शामिल अन्य प्रकटन शामिल हैं, परंतु वित्तीय विवरण और उस पर हमारे लेखा परीक्षकों की रिपोर्ट शामिल नहीं है। अन्य सूचनाएं इस लेखा परीक्षक की रिपोर्ट की तारीख के बाद हमें उपलब्ध कराए जाने की आशा है।

5. वित्तीय विवरणों पर हमारे मत में अन्य सूचना शामिल नहीं है और हम उस पर किसी भी प्रकार का कोई आश्वासन अथवा निष्कर्ष व्यक्त नहीं करते हैं।

6. वित्तीय विवरणों की हमारी लेखा परीक्षा के संदर्भ में हमारा यह दायित्व है कि हम अन्य सूचना पढ़ें और ऐसा करते समय यह देखें कि अन्य सूचना वित्तीय विवरणों से अथवा लेखा परीक्षा के दौरान हमें प्राप्त हुई जानकारी से किसी महत्वपूर्ण मामले में असंगत तो नहीं है अथवा उसमें अन्यथा कोई महत्वपूर्ण गलत प्रस्तुति तो नहीं दिखती । यदि, हमारे द्वारा किए गए कार्य के आधार पर, हम निष्कर्ष निकालते हैं कि इस अन्य जानकारी का एक भौतिक गलत बयान है, तो हमें उस तथ्य की रिपोर्ट करने की आवश्यकता है।

बी-301, वेस्टर्न एज II, वेस्टर्न एक्सप्रेस हाईवे से दूर,
बोरीवली (पूर्व), मुंबई - 400066, भारत।

वेबसाइट: www.mkps.in | ईमेल: mumbai@mkps.in | दूरभाष: +91 22 35 402 661/579

एमकेपीएस एंड एसोसिएट्स
सनदी लेखाकार

वित्तीय विवरणों के लिए प्रबंधन का उत्तरदायित्व

7. प्रबंधन एवं एनडीडीबी के निदेशक मंडल का उत्तरदायित्व है कि वे विनियम के अनुसार इन वित्तीय विवरणों को इस प्रकार तैयार करें, जो एनडीडीबी की वित्तीय स्थिति, वित्तीय निष्पादन और नकदी-प्रवाह का वास्तविक और निष्पक्ष चित्र प्रस्तुत करते हों । इस दायित्वों में एनडीडीबी की परिसंपत्ति की सुरक्षा के लिए और धोखाधड़ी एवं अन्य अनियमितताओं को रोकने तथा उनका पता लगाने के लिए पर्याप्त लेखा अभिलेखों का रख-रखाव करना; उचित लेखा नीतियों का चयन करना और उन्हें लागू करना, उचित और विवेकपूर्ण निर्णय और आकलन करना तथा लेखा अभिलेखों की सटीकता और पूर्णता सुनिश्चित करने के लिए प्रभावी ढंग से काम कर रहे पर्याप्त ऐसे आंतरिक वित्तीय नियंत्रणों की रूपरेखा तैयार करना, उनका कार्यान्वयन और रखरखाव करना शामिल हैं जिनका परिचालन वित्तीय विवरणों को इस प्रकार तैयार करने और प्रस्तुत करने के लिए अपेक्षित था कि वे धोखाधड़ी या त्रुटि के कारण किसी महत्वपूर्ण गलत प्रस्तुतियों से मुक्त वास्तविक और निष्पक्ष चित्रण करने वाले एक आधार पर तैयार वित्तीय विवरणों को तैयार करने और प्रस्तुत करने के लिए संगत लेखा अभिलेखों की शुद्धता और पूर्णता सुनिश्चित कर सकें ।

8. वित्तीय विवरणों को तैयार करते समय, प्रबंधन और निदेशक मंडल एनडीडीबी की क्षमता का आकलन करने के लिए भी जिम्मेदार हैं, जैसा कि वर्तमान सरोकार के रूप में जारी रखने की लागू हो, सरोकार करने और लेखांकन के वर्तमान सरोकार के आधार का उपयोग करने से संबंधित मुद्दों को प्रकट करते हैं, जब तक कि प्रबंधन या तो एनडीडीबी को परिसमाप्त करने या परिचालनों को बंद करने की मंशा नहीं रखती है, या ऐसा करने के अलावा कोई व्यावहारिक विकल्प नहीं होता है।

9. एनडीडीबी की वित्तीय रिपोर्टिंग प्रक्रिया की देख-रेख के लिए निदेशक मंडल भी जिम्मेदार हैं।

वित्तीय विवरणों की लेखा परीक्षा के लिए लेखा परीक्षक का उत्तरदायित्व

10. हमारा उद्देश्य इस बात का तर्क पर आधारित आश्वासन प्राप्त करना है कि वित्तीय विवरण पूर्णतः धोखाधड़ी अथवा त्रुटि के कारण होने वाले किसी महत्वपूर्ण गलत प्रस्तुतियों से मुक्त हैं। अन्य उद्देश्य लेखा परीक्षा रिपोर्ट जारी करना है जिसमें हमारा मत शामिल हो। तर्क पर आधारित आश्वासन उच्च स्तरीय आश्वासन है। लेकिन इस बात की गारंटी नहीं है कि लेखांकन मानदंडों के अनुसार संचालित लेखा परीक्षा किसी विद्यमान महत्वपूर्ण गलत प्रस्तुतियों का हमेशा पता लगा ही लेगी। गलत प्रस्तुतियां धोखाधड़ी अथवा त्रुटि से उत्पन्न हो सकती हैं और उन्हें महत्वपूर्ण तब माना जाता है जब वे व्यक्तिगत रूप से या पूर्ण रूप से इन विवरणों के आधार पर उपयोगकर्ताओं द्वारा लिए जाने वाले आर्थिक निर्णयों को एक तर्कपूर्ण सीमा तक प्रभावित कर सकती हों।

11. लेखा मानकों के अनुसार, लेखा परीक्षा के एक भाग के रूप में, हम लेखा परीक्षा के दौरान व्यावसायिक निर्णय क्षमता का प्रयोग करते हैं और व्यावसायिक संदेहवाद बनाए रखते हैं। साथ ही:

    11.1 हम धोखाधड़ी अथवा त्रुटि के कारण वित्तीय विवरणों की महत्वपूर्ण गलत प्रस्तुतियों के जोखिमों की पहचान और आकलन करते हैं, उन जोखिमों के जवाब में लेखा परीक्षा कार्य पद्धतियों की रूपरेखा तैयार करते हैं और उनका कार्यान्वयन करते हैं और महत्वपूर्ण मदों के लिए ऐसा लेखा परीक्षा साक्ष्य प्राप्त करते हैं जो मत के लिए आधार प्रदान करने की दृष्टि से पर्याप्त और उपयुक्त हो । धोखाधड़ी के परिणामस्वरूप महत्वपूर्ण गलत प्रस्तुतियों का पता न लगाने का जोखिम त्रुटि के परिणामस्वरूप होने वाले जोखिम से बड़ा होता है क्योंकि धोखाधड़ी में मिलीभगत, जालसाजी, गलत मंशा से उपेक्षा करना, गलत प्रस्तुतियां इत्यादि शामिल हो सकते हैं या आंतरिक नियंत्रणों की अवहेलना की गई हो सकती है।

    11.2 हम लेखा परीक्षा के लिए संगत आंतरिक नियंत्रण की समझ प्राप्त करते हैं । ऐसा मौजूदा परिस्थितियों के लिए उचित लेखा परीक्षा प्रक्रियाओं की रूपरेखा तैयार करने के लिए किया जाता है न कि एनडीडीबी के आंतरिक नियंत्रण की प्रभावकारिता पर अपना मत व्यक्त करने के लिए।

बी-301, वेस्टर्न एज II, वेस्टर्न एक्सप्रेस हाईवे से दूर,
बोरीवली (पूर्व), मुंबई - 400066, भारत।

वेबसाइट: www.mkps.in | ईमेल: mumbai@mkps.in | दूरभाष: +91 22 35 402 661/579

11.3 हम प्रबंधन द्वारा उपयोग में लाई जा रही लेखांकन नीतियों की उपयुक्तता और लेखांकन अनुमानों तथा संबंधित प्रकटनों के औचित्य का मूल्यांकन करते हैं ।

11.4 हम लेखांकन के 'निरंतर चल रही संस्था' आधार के प्रबंधन द्वारा उपयोग की उपयुक्तता पर निष्कर्ष निकालते हैं और प्राप्त लेखा परीक्षा साक्ष्य के आधार पर यह देखते हैं कि क्या किसी ऐसी घटना या परिस्थिति से जड़ी कोई महत्वपूर्ण अनिश्चितता विद्यमान है जो 'निरंतर चलने वाली संस्था' के रूप में एनडीडीबी की क्षमता पर उल्लेखनीय संदेह पैदा करती हो । यदि हमारा निष्कर्ष यह होता है कि ऐसी महत्वपूर्ण अनिश्चितता विद्यमान है तो हमसे यह अपेक्षित होता है कि हम अपनी लेखा परीक्षा रिपोर्ट में वित्तीय विवरणों में संबंधित प्रकटनों की ओर ध्यान आकृष्ट करें, अथवा यदि ऐसे प्रकटन अपर्याप्त हैं तो अपने मत को संशोधित करें। हमारे निष्कर्ष हमारी लेखा परीक्षा रिपोर्ट की तारीख तक प्राप्त लेखा परीक्षा साक्ष्य पर आधारित होते हैं. तथापि भविष्यगत घटनाएं या परिस्थितियां एनडीडीबी के 'निरंतर चलने वाली संस्था' नहीं बने रहने का कारण बन सकती हैं।

11.5 हम प्रकटनों सहित वित्तीय विवरणों की समग्र प्रस्तुति, संरचना और उनमें निहित विषय-वस्तु का मूल्यांकन करते हैं और देखते हैं कि क्या वित्तीय विवरण अंतर्निहित लेन-देनों और घटनाओं को इस तरह अभिव्यक्त करते हैं कि निष्पक्ष प्रस्तुति का उद्देश्य पूरा हो।

11.6 हम शासन के प्रभारी व्यक्तियों को, अन्य बातों के साथ-साथ, लेखा परीक्षा के दायरे और समय की योजना तथा उल्लेखनीय लेखा परीक्षा निष्कर्ष संप्रेषित करते हैं जिनमें आंतरिक नियंत्रण में उन महत्वपूर्ण कमियों को शामिल किया जाता है जो हमारी लेखा परीक्षा के दौरान पहचान में आती हैं. हम शासन के प्रभारी व्यक्तियों को ऐसा अभिकथन भी उपलब्ध कराते हैं कि हमने अपनी निष्पक्षता और हमारी निष्पक्षता को उचित रूप से प्रभावित करने वाले माने जाने वाले सभी संबंधों तथा अन्य विषयों को उन्हें संप्रेषित करने के संबंध में, और जहां प्रयोजनीय हो वहां संबंधित रक्षा के उपायों के बारे में सभी संगत नैतिक अपेक्षाओं का पालन किया है।

11.7 हम शासन के प्रभारी व्यक्तियों को संप्रेषित मदों के आधार पर ऐसी मदों को निर्धारित करते हैं जो चालू अवधि के वित्तीय विवरणों की लेखा परीक्षा की दृष्टि से सर्वाधिक महत्वपूर्ण हों और इस कारण वे प्रमुख लेखा परीक्षा मदें हों । हम इन मदों को अपनी लेखा परीक्षा रिपोर्ट में वर्णित करते हैं जब तक कि विधि या विनियम द्वारा उन मदों के बारे में सार्वजनिक प्रकटन को निषेध न किया गया हो, या जब विशेष परिस्थितियों में हम यह तय करें कि हमें अपनी रिपोर्ट में उस मद को संप्रेषित नहीं करना चाहिए क्योंकि संप्रेषित करने से सार्वजनिक हित को होने वाले संभावित लाभ ऐसे सम्प्रेषण के प्रतिकूल परिणामों की अपेक्षा कम होगा।

अन्य विधिक और विनियामक आवश्यकताओं पर रिपोर्ट

12. एनडीडीबी का तुलन पत्र और आय एवं व्यय लेखा विनियमन के अध्याय V। की अनुसूची "I" और अनुसूची "II" के अनुसार तैयार किया गया है।

जैसा कि इसके अंतर्गत विहित विनियमन के प्रावधानों द्वारा अपेक्षित है, हम आगे रिपोर्ट यह करते हैं कि:

12.1 हमने उन सभी सूचनाओं और स्पष्टीकरणों की मांग की है और प्राप्त किए हैं जो हमारे सर्वोत्तम ज्ञान और विश्वास के लिए हमारे लेखा परीक्षा के प्रयोजनों के लिए आवश्यक थे।

बी-301, वेस्टर्न एज II, वेस्टर्न एक्सप्रेस हाईवे से दूर,
बोरीवली (पूर्व), मुंबई - 400066, भारत।

वेबसाइट: www.mkps.in | ईमेल: mumbai@mkps.in | दूरभाष: +91 22 35 402 661/579

एमकेपीएस एंड एसोसिएट्स
सनदी लेखाकार

12.2 एनडीडीबी के लेन-देन, जो हमारी लेखा परीक्षा के दौरान हमारे ध्यान में आए हैं, एनडीडीबी की शक्तियों के भीतर रहे हैं।

12.3 हमारे मत के अनुसार, इस रिपोर्ट द्वारा निष्पादित वित्तीय विवरण लेखा बही खातों के अनुरूप हैं।

12.4 हमारे मत के अनुसार, वित्तीय विवरण लागू लेखांकन मानकों का अनुपालन करते हैं।

एमकेपीएस एंड एसोसिएट्स
सनदी लेखाकार
फर्म पंजीकरण सं.: 302014E

वाशुदेव सुंदरदास मत्ता
भागीदार
आईसीएआई सदस्यता संख्या: 046953
यूजीआईएनः 24046953BKEZKH7162

स्थानः मुंबई
दिनांक: 16 अगस्त 2024

बी-301, वेस्टर्न एज II, वेस्टर्न एक्सप्रेस हाईवे से दूर,
बोरीवली (पूर्व), मुंबई - 400066, भारत।

वेबसाइट: www.mkps.in | ईमेल: mumbai@mkps.in | दूरभाष: +91 22 35 402 661/579

राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड ('एनडीडीबी' या 'बोर्ड')

(राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड अधिनियम, 1987 के अंतर्गत गठित एक निगमित निकाय)

तुलनपत्र

31 मार्च, 2024 तक

मिलियन रुपये में

विवरण	संलग्नक	31.03.2024	31.03.2023
देयताएं			
राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड निधि	I	32,972.73	32,763.64
सुरक्षित ऋण	II	17,880.66	23,158.99
चालू देयताएं और प्रावधान	III	8,398.50	7,641.85
आस्थगित कर देयताएं	XVI (नोट 8)	284.23	279.69
योग		**59,536.13**	**63,844.17**
परिसंपत्तियाँ			
नकद और बैंक शेष	IV	6,942.43	15,207.92
वस्तुसूची	V	0.21	0.31
विविध देनदार		236.40	182.88
ऋण, अग्रिम और अन्य चालू परिसंपत्तियाँ	VI	31,562.04	24,450.34
निवेश	VII	19,130.39	22,269.11
सम्पत्ति, संयंत्र तथा उपकरण	VIII	1,664.66	1,733.61
कुल		**59,536.13**	**63,844.17**
महत्वपूर्ण लेखा नीतियां जो वित्तीय विवरणों का हिस्सा हैं	XV		
लेखों पर टिप्पणियाँ जो वित्तीय विवरणों का हिस्सा हैं	XVI		

हमारी समसंख्यक तारीख की संलग्न रिपोर्ट के अनुसार

कृते एमकेपीएस एंड एसोसिएट्स
सनदी लेखाकार
फर्म पंजीकरण सं. 302014E

वासुदेव सुंदरदास मत्ता
भागीदार
सदस्यता सं. 046953

स्थान: मुंबई
दिनांक: 16 अगस्त 2024

बोर्ड के लिए और उसकी ओर से,

मीनेश सी शाह
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

एस रघुपति
कार्यपालक निदेशक
(संचालन)

अमित गोयल
ग्रुप प्रमुख
(लेखा)

स्थान: आणंद
दिनांक: 16 अगस्त 2024

राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड ('एनडीडीबी' या 'बोर्ड')
(राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड अधिनियम, 1987 के अंतर्गत गठित एक निगमित निकाय)

आय एवं व्यय लेखा-जोखा

31 मार्च, 2024 को समाप्त वर्ष के लिए

मिलियन रुपये में

विवरण	संलग्नक	2023-24	2022-23
आय			
ब्याज		3,351.74	2,682.90
सेवा प्रभार	IX	382.17	321.94
किराया और हायर चार्ज		257.72	236.69
लाभांश		169.84	347.05
अन्य आय	X	109.82	671.25
योग (क)		**4,271.29**	**4,259.83**
व्यय			
ब्याज और वित्तीय प्रभार		1,127.38	710.37
पारिश्रमिक एवं कार्मिकों को लाभ	XI	1,248.00	1,081.59
प्रशासनिक व्यय	XII	203.89	195.78
अनुदान		161.80	325.66
अनुसंधान और विकास		83.96	123.58
परिसंपत्तियों का रख-रखाव	XIII	276.53	233.83
प्रशिक्षण खर्च		53.55	236.50
कंप्यूटर खर्च		57.03	22.46
अन्य व्यय	XIV	274.83	94.88
मानक परिसंपत्ति, एनपीए और आकस्मिकता के लिए प्रावधान		200.00	300.00
मूल्यह्रास	VIII	165.72	193.57
योग (ख)		**3,852.69**	**3,518.22**
कर से पहले वर्ष के दौरान अधिशेष (ग) = (क-ख)		**418.60**	**741.61**
घटाइए : कराधान के लिए प्रावधान			
वर्तमान कर		193.10	226.22
आस्थगित कर	XVI (नोट 8)	4.54	23.28
कर के पश्चात् वर्ष के दौरान अधिशेष		**220.97**	**492.11**
घटाइए : विनियोजन-			
विशेष आरक्षित	XVI (नोट 13)	137.90	29.92
सामान्य निधि में ले जाई गई शेष राशि		83.06	462.19
योग (घ) = (ख+ग)		**4,271.29**	**4,259.83**
महत्वपूर्ण लेखा नीतियाँ जो वित्तीय विवरणों का हिस्सा हैं	XV		
लेखों पर टिप्पणियाँ जो वित्तीय विवरणों का हिस्सा हैं	XVI		

हमारी समसंख्यक तारीख की संलग्न रिपोर्ट के अनुसार

कृते एमकेपीएस एंड एसोसिएट्स
सनदी लेखाकार
फर्म पंजीकरण सं. 302014E

वासुदेव सुंदरदास मत्ता
भागीदार
सदस्यता सं. 046953

स्थान: मुंबई
दिनांक: 16 अगस्त 2024

बोर्ड के लिए और उसकी ओर से,

मीनेश सी शाह
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

एस रघुपति
कार्यपालक निदेशक
(संचालन)

अमित गोयल
ग्रुप प्रमुख
(लेखा)

स्थान: आणंद
दिनांक: 16 अगस्त 2024

नकदी-प्रवाह (कैश फ्लो) विवरण

31 मार्च, 2024 को समाप्त वर्ष के लिए

मिलियन रुपये में

विवरण	संलग्नक	2023-24		2022-23	
प्रचालन गतिविधियां से नकदी-प्रवाह					
वर्ष के दौरान कर से पूर्व अधिशेष			**418.60**		**741.61**
समायोजन निम्नलिखित के लिए:					
मूल्यह्रास		165.72		193.57	
मानक परिसंपत्ति, एनपीए और आकस्मिकता के लिए प्रावधान		200.00		300.00	
निवेशों की बिक्री पर (लाभ)/हानि		124.41		(10.61)	
सावधि जमा एवं बांड पर ब्याज आय को अलग माना जाए		(1,789.89)		(1,850.24)	
लाभांश आय को अलग माना जाए		(169.84)		(347.05)	
स्थायी परिसंपत्तियों की बिक्री (लाभ)/हानि को अलग माना जाए		(0.37)		(148.57)	
स्वीकृत परिसंपत्तियों के मूल्यह्रास की प्रतिपूर्ति		(15.41)		(17.10)	
कर्मचारी सेवा निवृत्ति लाभ		146.63		34.97	
बैंक को देय ब्याज तथा वित्तीय प्रभार		138.37		60.77	
बांड तथा राज्य विकास ऋणों पर परिशोधित प्रीमियम		42.42	(1,157.96)	44.82	(1,739.44)
			(739.34)		**(997.83)**
कार्यशील पूँजी में परिवर्तन से पूर्व प्रचालन नकदी-प्रवाह					
वस्तुसूची में (वृद्धि)/कमी		0.10		0.25	
विविध देनदारों में (वृद्धि)/कमी		(53.52)		(65.39)	
ऋणों एवं अग्रिमों में (वृद्धि)/कमी		(7,247.70)		(9,400.98)	
वर्तमान देयताओं में (वृद्धि/कमी)		410.01	(6,891.11)	(2,926.10)	(12,392.20)
प्रचालन गतिविधियों से अर्जित/(प्रयुक्त) नकदी-प्रवाह			**(7,630.45)**		**(13,390.03)**
कर वापस किया/(प्रदत)			(287.17)		(193.56)
प्रचालन गतिविधियों से अर्जित/(प्रयुक्त) निवल नकदी-प्रवाह (क)			**(7,917.62)**		**(13,583.59)**
निवेश गतिविधियों से नकदी- प्रवाह					
ब्याज से आय		2,019.95		1,814.98	
लाभांश आय		169.84		347.05	
निवेशों (बॉन्डस) की परिपक्वता से प्राप्त लाभ		3,002.09		250.00	
निवेशों की खरीद (शेयर)		(30.20)		(915.00)	
निवेशों की खरीद (बॉन्डस एवं राज्य विकास ऋण)		-		(324.51)	
90 दिनों से अधिक बैंकों में रखे एफडीआर में कमी/(वृद्धि) (निवल)		3,486.19		4,099.00	
स्थायी परिसंपत्तियों की बिक्री से लाभ		91.42		193.46	
स्थायी परिसंपत्ति की खरीद के लिए प्राप्त अनुदान (अनुदान वापस किया)		3.54		0.14	
स्थायी परिसंपत्ति की खरीद		(187.81)		(237.58)	
निवेश गतिविधियों में अर्जित/(प्रयुक्त) निवल नकदी-प्रवाह (ख)			**8,555.02**		**5,227.54**
वित्तीय गतिविधियों से नकदी-प्रवाह					
उधार निधियों की प्राप्ति/(पुन: भुगतान)			(5,278.33)		13,270.96
बैंकों को देय ब्याज एवं वित्तीय प्रभार			(138.37)		(60.77)
वित्तीय गतिविधियों से निवल नकदी-प्रवाह (ग)			**(5,416.70)**		**13,210.19**
वर्ष के दौरान निवल नकदी-प्रवाह (क + ख + ग)			**(4,779.30)**		**4,854.12**
वर्ष के आरंभ में नकद एवं नकद समतुल्य			**7,131.17**		**2,277.05**
वर्ष के अंत में नकद एवं नकद समतुल्य			**2,351.87**		**7,131.17**
नकद और नकद समतुल्य					
बैंकों के पास शेष:					
सावधि जमा			4,734.18		12,816.56
घटाइए: 90 दिनों से अधिक मूल परिपक्वता सहित जमा			4,590.56		8,076.75
			143.62		**4,739.81**
चालू/बचत खातों में			2,208.22		2,391.33
नकद एवं चेक इन हैंड			0.03		0.03
योग			**2,351.87**		**7,131.17**
महत्वपूर्ण लेखा नीतियाँ जो वित्तीय विवरणों का हिस्सा हैं	**XV**				
लेखों पर टिप्पणियाँ जो वित्तीय विवरणों का हिस्सा हैं	**XVI**				

टिप्पणी: नकदी-प्रवाह विवरण लेखा मानक - 3 के नकदी-प्रवाह विवरण में दिए गए 'अप्रत्यक्ष तरीके' से तैयार किया गया है।

हमारी समसंख्यक तारीख की संलग्न रिपोर्ट के अनुसार

कृते एमकेपीएस एंड एसोसिएट्स
सनदी लेखाकार
फर्म पंजीकरण सं. 302014E

वासुदेव सुंदरदास मत्ता
भागीदार
सदस्यता सं. 046953

स्थान: मुंबई
दिनांक: 16 अगस्त 2024

बोर्ड के लिए और उसकी ओर से,

मीनेश सी शाह
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

एस रघुपति
कार्यपालक निदेशक
(संचालन)

अमित गोयल
ग्रुप प्रमुख
(लेखा)

स्थान: आणंद
दिनांक: 16 अगस्त 2024

एनडीडीबी निधि

संलग्नक - I

मिलियन रुपये में

विवरण	31.03.2024		31.03.2023	
सामान्य आरक्षित (नोट क)				
पूर्व तुलन-पत्र के अनुसार शेष		3,559.61		3,559.61
स्थायी परिसंपत्तियों के लिए अनुदान (नोट ख)				
पूर्व तुलन-पत्र के अनुसार शेष	39.44		56.40	
जोड़िए : वर्ष के दौरान प्राप्त अनुदान	3.54		0.14	
घटाइए : मूल्यह्रास की प्रतिपूर्ति	15.41		17.10	
		27.57		39.44
आयकर अधिनियम, 1961 की धारा 36 (1) (viii) के अन्तर्गत विशेष आरक्षित (अनुलग्नक XVI का नोट 13 देखें)				
पूर्व तुलन-पत्र के अनुसार शेष	1,624.24		1,594.32	
जोड़िए : आय एवं व्यय लेखा से अंतरण	137.90		29.92	
		1,762.14		1,624.24
आय-व्यय का लेखा-जोखा				
पूर्व तुलन-पत्र के अनुसार शेष	27,540.35		27,078.16	
जोड़िए: वर्ष के दौरान विनियोजन के बाद अधिशेष	83.07		462.19	
		27,623.41		27,540.35
योग		**32,972.74**		**32,763.64**

टिप्पणीः

क. राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड अधिनियम, 1987 के अनुसार डेरी एवं अन्य कृषि आधारित तथा संबद्ध उद्योगों एवं जैविकों को प्रोत्साहित करना, योजना बनाना एवं कार्यक्रमों का आयोजन करना।

ख. लेखा मानक - 12 के अनुरूप - 'सरकारी अनुदानों के लेखे'

सुरक्षित ऋण

संलग्नक - II

मिलियन रुपये में

विवरण	31.03.2024	31.03.2023
बैंक ओवरड्राफ्ट (बैंकों में सावधि जमा पर लीयन के प्रति सुरक्षित)	1,316.65	8,256.02
नाबार्ड से ऋण (डीआईडीएफ स्कीम के तहत दिए गए सुरक्षित ऋण)	14,988.26	14,902.65
एनपीडीडी योजना के घटक-बी "सहकारिताओं के माध्यम से डेरी (DTC)" के लिए ऋण (JICA सहायता प्राप्त परियोजना)	1,573.10	-
एनपीडीडी योजना का घटक-बी ऋण पर प्रोद्भूत ब्याज {डीआईडीएफ और "सहकारिताओं के माध्यम से डेरी (DTC)" (JICA सहायता प्राप्त परियोजना) }	2.65	0.32
योग	**17,880.66**	**23,158.99**

वर्तमान देयताएं एवं प्रावधान

संलग्नक - III

मिलियन रुपये में

विवरण		31.03.2024		31.03.2023
(क) वर्तमान देयताएं				
अग्रिम एवं जमा		76.76		60.49
विविध लेनदार (अनुलग्नक XVI का नोट 10 देखें)		162.29		159.97
अन्य देनदारियां		116.63		152.72
परामर्श परियोजना के कारण निवल देयता				
प्राप्त निधियाँ	17,772.40		20,374.42	
जोड़िए : आपूर्तिकर्ताओं को व्यय हेतु देय	1,084.62		913.29	
	18,857.02		21,287.71	
घटाइए : व्यय हुई राशि	15,738.83		18,953.31	
आपूर्तिकर्ताओं को अग्रिम	216.06		420.66	
	2,902.13		1,913.74	
जोड़िए : एनडीडीबी को देय	321.16		41.97	
(पर कॉन्ट्रा अनुलग्नक VI देखें)		3,223.29		1,955.71
(ख) भारत सरकार की परियोजनाओं के लिए प्राप्त निधिः				
पिछले तुलन पत्र के अनुसार शेष	2,746.89		4,179.02	
भारत सरकार से प्राप्त निधि	4,439.84		2,049.46	
जोड़िए : अर्जित ब्याज आय/(व्यय)	4.44		(19.13)	
घटाइए : किया गया खर्च	3,802.99		2,926.91	
घटाइए : अंतिम कार्यान्वयन एजेंसियों को अग्रिम	1,400.27		535.42	
घटाइए : एनडीएलएम अंशदान अनुदान में अंतरण	3.54		0.14	
		1,984.37		2,746.89
(ग) निम्नलिखित के लिए प्रावधानः				
अनर्जक परिसंपत्तियां (संलग्नक XVI का नोट 9 देखें)	582.08		559.34	
मानक परिसंपत्तियों पर सामान्य आकस्मिकता (अनुलग्नक XVI का नोट 9 देखें)	122.57		93.67	
आकस्मिकता (संलग्नक XVI का नोट 9 देखें)	1,903.61		1,755.25	
		2,608.26		2,408.26
(घ) निम्नलिखित हेतु प्रावधानः				
छुट्टी नकदीकरण (संलग्नक XVI का नोट 5 देखें)	113.67		48.35	
सेवा निवृत्ति पश्चात् चिकित्सा योजना (अनुलग्नक XVI का नोट 5 देखें)	113.23		109.45	
वीआरएस मासिक लाभ	-		0.02	
		226.91		157.82
योग		**8,398.50**		**7,641.85**

नकद और बैंक शेष

संलग्नक - IV

मिलियन रुपये में

विवरण	31.03.2024		31.03.2023	
बैंकों में शेष				
सावधि जमा में (निम्नलिखित नोट क से ड. देखें)	4,734.18		12,816.56	
बचत खाते में (नीचे नोट च देखें)	2,082.12		2,343.59	
चालू खाते में (नीचे नोट छ देखें)	126.10		47.74	
		6,942.40		15,207.89
नकद एवं चेक ऑन हैंड		0.03		0.03
योग		**6,942.43**		**15,207.92**

नोट:

सावधि जमा में निम्नलिखित शामिल है -

(क) 3,170 मिलियन रूपये (पूर्व वर्ष 10,771.28 मिलियन रूपये) राशि जो लियन के अंतर्गत ओवरड्राफ्ट सूविधा प्राप्त करने के लिए बैंक के पास रखी गई है।

(ख) 900.01 मिलियन रूपये (1,000.01 मिलियन रूपये) जो डीआईडीएफ योजना के अंतर्गत प्राप्त ऋणों के लिए नाबार्ड के पक्ष में खोले गए डीएसआरए खाते के लिए लियन के अधीन है।

(ग) बैंक गारंटी अंतर राशि 0.05 मिलियन रूपये (पूर्व वर्ष 0.05 मिलियन रूपये) शामिल है।

(घ) भारत सरकार की परियोजनाओं के लिए 350.41 मिलियन रूपये (पूर्व वर्ष 376.40 मिलियन रूपये) की निधि प्राप्त हुई।

(ड) एनडीएलएम परियोजना के लिए निर्धारित एनडीएलएम परियोजना में एनडीडीबी का शेयर 313.22 मिलियन रूपये (पूर्व वर्ष 468.9 मिलियन रूपये) है।

(च) भारत सरकार की परियोजनाओं के लिए 2,178.02 मिलियन रूपये (पिछले वर्ष 2,343.59 मिलियन रूपये) धनराशि प्राप्त हुई

(छ) भारत सरकार की परियोजनाओं में चालू खातों में 16.53 मिलियिन रूपये (पूर्व वर्ष 23.19 मिलियन रूपये) की निधि प्राप्त हुई।

वस्तु सूची

संलग्नक - V

मिलियन रुपये में

विवरण	31.03.2024		31.03.2023	
स्टोर्स, स्पेयर्स और अन्य	1.36		1.43	
परियोजना उपकरण	3.16		3.19	
	4.52		**4.62**	
घटाइए : अप्रचलन के लिए प्रावधान	4.31		4.31	
		0.21		0.31
योग		**0.21**		**0.31**

ऋण, अग्रिम और अन्य वर्तमान संपत्ति

संलग्नक - VI

मिलियन रुपये में

विवरण		31.03.2024		31.03.2023	
सहकारी संस्थाओं को ऋण					
दूध -	सुरक्षित (निम्नलिखित नोट क एवं ख देखें)	26,539.96		18,972.57	
	असुरक्षित	3.22		684.43	
			26,543.18		19,657.00
तेल -	सुरक्षित	80.00		80.00	
	असुरक्षित (उपार्जित ब्याज सहित)	578.57	658.57	578.57	658.57
सहायक कंपनियों/प्रबंधित इकाइयों को दिए गए ऋण एवं अग्रिम					
सुरक्षित (निम्नलिखित नोट क एवं ख देखें)		1,811.35		1,795.07	
असुरक्षित		606.49		662.98	
			2,417.84		2,458.05
कार्मिकों को ऋण					
सुरक्षित		0.09		0.13	
असुरक्षित		6.31		6.55	
			6.40		6.68
उपार्जित ब्याज पर -					
ऋण एवं अग्रिम		59.52		3.14	
सावधि जमा एवं निवेश		441.28		671.35	
			500.80		674.49
आपूर्तिकर्ताओं एवं ठेकेदारों को दिए गए अग्रिम			9.42		40.15
टर्नकी परियोजनाओं के लेखे पर वसूली योग्य			321.16		41.97
(पर कॉन्ट्रा, संलग्नक III देखें)					
विविध जमा			17.65		18.20
भुगतान किया गया आयकर (निवल प्रावधान) (नीचे नोट ग देखें)			827.45		733.39
प्रीपेड ग्रेच्युटी (संलग्नक XVI का नोट 5 देखें)			39.25		52.39
अन्य प्राप्तियां (नीचे नोट घ देखें)			220.32		109.45
योग			**31,562.04**		**24,450.34**

नोट :

(क) सुरक्षित ऋण परिसंपत्तियों के रेहन और/अथवा स्टॉक/परिसंपत्तियों के बंधन में रक्षित हैं।

(ख) सुरक्षित ऋण में 23,575.75 मिलियन रुपये (पूर्व वर्ष 16,775.18 मिलियन रुपये) डीआईडीएफ स्कीम के तहत दिए गए।

(ग) निवल कर का प्रावधान 2,440.31 मिलियन रुपये (पूर्व वर्ष 2,247.21 मिलियन रुपये)

(घ) अन्य प्राप्तियों में जिसमें अनुदान राशि 14.72 मिलियन रूपये (पूर्व वर्ष 26.01 मिलियन रूपये) शामिल है, और एफयूसी की प्रतिक्षा है।

निवेश

संलग्नक - VII

मिलियन रुपये में

विवरण	31.03.2024		31.03.2023	
दीर्घकालीन निवेश (लागत पर):				
सहायक कंपनियों में इक्विटी शेयर (अनकोटेड):				
मदर डेरी फ्रूट एन्ड वेजिटेबल प्राइवेट लिमिटेड (MDFVPL)	2,500.00		2,500.00	
आईडीएमसी लिमिटेड (IDMC)	283.90		283.90	
इंडियन इम्यूनोलॉजिकल्स लिमिटेड (IIL)	90.00		90.00	
एनडीडीबी डेरी सर्विसेज (NDS)	2,000.00		2,000.00	
एनडीडीबी मृदा लिमिटेड	95.00		95.00	
एनडीडीबी काफ लिमिटेड	750.00		750.00	
		5,718.90		5,718.90
संयुक्त उद्यम में इक्विटी शेयर (अनकोटेड):				
नॉर्थ ईस्ट डेरी एंड फूड्स लिमिटेड (निम्नलिखित नोट क और घ देखें)		50.00		50.00
सरकारी कंपनियों, वित्तीय संस्थानों और बैंकों के बांड (कोटेड) (परिशोधित प्रीमियम के निवल मूल्य पर)		8,306.99		10,858.22
(तुलन-पत्र की तारीख के अनुसार बांड का कुल बाजार मूल्य 8,441.07 मिलियन रूपये (पूर्व वर्ष 10,924.46 मिलियन रूपये) है)				
राज्य विकास ऋण (कोटेड) (परिशोधित प्रीमियम के निवल मूल्य पर)		4,985.40		5,603.09
(तुलन पत्र की तारीख के अनुसार राज्य विकास ऋण का कुल बाजार मूल्य 4,957.73 मिलियन रूपये (पूर्व वर्ष 5,557.73 मिलियन रूपये) है)				
सहकारिताओं और महासंघों में शेयर (अनकोटेड)	69.20		39.00	
घटाइए: निवेश के मूल्य में कमी का प्रावधान	0.10		0.10	
		69.10		38.90
योग		**19,130.39**		**22,269.11**

सहायक कंपनियों में निवेश का विवरण

सहायक कंपनी का नाम	31.03.2024		31.03.2023	
	शेयर की संख्या	अंकित मूल्य (प्रति शेयर)	शेयर की संख्या	अंकित मूल्य (प्रति शेयर)
मदर डेरी फ्रूट एंड वेजिटेबल प्राइवेट लिमिटेड (MDFVPL)	250,000,070	10.00	250,000,070	10.00
आईडीएमसी लिमिटेड (IDMC)	12,144,544	10.00	12,144,544	10.00
इंडियन इम्यूनोलॉजिकल्स लिमिटेड (IIL) (नीचे नोट ग देखें)	54,000,042	10.00	54,000,042	10.00
एनडीडीबी डेरी सर्विसेज (NDS)	200,000,000	10.00	200,000,000	10.00
एनडीडीबी मृदा लिमिटेड	9,500,000	10.00	9,500,000	10.00
एनडीडीबी काफ लिमिटेड (नीचे नोट घ देखें)	75,000,000	10.00	75,000,000	10.00
	600,644,656		**600,644,656**	

नोट :

(क) एनडीडीबी और असम सरकार के बीच संयुक्त उद्यम कंपनी शामिल की गई।

(ख) इंडियन इम्यूनोलॉजिकल्स लिमिटेड (IIL) ने 10 रुपये अंकित मूल्य के 4,50,00,035 बोनस शेयर जारी किए हैं।

संपत्ति, संयंत्र एवं उपकरण

संलग्नक - VIII

मिलियन रुपये में

विवरण	सकल कोष्ठ (लागत पर)				मूल्यह्रास				निवल कोष्ठ	
	01.04.2023 को	जोड़िए	कटौतियाँ/ (समायोजन)	31.03.2024 को	01.04.2023 को	वर्ष के लिए	कटौतियाँ/ (समायोजन)	31.03.2024 को	31.03.2024 को	31.03.2023 को
पूर्ण स्वामित्व (फ्रीहोल्ड) भूमि (नोट 1 से 3 देखें)	412.49	-	-	412.49	-	-	-	-	412.49	412.49
पट्टाधृत (लीज़ होल्ड) भूमि	64.16	-	-	64.16	16.07	0.75	-	16.82	47.34	48.09
भवन और सड़कें	2,022.54	49.70	0.09	2,072.15	1,282.74	59.48	0.05	1,342.17	729.98	739.80
संयंत्र और मशीनरी	11.08	4.26	4.49	10.85	10.92	0.56	4.47	7.01	3.84	0.16
विद्युतीय स्थापन	192.12	16.04	15.03	193.13	150.16	9.19	12.03	147.32	45.81	41.96
फर्नीचर, कंप्यूटर्स एवं अन्य उपकरण	1,154.56	73.95	307.90	920.61	945.95	59.84	220.79	785.00	135.61	191.95
सॉफ्टवेयर लाइसेंस	277.05	3.02	2.77	277.30	258.98	12.97	2.77	269.18	8.12	34.72
रेल दूध टैंकर्स	375.64	-	-	375.64	270.11	19.58	-	289.69	85.95	105.53
वाहन	25.89	8.17	1.10	32.96	20.15	3.35	0.22	23.28	9.68	5.74
योग	**4,535.53**	**155.14**	**331.38**	**4,359.29**	**2,955.08**	**165.72**	**240.33**	**2,880.47**	**1,478.82**	**1,580.44**
पूर्व वर्ष	***4,525.52***	***119.81***	***109.80***	***4,535.53***	***2,826.43***	***193.57***	***64.91***	***2,955.09***	***1,580.44***	***1,699.09***
पूँजी अग्रिम सहित पूँजीगत कार्य प्रगति पर है									**185.84**	**153.17**
कुल स्थायी परिसंपत्तियाँ									**1,664.66**	**1,733.61**

नोट

1. तमिलनाडु सरकार से मुहंपका एवं खुरपका रोग नियंत्रण परियोजना से संबंधित भू-हस्तांतरण द्वारा प्राप्त की गई है जिसका मूल्य 0.39 मिलियन रूपये है।
2. पूर्ण स्वामीत्व भूमि 17.94 मिलियन रूपये राशि की ऑइल टेंक फार्म, नरेला की भूमि सम्मिलित है। जिसे स्थायी लीज पर प्राप्त किया गया है। और जिसके लिए अभी लीज डीड का निष्पादन करना बाकी है।
3. कृषि एवं बागवानी विभाग, कर्नाटक सरकार से प्राप्त भूमि का मूल्य 65.98 मिलियन रूपये है, जो कन्नामंगला हार्टीकल्चर फार्म में सहायक कंपनी मदर डेरी फ्रूट एंड वेजिटेबल प्राइवेट लिमिटेड के नाम पर है। भू-स्वामीत्व का हस्तांतरण अभी लंबित है।
4. वित्त वर्ष 2023-24 के दौरान 90.90 मिलियन रुपये की चल संपत्ति पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी एनडीडीबी सीएएलएफ लिमिटेड को हस्तांतरित की गई।

सेवा शुल्क

संलग्नक - IX

मिलियन रुपये में

विवरण	2023-24	2022-23
प्रशिक्षण शुल्क	22.71	20.11
अधिप्राप्ति एवं तकनीकी सेवा शुल्क	325.46	164.39
परीक्षण प्रभार	5.23	117.82
परामर्श एवं साध्यता (फीजिबिलिटी) अध्ययन से शुल्क	27.58	17.75
रॉयल्टी एवं प्रक्रिया जानकारी शुल्क	1.19	1.87
योग	**382.17**	**321.94**

अन्य आय

संलग्नक - X

मिलियन रुपये में

विवरण	2023-24	2022-23
स्थायी परिसंपत्तियों की बिक्री पर लाभ (निवल)	0.37	148.57
निवेशों की बिक्री पर लाभ	-	10.61
अन्य ब्याज से आय	40.98	38.34
अतिरिक्त प्रावधान तथा एनपीए का प्रतिलेखन	0.15	74.81
स्वीकृत परिसंपत्तियों के मूल्यह्रास की प्रतिपूर्ति	15.41	17.10
दूध की बिक्री	2.47	2.02
विविध आय	50.44	379.80
योग	**109.82**	**671.25**

कार्मिकों को पारिश्रमिक और लाभ

संलग्नक - XI

मिलियन रुपये में

विवरण	2023-24	2022-23
वेतन और मजदूरी (अनुग्रह राशि सहित)	944.91	841.77
भविष्य निधि, अधिवर्षिता निधि तथा उपदान राशि में योगदान	191.36	145.93
स्टाफ कल्याण व्यय	111.73	93.89
योग	**1,248.00**	**1,081.59**

पारिश्रमिक में अनुसंधान एवं विकास व्यय के भाग के रूप में इंगित गए 36.50 मिलियन रूपये (पूर्व वर्ष: 35.58 मिलियन रूपये) शामिल नहीं हैं।

प्रशासनिक व्यय

संलग्नक - XII

मिलियन रुपये में

विवरण	2023-24	2022-23
मुद्रण एवं लेखन सामग्री	6.13	5.44
संचार प्रभार	11.60	9.77
लेखा परीक्षा शुल्क एवं व्यय (कर सहित)		
लेखा परीक्षा शुल्क	0.76	1.09
आयकर लेखा परीक्षा	0.22	0.33
आऊट ऑफ पॉकेट व्यय	0.05	0.02
	1.03	1.44
विधि शुल्क	7.47	5.21
व्यावसायिक शुल्क	33.91	32.09
वाहन व्यय	4.99	4.45
भर्ती व्यय	0.15	0.44
विज्ञापन व्यय	5.46	10.94
यात्रा एवं वाहन व्यय	94.90	87.87
बिजली एवं किराया	33.33	33.18
अन्य प्रशासनिक व्यय	4.92	4.95
योग	**203.89**	**195.78**

परिसंपत्तियों का अनुरक्षण

संलग्नक - XIII

मिलियन रुपये में

विवरण	2023-24	2022-23
मरम्मत एवं अनुरक्षण		
भवन	193.44	144.17
अन्य	69.89	73.31
दर एवं कर	10.51	13.34
बीमा	2.69	3.01
योग	**276.53**	**233.83**

अन्य व्यय

संलग्नक - XIV

मिलियन रुपये में

विवरण	2023-24	2022-23
प्रीमियम परिशोधन	42.42	44.82
पूर्व अवधि के व्यय	0.69	0.15
निवेश की बिक्री पर हानि	124.41	-
अन्य व्यय	107.31	49.91
योग	**274.83**	**94.88**

महत्वपूर्ण लेखा नीतियां, जो वित्तीय विवरणों का हिस्सा है

संलग्नक - XV

1. तैयारी का आधार

वित्तीय विवरण, ऐतिहासिक लागत परिपाटी तथा भारत में सामान्य तौर पर स्वीकार्य लेखा सिद्धांतों (GAAP) के साथ-साथ इंस्टिट्यूट ऑफ चार्टेड एकाउन्टैन्ट्स ऑफ इंडिया द्वारा जारी बोर्ड पर लागू लेखांकन मानकों का प्रयोग करते हुए संग्रहण आधार पर तैयार किए गए हैं। वित्तीय विवरणों को, जब तक अन्यथा न कहा जाए, भारतीय रुपए के निकटतम पूर्णांकित दस लाख में प्रदर्शित किया गया है।

2. आंकलन का प्रयोग

जीएएपी के अनुरूप वित्तीय विवरण तैयार करने के लिए प्रबंधन को आकलन तथा पूर्वानुमान करना पड़ता है जो परिसंपत्तियों तथा देयताओं, राजस्व तथा खर्च और वित्तीय विवरणों की तारीख के अनुसार आकस्मिक देयताओं के प्रकटीकरण की सूचित राशियों को प्रभावित करते हैं। ऐसे आंकलन तथा पूर्वानुमान, प्रबंधन के वित्तीय विवरण की तारीख पर संबंधित तथ्यों और परिस्थितियों के मूल्याँकन पर आधारित हैं। प्रबंधन का यह मानना है कि वित्तीय विवरणों को तैयार करने में प्रयुक्त आंकलन विवेकपूर्ण एवं उचित है; हालांकि, वास्तविक परिणाम इस आकलन से भिन्न हो सकते हैं जिन्हें वर्तमान तथा भविष्य की अवधियों में भविष्यलक्षी प्रभाव से मान्यता प्राप्त है। ऐसे आकलनों में कोई भी परिवर्तन वर्तमान तथा भविष्य की अवधि में भविष्यलक्षी प्रभाव से मान्य हैं।

3. परिसंपत्तियों का वर्गीकरण तथा प्रावधान

सार्वजनिक वित्तीय संस्था होने के नाते एनडीडीबी परिसंपत्तियों के वर्गीकरण के लिए भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) के दिशा-निर्देशों का पालन करती है 'जोकि व्यवस्थित रूप से महत्त्वपूर्ण नॉन डिपॉजिट टेकिंग कंपनी एवं डिपॉजिट टेकिंग कंपनी (रिजर्व बैंक) दिशा-निर्देश, 2016 पर लागू है'। अनर्जक एवं मानक परिसंपत्तियों के लिए प्रावधान बोर्ड द्वारा अनुमोदित दरों पर किया गया है।

4. राजस्व मान्यता

मानक परिसंपत्तियों पर ब्याज आय में आरबीआई के दिशा-निर्देशों के अनुसार संग्रहण के आधार पर मान्यता दी गई है। अनर्जक परिसंपत्तियों पर ब्याज आय, लागू दिशा-निर्देशों के अनुरूप वर्गीकृत हैं।

बैंक के साथ सावधि जमा एवं बांड्स में निवेश पर ब्याज आय को आनुपातिक समय आधार पर मान्यता दी गई है।

सहकारिता आदि की सेवाओं से आय को आनुपातिक पूरा होने के आधार पर तथा सम्बद्ध अनुबंध की शर्तों के अनुसार मान्य किया गया है।

दूध पण्य वस्तुओं की बिक्री का हिसाब परिवहन के समय पर्याप्त जोखिम और ईनाम के आधार पर पण्यवस्तुओं की गोदाम से प्रेषण की तारीख पर किया जाता है।

लाभांश आय का हिसाब आय प्राप्त होने के बिना शर्त अधिकार स्थापित होने पर किया गया है।

अन्य आय को तब मान्यता दी जाती है जब इसके अंतिम संग्रहण में कोई अनिश्चितता नहीं होती।

5. अनुदान

क) स्थायी परिसंपत्तियों से संबंधित अनुदानों को आरंभ में सामान्य निधि के अंतर्गत स्थायी परिसंपत्तियों के लिए अनुदान में क्रेडिट किया जाता है।

ख) वर्ष के दौरान प्राप्त राजस्व अनुदानों को आय तथा व्यय लेखे में मान्यता दी जाती है।

ग) विशिष्ट परियोजनाओं के लिए प्राप्त अनुदान को परियोजना निधि में क्रेडिट किया जाता है तथा इन परियोजनाओं के लिए धन वितरण में इसका उपयोग किया जाता है।

6. अनुसंधान एवं विकास व्यय

अनुसंधान एवं विकास व्यय को (अधिगृहीत स्थायी परिसंपत्तियों की लागत के अलावा) वर्ष में व्यय के रूप में प्रभारित किया गया है। अनुसंधान तथा विकास के लिए उपयोग की गई स्थायी परिसंपत्तियाँ जिनका अन्य जगह उपयोग हो सकता है उनका बोर्ड की नीति के अनुसार उनके उपयोगी जीवन के बाद मूल्यह्रास किया जाता है।

महत्वपूर्ण लेखा नीतियां, जो वित्तीय विवरणों का हिस्सा है

संलग्नक - XV

7. कर्मचारी लाभ

क. परिभाषित योगदान योजनाः भविष्य निधि तथा अधिवार्षिता निधि में योगदान पूर्व निर्धारित दर पर किया जाता है तथा उसे आय और व्यय लेखे में प्रभारित किया जाता है। कर्मचारी भविष्य निधि संगठन द्वारा निर्धारित दर और राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड कर्मचारी भविष्य निधि योजना के वास्तविक आय के बीच यदि कोई कमी है, तो बोर्ड द्वारा आय और व्यय खाते में डेबिट के रूप में योगदान दिया जाता है।

ख) परिभाषित लाभ योजनाएंः उपदान, मुआवजा अनुपस्थिति तथा सेवा निवृत्ति पश्चात चिकित्सा लाभ योजनाएं प्रक्षेपित इकाई क्रेडिट पद्धति का प्रयोग करते हुए बोर्ड की देयताएं निर्धारित की जाती हैं जिसमें प्रत्येक सेवा अवधि को गिना जाता है जिससे लाभ हकदारी की अतिरिक्त इकाई में वृद्धि होती है तथा अंतिम दायित्व को निर्धारित करने के लिए प्रत्येक इकाई को अलग से मापा जाता है। बीमांकिक लाभ तथा हानियाँ जो स्वतंत्र बीमांकिक द्वारा वार्षिक तौर पर की जाती हैं, बीमांकिक मूल्यांकन पर आधारित हैं, उन्हें तुरंत आय तथा व्यय लेखा में आय अथवा व्यय के रूप में मान्यता दी जाती है। दायित्व को, छूट दर का प्रयोग करते हुए, अनुमानित भविष्य के नकद प्रवाह के वर्तमान मूल्य पर मापा गया है। इनका निर्धारण तुलन पत्र की तारीख पर भारत सरकार के बांड पर बाजार लाभ के संदर्भ में किया जाता है, जहाँ सरकारी बॉन्डों की वैधता अवधि तथा शर्तें परिभाषित लाभ दायित्व की वैधता अवधि और अनुमानित शर्तों के अनुरूप हैं।

अनुपस्थिति क्षतिपूर्तिः बोर्ड की कर्मचारियों के लिए अनुपस्थिति क्षतिपूर्ति लाभ हेतु एक योजना है जिसकी देयता वर्ष के अंत में किए गए बीमांकिक मूल्यांकन के आधार पर निर्धारित की जाती है।

बोर्ड ने भारतीय जीवन बीमा निगम की ग्रुप ग्रैच्यूटी सह लाइफ एशोरेन्स योजना में प्रतिभागिता द्वारा उपदान के पक्ष में इनकी देयताओं को वित्त पोषण प्रदान किया है।

8. संपत्ति, संयंत्र और उपकरण (PPE) तथा मूल्यह्रास

मूर्त स्थायी परिसंपत्तियों को मूल्यह्रास तथा क्षति हानि घटा कर लागत पर लिया जाता है। लागत में खरीद का मूल्य, आयात शुल्क तथा अन्य गैर वापसी कर अथवा उगाही तथा ऐसी कोई प्रत्यक्ष अपसामान्य लागत शामिल होती है जो परिसंपत्ति पर उसके अपेक्षित इस्तेमाल के लिए तैयार करने हेतु खर्च की जाती है।

प्रत्येक 10,000 रुपये से अधिक की लागत वाली पीपीई पर मूल्यह्रास बोर्ड द्वारा निर्धारित दरों पर सीधी रेखा पद्धति के आधार पर प्रभारित किया जाता है। परिसंपत्ति के पूँजीकरण के वर्ष में पूरा मूल्याह्रास प्रभारित किया जाता है तथा उसके निपटान के वर्ष में मूल्यह्रास प्रभारित नहीं किया जाता। 10,000 रुपये तथा उससे कम राशि की प्रत्येक परिसंपत्ति को क्रय के वर्ष में 100 प्रतिशत मूल्यह्रास किया जाता है। बोर्ड द्वारा विभिन्न श्रेणी की परिसंपत्तियों के लिए अनुमोदित मूल्यह्रास दरें नीचे दी गई हैंः-

परिसंपत्तियां	दर (% में)
फैक्टरी भवन, गोदाम तथा रोड	4.00
अन्य भवन	2.50
कोल्ड स्टोरेज	15.00
विद्युत स्थापन	5.00
कम्प्यूटर (सॉफ्टवेयर सहित)	33.33
कार्यालय तथा प्रयोगशाला उपकरण	15.00
संयंत्र तथा मशीनरी	10.00
सौर उपकरण	30.00
फर्नीचर	10.00
वाहन	20.00
रेल दूध टैंकर	10.00

महत्वपूर्ण लेखा नीतियां, जो वित्तीय विवरणों का हिस्सा है

पट्टे पर ली गई जमीन का पट्टे की अवधि तक एमोर्टाइज किया गया है। पट्टे पर ली गई जमीन पर स्थित परिसंपत्तियों का मूल्यह्रास पट्टे की अवधि से कम होगा या उस परिसंपत्ति की उपयोगी जीवन से कम होगी।

स्थापन/निर्माणाधीन पूँजीगत परिसंपत्तियों को तुलनपत्र में 'पूँजीगत कार्य प्रगति पर' के रूप में दिखाया गया है।

9. परिसंपत्तियों की हानि

प्रत्येक तुलनपत्र की तारीख पर, परिसंपत्तियों के रखाव मूल्य की परिसंपत्तियों की हानि के लिए समीक्षा की जाती है। यदि इस प्रकार की हानि होने का कोई संकेत मिलता है, तो ऐसी परिसंपत्ति की वसूली योग्य राशि का अनुमान लगाया जाता है और हानि को मान्य किया जाता है, यदि इन परिसंपत्तियों के रख रखाव की राशि वसूली योग्य राशि से अधिक है। वसूली योग्य राशि शुद्ध बिक्री मूल्य तथा उनके उपयोग के मूल्य से अधिक है। उपयोग मूल्य को, उनके वर्तमान मूल्य में से भविष्य के नकद प्रवाह में छूट के आधार पर निकाला जाता है जो उपयुक्त छूट घटक पर आधारित होती है। जब ऐसा संकेत हो कि लेखा अवधियों से पूर्व किसी परिसंपत्ति के लिए मान्य क्षति हानि अब विद्यमान नहीं है अथवा कम हो गई होगी तो अपसामान्य हानि के ऐसे परिवर्तन को आय तथा व्यय लेखा

10. निवेश

दीर्घकालीन निवेशों को निम्न प्रकार से मूल्यांकित किया गया है:

क) सहायक कंपनियों, सहकारिताओं तथा महासंघों के शेयर - अधिग्रहण की लागत पर;

ख) सरकारी कंपनियों, वित्तीय संस्थाओं तथा बैंकों में डिबेंचर/बांड - राज्य विकास ऋण - अधिग्रहण की लागत पर शुद्ध परिशोधित प्रीमियम, यदि कोई हो।

वर्तमान निवेशों को कम लागत अथवा बाजार मूल्य पर निर्धारित किया गया है।

दीर्घकालिक निवेशों को लागत पर निर्धारित किया गया है। यदि अंकित मूल्य से लागत मूल्य अधिक होता है तो अंतर्निहित प्रतिभूति की शेष परिपक्वता अवधि पर प्रीमियम को परिशोधित किया जाता है। इस प्रकार के निवेश का उल्लेख तुलनपत्र में कम परिशोधित प्रीमियम अधिग्रहण मूल्य पर किया गया है।

वर्ष के दौरान किए गए निवेशों के मूल्य में, अस्थायी के अलावा अन्य कमी हेतु प्रावधान कमी का मूल्यांकन किए जाने वाले वर्ष में किया गया है।

11. वस्तुसूची

स्टोर तथा परियोजना उपकरण सहित वस्तु सूचियों को लागत पर अथवा शुद्ध नकदीकरण मूल्य, जो भी कम हो, पर मूल्यांकित किया गया है। लागत को प्रथम आवक, प्रथम जावक आधार पर निकाला गया है। जहाँ कहीं आवश्यक है वहाँ अप्रचलन के लिए प्रावधान किया गया है।

12. विदेशी मुद्रा लेन-देन

विदेशी मुद्रा का लेन-देन, लेन देन की तारीख पर प्रचलित विनिमय दर पर अभिलिखित किया जाता है।

विदेशी मुद्रा में मूल्यांकित मुद्रा संबंधी वस्तुएं तथा जो तुलन पत्र की तारीख में बकाया हैं उन्हें वर्ष के अंत में प्रचलित विनिमय दर पर परिवर्तित किया जाता है। गैर-मौद्रिक मदों को ऐतिहासिक लागत पर लिया जाता है।

विदेशी मुद्रा लेन-देन में होने वाले विनिमय अन्तर को उनके सामने आने वाली अवधि में आय एवं व्यय के रूप में मान्यता दी गई है।

13. स्वैच्छिक सेवा निवृत्ति योजना का लेखांकन

अनुग्रह राशि सहित स्वैच्छिक सेवा निवृत्ति योजना की लागत, कर्मचारी के सेवा वियोजन अवधि में आय तथा व्यय लेखे में प्रभारित की जाती है। स्वैच्छिक सेवा निवृत्ति योजना लेने वाले कर्मचारियों के लिए, कर्मचारियों की सेवा वियोजन अवधि में मासिक लाभ योजना हेतु प्रावधान किया गया है तथा इसका समायोजन भुगतान मिलने पर किया जाता है।

महत्वपूर्ण लेखा नीतियां, जो वित्तीय विवरणों का हिस्सा है

संलग्नक - XV

14. आय पर कर

वर्तमान कर, वर्ष के दौरान कर योग्य आय पर देय है जिसका निर्धारण आयकर अधिनियम 1961 के प्रावधानों के अनुसार किया जाता है।

आस्थगित कर समय के अंतर पर मान्य है, यह कर योग्य आय तथा लेखा आय का वह अंतर है जो एक अवधि से उत्पन्न होता है तथा एक अथवा अधिक अनुवर्ती अवधि में परिवर्तन योग्य है।

अनवशोषित मूल्यह्रास तथा अग्रेनीत हानियों के संबंध में आस्थगित कर परिसंपत्तियों को मान्य किया गया है यदि यह आभासी निश्चितता है कि ऐसे कर घाटों को दूर करने के लिए भविष्य की पर्याप्त कर योग्य आय उपलब्ध होगी। अन्य आस्थगित कर परिसंपत्तियाँ मान्य हैं जब यदि यथोचित निश्चितता हो कि ऐसी परिसंपत्तियों की वसूली के लिए भविष्य में पर्याप्त कर योग्य आय होगी।

15. पट्टे

पट्टा व्यवस्थाएं, जहाँ परिसंपत्ति के स्वामित्व का प्रासंगिक जोखिम और ईनाम पर्याप्त रूप से पट्टेदाता पर निहित है, उन्हें प्रचालन पट्टे के रूप में मान्यता दी गई है। प्रचालित पट्टे के अंतर्गत पट्टा किराया को पट्टा अनुबंधों के संदर्भ में आय एवं व्यय लेखे के रूप में मान्यता दी गई है।

16. प्रावधान तथा आकस्मिकताएं

पूर्व घटनाओं के परिणामस्वरूप जब बोर्ड के पास वर्तमान दायित्व होता है तो उस समय प्रावधान को मान्यता दी जाती है तथा यह संभावित है कि दायित्व के निपटान के लिए संसाधनों का बर्हिगमन अपेक्षित होगा, जिसके संबंध में एक विश्वसनीय अनुमान बनाया जा सकता है। प्रावधानों (सेवानिवृत्ति लाभों को छोडकर) को उनके वर्तमान मूल्य में छूट नहीं दी जाती है तथा इन्हें तुलन पत्र की तारीख ङ्कें दायित्व का निपटान करने के लिए अपेक्षित अनुमान के आधार पर निर्धारित किया जाता है। इनकी प्रत्येक तुलनपत्र की तारीख पर समीक्षा की जाती है तथा वर्तमान सर्वश्रेष्ठ अनुमान प्रतिबिंबित करने के लिए समायोजित किया जाता है। आकस्मिक देयताओं का खुलासा लेखा पर टिप्पणियों में किया गया है।

बोर्ड ने वर्ष 2001-02 के पूर्व के ऋणों तथा अन्य परिसंपत्तियों के संबंध में प्रावधान किया है। अंतर्निहित परिसंपत्तियों के संचालन के आधार पर जिनके लिए ऐसे प्रावधान का सृजन किया गया था, बोर्ड पहचानी गई घटनाओं के आधार पर ऐसे प्रावधानों का पुनः आवंटन/प्रतिलेखन करता है। तदनुसार, बोर्ड अपनी परिसंपत्तियों के मूल्य में संभावित मूल्यह्रास अथवा ऐसी देयता हेतु अप्रत्यशित घटनाओं के लिए वर्तमान आकस्मिक प्रावधान के संबंध में अतिरिक्त प्रावधान अथवा आवंटन करता है।

लेखा से संबंधित नोट्स जो वित्तीय विवरणों का हिस्सा है

संलग्नक - XVI

1 संबंधित प्राधिकारियों के अनुरोध पर, एनडीडीबी पश्चिम असम दूध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड, झारखंड राज्य सहकारी दूध उत्पादक महासंघ लिमिटेड, शाहजहांपुर महिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड(फरवरी 2024 तक), जिला दूध उत्पादक सहकारी संघ, वाराणसी (वाराणसी दूध संघ), पूर्वी असम दूध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड एवं लद्दाख यूटी डेरी सहकारी महासंघ का प्रबंधन कर रही है। ये पृथक और स्वतंत्र संस्थाएं हैं और उनके बही खातों का रखरखाव संबंधित अधिकारियों द्वारा किया जाता है और अलग से उनकी लेखा परीक्षा की जाती है। इसके अलावा, संबंधित अधिकारियों के साथ परिचर्चा के अनुसार, बोर्ड केवल वाराणसी दूध संघ के प्रबंधन को सौंपते समय शुद्ध नकदी हानि को वहन करने के लिए उत्तरदायी है। वाराणसी दूध संघ के साथ समझौता ज्ञापन की अवधि के अंत में प्रबंधन को सौंपते समय नकद हानि, यदि कोई हो, के लिए आवश्यक प्रावधान किया जाएगा।

2 राष्ट्रीय डिजिटल पशुधन मिशन (NDLM) राष्ट्रीय गोकुल मिशन (RGM) के तहत पशुपालन और डेयरी विभाग (DAHD) और राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड (एनडीडीबी) के मध्य एक संयुक्त उद्यम (गत) के रूप में एक परियोजना है और भारत सरकार और एनडीडीबी प्रत्येक के 50% इक्विटी योगदान के साथ एक स्पेशल परपज व्हीकल (SPV) का गठन किया जाएगा।

जब तक ऐसी एसपीवी का गठन नहीं हो जाता, तब तक एनडीएलएम परियोजना राजस्व और व्यय (i) एनडीडीबी के शेयर के लिए क्रमशः एनडीडीबी के आय और व्यय खाते में जमा/डेबिट किया गया है और (ii) भारत सरकार के शेयर के लिए, इसे एनडीडीबी की 'भारत सरकार की परियोजनाओं के लिए प्राप्त निधि' में समायोजित किया गया है। जहां तक, एनडीएलएम परियोजना के पूंजीगत व्यय का संबंध है, (iii) एनडीडीबी का शेयर बही खातों में पूरी तरह पूंजीकृत है और मूल्यह्रास एनडीडीबी के आय और व्यय खाते में प्रभारित किया जाता है और (iv) भारत सरकार के शेयर के लिए, इसे 'अचल परिसंपत्तियों के लिए अनुदान' में स्थानांतरित कर दिया जाता है और उस सीमा तक मूल्यह्रास की वार्षिक आधार पर भरपाई की जाती है। प्रगति पर पूंजीगत कार्य ('CWIP') के लिए, (v) एनडीडीबी का शेयर एनडीडीबी के 'CWIP' के अंतर्गत दिखाया गया है और (vi) भारत सरकार के शेयर के अंतर्गत, इसे 'भारत सरकार की परियोजनाओं के लिए प्राप्त निधि' के तहत दिखाया गया है।

3 आकस्मिक देयताएँ:

3.1. मूल राशि के दावे जो ऋण के रूप में नहीं माने गए :318.74 मिलियन रुपये (पूर्व वर्ष : 132.71 मिलियन रुपये)

3.2. बकाया गारंटी: 0.05 मिलियन रुपये (पूर्व वर्ष : 0.05 मिलियन रुपये)

3.3. आयकर की मांग (संबंधित सांविधिक प्रावधानों के अंतर्गत देय ब्याज एवं जुर्माने को छोडकर) 1,185.93 मिलियन रुपये (पूर्व वर्ष : 1,185.93 मिलियन रुपये)

3.4. सेवा कर मांग 916.50 मिलियन रुपये (पूर्व वर्ष : 916.50 मिलियन रुपये)

3.5. अन्य मांगें

मिलियन रुपये में

विवरण	प्राधिकरण	2023-24	2022-23
भूमि देय राशि का निपटान	भूमि एवं भूमि सुधार विभाग, सिलीगुड़ी	3.94	3.94
इटोला की भूमि के लिए नगरपालिका कर की मांग	तालुका विकास अधिकारी, वडोदरा	4.73	4.73
संपत्ति कर	बृहन मुंबई महानगर पालिका, मुंबई	0.29	0.19

बोर्ड ने 3.3 से 3.5 में उपर्युक्त उल्लिखित मांगों को उपयुक्त फोरम के समक्ष चुनौती दी है। उक्त संबंध में नकद प्रवाह केवल निर्णय का परिणाम/उस फोरम का फैसला आने पर निर्धारित करने योग्य है, जहाँ मांगों को चुनौती दी गई है।

4 Segment information:

एनडीडीबी राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड अधिनियम, 1987 के अंतर्गत गठित एक निगमित निकाय है। अधिनियम में निर्धारित लक्ष्य के अनुसार, एनडीडीबी की सभी गतिविधियाँ डेरी/कृषि क्षेत्र के इर्द-गिर्द घूमती हैं जो लेखा मानक-17 के अनुसार "खण्ड रिपोर्टिंग" पर एकल रिपोर्ट करने योग्य खंड है।

लेखा से संबंधित नोट्स जो वित्तीय विवरणों का हिस्सा है

संलग्नक - XVI

5 लेखा मानक 15 (संशोधित 2005) के अनुसार कर्मचारी लाभों से संबंधित प्रकटीकरण निम्नलिखित हैः-

कर्मचारी लाभ योजनाएं

परिभाषित अंशदान योजनाएं

कंपनी योग्य कर्मचारियों के लिए परिभाषित अंशदान योजनाओं के अंतर्गत भविष्य निधि तथा अधिवर्षिता निधि में अंशदान देती है। इन योजनाओं के अंतर्गत, कंपनी को पे-रोल लागत का एक विशेष प्रतिशत इन लाभों को धन प्रदान करने के लिए देना अपेक्षित है। कंपनी ने लाभ एवं हानि विवरण में भविष्य निधि अंशदान के लिए 81.24 मिलियन रुपये (31 मार्च 2023 को समाप्त वर्ष में 76.40 मिलियन रुपये) तथा अधिवर्षिता निधि अंशदान में 54.44 मिलियन रुपये (31 मार्च 2023 को समाप्त वर्ष में 50.88 मिलियन रुपये) मान्य किए है। कंपनी द्वारा इन योजनाओं के लिए देय योगदान की राशि, इन योजनाओं के नियमों में विनिर्दिष्ट दर पर दी जाती है।

परिभाषित लाभ योजनाएं

कंपनी अपने कर्मचारियों को निम्नलिखित लाभ योजनाएं प्रदान करती हैः

i. उपदान

ii. सेवा निवृत्ति पश्चात चिकित्सा लाभ योजना (PRMBS)

iii. छुट्टी नकदीकरण

निम्नलिखित तालिका में परिभाषित लाभ योजनाओं को प्रदान निधि की स्थिति तथा वित्तीय विवरण में मान्य राशि दर्शाई गई हैः

मिलियन रुपये में

विवरण	31 मार्च, 2024 को समाप्त वर्ष			31 मार्च, 2023 को समाप्त वर्ष		
	उपदान	सेवा निवृत्ति पश्चात चिकित्सा लाभ योजनाएं (पीआरएमबीएस)	छुट्टी नकदीकरण	उपदान	सेवा निवृत्ति पश्चात चिकित्सा लाभ योजनाएं (पीआरएमबीएस)	छुट्टी नकदीकरण
नियोक्ता खर्च के घटक						
चालू सेवा लागत	36.93	0.92	33.00	36.53	1.08	29.81
ब्याज लागत	38.77	8.21	46.27	35.95	7.75	43.08
योजनागत संपत्ति पर संभावित लाभ	(42.70)	-	(42.64)	(33.09)	-	(36.13)
बीमांकिक हानि/(लाभ)	26.45	(1.16)	35.64	(20.74)	(4.52)	(30.69)
आय और व्यय में मान्य कुल व्यय	**59.45**	**7.97**	**72.27**	**18.65**	**4.31**	**6.07**
वर्ष के लिए वास्तविक योगदान और लाभ भुगतान						
वास्तविक लाभ भुगतान	(40.99)	(4.20)	(37.68)	(47.85)	(5.62)	(42.64)
वास्तविक योगदान	46.31	-	6.95	111.90	-	56.99
तुलन-पत्र में मान्य निवल परिसंपत्ति/(देयता)						
परिभाषित लाभ दायित्व का वर्तमान मूल्य	(572.26)	113.23	(688.21)	(516.97)	(109.45)	(616.91)
योजना परिसंपत्तियों का उचित मूल्य	611.50	-	574.54	569.36	-	568.56
तुलनपत्र में मान्य निवल परिसंपत्ति/(देयता)	**39.25**	**113.23**	**(113.67)**	**52.39**	**(109.45)**	**(48.35)**
वर्ष के दौरान परिभाषित लाभ दायित्वों (DBO) में परिवर्तन						
वर्ष के आरंभ में डीबीओ का वर्तमान मूल्य	516.97	109.45	616.91	513.59	110.75	615.36
वर्तमान सेवा लागत	36.93	0.92	33.00	36.53	1.08	29.81
ब्याज लागत	38.77	8.21	46.27	35.95	7.75	43.08
वास्तविक (लाभ)/हानि	20.58	(1.16)	29.71	(21.25)	(4.52)	(28.70)
प्रदत्त लाभ	(40.99)	(4.20)	(37.68)	(47.85)	(5.61)	(42.64)
वर्ष के अंत में डीबीओ का वर्तमान मूल्य	**572.26**	**113.23**	**688.21**	**516.97**	**109.45**	**616.91**

लेखा से संबंधित नोट्स जो वित्तीय विवरणों का हिस्सा है

संलग्नक - XVI

मिलियन रुपये में

विवरण	31 मार्च, 2024 को समाप्त वर्ष			31 मार्च, 2023 को समाप्त वर्ष		
	उपदान	सेवा निवृत्ति पश्चात चिकित्सा लाभ योजनाएं (पीआरएमबीएस)	छुट्टी नकदीकरण	उपदान	सेवा निवृत्ति पश्चात चिकित्सा लाभ योजनाएं (पीआरएमबीएस)	छुट्टी नकदीकरण
वर्ष के दौरान परिसंपत्तियों के उचित मूल्य में परिवर्तन						
वर्ष के आरंभ में योजित परिसंपत्तियाँ	569.36	-	568.56	472.74	-	516.09
अधिग्रहण समायोजन	-	-	-	-	-	-
योजित परिसंपत्तियों पर संभावित लाभ	42.70	-	42.64	33.09	-	36.13
वास्तविक कंपनी योगदान (उपदान ट्रस्ट/ एनडीडीबी और एलआईसी द्वारा कटौती किए गए शुल्क को छोड़कर दिया गया योगदान)	46.31	-	6.95	111.90	-	56.99
बीमांकिक लाभ/(हानि)	(5.87)	-	(5.93)	(0.52)	-	1.99
प्रदत्त लाभ	(40.99)	-	(37.68)	(47.85)	-	(42.64)
वर्ष के अंत में योजित परिसंपत्तियाँ	**611.50**	**-**	**574.54**	**569.36**	**-**	**568.56**
योजित परिसंपत्तियों पर वास्तविक लाभ	36.83	-	36.71	32.57	-	38.12
योजित परिसंपत्तियों के घटक इस प्रकार हैः						
सरकारी बांड	-	-	-	-	-	-
पीएसयू बांड	-	-	-	-	-	-
इक्विटी एवं इक्विटी संबंधी निवेश	-	-	-	-	-	-
अन्य	100%	-	100%	100%	-	100%
वास्तविक धारणाएं						
छूट दर	7.19%	7.19%	7.19%	7.50%	7.50%	7.50%
योजित परिसंपत्तियों पर अपेक्षित लाभ	7.19%	NA	7.19%	7.50%	NA	7.50%
वेतन वृद्धि	8.50%	3.00%	8.50%	8.50%	3.00%	8.50%
क्षयण (एट्रीशन)	1.00%	1.00%	1.00%	1.00%	1.00%	1.00%
चिकित्सा मुद्रास्फीति	NA	5.00%	NA	NA	5.00%	NA
मृत्यु तालिका	भारतीय आश्वासित जीवन (2012-14) अंतिम मृत्यु दर	भारतीय आश्वासित जीवन (2012-14) अंतिम मृत्यु दर	भारतीय आश्वासित जीवन (2012-14) अंतिम मृत्यु दर	भारतीय आश्वासित जीवन (2012-14) अंतिम मृत्यु दर	भारतीय आश्वासित जीवन (2012-14) अंतिम मृत्यु दर	भारतीय आश्वासित जीवन (2012-14) अंतिम मृत्यु दर

लेखा से संबंधित नोट्स जो वित्तीय विवरणों का हिस्सा है

संलग्नक - XVI

अनुभव समायोजन

मिलियन रुपये में

विवरण	2023-24	2022-23	2021-22	2020-21	2019-20	2018-19
उपदान						
डीबीओ का वर्तमान मूल्य	572.26	516.97	513.59	458.98	449.30	389.45
योजित परिसंपत्तियों का उचित मूल्य	(611.50)	(569.36)	(472.74)	(421.34)	(418.09)	(371.87)
वित्त पोषित स्थिति [अधिशेष/(घाटा)]	39.25	52.39	(40.85)	(37.64)	(31.21)	(17.58)
सेवा निवृत्ति पश्चात चिकित्सा लाभ योजना (PRMBS)						
डीबीओ का वर्तमान मूल्य	113.23	109.45	110.75	111.16	81.01	69.98
अन्य परिभाषित लाभ योजनाएं (छुट्टी नकदीकरण)						
डीबीओ का वर्तमान मूल्य	688.21	616.91	615.36	542.14	522.08	419.02
योजना परिसंपत्तियों का उचित मूल्य	(574.54)	(568.56)	(516.09)	(393.49)	(393.45)	-
वित्तपोषित स्थिति [अधिशेष / (घाटा)]	(113.67)	(48.35)	(99.27)	(148.65)	(128.63)	-

विवरण	31 मार्च, 2024 को समाप्त वर्ष के लिए	31 मार्च, 2023 को समाप्त वर्ष के लिए
लंबी अवधि की प्रतिपूरक अनुपस्थिति की बीमांकिक पूर्वधारणाएं		
छूट दर	7.19%	7.50%
उपदान योजित परिसंपत्तियों पर संभावित प्रतिलाभ	7.19%	7.50%
योजित अवकाश नकदीकरण परिसंपत्ति पर संभावित प्रतिलाभ	7.19%	7.50%
वेतन वृद्धि	8.50%	8.50%
क्षयण (एट्रीशन)	1.00%	1.00%

छूट दर कर्तव्यों की अनुमानित अवधि के लिए तुलन प की तारीख के अनुसार भारत सरकार की प्रतिभूतियों के मौजूदा बाजार लाभ पर आधारित है।

भविष्य की वेतन वृद्धियों के अनुमान में मुद्रास्फिति, वरिष्ठता, पदोन्नती, वेतन वृद्धि तथा अन्य सम्बद्ध घटकों को माना गया है।

बोर्ड द्वारा वित्तीय वर्ष 2024-25 के दौरान किए जाने वाले योगदान निर्धारित नहीं किए गए हैं।

लेखा से संबंधित नोट्स जो वित्तीय विवरणों का हिस्सा है

संलग्नक - XVI

6 लेखामानक 18 के अनुसार 31 मार्च, 2024 को समाप्त वर्ष के लिए संबंधित पार्टी तथा उनसे लेन-देन का प्रकटीकरण

क) संबंधित पार्टी तथा उनका संबंध

1) पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनियां

आईडीएमसी लिमिटेड
इंडियन इम्यूनोलॉजिकल्स लिमिटेड
मदर डेरी फ्रूट एंड वेजिटेबल प्राइवेट लिमिटेड
एनडीडीबी डेरी सर्विसेज
प्रिस्टिन बायोलॉजिकल (NZ) लिमिटेड (इंडियन इम्यूनोलॉजिकल लिमिटेड की पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी)
एनडीडीबी मृदा लिमिटेड
एनडीडीबी काफ लिमिटेड

2) अन्य उद्यम जहाँ प्रबन्ध तंत्र का उनके प्रबन्धन में महत्वपूर्ण प्रभाव है

पश्चिम असम दूध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड
पशु प्रजनन अनुसंधान संगठन (भारत)
आनंदालय एजुकेशन सोसायटी
झारखंड राज्य सहकारी दूध उत्पादक संघ लिमिटेड
शाहजहाँपुर महिला दूध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड
एनडीडीबी फाउंडेशन फॉर न्यूट्रीशन
वाराणसी दूध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड
नॉर्थ ईस्ट डेरी एंड फूड्स लिमिटेड
भारतीय बीज सहकारी समिति लिमिटेड
लद्दाख यूटी डेरी सहकारी महासंघ
राष्ट्रीय सहकारी ऑर्गेनिक्स लिमिटेड
पूर्वी असम दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड

3) प्रमुख प्रबंधन कार्मिक

डॉ. मीनेश शाह	अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड ('एनडीडीबी' या 'बोर्ड')

लेखा से संबंधित नोट्स जो वित्तीय विवरणों का हिस्सा है

संलग्नक - XVI

ख) संबंधित पार्टियों के साथ लेन-देन

(इटेलिक में दिये गए आँकड़े पिछले वर्ष के हैं।)

मिलियन रुपये में

विवरण	ब्याज से आय	इक्विटी शेयरों की खरीद	स्थायी संपत्तियों की खरीद	लाभांश	किराया (आय)	अन्य आय	अनुदान	अन्य व्यय	चालू खाते का शेष बकाया डे./(क्रे.)	वितरित ऋण	चुकाया ऋण/ समायोजित		ऋण शेष बकाया डे./(क्रे.)
											ऋण शेष	बकाया	
आईडीएमसी लिमिटेड	7.64	-	-	60.72	0.53	0.16	0.05	0.10	0.02	243.23	157.92	7.64	85.31
	23.97	-	-	*24.29*	*0.35*	*5.22*	-	*10.63*	*0.03*	*474.27*	*244.22*	*23.97*	*230.05*
इंडियन इम्यूनोलॉजिकल्स लिमिटेड	51.34	-	-	108.00	29.38	43.80	-	7.38	(0.39)	728.45	173.61	51.34	554.84
	56.63	-	-	*72.00*	*29.32*	*14.47*	-	*6.60*	*3.77*	*893.28*	*166.77*	*56.63*	*726.51*
मदर डेरी फ्रूट एंड वेजिटेबल प्राइवेट लिमिटेड	89.52	-	-	-	130.97	19.57	-	3.25	84.15	1,407.29	238.03	89.52	1,169.26
	24.93	-	-	*250.00*	*119.10*	*27.17*	-	-	*21.46*	*937.25*	*98.74*	*24.93*	*838.51*
एनडीडीबी मृदा लिमिटेड	-	-	-	-	0.03	12.27	12.00	8.86	5.76	-	-	-	-
	-	*95.00*	-	-	*0.01*	*8.60*	-	*13.28*	*(2.01)*	-	-	-	-
एनडीडीबी डेरी सर्विसेज	-	-	-	-	13.28	5.10	-	0.26	12.93	418.30	55.40	-	362.90
	-	-	-	-	*8.01*	*8.92*	-	*1.87*	*(0.81)*	*473.70*	*55.40*	-	*418.30*
एनडीडीबी काफ लिमिटेड	-	-	-	-	0.41	69.23	-	11.55	120.44	-	-	-	-
	-	*750.00*	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
योग	**148.50**	**-**	**-**	**168.72**	**174.60**	**150.13**	**12.05**	**31.40**	**222.91**	**2,797.27**	**624.96**	**148.50**	**2,172.31**
	105.53	***845.00***	**-**	***346.29***	***156.79***	***64.38***	**-**	***32.38***	***22.44***	***2,778.50***	***565.13***	***105.53***	***2,213.37***

मिलियन रुपये में

विवरण	ब्याज से आय	इक्विटी शेयरों की खरीद	स्थायी संपत्तियों की खरीद	लाभांश	किराया (आय)	अन्य आय	अनुदान	अन्य व्यय	चालू खाते का शेष बकाया डे./(क्रे.)	वितरित ऋण	चुकाया ऋण/ समायोजित		ऋण शेष बकाया डे./(क्रे.)
											ऋण शेष	बकाया	
अन्य उद्यम जहां प्रबंधन का उनके प्रबंधन पर महत्वपूर्ण प्रभाव है													
पश्चिम असम दूध उत्पादक सहकारी संघ लि.	0.09	-	-	-	0.14	0.92	14.70	0.02	0.03	80.00	80.00	0.09	14.27
	1.62	-	-	-	*0.26*	*1.86*	-	*23.34*	*0.59*	*79.49*	*67.29*	*1.62*	*12.20*
पशु प्रजनन अनुसंधान संगठन	-	-	-	-	-	0.60	-	-	0.29	-	-	-	-
	2.08	-	-	-	-	*4.10*	-	-	*1.61*	-	-	*2.08*	-
आनन्दालय शिक्षा सोसाइटी	-	-	-	-	0.48	0.13	-	0.02	0.01	-	-	-	-
	-	-	-	-	*0.59*	*1.08*	-	*0.03*	*0.13*	-	-	-	-
झारखंड राज्य सहकारी दूध उत्पादक महासंघ लिमिटेड	-	-	-	-	0.17	2.08	2.09	0.01	1.12	-	-	-	-
	-	-	-	-	*0.17*	*2.91*	-	*2.15*	*0.79*	-	-	-	-
वाराणसी दूध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड	-	-	-	-	0.01	0.04	23.90	0.54	(0.43)	280.00	37.13	-	255.43
	-	-	-	-	-	*0.29*	*227.11*	*6.22*	*4.35*	*453.91*	*221.43*	-	*232.48*
लद्दाख यूटी डेरी सहकारी महासंघ	-	-	-	-	-	-	3.32	-	-	-	-	-	-
	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
नॉर्थ ईस्ट डेरी एंड फूड्स लिमिटेड	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	-	*50.00*	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
भारतीय बीज सहकारी समिति लिमिटेड	-	10.10	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	-	*10.00*	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
राष्ट्रीय सहकारी ऑर्गेनिक्स लिमिटेड		20.10	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	-	*10.00*	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
पूर्वी असम दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
योग	**0.09**	**30.20**	**-**	**-**	**0.80**	**3.77**	**44.01**	**0.59**	**1.02**	**360.00**	**117.13**	**0.09**	**269.70**
	3.70	***70.00***	***-***	***-***	***1.02***	***10.24***	***227.11***	***31.74***	***7.47***	***533.40***	***288.72***	***3.70***	***244.68***

* एनडीडीबी काफ लिमिटेड से संबंधित सभी निवल चल-अचल संपत्ति, चालू संपत्ति जमा, ऋण और अग्रिम एनडीडीबी द्वारा पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी एनडीडीबी काफ लिमिटेड को 01.04.2023 से हस्तांतरित कर दी गई है।

** बोर्ड ने 16 अगस्त 2027 तक लद्दाख यूटी डेरी सहकारी महासंघ का प्रबंधन संभालने और 31 अगस्त 2023 को केंद्र शासित प्रदेश लद्दाख में डेरी विकास गतिविधियां शुरू करने के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है।

लेखा से संबंधित नोट्स जो वित्तीय विवरणों का हिस्सा है

संलग्नक - XVI

प्रमुख प्रबंधन कार्मिक को पारिश्रमिक

	मिलियन रुपये में
डॉ. मीनेश शाह	7.00
	6.37
योग	**7.00**
	6.37

नोट: केवल उन संबंधित पक्षों का विवरण प्रस्तुत किया गया है जिनके साथ चालू और/या पिछले वित्तीय वर्ष के दौरान लेनदेन हुआ है।

7 लेखा मानक 19 के अनुसार, 'लीज़'(पट्टे) का प्रकटीकरण (संदर्भ संलग्नक VIII देखें):

निम्नलिखित परिसंपत्तियों के लिए बोर्ड के द्वारा पट्टादाता (लेसर) के रूप में लीज व्यवस्था संचालन:

क) पट्टे पर दी गई परिसंपत्तियों की प्रकृति

मिलियन रुपये में

परिसंपत्तियों की श्रेणी	31 मार्च 2024 को परिसंपत्तियों का सकल मूल्य	वर्ष के लिए मूल्यह्रास	31 मार्च 2024 को संचित मूल्यह्रास
भवन एवं रोड #	1,633.00	42.52	1,120.58
	1,633.00	*42.52*	*1,078.06*
बिजली स्थापन #	30.16	0.89	28.34
	30.83	*1.00*	*28.10*
फर्नीचर, फिक्स्चर, कंप्यूटर्स एवं कार्यालय उपकरण	8.70	0.00	8.70
	8.73	*0.00*	*8.73*
रेल दूध टैंकर	345.49	16.55	275.40
	345.49	*16.55*	*258.85*
योग	**2,017.35**	**59.96**	**1,433.02**
	2,018.05	***60.07***	***1,373.74***

स्टाफ क्वार्टर तथा कोल्ड स्टोरेज शामिल हैं।
(इटैलिक में लिखे गए आंकड़े पिछले वर्ष के हैं।)

पट्टेदाता (लीज़ी) को पूर्व नोटिस देकर इन व्यवस्थाओं को रद्द किया जा सकता है।

(ख) लीज़ प्रबंधों से संबंधित आरंभिक प्रत्यक्ष लागत को लीज़ प्रबंध के वर्ष के आय एवं व्यय लेखा में प्रभारित किया गया है।

(ग) महत्वपूर्ण लीज़ प्रबंध:

अनुबंध के नवीनीकरण अथवा निरस्तीकरण के विकल्प के साथ, उपर्युक्त सभी परिसंपत्तियों को सहायक कंपनियों, महासंघों तथा अन्य को लीज़ पर दिया गया है।

लेखा से संबंधित नोट्स जो वित्तीय विवरणों का हिस्सा है

संलग्नक - XVI

8 आस्थगित कर परिसंपत्तियों को लेखा मानक 22 - 'आय पर कर गणना' के अनुसार माना गया है। विवरण इस प्रकार है :

मिलियन रुपये में

विवरण	1 अप्रैल 2023 को आरंभिक शेष	वर्ष के दौरान समायोजन	31 मार्च 2024 को अंत शेष
आस्थगित कर परिसंपत्तियाँ/(देयताएं):			
मूल्यह्रास	(7.04)	8.90	1.86
	(17.00)	*9.96*	*(7.04)*
भुगतान के आधार पर स्वीकार्य व्यय	149.32	17.97	167.29
	151.57	*(2.25)*	*149.32*
उपदान	(13.19)	3.31	(9.88)
	10.28	*(23.47)*	*(13.19)*
स्वैच्छिक सेवा निवृत्ति योजना	0.01	(0.01)	0.00
	0.01	*0.00*	*0.01*
विशेष आरक्षित निधि	(408.79)	(34.71)	(443.50)
	(401.26)	*(7.53)*	*(408.79)*
योग	**(279.69)**	**(4.54)**	**(284.23)**
	(256.40)	***(23.29)***	***(279.69)***

(इटैलिक में लिखे गए आंकड़े पिछले वर्ष के हैं।)

नोट:

भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) के परिपत्र सं. आरबीआई/2013-14/412 डीबीओडी सं.बीपी.बीसी.77/21.04.018/2013-14 दिनांक 20 दिसंबर 2013 में बोर्ड ने आयकर अधिनियम, 1961 की धारा 36 (1) (viii) के तहत विशेष रिजर्व पर आस्थगित कर दायित्व सृजित किया है।

9 लेखा मानक 29 के अनुसार-'प्रावधान, आकस्मिक देयताओं तथा आकस्मिक परिसंपत्तियों का प्रकटीकरण' निम्न प्रकार है:

मिलियन रुपये में

विवरण	अलाभकर परिसंपत्तियाँ (NPA)	मानक परिसंपत्तियों पर सामान्य आकस्मिकता	आकस्मिकता	कुल
आरम्भिक शेष	559.34	93.67	1,755.25	2,408.26
	816.58	*51.79*	*1,497.87*	*2,366.24*
वर्ष के दौरान आकस्मिकता से निर्मित	22.74	28.90	171.61	223.25
	0.74	*41.88*	*257.38*	*300.00*
वर्ष के दौरान वापस किया गया/ संचालन	-	-	(23.25)	(23.25)
	(257.98)	-	-	*(257.98)*
अंत शेष	**582.08**	**122.57**	**1,903.61**	**2,608.26**
	559.34	***93.67***	***1,755.25***	***2,408.26***

(इटैलिक में लिखे गए आंकड़े पिछले वर्ष के हैं।)

लेखा से संबंधित नोट्स जो वित्तीय विवरणों का हिस्सा है

संलग्नक - XVI

10 31 मार्च, 2024 की स्थिति के अनुसार बोर्ड के पास उपलब्ध जानकारी के अनुसार, 14.22 मिलियन रूपये (पूर्व वर्ष 21.07 मिलियन रूपये) के विभिन्न लेनदार रहें और उन संस्थाओं को जिन्हे माइक्रो, स्मॉल एंड मिडियम इन्टरप्राइज डेवलेपमेंट एक्ट, 2006 के अंतर्गत माइक्रो और स्मॉल इन्टरप्राइज के रूप में वर्गीकृत किया गया है पर, कोई बकाया नही है।

11 ऋण और अग्रिम से ब्याज में 1,723.53 मिलियन रूपये (पूर्व वर्ष 838.59 मिलियन रुपये) और दीर्घावधि से 1,144.55 मिलियन रुपये (पूर्व वर्ष 1,262.41 मिलियन रुपये) शामिल हैं।

12 सभी लाभांश दीर्घावधि निवेश से प्राप्त होते हैं।

13 आयकर अधिनियम, 1961 की धारा 36(1)(viii) के प्रावधानों के अनुसार, निर्धारण वर्ष 2003-04 (निर्धारण वर्ष जिसमें एनडीडीबी आयकर अधिनियम, 1961 के दायरे में आया) से विशेष रिजर्व निर्मित किया गया है। जैसा कि एनडीडीबी का मानना है यह उक्त धारा के तहत कटौती की जाने की पात्रता रखता है। हालाँकि, निर्धारण वर्ष 2003-04 और उसके बाद के वर्षो के लिए आयकर अधिकारियों ने इस तरह के दावे को अस्वीकार कर दिया। एनडीडीबी ने विभिन्न अपीलीय मंचों पर इसका विरोध किया। माननीय उच्च न्यायालय, गुजरात ने मामले का फैसला आयकर विभाग के पक्ष में दिया। एनडीडीबी ने माननीय सर्वोच्च न्यायालय के समक्ष विशेष अनुमति याचिका दायर की। यह मामला अब निराकरण हेतु माननीय न्यायालय के समक्ष लंबित है। एनडीडीबी प्रबंधन का मानना है कि आयकर के संबंध में कैश ऑउट फ्लो की कम संभावना है और यह विशेषज्ञ विधिक मत पर आधारित है यह एक उचित केस है; तदनुसार, रिपोर्टाधीन वर्ष के दौरान एनडीडीबी बही खाते में विशेष रिजर्व निर्मित करना निरंतर जारी रखा है और उक्त दावे को कर प्रावधान के लिए पात्र माना है।

14 काफ से संबंधित गतिविधियों को संभालने के लिए 25 फरवरी 2023 को एनडीडीबी काफ लिमिटेड का गठन किया गया है, जो पहले एनडीडीबी का हिस्सा था। 40.99 मिलियन रुपये की बुक वैल्यू वाली अचल संपत्तियों को छोड़कर, 01 अप्रैल 2023 को काफ की गतिविधियों से संबंधित चल-अचल संपत्तियां और निवल चालू संपत्तियां दिनांक 01.10.2017 से हस्तांतरित कर दी गई हैं, जो एनडीडीबी को विभिन्न सरकारी प्राधिकरणों से अनुदान के रूप में प्राप्त हुई है। इन अचल संपत्तियों को संबंधित सरकारी अधिकारियों से मंजूरी मिलने के बाद हस्तांतरित किया जाएगा।

15 वित्त वर्ष 2024-25 के लिए पूंजीगत कार्य की कुल पूंजी प्रतिबद्धता 22.73 मिलियन रुपये है।

16 भविष्य में निम्नलिखित पूंजी निवेश की परिकल्पना की गई है:

कंपनी का नाम	मिलियन रुपये में	अभ्युक्ति
इंडियन इम्यूनोलॉजिकल्स लिमिटेड	1,000.00	अतिरिक्त शेयर पूंजी
भारतीय बीज सहकारी समिति लिमिटेड	479.90	अतिरिक्त शेयर पूंजी
राष्ट्रीय सहकारीऑर्गेनिक्स लिमिटेड	169.90	अतिरिक्त शेयर पूंजी
श्रीलंका में संयुक्त उद्यम	257.00	प्रारंभिक शेयर पूंजी

17 गत वर्ष के आँकड़ें आवश्यकतानुसार पुनः समूहित/पुनः व्यवस्थित किए गए हैं।

हमारी समसंख्यक तारीख की संलग्न रिपोर्ट के अनुसार

कृते एमकेपीएस एंड एसोसिएट्स
सनदी लेखाकार
फर्म पंजीकरण सं. 302014E

वासुदेव सुंदरदास मत्ता
भागीदार
सदस्यता सं. 046953

स्थान: मुंबई
दिनांक: 16 अगस्त 2024

बोर्ड के लिए और उसकी ओर से,

मीनेश सी शाह
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

एस रघुपति
कार्यपालक निदेशक
(संचालन)

अमित गोयल
ग्रुप प्रमुख
(लेखा)

स्थान: आणंद
दिनांक: 16 अगस्त 2024

एनडीडीबी के अधिकारी

प्रधान कार्यालय, आणंद

अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यपालक

मीनेश सी शाह
बीएससी (डीटी), पीजीडीआरडीएम
विज्ञान में डॉक्टरेट की मानद उपाधि

मुख्य कार्यपालक का कार्यालय

राजेश कुमार
वरिष्ठ प्रबंधक, बीए (इको), पीजीडीआरएम

प्रबंध निदेशक

मीनेश सी शाह
बीएससी (डीटी), पीजीडीआरडीएम
विज्ञान में डॉक्टरेट की मानद उपाधि

प्रबंध निदेशक का कार्यालय

राजेश सिंह
प्रबंधक, बीसीए, पीजीडीएम (मार्केटिंग एवं वित्त)

निकित बंसल
प्रबंधक, बीकॉम, सीए

कार्यपालक निदेशक

एस रघुपति
एमकॉम,
आईसीडब्ल्यूए, पीजीडीआरडीएम

एस राजीव
बीटेक (औद्योगिक इंजीनियरिंग),
पीजीडीआरएम

वरिष्ठ महाप्रबंधक

आर ओ गुप्ता
बीवीएससी, एमवीएससी (मेडिकल)

ए वी रामचंद्र कुमार
बीई (कंप्यूटर इंजीनियरिंग), पीजीडीएम

एस एस सिन्हा
बीई (इलेक्ट)

लेखा

अमित गोयल
वरिष्ठ प्रबंधक, बीकॉम, सीए

तुषार कांति पात्रा
वरिष्ठ प्रबंधक, बीकॉम,
आईसीडब्ल्यूए

विनय गुप्ता
वरिष्ठ प्रबंधक, बीकॉम,
आईसीडब्ल्यूए,
पीजीडीएम (आरएम-एक्स)

पी वी सुब्रह्मण्यम
वरिष्ठ प्रबंधक, बीबीएम
एमबीए (वित्त)

आशुतोष के मिश्र
वरिष्ठ प्रबंधक, बीएससी (ईएंडआई),
पीजीडीबीए (वित्त)

रश्मि प्रतीश
प्रबंधक, एमकॉम, आईसीडब्ल्यूए

स्वप्निल ठाकर
प्रबंधक, एमकॉम, सीए,
पीजीडीएम (आरएम-एक्स)

दीपेन आर शाह
प्रबंधक, बीबीए,
एमबीए (वित्त), आईसीडब्ल्यूए

विजय कुमार
प्रबंधक, बीकॉम, सीए

कमलकांत आर परमार
उप प्रबंधक, बीकॉम, सीए

रमेश कुमार
उप प्रबंधक, बीकॉम, सीए

कार्तिक पटेल
उप प्रबंधक, बीकॉम, सीए

पंकज सेन
उप प्रबंधक, एमकॉम, सीए, सीएस

प्रशासन

धीरूभाई सी परमार
वरिष्ठ प्रबंधक, एमकॉम, एलएलबी (सामान्य),
एमएसडब्ल्यू, पीजीडी-एचआरएम

आर पी डोडामणि
प्रबंधक, बीकॉम, एलएलबी

नयनकुमार डी काथावाला
उप प्रबंधक, बीकॉम, एमएचआरएम, एलएलबी

प्रशासन - उपयोगिता

रुपेश ए दर्जी
वरिष्ठ प्रबंधक, बीई (इलेक्ट)

बिभाष बिस्वास
प्रबंधक, डिप्लो. (सिविल), डीबीएम

पशु प्रजनन

एस गोरानी
महाप्रबंधक, बीवीएससी,
एमवीएससी (वेट. गायनेक. एवं आब्स्टेट्रिक्स),
पीजीडीएमएम

सुजीत साहा
वरिष्ठ प्रबंधक, बीएससी (कृषि), एमएससी
(डेरी), पीएचडी (पशु आनु. एवं प्रजनन),
पीजीडीआईएम, एमबीए (ऑपरेशन प्रबंधन)

एन जी नाई
वरिष्ठ प्रबंधक, बीवीएससी, एमवीएससी (पशु
प्रजनन), पीएचडी (पशु आनु. एवं प्रजनन)

पराग आर पंड्या
वरिष्ठ प्रबंधक, बीवीएससी एवं एएच,
एमबीए (एचआरएम)

वी पी भोसले
वरिष्ठ प्रबंधक, बीवीएससी एवं एएच,
एमवीएससी (मेड)

समता दे
वरिष्ठ प्रबंधक, बीवीएससी एवं एएच,
एमवीएससी(वेट. गाइनेक एंड ऑब्स्ट)

रनमल एम अंबालिया
वरिष्ठ प्रबंधक, बीई (कंप्यू. इंजीनियरिंग),
पीजीडीएम (आरएम-एक्स)

ए सुधाकर
प्रबंधक, बीवीएससी, एमवीएससी,
पीएचडी (पशु प्रजनन)

स्वप्निल जी गज्जर
प्रबंधक, बीवीएससी एवं एएच,
एमवीएससी (पशु आनु. एवं प्रजनन)

कृष्णा एम बेउरा
प्रबंधक, बीवीएससी एवं एएच,
एमबीए (ग्रामीण प्रबंधन)

शिराज एम शेरसिया
प्रबंधक, बीवीएससी एवं एएच,
एमबीए (एग्री बिज.)

सुरभि गुप्ता
प्रबंधक, बीवीएससी एवं एएच, पीजीडीआरएम

अतुल सी महाजन
प्रबंधक, बीवीएससी एवं एएच,
एमवीएससी (पशु आनु. एवं प्रजनन), पीएचडी
(पशु आनु. एवं प्रजनन)

सिद्धार्थ एस लायक
प्रबंधक, बीवीएससी एवं एएच,
एमवीएससी (एलपीएम), पीएचडी (एलपीएम)

करुप्पनासामी के
प्रबंधक, बीवीएससी एवं एएच, एमवीएससी (वेट. गायनेक. एवं ऑब्सटेट्रिक्स)

कर्मराज आर जैसवार
वैज्ञानिक I, बीएससी, एमएससी (माइक्रोबायोलॉजी), जैव सूचना विज्ञान में सर्टिफिकेट कोर्स

संकेत प्रकाश पाटिल
उप प्रबंधक, बीवीएससी एवं एएच, एमवीएससी (पशु प्रजनन, गायनेक एवं ऑब्स.)

कथन भानुभाई रावल
उप प्रबंधक, बीवीएससी एवं एएच, एमवीएससी (वेट. गायनेक एवं ऑब्स.), पीएचडी (वेट. गायनेक एवं ऑब्स.)

पशु स्वास्थ्य

ए वी हरि कुमार
उप महाप्रबंधक, बीवीएससी एवं एएच, एमवीएससी (माइक्रो)

पंकज दत्ता
प्रबंधक, बीवीएससी एवं एएच, एमवीएससी (माइक्रो)

श्रॉफ सागर आई
प्रबंधक, बीवीएससी एवं एएच, एमवीएससी (माइक्रो), पीजीडीएम (आरएम-एक्स)

केशांक एम दवे
उप प्रबंधक, बीवीएससी एंड एएच, एमवीएससी (वेट. एपिडर्मिलॉजी एवं प्रीव. मेड.)

एनडीडीबी अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशाला, हैदराबाद

पोनन्ना एन एम
वैज्ञानिक III, बीएससी (कृषि), एमएससी (एग्री माइक्रो), पीएचडी (बायोटेक)

लक्ष्मी नारायण सारंगी
वैज्ञानिक II, बीवीएससी एवं एएच, एमवीएससी (वेट. माइक्रो), पीएचडी (वेट वायरोलॉजी)

के एस एन एल सुरेंद्र
वैज्ञानिक II, बीएससी, एमएससी (बायोटेक)

अमितेश प्रसाद
वैज्ञानिक II, बीवीएससी एवं एएच, एमवीएससी (वेट. माइक्रो)

विजय एस बाहेकर
वैज्ञानिक II, बीवीएससी एवं एएच, एमवीएससी (वेट. माइक्रो)

संदीप कुमार दाश
वैज्ञानिक II, बीवीएससी एवं एएच, एमवीएससी (माइक्रो), पीएचडी (वेट. माइक्रो)

पशु पोषण

राजेश शर्मा
उप महाप्रबंधक, एमएससी (कृषि), पीएचडी (एग्रो)

एन आर घोष
वरिष्ठ प्रबंधक, बीवीएससी एवं एएच, एमएससी (पशु पोषण)

भूपेंद्र टी फोंदबा
वैज्ञानिक III, बीवीएससी एवं एएच, एमवीएससी, पीएचडी (पशु पोषण)

चंचल वाघेला
प्रबंधक, बीवीएससी एवं एएच, एमवीएससी (पशु पोषण)

विनोद उइके
प्रबंधक, बीएससी (कृषि), एमएससी (कृषि विज्ञान)

हार्दिककुमार बी नलियापरा
उप प्रबंधक, बीवीएससी एवं एएच, एमवीएससी (पशु पोषण), पीएचडी (पशु पोषण)

निधि
उप प्रबंधक, बीएससी (ऑनर्स) (कृषि), एमएससी (बीज विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी), पीएचडी(बीज विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी)

अनिल
उप प्रबंधक, बीएससी (ऑनर्स) (कृषि), एमएससी (कृषि विज्ञान)

सहकारिता सेवाएं

ए एस हातेकर
महाप्रबंधक, एमएससी (कृषि)

सीमा माथुर
वरिष्ठ प्रबंधक, एमए (अंग्रेजी)

हृषिकेश कुमार
वरिष्ठ प्रबंधक, बीएससी (भौ.), पीजीडीआरएम

हेमाली भारती
वरिष्ठ प्रबंधक, बीई (पावर इलेक्ट), एमबीए (वित्त)

विशाल कुमार मिश्रा
वरिष्ठ प्रबंधक, बीए, एमए (एसडब्ल्यू)

संदीप धीमान
वरिष्ठ प्रबंधक, बीकॉम, एमए (एसडब्ल्यू)

डेंजिल जे डायस
प्रबंधक, बीटेक (डीटी), एमटेक (डीटी)

सीएस-एनएफएन

स्मृति सिंह
प्रबंधक, बीए (अंग्रेजी), पीजीडीएम (मार्केटिंग एवं एचआर)

काजल दक्षेश जोशी
उप प्रबंधक, बीकॉम, एमएसडब्ल्यू

सहकारिता प्रशिक्षण

अनिंदिता बैद्य
वरिष्ठ प्रबंधक, बीएससी (बॉट), पीजीडीआरडी

टी प्रकाश
प्रबंधक, एमए (डेव. एडमिन), पीजीडीएम (आरएम-एक्स)

राहुल आर
प्रबंधक, बीटेक (सीएस), एमबीए (सिस्टम)

सुनीतकुमार वी गौतम
उप प्रबंधक, बीई (मेक), पीजीडीआरएम

अजितकुमार संपतराव तंदाले
उप प्रबंधक, बीएससी (कृषि), एमएससी (कृषि विज्ञान)

अभियांत्रिकी सेवाएं

वी श्रीनिवास
महाप्रबंधक, बीई (सिविल)

एस तालुकदार
महाप्रबंधक, बीई (मेक), एमआईई

एस चंद्रशेखर
उप महाप्रबंधक, बीई (मेक)

चंद्र प्रकाश
उप महाप्रबंधक, बीटेक (मेक)

पी रमेश
उप महाप्रबंधक, बीई (मेक), पीजीसीपीएम

के एस पटेल
वरिष्ठ प्रबंधक, बीई (सिविल), एमबीए (मासंवि एवं वित्त)

मिहिर बी बगरिया
वरिष्ठ प्रबंधक, डीसीई, बीई (सिविल), एमबीए (वित्त)

मनोज गोठवाल
वरिष्ठ प्रबंधक, बीई (सिविल)

सुब्रता चौधरी
वरिष्ठ प्रबंधक, डीसीई, एएमआईई (सिविल)

धवल ए पंचाल
वरिष्ठ प्रबंधक, बीई (इलेक्ट)

भूषण पी कापशिकर
वरिष्ठ प्रबंधक, बीई (सिविल)

सचिन गर्ग
वरिष्ठ प्रबंधक, बीई (इलेक्ट), पीजीडीबीए

निकेश वी मोरे
वरिष्ठ प्रबंधक, बीई (इंस्ट्रू. एवं कंट्रोल इंजीनियरिंग)

डी बी लालचंदानी
प्रबंधक, बीई (मेक), एमबीए (ऑपरेशन)

सुनंदा कुमार एन
प्रबंधक, बीटेक (मेक), एमटेक (मैट. साइंस एंड टेक)

पी बालाजी
प्रबंधक, बीई (सिविल)

श्रेयस जैन
प्रबंधक, बीई (इलेक्ट)

आदित्य शर्मा
प्रबंधक, बीटेक (सिविल),
एमटेक (सीपीएम)

अभिषेक गुप्ता
प्रबंधक, बीई (मेक)

प्रकाश ए मकवाना
प्रबंधक, बीई (इलेक्ट)

बलबीर शर्मा
प्रबंधक, डीईई, बीटेक (इलेक्ट)
पीजीडीएम (आरएम-एक्स)

आशीष रवि
प्रबंधक, बीटेक (सिविल)

वत्सल पटेल
प्रबंधक, बीई (मेक)

प्रतीक के अग्रवाल
प्रबंधक, बीई (सिविल)

विवेक जैसवाल
प्रबंधक, बीई (सिविल)

सुमीत शेखर
प्रबंधक, बीई (मेक)

सचिन ए सरवैया
प्रबंधक, बीई (मेक)

अलर्क एस कुलकर्णी
प्रबंधक, बीटेक (इंस्ट्र),
एमटेक (बायोटेक)

राहुल कुमार
प्रबंधक, बीटेक (इलेक्ट्रिकल)

सत्यबान बेहेरा
उप प्रबंधक, डिप्लोमा (सिविल), बीटेक (सिविल)

120 मीटप्रदि का डेरी व्हाइटनर/बेबी फूड मिल्क पाउडर संयंत्र और यूएचटी संयंत्र, दूधसागर डेरी, महेसाणा, गुजरात

शैलेंद्र मिश्रा
वरिष्ठ प्रबंधक, डिप्लो. (सिविल),
डिप्लो. (कॉन्स्ट. टेक)

50 हलीप्रदि का डेरी संयत्र, राजसमंद, राजस्थान

जसदेव सिंह
वरिष्ठ प्रबंधक, बीटेक (इले.),
एमटेक (पावर इंजीनियरिंग),
पीजीडीएम (आरएम-एक्स)

कृष्ण देव
प्रबंधक, बीटेक (सिविल),
एमटेक (जियोटेक्निकल)

5 लालीप्रदि की स्वचालित डेरी संयंत्र परियोजना, अरिलो, ओडिशा

सौम्य रंजन मिश्रा
प्रबंधक, बीई (इलेक्ट)

एंथ्रेक्स परियोजना, आईवीपीएम, रानीपेट, तमिलनाडु

सैयद अब्दुल राशिद
प्रबंधक, बीई (मेक)
पशु आहार संयंत्र, हाजीपुर, साबरकांठा, गुजरात

धीरज बी तेम्भुर्ने
वरिष्ठ प्रबंधक, बीई (सिविल)

तुषार एस चवान
प्रबंधक, बीई (मेक)

चीज़ निर्माण एवं व्हे पाउडर संयंत्र परियोजना, हिम्मतनगर, गुजरात

अक्षय मंडोरा
प्रबंधक, बीई (मेक)

संतोष पाटीदार
उप प्रबंधक, बीई (सिविल)

अपशिष्ट उपचार संयंत्र, रोहतक, हरियाणा

गौरव सिंह
प्रबंधक, बीटेक (सिविल)

अपशिष्ट उपचार परियोजना (ईटीपी) (चरण-II), साबर डेरी, हिम्मतनगर, गुजरात

नीरव पी सक्सेना
उप प्रबंधक, बीई (मेक),
एमई (कैड/कैम)

फर्मेन्टेड उत्पाद संयंत्र, रोहतक, हरियाणा

सतेन्द्र सिंह गुर्जर
प्रबंधक, बीई (मेक),
पीजीडीएम (आरएम-एक्स)

हैदराबाद डेरी परियोजना स्थल, हैदराबाद, तेलंगाना

प्रदीप लायक
वरिष्ठ प्रबंधक, बीटेक (इलेक्ट)

बिभु प्रसाद जेना
वरिष्ठ प्रबंधक, बीई (सिविल)

यू सुंदरा राव
प्रबंधक, डीईई, बीटेक (ईईई)

तारक राजनी
प्रबंधक, बीई (सिविल)

अवसंरचना विस्तार परियोजना, इरमा, आणंद

सुधीर कुमार गंगल
प्रबंधक, डीसीई, बीई (सिविल)

अवसंरचना विकास परियोजना, वघासी, आणंद

निकुंजकुमार एन परमार
प्रबंधक, बीई (सिविल)

जालंधर डेरी परियोजना, जालंधर, पंजाब

अंशुल चौरसिया
प्रबंधक, बीई (मेक), पीजीडीओएम

दूध उत्पाद संयंत्र परियोजना, बरौनी, बिहार

जय नागर
प्रबंधक, बीई (सिविल)

सुरजीत के चौधरी
प्रबंधक, बीई (मेक)

पूरबी डेरी (वामूल) परियोजना, गुवाहाटी

धर्मेंद्र के बेहेरा
प्रबंधक, बीई (मेक),
एमबीए (मार्केटिंग एंड सिस्ट)

आशुतोष सामल
प्रबंधक, बीटेक (सिविल)

एसएजी, अहमदाबाद

बलराम निबोरिया
प्रबंधक, बीटेक (सिविल)

उपचारित अपशिष्ट परियोजना का तृतीयक अपशिष्ट जल उपचार, जयपुर डेरी, जयपूर, राजस्थान

अभिषेक सिंघल
प्रबंधक, बीटेक (सिविल)

वित्त

टी टी विनयागम
उप महाप्रबंधक, बीई (कृषि), पीजीडीआरएम

चिंतन खाखरियावाला
वरिष्ठ प्रबंधक, बीई (केम), एमबीए (वित्त)

कल्पेशकुमार जे पटेल
वरिष्ठ प्रबंधक, बीबीए, एमकॉम,
आईसीडब्ल्यूए, सीएस

रोहन बी बुच
प्रबंधक, बीकॉम, एमबीए (वित्त)

शिल्पा पी बेहेरे
प्रबंधक, बीएमएस, पीजीडीआरएम

संजीता भाटी
उप प्रबंधक, बीएमएस, पीजीडीआरएम

वैशाली जैन
उप प्रबंधक, बीकॉम (ऑनर्स), पीजीडीआरएम

अनुराग जोसेफ कुजूर
उप प्रबंधक, बीकॉम, एमबीए (वित्त)

मानव संसाधन विकास

एस एस गिल
उप महाप्रबंधक, बीएससी (जियो), एमएसडब्ल्यू,पीएचडी (एसडब्ल्यू), डिप्लो. (ट्रेनिंग एवं डेव.)

मोहन चंदर जे
वरिष्ठ प्रबंधक, बीई (मेक), एमटेक (मासंवि)

राकेश बी
प्रबंधक, बीए, एमएसडब्ल्यू, पीजीडी-एचआरएम

समीर डुंगडुंग
प्रबंधक, बीकॉम, पीजीडीएम-एचआरएम

प्राची जैन
उप प्रबंधक, बीबीए (जनरल बिजनेस मैनेजमेंट), एमएचआरएम

हिंदी कक्ष

जनार्दन मिश्र
प्रबंधक, एमए (हिंदी), एमफिल (अनुवाद प्रौद्योगिकी), जनसंचार एवं संप्रेषणी हिंदी में पीजीडी

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी

एस करुनानिधि
वरिष्ठ प्रबंधक, डीईई, सीआईसी

आर के जादव
वरिष्ठ प्रबंधक, बीएससी (भौ.), एमसीए, पीजीडीएम

सुप्रिय सरकार
वरिष्ठ प्रबंधक, बीएससी (गणित), एमसीए, पीजीडीएम (आरएम-एक्स)

विपुल गोंडलिया
वरिष्ठ प्रबंधक, बीई (इलेक्ट्रॉनिक्स)

बी सेंथिल कुमार
वरिष्ठ प्रबंधक, बीएससी, पीजीडीसीए, बीएड, एमसीए, एमबीए

रीतेश के चौधरी
वरिष्ठ प्रबंधक, बीई (कंप्यू. विज्ञान), पीजीडीबीएम, पीजीडीएम (आरएम-एक्स)

राकेश आर मनिया
प्रबंधक, बीई (ईसीई)

मितेश सी पटेल
प्रबंधक, बीई (आईटी)

अनिल एम अद्रोजा
प्रबंधक, बीई (आईटी)

अशोक कुमार साहनी
प्रबंधक, बीई (सीएसई)

सोहेल ए पठान
प्रबंधक, बीई (आईटी), एमई (सीएसई)

जय वाई बारोट
प्रबंधक, बीटेक (कंप्यू. इंजीनियरिंग)

चिप्पडा उदय भास्कर
उप प्रबंधक, बीटेक (सीएसई)

निकिता आर मेस्वानिया
उप प्रबंधक, बीई (कंप्यू. इंजीनियरिंग)

तुषार साहेबराव पाटिल
उप प्रबंधक, बीई (कंप्यू)

नवाचार और परियोजना प्रबंधन (आईपीएम) प्रकोष्ठ

निरंजन एम कराडे
वरिष्ठ प्रबंधक, बीई (मेक), पीजीडीआरएम

मुकेश आर पटेल
प्रबंधक, बीएससी, एमएससी (कृषि)

विनय ए पटेल
प्रबंधक, बीटेक (बायोमेड), एमबीए (मार्केटिंग)

प्रकाशकुमार ए पंचाल
प्रबंधक, बीटेक (डीटी), एमएससी (आईसीटी-एआरडी), पीजीडीएम (आरएम-एक्स)

सिंजिनी गुहा
उप प्रबंधक, बीटेक (ईसीई), पीजीडीआरएम

श्रेयश जैसवाल
उप प्रबंधक, बीबीए (बिजनेस एडमिन), पीजीडीआरएम

जयेश धनराज चाव्हान
उप प्रबंधक, बीटेक (केमिकल), पीजीडीआरएम

आंतरिक लेखा परीक्षा

धारा एन लखानी
उप महाप्रबंधक, एमकॉम, एसीएमए

विधि

पल्लवी ए जोशी
प्रबंधक, बीकॉम, एलएलबी

मार्केटिंग सेल

हर्षेंद्र सिंह
वरिष्ठ प्रबंधक, बीई (इलेक्ट एंड पावर इंजीनियरिंग), एमबीए (मार्केटिंग)

आर मजूमदार
वरिष्ठ प्रबंधक, बीएससी (कृषि), पीजीडीआरएम

विष्णु देठ जी
प्रबंधक, बीटेक (सीएस), पीजीडीआरएम

रेणु शर्मा
उप प्रबंधक, बीबीए (मार्केटिंग एंड सेल्स), पीजीडीआरएम

जोधपुर

पवन कुमार दांगी
उप प्रबंधक, बीएससी (ऑनर्स) कृषि, पीजीडीएम (कृषि व्यवसाय प्रबंधन)

राष्ट्रीय डिजिटल पशुधन मिशन (एनडीएलएम)

आर के श्रीवास्तव
वरिष्ठ प्रबंधक, बीएससी (गणित), पीजीडीसीए, एमसीए

बी वसंत नाइक
प्रबंधक, बीटेक (सीएस एवं आईटी), एमटेक (सीएसई)

उत्पाद एवं प्रक्रिया विकास

जितेंदर सिंह
वैज्ञानिक III, बीएससी, एमएससी (माइक्रो), पीएचडी (डेरी माइक्रो)

सौगता दास
वैज्ञानिक II, बीटेक (डीटी), एमएससी (डेरी माइक्रो)

विशालकुमार बी त्रिवेदी
वैज्ञानिक II, बीटेक (डीटी), एमटेक (डीटी), पीजीडीएम (आरएम-एक्स)

ललिता मोदी
वैज्ञानिक II, बीटेक (डीटी), एमटेक (डीटी)

आदित्य कुमार जैन
उप महाप्रबंधक, बीएससी (डीटी), एमएससी (डेरिंग)

जनसंपर्क, संचार एवं आतिथ्य

अभिजीत भट्टाचारजी
महाप्रबंधक, बीएससी,एलएलबी, पीजीडीआरडी

बसुमन भट्टाचार्य
वरिष्ठ प्रबंधक, बीएससी (बॉट), एमए (पत्रकारिता), डिप्लो. इन सोशल कॉम (फिल्म मेकिंग)

दिव्यराज आर ब्रह्मभट्ट
वरिष्ठ प्रबंधक, बीए (अंग्रेजी), पीजीडीबीए, एमबीए (पीआर)

आकांक्षा एल कुमार
उप प्रबंधक, बीए (अंग्रेजी), एमए (पत्रकारिता एवं मास कॉम), पीजीडी (पत्रकारिता)

निखिल वी कल्याणपाद
उप प्रबंधक, बीएमएम, एमबीए (संचार प्रबंधन)

प्रणव जिग्नेश अवसत्थी
उप प्रबंधक, एमए (पत्रकारिता और जन संचार)

पंक्तिबेन दिलीपभाई चौहान
उप प्रबंधक, बीसीए (ऑनर्स), मास्टर ऑफ जर्नलिज्म एवं मास कॉम

क्रय

कृष्णा एसवाई
उप महाप्रबंधक, बीई (मेक), एमटेक (उत्पाद प्रबंधन)

सौगत भार
वरिष्ठ प्रबंधक, बीई (मेक)

नरेंद्र एच पटेल
वरिष्ठ प्रबंधक, बीई (मेक)

मोहम्मद नसीम अख्तर
वरिष्ठ प्रबंधक, बीई (मेक)

भद्रसिंह जे गोहिल
वरिष्ठ प्रबंधक, बीई (मेक)

अमोल एम जाधव
वरिष्ठ प्रबंधक, बीई (मेक), पीजीडीएम(आरएम-एक्स)

नीलेश के पटेल
प्रबंधक, बीई (प्रोड)

निधि त्रिवेदी
प्रबंधक, बीएससी (बॉट), एमएसडब्ल्यू

विपुल एल सोलंकी
प्रबंधक, बीई (ईसीई), पीजीडीएम (आरएम-एक्स)

हिमांशु के रत्नोत्तर
प्रबंधक, बीई (प्रोड), पीजीडी (ऑपरेशन प्रबंधन)

दिनेश के घांची
उप प्रबंधक, बीटेक (इलेक्ट्रिकल)

गुणवत्ता आश्वासन

एस डी जैसिंघाणी
उप महाप्रबंधक, बीएससी (डीटी), पीजीडीएचआरएम

सुरेश पहाड़िया
वरिष्ठ प्रबंधक, बीटेक (डीटी), एमएससी (डेरिंग), पीजीडीएम (आरएम-एक्स)

नवीनकुमारा एसी
प्रबंधक, बीटेक (डीटी), एमटेक (डेरी माइक्रो)

क्षेत्रीय विश्लेषण और योजना

जिग्नेश जी शाह
उप महाप्रबंधक, बीई (इलेक्ट), एमबीए, पीएचडी (प्रबंधन), डिप्लोमा (निर्यात प्रबंधन)

अनिल पी पटेल
वरिष्ठ प्रबंधक, एमएससी (कृषि), पीजीडीएमएम

मेना एच पाघडार
वरिष्ठ प्रबंधक, बीएससी, एमसीए

सर्वेश कुमार
वरिष्ठ प्रबंधक, बीएससी (कृषि एवं एएच), एमएससी (डेरी इको), पीएचडी (डेरी इको), पीजीडीएम (आरएम-एक्स)

बिश्वजीत भट्टाचारजी
वरिष्ठ प्रबंधक, बीएससी (कृषि), एमएससी (एग्री इको), पीजीडीएम (आरएम-एक्स)

काहनू सी बेहेरा
वरिष्ठ प्रबंधक, बीएससी (कृषि), पीजीडीआरएम

आयुष कुमार
प्रबंधक, बीटेक (जेनेटिक इंजीनियरिंग), पीजीडीएम

सौरभ कुमार
प्रबंधक, बीटेक (इलेक्ट एंड कॉम), पीजीडीएम

रीति
प्रबंधक, बीएससी (जू.), पीजीडीएम (वित्त एवं मार्केटिंग)

श्वेता एन रामटेके
प्रबंधक, बीपीटीएच, पीजीडीआरएम

अश्मी कुवेरा एम वी
उप प्रबंधक, बीई (ईईई), पीजीडीआरएम

क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलुरु

जी किशोर
महाप्रबंधक, बीवीएससी, एमएससी (डेरिंग, पशु आनु. एवं प्रजनन)

शशिकुमार बी एन
उप महाप्रबंधक, बीई (ईईई), पीजीडीआरडीएम

एम एन सतीश
वरिष्ठ प्रबंधक, एमएससी (सांख्यिकी)

एस एस न्यामगोंडा
वरिष्ठ प्रबंधक, एमएससी (एग्रो), सीआईसी

एम एल गवांडे
वरिष्ठ प्रबंधक, बीवीएससी, एमवीएससी (वेट. मेड)

लता सिरिपुरापु
वरिष्ठ प्रबंधक, बीकॉम, पीजीडीबीए (वित्त)

हलनायक ए एल
वरिष्ठ प्रबंधक, बीएससी (एग्री मार्केटिंग एंड कॉप), एमएससी (एग्री इको)

रजनी बी त्रिपाठी
वरिष्ठ प्रबंधक, बीएससी (बॉट), एमएसडब्ल्यू, पीजीडीआईआरपीएम

निधि नेगी पटवाल
वरिष्ठ प्रबंधक, बीएससी, एमएससी (रसायन), पीजीडीआरएम

थुंगय्या सालियान
प्रबंधक, बीए, एमएसडब्ल्यू, पीजीडी-एचआरएम, पीजीडीएम (आरएम-एक्स)

दिव्या टीआर
प्रबंधक, बीवीएससी एवं एएच, एमवीएससी (एनीमल रिप्रो. गायनेक. एवं आब्स.)

निम्मी तोपनो
प्रबंधक, बीकॉम, पीजीडीएम-एचआरएम

पृथ्वी पातनेनी
प्रबंधक, बीटेक (सिविल), एमटेक (क्यूएम)

जगदीश नायका
प्रबंधक, बीटेक (डीटी), एमटेक (फूड टेक)

इशिता
उप प्रबंधक, बीएससी (कृषि), पीजीडीआरएम

मालती एन
उप प्रबंधक, बी.टेक (बागवानी), पीजीडीआरएम

त्रिवेंद्रम

रोमी जैकब
उप महाप्रबंधक, एमएससी (कृषि)

अंजना साहू
उप प्रबंधक, बीई (इलेक्ट), पीजीडीआरएम

हैदराबाद

बी वी महेशकुमार
वरिष्ठ प्रबंधक, एमएससी (कृषि)

इरोड

ए क्रितिगा
वरिष्ठ प्रबंधक, बीएससी (कृषि), एमए (ग्रामीण विकास)

एर्णाकुलम

अरुण कुमार पी
उप प्रबंधक, बीवीएससी एवं एएच, पीजीडीआरएम

क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता

आर सौंदराराजन
उप महाप्रबंधक, एएमआईई (मेक)

सब्यसाची रॉय
वरिष्ठ प्रबंधक, बीएससी (कृषि) ऑनर्स, एमएससी (कृषि), पीजीडीआरडी, पीएचडी (कृषि)

सैकत सामंता
वरिष्ठ प्रबंधक, बीवीएससी एवं एएच, एमवीएससी (पशु पोषण), पीजीडीएम (आरएम-एक्स)

कौशिक रॉय
वरिष्ठ प्रबंधक, बीटेक (इले.)

चैताली चटर्जी
वरिष्ठ प्रबंधक, बीए, एमए (तुलनात्मक साहित्य)

रबिंद्र के बेहेरा
प्रबंधक, बीई (सिविल)

चंदन सिंह
प्रबंधक, बीएससी (जू), पीजीडीएम (मार्केटिंग एवं वित्त)

पदम वीर सिंह
प्रबंधक, बीवीएससी एवं एएच, एमवीएससी (पशु पोषण)

श्रेष्ठा
प्रबंधक, बीसीए, पीजीडीएम (एचआर एवं मार्केटिंग)

ऋतुराज बोरा
प्रबंधक, बीवीएससी एवं एएच, एमवीएससी

सुरभि पवार
प्रबंधक, बीबीए, पीजीडीएम-आरएम

गौतम कुमार झा
प्रबंधक, बीई (सिविल)

संदीप कुमार
उप प्रबंधक, बीएसी (ऑनर्स), कृषि, एमएससी (कृषि विज्ञान)

अंकित सुबर्णो
उप प्रबंधक, बीए (ऑनर्स), पीजीडीआरएम

गुवाहाटी

मयंककुमार जे पटेल
उप प्रबंधक, बीवीएससी एवं एएच, एमवीएससी (एनिमल रिप्रो. गायनेक. एवं आब्स.)

क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई

स्वाति श्रीवास्तव
वरिष्ठ प्रबंधक, बीएससी (भौ.), पीजीडीआरएम

गोपाल के नारंग
वरिष्ठ प्रबंधक, बीई (सिविल), डीआईपी-एमसीएम

आशुतोष सिंह
वरिष्ठ प्रबंधक, एमए (इको), पीएचडी (इको), पीजीडीएम (आरएम-एक्स)

शुभांकर नंदा
प्रबंधक, बीवीएससी एवं एएच, एमवीएससी (एएन)

कुणाल किशोर जाधव
उप प्रबंधक, बीएससी (कृषि), पीजीडीआरएम

क्षेत्रीय कार्यालय, नोएडा

राजेश गुप्ता
महाप्रबंधक, बीएससी, एमएसडब्ल्यू

एस के नासा
उप महाप्रबंधक, बीई (सिविल)

दिग्विजय सिंह
वरिष्ठ प्रबंधक, एमएससी (कृषि), पीएचडी (कृषि विज्ञान)

अरुण चंडोक
वरिष्ठ प्रबंधक, बीएससी, पीजीडी (आईआरपीएम), डीसीएस, एमबीए

एम के राजपूत
वरिष्ठ प्रबंधक, बीएससी, बीई (फूड इंजीनियरिंग एंड टेक)

पंकज एल शेरसिया
वैज्ञानिक III, बीवीएससी, एमवीएससी (पशु पोषण), पीएचडी (पशु पोषण)

संजय कुमार यादव
वरिष्ठ प्रबंधक, बीएससी, एमबीए (आरडी)

मनोज कुमार
प्रबंधक, बीटेक (मेक)

जितेंद्र सिंह राजावत
प्रबंधक, बीवीएससी एवं एएच, एग्री बिज. प्रबंधन में पीजीडी

आशीष सिजेरिया
प्रबंधक, बीई (इलेक्ट्रॉनिक्स), पीजीडीआरएम

बृजेश कुमार
उप प्रबंधक, बीटेक (सिविल)

चंडीगढ़

धनराज खत्री
वरिष्ठ प्रबंधक, बीए, एमए (एसडब्ल्यू)

रुमिनपाल सिंह बाली
प्रबंधक, बीवीएससी एवं एएच, एमवीएससी (एनिमल रिप्रो. गायनेक. एवं आब्स.)

लखनऊ

मोहम्मद राशिद
वरिष्ठ प्रबंधक, बीए, पीजीडीडीएम

जयपुर

अलका चौधरी
प्रबंधक, बीएससी (ऑनर्स) (कृषि), एमएससी (कृषि विज्ञान)

क्षेत्रीय प्रदर्शन और प्रशिक्षण केंद्र (आरडीटीसी)

ईआरडीटीसी, सिलीगुड़ी

कमलेश प्रसाद
प्रबंधक, डीएमएलटी, बीएससी, बीवीएससी एवं एएच
पीजीडीएम (आरएम-एक्स)

रमेश कुमार
प्रबंधक, बीवीएससी एवं एएच, एमवीएससी (एलपीएम)
मानसिंह प्रशिक्षण संस्थान, महेसाणा

हितेंद्रसिंह राठौड़
प्रबंधक, डीईई

शैलेष एस जोशी
प्रबंधक, बीई (मेक)

दुष्यंत देसाई
प्रबंधक, बीटेक (डीटी), पीजीडीएम (आरएम'-एक्स)

एनआरडीटीसी, जालंधर

सत्यपाल कुर्रे
प्रबंधक, डीफार्म, बीवीएससी एवं एएच, एमबीए

मनोज कुमार गुप्ता
प्रबंधक, बीवीएससी एवं एएच, एमवीएससी (वेट. माइक्रो)

कल्पेन्द्र कोहली
उप प्रबंधक, बीवीएससी एवं एएच, एमवीएससी (वेट. गायेनक.)

एसआरडीटीसी, इरोड

एम गोविंदन
उप महाप्रबंधक, एमए (एसडब्ल्यू), एमबीए

टी पी अरविंद
वरिष्ठ प्रबंधक, बीवीएससी एवं एएच, एमवीएससी (वेट माइक्रो)

एस ए अनुषा
उप प्रबंधक, बीवीएससी, एमवीएससी (वेट. पब्लिक हेल्थ)

महासंघों, संघों, प्रबंधित इकाइयों / परियोजनाओं में प्रतिनियुक्ति/ सेकेंडमेंट/ तैनाती

बीकानेर दूध संघ, बीकानेर

शुभम गुलाटी
उप प्रबंधक, बीएससी कृषि, पीजीडीएम (कृषि व्यवसाय प्रबंधन)

पूर्वी असम दूध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड (ईअमूल), जोरहट

प्रीतम के सैकिया
वरिष्ठ प्रबंधक, बीवीएससी एवं एएच, एमवीएससी (पशु पोषण), पीजीडीएम (आरएम-एक्स)

हिमाचल प्रदेश राज्य सहकारी दूध उत्पादक महासंघ लिमिटेड, शिमला

प्रवीण शर्मा
उप प्रबंधक, बीटेक (डीटी), पीजीडीआरएम

झारखंड दूध महासंघ (जेएमएफ), रांची

सुधीर कुमार सिंह
प्रबंध निदेशक (जेएमएफ), बीएससी (डीटी), एमबीए (मार्केटिंग)

जयदेव विश्वास
महाप्रबंधक, बीएससी (केम), पीजीडीआरडी, पीजीडीएचआरएम

नितिन एम शिंकर
उप महाप्रबंधक, बीई (मेटलर्जी), पीजीपीबीए (पीएंडओ प्रबंधन)

टी सी गुप्ता
वरिष्ठ प्रबंधक, बीएससी (ऑनर्स), एमएससी (कृषि), पीएचडी (कृषि विज्ञान)

मिलन कुमार मिश्रा
वरिष्ठ प्रबंधक, बीकॉम, पीजीडीडीएम

शैली तोपनो
प्रबंधक, बीए (ऑनर्स), एमए (एसडब्ल्यू)

आभास अमर
प्रबंधक, बीबीए, पीजीडीएम

प्रियंका तोप्पो
प्रबंधक, बीकॉम, पीजीडीआरएम

संजय नंदी
प्रबंधक, बीकॉम, आईसीडब्ल्यूएआई, पीजीडीएम (आरएम-एक्स)

एलन सेवियो एक्का
प्रबंधक, बीएससी (आईटी), पीजीडीएम-आरएम

अरुण मारुति वड्डाट्टी
उप प्रबंधक, बीएससी (कृषि), पीजीडीआरएम

कर्नाटक ऑयल फेडरेशन, बेंगलुरु

जी सी रेड्डी
प्रबंध निदेशक (केओएफ), एमएससी (सांख्यिकी), एमफिल (जनसंख्या अध्ययन)

केसीएमएमएफ, एर्णाकुलम

आसिफहुसैन मयुदीन कुरैशी
उप प्रबंधक, बीटेक (डीटी), एमटेक (डेरी केमिस्ट्री)

लद्दाख दूध महासंघ (एलएमएफ), लेह

मनोजकुमार बी सोलंकी
प्रबंधक, बीटेक (डीटी), एमटेक (डेरी केम)

शुभम कम्बोज
उप प्रबंधक, बीटेक (डीटी), पीजीडीआरएम

मिजोरम दूध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड, ऐजॉल

हर्ष वर्धन
प्रबंधक, बीटेक (इलेक्ट्रो), पीजीडीएम (वित्त)

राष्ट्रीय सहकारी ऑर्गेनिक्स लिमिटेड (एनसीओएल)

नवीन कुमार
वरिष्ठ प्रबंधक, एमएससी (पर्यावरण विज्ञान), एमटेक (पर्यावरण विज्ञान एवं इंजीनियरिंग), एमएससी (पर्यावरण विज्ञान एवं प्रबंधन), पीजीडीएम (आरएम-एक्स)

इंदु एस
उप प्रबंधक, एमए (अर्थशास्त्र), पीजीडीआरएम

नॉर्थ ईस्ट डेरी एंड फूड्स लिमिटेड (एनईडीएफएल), गुवाहाटी

चिराग के सेवक
वरिष्ठ प्रबंधक, बीएससी (गणित), पीजीडीसीए, पीजीडीटीपी, आईसीडब्ल्यूए, पीजीडीएम (आरएम-एक्स)

आरसीडीएफ, जयपुर

प्रीतेश जोशी
वरिष्ठ प्रबंधक, बीई (मेक), पीजीडीआरएम

क्षेत्रीय तिलहन उत्पादक सहकारी समिति संघ लिमिटेड (सीआरओजीसीएसयूएल), चित्रदुर्ग)

एम जयकृष्ण
उप महाप्रबंधक, एमए (इको), एमफिल (इको), पीएचडी (इको)

श्रीजा महिला दूध उत्पादक कंपनी लिमिटेड, तिरुपति,

सचिन कुमार
उप प्रबंधक, बीएससी (ऑनर्स) कृषि, पीजीडीआरएम

वाराणसी दूध संघ, वाराणसी

राजेंद्र कुमार सैगल
प्रबंध निदेशक (वीएमयू), बीएससी (डीटी), एक्जीक्यूटिव एमबीए

अरविंद कुमार
वरिष्ठ प्रबंधक, बीएससी (कृषि), एमएससी (एग्री मार्केटिंग एंड कॉपरेशन), पीजीडीएम (आरएम-एक्स)

एस महापात्रा
वरिष्ठ प्रबंधक, बीए (मनो.), एलएलबी, पीजीडीएम (एचआरएम)

राहुल त्रिपाठी
वरिष्ठ प्रबंधक, बीकॉम, एमबीए (वित्त)

आलोक प्रताप सिंह
प्रबंधक, बीवीएससी एवं एएच, एमवीएससी (पशु पोषण)

भरत सिंह
प्रबंधक, बीटेक (मेक)

हरेन्द्र पी सिंह
प्रबंधक, बीटेक (डीटी), एमएससी (डेरी केम), पीजीडीएम (आरएम-एक्स)

रविंद्र जी रामदासिया
प्रबंधक, एमकॉम, सीए, सीएस, पीजीडीएम (आरएम-एक्स)

साकिब खान
प्रबंधक, एमसीए

अरविंद कुमार यादव
प्रबंधक, बीटेक (मेक), एमबीए (इन्फ्रा)

हितेंद्रकुमार बी रावल
प्रबंधक, बीटेक (डेरी एंड फूड टेक), एमटेक (डीटी)

जीलकुमार आर राठौड़
उप प्रबंधक, बीटेक (ईई), पीजीडीआरएम

विदर्भ मराठवाड़ा डेरी विकास परियोजना, नागपुर

वी श्रीधर
वरिष्ठ महाप्रबंधक, बीवीएससी एवं एएच, एमवीएससी (पशु पोषण), एमबीए

सचिन एस शंखपाल
प्रबंधक, बीवीएससी एवं एएच, एमवीएससी (पशु पोषण), पीएचडी (पशु पोषण)

फ्रेडरिक सेबस्टियन
प्रबंधक, एमए (डेवलपमेंट स्टडीज), पीजीडीडीएम, पीजीसीएमआरडीए

पश्चिम असम दूध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड (वामूल), गुवाहाटी

एस बी बोस
महाप्रबंधक, बीई (मेक), पीजीडीआरडीएम

एस के परिदा
उप महाप्रबंधक, बीई (इलेक्ट)

गुलशन कुमार शर्मा
वरिष्ठ प्रबंधक, बीए, डिप्लो. (होटल प्रबंधन)

मयंक टंडन
वरिष्ठ प्रबंधक, बीएससी, एमएससी कृषि (पशु पोषण), पीएचडी (पशु पोषण)

विपिन नामदेव
वरिष्ठ प्रबंधक, एमकॉम, पीजीडीसीए,आईसीडब्ल्यूए

कुलदीप बोरा
प्रबंधक, बीएससी (बायोटेक), पीजीडीडीएम

प्रशांत नायडु वी जी पी
उप प्रबंधक, बीटेक (एरोस्पेस इंजीनियरिंग), पीजीडीआरएम

दीपक कम्बोज
उप प्रबंधक, बीएससी (ऑनर्स) कृषि, पीजीडीआरएम

करण शर्मा
उप प्रबंधक, बीएससी (केम.), पीजीडीआरएम

कृष्ण बल्लभ चौधरी
उप प्रबंधक, बीए (ऑनर्स) सोशल वर्क, पीजीडीआरएम

सहायक कंपनियों और सहयोगी संस्थाओं में प्रतिनियुक्ति/सेकेंडमेट पर

एनडीडीबी काफ लिमिटेड, आणंद

राजेश सुब्रमण्यम
प्रबंध निदेशक (एनसीएल), बीई (केमिकल इंजी), पीजीडीआरएम

राजेश नायर
वरिष्ठ महाप्रबंधक, बीएससी, एमएससी (एन. केम), पीएचडी (केम)

राजीव चावला
वरिष्ठ वैज्ञानिक, बीएससी, एमएससी (पशु पोषण), पीएचडी (पशु पोषण), एमबीए (मार्केटिंग)

एस के गुप्ता
वैज्ञानिक III, एमएससी (कृषि)

स्वगतिका मिश्रा
वैज्ञानिक III, बीएससी (बॉट), एमएससी (माइक्रो)

दर्श के वोरा
प्रबंधक, बीएससी (माइक्रो), एमएससी (पर्यावरण विज्ञान), सर्टि. जीआईएस, पीजीडीएम (आरएम-एक्स)

अमोल एस खाड़े
वैज्ञानिक II, बीवीएससी एवं एएच, एमवीएससी (पशु आनु. एवं प्रजनन)

हृदय बी दर्जी
वैज्ञानिक II, बीटेक (डीटी), एमटेक (डीटी)

स्वाति एस पाटिल
वैज्ञानिक II, बीएससी (फूड प्रोड. टेक एवं प्रबंधन) एमएससी (फूड टेक)

पुदोता रोहित कुमार
वैज्ञानिक I, बीएससी (केम), एमएससी (फूड केम)

निहिर हितेशकुमार सोनी
वैज्ञानिक I, बीई (फूड प्रो. टेक), एमटेक (खाद्य सुरक्षा और क्यूएम)

कैलाश चंद्र बेहेरा
वैज्ञानिक I, एमएससी (खाद्य और पोषण विज्ञान)

वर्षा शर्मा
वैज्ञानिक I, बीवीएससी एवं एएच, एमवीएससी (पोषण)

निलय यादव
वैज्ञानिक I, बीटेक (बायो टेक), एमटेक (केमिकल टेक)

भव्य मेहरा
वैज्ञानिक I, एमएससी (जैव रसायन)

एनडीडीबी डेरी सर्विसेज, लखनऊ

पंकज सिंह
वरिष्ठ प्रबंधक, एमएससी (कृषि), पीजीडीएम (आरएम-एक्स)

एनडीडीबी मृदा लिमिटेड, आणंद

संदीप भारती
वरिष्ठ प्रबंधक, बीएससी, पीजीडीडीएम

के बी प्रताप
प्रबंधक, बीआईबीएफ (इंट. बिजनेस), पीजीडीडीएम

ब्रजेश साहू
प्रबंधक, बीकॉम, सीए

भीमाशंकर शेटकर
प्रबंधक, बीई (प्रोड), पीजीडीआरडीएम

चंद्रशेखर के डाखोले
प्रबंधक, बीवीएससी एवं एएच, एमवीएससी (एएन), पीजीडीएम (आरएम-एक्स)

मदर डेरी फ्रूट एंड वेजिटेबल प्राइवेट लिमिटेड (एमडीएफवीपीएल), दिल्ली

जे टी चारी
उप प्रबंध निदेशक (एमडीएफवीपीएल) बीई (इलेक्ट्रिकल), पीजीडीआरडीएम

इंस्टीट्यूट ऑफ रुरल मैनेजमेंट (इरमा), आणंद

आर अरुमुगम
प्रबंधक, एमकॉम

शब्दावली

एएयू - आणंद कृषि विश्वविद्यालय

एबीआईपी - शीघ्र नस्ल सुधार कार्यक्रम

एबीआईपी आईवीएफ-ईटी - शीघ्र नस्ल सुधार कार्यक्रम, इन-विट्रो फर्टिलाइजेशन एवं भ्रूण प्रत्यारोपण

एबीआईपी-एसएस - सेक्स्ड और सेक्स-सॉर्टेड वीर्य के माध्यम से शीघ्र नस्ल सुधार कार्यक्रम

एबीएस - एडल्ट बोवाइन सीरम

एसीयू - एडल्ट कैटल यूनिट

एडीडीपी - असम डेरी विकास योजना

ए हेल्प - पशुधन उत्पादन के स्वास्थ्य एवं विस्तार के लिए मान्यता प्राप्त एजेंट

एएचआईडीएफ - पशुपालन अवसंरचना विकास निधि

एआई - कृत्रिम गर्भाधान

एआईटी - कृत्रिम गर्भाधान तकनीशियन

एकेएफ - आगा खॉ फाउंडेशन

एएलडीए - असम पशुधन विकास एजेंसी

एएमसीयू - स्वचालित दूध संकलन इकाई

एएमआर - एंटीमाइक्रोबियल रेजिस्टेंस

एएमयू - एंटीमाइक्रोबियल यूसेज

अमूल डेरी - कैरा जिला सहकारी दूध उत्पादक संघ लिमिटेड

एएनएएस - पशु पोषण परामर्श सेवाएं

एपीएआरटी - असम कृषि व्यवसाय और ग्रामीण परिवर्तन परियोजना

एपीईडीए - कृषि एवं प्रससंकरण खाद्य उत्पादक निर्यात विकास प्राधिकरण

एआरआईएएस - असम ग्रामीण बुनियादी ढांचा और कृषि सेवा समिति

एएसआरएस - ऑटोमेटिक स्टोरेज एंड रिट्राइवल सिस्टम

एएसटी - एंटीबॉयोटिक ससेप्टिबिल्टी टेस्ट

एटी - एक्शन टीम

एडब्ल्यूजी - कृषि कार्य समूह

बीएआईएफ - बायफ विकास अनुसंधान फाउंडेशन

बनास डेरी - बनासकांठा जिला सहकारी दूध उत्पादक संघ लिमिटेड

बीबी - गोवंशीय ब्रूसेलोसिस

बीबीएसएसएल - भारतीय बीज सहकारी समिति लिमिटेड

बीसीपी - ब्रूसेलोसिस नियंत्रण कार्यक्रम

बीडीएस - बुल डिस्ट्रीब्यूशन सॉफ्टवेयर

बीडीवी - गोवंशीय वायरल डायरिया

बीजीसी - गोवंशीय जेनिटल कैम्पिलोबैक्टीरियोसिस

बॉयोसीएनजी - बॉयो- कम्प्रैस्ड नेचुरल गैस

बीआईआरएसी - जैव प्रौद्योगिकी उद्योग अनुसंधान सहायता परिषद

बीआईएस - भारतीय मानक ब्यूरो

बीएमसी - बल्क मिल्क कूलर

बीएमएफ - नस्ल वृद्धि फार्म

बीओएचवी 1 - बोवाईन हर्पीस वायरस टाईप 1

बीपीएससीएल - बोकारो पावर सप्लाई कंपनी लिमिटेड

बीएसएल - जैव-सुरक्षा प्रयोगशालाएं

सीएसी - कोडेक्स एलीमेंटेरियस कमेटी

सीएएस-एमएमपी - दूध एवं दूध उत्पादों के लिए अनुरूपता मूल्यांकन योजना

सीएडब्ल्यूए - कंपैशन फॉर एनिमल वेलफेयर एसोसिएशन

सीबीबीओ - क्लस्टर आधारित व्यापार संगठन

सीबीजी - कम्प्रैस्ड बॉयोगैस

सीबीएचएफ - क्रासब्रीड ऑफ होल्स्टीन फ्रीज़ियन

सीबीजेवाई - जर्सी संकर नस्ल

सीबीएमएम - सतत् मक्खन निर्माण मशीन

सीसीबीएफ - केन्द्रीय मवेशी प्रजनन फार्म

सीडीएससीओ - केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन

सीएफपी - पशु आहार संयंत्र

सीएफएसपी एंड टीआई - केंद्रीय हिमिकृत वीर्य उत्पादन एवं प्रशिक्षण संस्थान

सीआईआई - कॉन्फेडरेशन ऑफ इंडियन इंडस्ट्री

सीकेएमएम - सतत् खोआ निर्माण मशीन

सीएमटी - कैलिफोर्निया मस्टाइटिस टेस्ट

सीएनजी - कम्प्रैस्ड नेचुरल गैस

सीओई - उत्कृष्ठता केन्द्र

कोविड-19 - 2019 नोवेल कोरोनावायरस

सीआरपी - बछड़ी पालन कार्यक्रम

सीएसआर - कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व

सीएसटी - कंसेंट्रेटेड सोलर थर्मल

सीएसटीआर - सतत् स्टिर्ड टैंक रिएक्टर

सीवीसी - केन्द्रीय सर्तकता आयोग

सीडब्ल्यूआईपी - चालू पूंजीगत कार्य

डीएएचडी - पशुपालन एवं डेयरी विभाग

डीएपी - डायमोनियम फॉस्फेट

डीबीओ - डीफाइंड बेनिफिट ऑब्लिगेशन

डीसीएएम - वैकल्पिक उपायों द्वारा रोग नियंत्रण

डीसीसीबी - जिला केन्द्रीय सहकारी बैंक

डीसीडीसी - जिला सहकारी विकास समिति

डीसीएस - डेरी सहकारी समिति

डीआईडीएफ - डेरी प्रसंस्करण और अवसंरचना विकास निधि

मुख्यालय
आणंद 388 001
दूरभाष: (02692) 260148/260149/260160
फैक्स: (02692) 260157
ई-मेल: anand@nddb.coop

कार्यालय
VIII ब्लॉक,
80 फीट रोड, कोरमंगला,
बेंगलुरू 560 095
दूरभाष: (080) 25711391/25711392
फैक्स: (080) 25711168
ई-मेल: bangalore@nddb.coop

डीके ब्लॉक, सेक्टर II,
सॉल्ट लेक सिटी, कोलकाता 700 091
दूरभाष: (033) 23591884/23591886
फैक्स: (033) 23591883
ई-मेल: kolkata@nddb.coop

वेस्टर्न एक्सप्रेस हाईवे,
गोरेगांव (पूर्व), मुंबई 400 063
दूरभाष: (022) 26856675/26856678
फैक्स: (022) 26856122
ई-मेल: mumbai@nddb.coop

प्लॉट सं. ए-3, सेक्टर-1,
नोएडा 201 301
दूरभाष: (0120) 4514900
फैक्स: (0120) 4514957
ई-मेल: noida@nddb.coop

www.nddb.coop

डीओआरबी - डी-ऑइल्ड राइस ब्रान

डीपीएमसीयू - डाटा प्रोसेसर आधारित दूध संकलन इकाई

डीपीआर - विस्तृत परियोजना रिपोर्ट

डीआरडीओ - रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन

डीएसएफ - डेरी सस्टेनेबिलिटी फ्रेमवर्क

डीटीसी - सहकारिताओं के माध्यम से डेरी

ईअमूल - पूर्वी असम दूध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड

ईएपी - इक्विटी एक्शन प्लान

ईबीएल - एन्ज़ूटिक बोवाइन ल्यूकोसिस

ईसीआईएल - इलेक्ट्रॉनिक्स कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड

ईएफएस - विस्तारित हिमीकृत वीर्य

ईआईए - अंतिम कार्यान्वयन एजेंसी

ईआईसी - निर्यात निरीक्षण परिषद्

एलिसा - एंजाइम लिंक्ड इम्युनोसॉर्बेंट एशे

ईएमओजेड - वर्चुअल मेडिकल रिप्रेजेंटेटिव

ईपीपी - खाली मटर के छिलके

ईआरपी - एंटरप्राइज रिसोर्स प्लानिंग

ईएसएपी - पर्यावरण एवं सामाजिक कार्य योजना

ईएसएल - विस्तारित सेल्फ लाइफ

ईटी - भ्रूण प्रत्यारोपण

ईटीपी - एफ्लुएंट ट्रीटमेंट प्लांट

ईटीटी - भ्रूण प्रत्यारोपण तकनीक

ईवीएम - एथनो-वेटनरी मेडिसिन

ईडब्ल्यूजी - ई-वर्किंग ग्रुप

एफएएचडी - मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी विभाग

एफएओ - संयुक्त राष्ट्र खाद्य कृषि संगठन

एफसीएम - फैट करेक्टेड मिल्क

एफडीयू - चारा प्रदर्शन इकाई

एफएमडी - खुरपका एवं मुंहपका रोग

एफएमडी-सीपी - खुरपका एवं मुंहपका रोग नियंत्रण परियोजना

एफओपीएल - फ्रंट ऑफ पैक लेबलिंग

एफपी - फिल्टर पेपर

एफपीओ - किसान उत्पादक संस्था

एफएसडी - हिमीकृत वीर्य डोज

एफएसएमएस - खाद्य सुरक्षा प्रबंधन प्रणाली

एफएसएसएआई - भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण

एफटीए - फ्लिंडर्स टेक्नोलॉजी एसोसिएट्स

जीएएपी - जेनेरली एक्सेप्टेड अकाउंटिंग प्रिंसिपल्स

जीबीआरसी - गुजरात जैव प्रौद्योगिकी अनुसंधान केंद्र

जीबीवी - जीनोमिक प्रजनन मूल्य

जीसीएमएमएफ - गुजरात सहकारी दूध विपणन महासंघ लिमिटेड

जीडीटी - ग्लोबल डेरी ट्रेड

जीईबीवी - जीनोमिक इस्टीमेटेड ब्रीडिंग वैल्यू

जीएचजी - ग्रीनहाउस गैस

जीआईएस - भौगोलिक सूचना प्रणाली

जीएमपी - उत्तम निर्माण पद्धतियां

जीओए - असम सरकार

जीओआई - भारत सरकार

जीओएम - महाराष्ट्र सरकार

जीपीएस - ग्लोबल पोजिशन सिस्टम

जीएसएफसी - गुजरात स्टेट फर्टिलाइजर्स एंड केमिकल्स लिमिटेड

जीडब्ल्यूएएस - जीनोम वाइज एसोसिएशन स्टडीज

एचएसीसीपी - हजार्ड एनालिसिस क्रिटिकल कंट्रोल पॉइंट

एचजीएम - उच्च आनुवंशिक गुण

हॉर्टी कॉर्प - केरल बागवानी उत्पाद विकास निगम

आईए - कार्यान्वयन एजेंसी

आईबीआर - संक्रामक गोवंशीय राइनोट्रेकाईटिस

आईसीएआई - भारतीय चार्टर्ड अकाउंटेंट्स संस्थान

भाकृअनुप - भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद

आईसीएआर - इंटरनेशनल कमेटी ऑफ एनिमल रिकॉर्डिंग

आईसीडीएस - एकीकृत बाल विकास सेवाएं

आईसीटी - सूचना एवं संचार तकनीक

आईडीए - इंडियन डेरी एसोसिएशन

आईडीएफ - अंतर्राष्ट्रीय डेरी महासंघ

आईडीएफ डब्ल्यूडीएस-2022 - अंतर्राष्ट्रीय डेरी महासंघ का विश्व डेरी शिखर सम्मेलन-2022

आई-डीआईएस - इंटरनेट पर आधारित डेरी सूचना प्रणाली

आईईटीएस - इंटरनेशनल एम्ब्रायो टेक्नालॉजी सोसाइटी

आईएफसीएन - इंटरनेशनल फार्म कॉम्पारिशन नेटवर्क

आईएफएफसीओ - इंडियन फार्मर्स फर्टिलाइजर कोऑपरेटिव लिमिटेड

आईआईएल - इंडियन इम्यूनोलॉजिकल्स लिमिटेड

आईआईएससीओ - इंडियन आयरन एंड स्टील कंपनी

आईएलसी - अंतर प्रयोगशाला तुलना

आईएमसी - अंतर- मंत्रालयी समिति

इनाफ - पशु उत्पादकता और स्वास्थ्य के लिए सूचना नेटवर्क

आईएनसी-आईडीएफ - अंतर्राष्ट्रीय डेरी महासंघ की भारतीय राष्ट्रीय समिति

आईपीसीसी - इंटरगवर्नमेंटल पैनल ऑन क्लाइमेट चेंज

इरमा - इंस्टीट्यूट ऑफ रूरल मैनेजमेंट, आणंद

आईएस - भारतीय मानक

आईएसओ - अंतर्राष्ट्रीय मानकीकरण संगठन

आईटीएसएम - सचिवालय प्रशिक्षण एवं प्रबंध संस्थान

आईवीईपी - इन विट्रो भ्रूण उत्पादन

आईवीपीएम - इंस्टीट्यूट ऑफ वेटनरी प्रीवेंटिव मेडिसीन

जीका - जापान इंटरनेशनल कोऑपरेशन एजेंसी

जेएमएफ - झारखंड मिल्क फेडरेशन

जीवी - संयुक्त उद्यम

केसीएमएमएफ - केरल सहकारी दूध विपणन संघ

केएफडी - क्यासानूर फॉरेस्ट डिज़ीज़

केएफडब्ल्यू - क्रेडिटैंस्टाल्ट फर विडेरौफबाउ

किग्रा - किलोग्राम

किली - किलो लीटर

किहलीप्रघं - किलो हजार लीटर प्रतिघंटा

केओएफ - कर्नाटक सहकारी तिलहन उत्पादक संघ

कृभको - कृषक भारती सहकारी लिमिटेड

एलसीए - लाइफ साइकल एसेसमेंट

एलसीए - जीवन चक्र मूल्याकंन

एलसीएफ - लीस्ट कास्ट फार्मूलेशन

एलडीओ - लाइट डीजल ऑयल

एलएचएंडडीसी - पशुधन स्वास्थ्य एवं रोग नियंत्रण

एलआईसी - भारतीय जीवन बीमा निगम

लाकिग्राप्रदि - लाख किलोग्राम प्रतिदिन

लालीप्रदि - लाख लीटर प्रतिदिन

एलएमपी - तरल दूध प्रसंस्करण

एलएन$_2$ - तरल नाइट्रोजन

एलआरपी - स्थानीय जानकार व्यक्ति

एलएसडी - लम्पी त्वचा रोग

एलएसडीवी - लम्पी त्वचा रोग वायरस

एलएसएचडीसीपी - पशुधन स्वास्थ्य रोग नियंत्रण कार्यक्रम

एमएएफएसयू - महाराष्ट्र पशु एवं मत्स्य विज्ञान विश्वविद्यालय

मैत्री - ग्रामीण भारत के बहुउद्देश्यीय एआई तकनीशियन

एमएआईटी - मोबाइल एआई तकनीशियन

एमसीपीपी - थनैला नियंत्रण लोकप्रियता परियोजना

एम-डीसीएस - बहु-उद्देश्य डेरी सहकारी समिति

एमडीएफवीपीएल - मदर डेरी फ्रूट एंड वेजिटेबल प्राइवेट लिमिटेड

एमडीएल - मझगांव डॉक शिपबिल्डर्स

महेसाणा डेरी - महेसाणा जिला सहकारी दूध उत्पादक संघ लिमिटेड

एमआईडीसी - महाराष्ट्र औद्योगिक विकास निगम

एमआईएलसीओ - मिल्क इंडीस्ट्रीज ऑफ लंका को. लिमिटेड

एमआईटी, महेसाणा - मानसिंग प्रशिक्षण संस्थान, महेसाणा

एमएलएसटी - मल्टी-लोकस सीक्वेंस टाइपिंग तकनीक

एमएलवीए - मल्टी-लोकस वेरिएबल टेंडम रिपीट एनालिसिस

एमएनआरई - नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय

एमओसी - सहकारिता मंत्रालय

एमओयू - समझौता ज्ञापन

एम-पैक्स - बहु उद्देश्य प्राथमिक कृषि ऋण समितियां

एमपीओ - दूध उत्पादक संस्था

एमआर - मीजल्स रूबेला

एमआरएल - सूक्ष्म पोषक तत्वों से भरपूर तरल

एमआरएसए - मेथिसिलिन-रेसिस्टेंस स्टेफिलोकोकस ऑरियस

एमएसपी - न्यूनतम मानक प्रोटोकॉल

मीट - मीट्रिक टन

एमटीसी - माइक्रो प्रशिक्षण केंद्र

मीटप्रदि - मीट्रिक टन प्रतिदिन

एमयू - दूध संघ

नाबार्ड - राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक

एनएबीएल - राष्ट्रीय परीक्षण और अंशशोधन प्रयोगशाला प्रत्यायन बोर्ड

एनएडीसीपी - राष्ट्रीय पशु रोग नियंत्रण कार्यक्रम

नाफेड - भारतीय राष्ट्रीय कृषि सहकारी विपणन संघ लिमिटेड

एनएआईपी - राष्ट्रव्यापी कृत्रिम गर्भाधान कार्यक्रम

एनएआर - राष्ट्रीय आरयूडीएसईटीआई अकादमी

एनबीएजीआर - राष्ट्रीय पशु आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो

एनबीसीसी - नेशनल बिल्डिंग्स कंस्ट्रक्शन कॉर्पोरेशन

एनबीजीसी-आईबी - राष्ट्रीय बोवाइन जीनोमिक केंद्र - स्वदेशी नस्लों के लिए

एनबीएचएम - राष्ट्रीय मधुमक्खीपालन एवं शहद मिशन

एनसीसी - नेशनल कोडेक्स समिति

एनसीसीएफ - भारतीय राष्ट्रीय सहकारी उपभोक्ता संघ मर्यादित

एनसीसीएसडी - नेशनल काउंसिल फॉर क्लाइमेट चेंज सस्टेनेबल डेवलपमेंट एंड पब्लिक लीडरशीप

एनसीडीसी - राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम

एनसीडीएफआई - नेशनल कोऑपरेटिव डेरी फेडरेशन ऑफ इंडिया लि.

एनसीईएल - राष्ट्रीय सहकारी निर्यात लिमिटेड

एनसीओएल - नेशनल कोऑपरेटिव ऑर्गेनिक्स लिमिटेड

एनसीयूआई - राष्ट्रीय सहकारी भारतीय संघ

एनडीसी - राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान

एनडीडीबी - राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड

एनडीईआरपी - एनडीडीबी डेरी ईआरपी

एनडीएलएम - राष्ट्रीय डिजिटल पशुधन मिशन

एनडीपी I - राष्ट्रीय डेरी योजना I

एनडीपी II - राष्ट्रीय डेरी योजना II

एनडीआरआई - राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान

एनडीएस - एनडीडीबी डेरी सर्विसेज

एनईडीएफएल - नॉर्थ ईस्ट डेरी एंड फूड्स लिमिटेड

एनईआर - पूर्वोत्तर राज्य

एनएफडीबी - राष्ट्रीय मत्स्य विकास बोर्ड

एनएफएल - नेशनल फर्टिलाइजर्स लिमिटेड

एनएफएन - एनडीडीबी फाउंडेशन फॉर न्यूट्रीशन

एनएफपी - न्यूबुटो फिल्टर पेपर

एनएफएसएम - राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन

एनआईएबी - राष्ट्रीय पशु जैव प्रौद्योगिकी संस्थान

एनआईएएच - राष्ट्रीय पशु स्वास्थ्य संस्थान

नीति आयोग - राष्ट्रीय भारत परिवर्तन संस्था

एनएलसीसी - राष्ट्रीय स्तरीय समन्वय समिति

एनएलडीबी - राष्ट्रीय पशुधन विकास बोर्ड

एनएलएम - राष्ट्रीय पशुधन मिशन

एनपीडीडी - राष्ट्रीय डेरी विकास कार्यक्रम

एनआरसी - राष्ट्रीय मांस अनुसंधान केन्द्र

एनआरएलएम - राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन

एनएससी - राष्ट्रीय संचालन समिति

एनटीपीसी - नेशनल थर्मल पावर कॉर्पोरेशन लिमिटेड

ओडीए - कार्यालयीन विकास सहयोग

ओएच - वन हेल्थ

ओएल - राजभाषा

ओएनजीसी - तेल एवं प्राकृतिक गैस निगम लिमिटेड

ओपीयू - ओवम पिक-अप

ओपीयू-आईवीईपी - ओवम पिक-अप -इन विट्रो भ्रूण उत्पादन

पीए - प्रतिभागी एजेंसी

पैक्स - प्राथमिक कृषि ऋण समितियां

पीएटी - कर पश्चात लाभ

पीबीएनएल - प्रिस्टीन बायोलॉजिकल्स एनजेड लिमिटेड पीसी- उत्पादक कंपनी

पीसी - उत्पादक कंपनी

पीसीआर - पॉलिमराइज्ड चेन रिएक्शन

पीआई - सहभागी संस्थान

पीआईपी - परियोजना कार्यान्वयन योजना

पीएमयू - परियोजना निरिक्षण ईकाई

पीओआई - उत्पादक स्वामित्व वाली संस्था

पीपीबी - पार्ट प्रति बिलियन

पीपीई - संपत्ति, संयंत्र एवं उपकरण

पीपीआर - पेस्ट डेस पेटिट्स रूमिनेंट्स

पीआरएमबीएस - सेवानिवृत्ति पश्चात चिकित्सा लाभ योजना

पीआरओएम - फॉस्फेट समृद्ध जैविक खाद

पीएस - वंशावली चयन

पीएसबी - सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक

पीएसटी - पूल्ड सीरम सैंपल टेस्टिंग

पीएसयू - सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम

पीटी - संतति परीक्षण

क्यूसीआई सर्कल - गुणवत्ता नियंत्रण चक्र

क्यूसीआई - क्वालिटी काउंसिल ऑफ इंडिया

क्यूपीआर - तिमाही प्रगति रिपोर्ट

आरबीआई - भारतीय रिर्जव बैंक

आरबीपी - आहार संतुलन कार्यक्रम

आरडीडीएल - क्षेत्रीय रोग निदान प्रयोगशाला

आरएफआईडी - रेडियो फ्रीक्वेंसी आइडेंटिफिकेशन

आरजीएम - राष्ट्रीय गोकुल मिशन

आरएमपी - अवशेष निगरानी योजना

आरएसएफपी एंड डी - चारा उत्पादन एवं प्रदर्शन क्षेत्रीय केन्द्र

आरयूसी - रेडी-टू-यूज कल्चर

एसए - लेखापरीक्षा मानक

साबर डेरी - साबरकांठा जिला सहकारी दूध उत्पादक संघ लिमिटेड

एसएआई प्लेटफार्म - सतत कृषि पहल प्लेटफार्म

सेल - स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड

एससीएडीए - पर्यवेक्षी नियंत्रण एवं डेटा अधिग्रहण

एससीसी - सोमैटिक सेल काउंट

एससीडीसी - राज्य सहकारी विकास समिति

एससीईएनवी - पर्यावरण संबंधी स्थायी समिति

एससीआई - शिपिंग कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड

एससीएम - सबक्लिनिकल मस्टाइटिस

एसडीसीएफपीओ - डेरी सहकारिताओं और किसान उत्पादक संस्थाओं को सहयोग

एसडीजी - सतत् विकास लक्ष्य

एसएचजी - स्वयं सहायता समूह

एसएमएलयू - सुंदरबन सहकारी दूध एवं पशुधन उत्पादक संघ लिमिटेड

एसएमपी - स्किम्ड मिल्क पाउडर

एसएनएफ - सॉलिड नॉट फैट

एसएनटी - सीरम न्युट्रीलॉजेशन टेस्ट

एसओपी - मानक प्रचालन प्रक्रिया

एसपीसीसी - स्पिल प्रिवेंशन, कंट्रोल एंड काउंटरमेजर

एसपीएस - सैनिटरी एवं फाइटोसैनिटरी मानक

एसपीवी - विशेष उद्देश्य वाहन

एसआरडीआई - सुजुकी आर एंड डी सेन्टर इंडिया प्रा. लिमिटेड

एसआरएलएम - राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन

एसएस - वीर्य केन्द्र

एसएस एंड एसएम - सीरो-सर्विलांस और सीरो-मॉनिटरिंग

एसटी - सिकवेन्स टाईप

सुमूल डेरी - सूरत तापी जिला सहकारी दूध उत्पादक संघ लिमिटेड

टीबीटी - व्यापार तकनीकी रूकावट

टीईआरआई - द एनर्जी एंड रिसोर्स इंस्टीट्युट

हकिग्राप्रदि - हजार किलोग्राम प्रतिदिन

हलीप्रदि - हजार लीटर प्रति दिन

टीएमआर - संर्पूण मिश्रित आहार

टॉलिक - नगर राजभाषा कार्यानवयन समिति

टीओटी - प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण

टप्रघं - टन प्रतिघंटा

टीआर - रेफ्रिजरेशन टन

टीआरक्यू - टैरिफ़ रेट कोटा

टीएसडीडीसीएफएल - तेलंगाना राज्य डेरी विकास सहकारी संघ लिमिटेड

यूएटी - उपयोगकर्ता स्वीकृति परीक्षण

यूएचसी - यूनिवर्सल हेल्थ केयर

यूएचटी - अल्ट्रा हीट ट्रीड

यूएसएआईडी - यूनाइटेड स्टेट्स एजेंसी फ़ॉर इंटरनेशनल डेवलपमेंट

यूएसआईईएफ - संयुक्त राज्य-भारत शैक्षिक फाउंडेशन

यूटी - केंद्र शासित प्रदेश

वीएडीपी - मूल्य वर्धित डेरी उत्पाद

वीबीएमपीएस - ग्राम आधारित दूध संकलन प्रणाली

वीएमडीडीपी - विदर्भ मराठवाड़ा डेरी विकास परियोजना

वामूल - पश्चिम असम दूध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड

डब्ल्यूएफपी - व्हाटमेन ग्रेड-III फिल्टर पेपर

डब्ल्यूजीवीएफपीसीएल - वायनाड ग्राम विकास किसान उत्पादक कंपनी लिमिटेड

डब्ल्यूओएएच - विश्व पशु स्वास्थ्य संगठन

डब्ल्यूआरएल-आईबीआर - संक्रामक बोवाइन राइनोट्रैकाइटिस के लिए वर्ल्ड रेफरेन्स लेबोरेटरी

डब्ल्यूडब्ल्यूएफ-इंडिया - वर्ल्ड वाइड फंड फ़ॉर नेचर- इंडिया

कृतज्ञता ज्ञापन

- दूध महासंघ, डेरी सहकारी दूध उत्पादक संघ और दूध उत्पादक संघ
- भारत सरकार का मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय, कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय, सहकारिता मंत्रालय, ग्रामीण विकास मंत्रालय, वित्त मंत्रालय, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, रसायन और उर्वरक मंत्रालय, जलशक्ति मंत्रालय, नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय और नीति आयोग
- राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों की सरकारें
- एनडीडीबी की सहायक कंपनियां - मदर डेरी फ्रूट एंड वेजिटेबल प्राइवेट लिमिटेड, आईडीएमसी लिमिटेड, इंडियन इम्यूनोलॉजिकल्स लिमिटेड, एनडीडीबी डेरी सर्विसेज, एनडीडीबी मृदा लिमिटेड और एनडीडीबी काफ लिमिटेड
- इंस्टीट्यूट ऑफ रूरल मैनेजमेंट आणंद, आनंदालय एज्यूकेशन सोसायटी तथा विद्या डेरी
- बहुराज्यीय सहकारी समितियां - नेशनल कोऑपरेटिव डेरी फेडरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड, राष्ट्रीय सहकारी ऑर्गेनिक्स लिमिटेड, भारतीय बीज सहकारी समिति लिमिटेड और राष्ट्रीय सहकारी निर्यात लिमिटेड, भारतीय राष्ट्रीय सहकारी उपभोक्ता संघ लिमिटेड, भारतीय राष्ट्रीय कृषि सहकारी विपणन महासंघ, कृषक भारती सहकारी लिमिटेड और भारतीय कृषक उर्वरक सहकारी लिमिटेड
- बहु-क्षेत्रीय अंतर्राष्ट्रीय संगठन जिसमें विश्व बैंक, अंतर्राष्ट्रीय डेरी महासंघ, संयुक्त राष्ट्र खाद्य एवं कृषि संगठन, विश्व पशु स्वास्थ्य संगठन, डेरी सस्टेनेबिलिटी फ्रेमवर्क, डेरी एशिया, वैश्विक डेरी प्लेटफॉर्म, अंतर्राष्ट्रीय पशु रिकार्डिंग समिति और जापान अंतर्राष्ट्रीय सहयोग एजेंसी जैसे संस्थान शामिल हैं।
- आईसीएआर-राष्ट्रीय पशु आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, राष्ट्रीय पशु जैव प्रौद्योगिकी संस्थान, राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम
- भारतीय मानक ब्यूरो, भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण, कोडेक्स एलिमेंटेरियस कमीशन और निर्यात निरीक्षण परिषद; और
- सभी हितधारक